

परमेश्वर बोलता है।

विषय-सूची

उन सब के लिए जो खोज में हैं और बाइबल के परमेश्वर को जानना चाहते हैं	3
यूहन्ना की पत्रियाँ	5
याकूब की पत्री	24
पतरस की पहली पत्री	25
पतरस की दूसरी पत्री	37
यहूदा की पत्री	50
इब्रानियों के नाम पत्री	60
प्रकाशितवाक्य	93
अंत में	159

उन सब के लिए जो खोज में हैं और बाइबल के परमेश्वर को जानना चाहते हैं

इस पुस्तक में नए नियम का एक भाग है, जिसे समझाने वाली कथा-शैली में लिखा गया है। इसमें पतरस, यूहन्ना, यहूदा और याकूब की पत्रियाँ हैं। फिर इब्रानियों के नाम पत्री। और अंत में नए नियम की अंतिम पुस्तक: प्रकाशितवाक्य।

यह **मेरे** अपने शब्दों में एक पुनर्कथन है। अर्थात् यह इन प्राचीन दस्तावेजों का मूल पाठ **नहीं** है, जैसा कि हम उसे बहुत-से जर्मन बाइबल अनुवादों में पाते हैं। इसका उद्देश्य है कि इन बाइबल के पाठों को और भी अच्छी तरह समझने में सहायता मिले। या उन्हें बिलकुल नए सिरे से खोजा जाए।

मैं अपने आप को लेखकों के स्थान पर रखकर देखता हूँ। फिर मैं विषय-वस्तु को अपने ढंग से बताता हूँ – संक्षेप में और साफ़-साफ़ समझाकर। विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो बाइबल को अभी बिलकुल नहीं जानते। मेरा पाठ लूथर-बाइबल (Luther-Bibel) या आइनहाइट्सयूबरज़ेत्सुंग (Einheitsübersetzung) (जर्मन बाइबल अनुवाद) के पाठ से लगभग दो से तीन गुना लंबा है।

निश्चय ही यह एक प्रकार की व्याख्या है। पर इसकी तुलना बाइबल की टीकाओं से नहीं की जा सकती। फिर भी अपने पुनर्कथन में मैंने बहुत-सी टीकाओं और बाइबल अनुवादों से सलाह ली है। सबसे बढ़कर इसलिए कि पाठों का अर्थ उनके मूल और ऐतिहासिक परिवेश में समझ सकूँ – इस लक्ष्य के साथ कि 21वीं सदी तक एक पुल बनाया जाए। मैं इन बहुत-सी टीकाओं और बाइबल अनुवादों के लिए आभारी हूँ। फिर भी मैंने स्रोतों का उल्लेख नहीं किया है। यदि किसी को मेरे पाठ में अपने विचारों के चिह्न मिलें, तो मैं इसके द्वारा स्पष्ट रूप से उसका धन्यवाद करता हूँ।

पद-संख्याएँ, समानांतर संदर्भ, फुटनोट या शीर्षक जान-बूझकर नहीं दिए गए हैं। केवल अध्यायों की संख्या दी गई है। बस एक पूरी पत्री को आरंभ से अंत तक पढ़िए। उसे एक संपूर्ण रचना के रूप में अपने ऊपर प्रभाव डालने दीजिए। अध्यायों की संख्याएँ केवल दिशा दिखाने के लिए हैं, जब कोई कुछ खोजना चाहे या किसी सामान्य बाइबल से तुलना करना चाहे।

इस काम के द्वारा मैंने स्वयं एक गहरी, बदल देने वाली और उत्साह बढ़ाने वाली आशीष का अनुभव किया है। मुझे जीवन के जल के शुद्ध और ईश्वरीय सोते से पीने का अवसर मिला। ये **मनुष्यों** के लिखे हुए पाठ हैं। फिर भी साथ ही – और यह संसार की किसी और पुस्तक के बारे में सच नहीं है – यह स्वयं **परमेश्वर का वचन** है। हर वह व्यक्ति इसे पहचानता और अनुभव करता है जो उस परमेश्वर को खोजने के लिए तैयार है जिसने अपने आप को यीशु में प्रकट किया है।

मैं आपको निमंत्रण देता हूँ कि आप भी यही अनुभव करें। पहले बाइबल के साथ। या फिर इस स्वतंत्र, पर अर्थ के प्रति विश्वासयोग्य पुनर्कथन के साथ।

यह काम मैंने बिलकुल अकेले पूरा नहीं किया। सबसे पहले मेरा विशेष धन्यवाद होस्ट स्ट्रिकर (Horst Stricker) को, जो सेवानिवृत्त पास्टर हैं। उन्होंने बहुत समय लगाकर और बड़ी बारीकी से मेरे शब्दों को पैना किया और जहाँ ज़रूरी था, उन्हें सुधारा। मेरा धन्यवाद बारबरा क्रुपिंस्की (Barbara Krupinski) को भी है, जिन्होंने पहली बार नहीं, मेरी किसी पांडुलिपि को जाँचा है। और अंत में मैं विल्हेल्म आडेलबर्गर (Wilhelm Adelberger) को पुस्तक की टाइपसेटिंग के लिए और टोबी स्ट्रिकर (Tobi Stricker) को लेआउट के लिए धन्यवाद देता हूँ।

यह पुस्तक अंतर-सांप्रदायिक पहल “Kirche für Alle” (सबके लिए कलीसिया) के लिए प्रकाशित हो रही है। उसका लक्ष्य है कि लोगों को चेले बनाया जाए। इसलिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के और प्रेरितों के वचन, जैसे वे आज तक नए नियम में उपलब्ध हैं, केंद्र में हैं। यह पुस्तक इस लक्ष्य में सहायक हो।

चारों सुसमाचार और प्रेरितों के काम एक पुस्तक में, और पौलुस की पत्रियाँ एक और पुस्तक में आएँगी या नहीं, यह इस पर निर्भर है कि यह प्रकाशन सहायक सिद्ध होता है या नहीं और सचमुच लंबे समय तक बाइबल पढ़ने के लिए प्रेरित करता है या नहीं।

यह जानकर अच्छा लगेगा। हम हर प्रतिक्रिया के लिए आनंदित होंगे: info@kirchefüralle.de।

Hans-Jörg Ronsdorf, जुल्ल्सबर्ग (अल्बोय), मई 2018

यूहन्ना की पत्रियाँ

- अनन्त जीवन – अभी और शीघ्र
- अनन्त जीवन का निश्चय
- परमेश्वर की ज्योति, प्रेम और आनंद
- क्षमा – एक बार सदा के लिए!
- प्रेम की नई आज्ञा
- संसार और परमेश्वर की इच्छा
- परमेश्वर का परिवार
- विश्वास के द्वारा विजय

यूहन्ना की पहली पत्र

जब यीशु ने हम बारहों को अपने चेले बनाया, तब कुछ बिलकुल नया आरंभ हुआ। कुछ ऐसा जिसने सब कुछ बदल दिया और जो फिर कभी समाप्त नहीं होगा। बात यीशु की है, जो वचन है। उसने हमारे लिए सच्चे जीवन को प्रकट किया। हम उन सब बातों की गवाही देते हैं और उनका वर्णन करते हैं जो हमने उससे, जीवन के वचन से, सुनी हैं। वे केवल शब्दों से कहीं बढ़कर थीं। उस जीवन को देखा और सराहा जा सकता था – हाँ, छुआ और गले लगाया जा सकता था। वह हमारे जैसा एक **मनुष्य** था, जिसके पीछे हम तीन वर्ष तक चले। हमने उसे बिलकुल पास से अनुभव किया।

परमेश्वर का जीवन, उसका अपना निज जीवन, यीशु में, पूरी सामर्थ्य और परिपूर्णता के साथ, सचमुच हमारे पास आया। सब मनुष्यों को इसकी बहुत आवश्यकता है। हम प्रेरितों ने और दूसरे बहुत-से लोगों ने भी इसे देखा है। हम गवाह हैं जो तुम्हें यह महान समाचार सुनाते हैं। वह, पुत्र, जो स्वयं साक्षात् अनन्त जीवन है, परमेश्वर की ओर से आया। उसने स्वयं हमें बार-बार बताया कि वह स्वर्गीय पिता की ओर से भेजा गया है। पिता चाहता था कि उसका पुत्र, जो परमेश्वर की महिमा के इस जीवन को अपने भीतर लिए हुए है, हमारे पास आए। इसलिए परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बना। क्योंकि केवल इसी तरह यह ईश्वरीय जीवन हम तक पहुँच सकता है और हमारा जीवन बन सकता है, हम जो मृत्यु के वश में हैं। यह बात तुम्हारे बीच उन सब को भी जाननी चाहिए जो इनकार करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र सचमुच मनुष्य बना।

हमें तुम्हें वह सब बताना ही है जो हमने यीशु के विषय में देखा और सुना है। जब तुम इसे सुनोगे और विश्वास करोगे, तब यीशु हमारा साझा केंद्र बन जाएगा। वह हृदय जो हमें जोड़ता है। यीशु में, और किसी में नहीं, हमारी आपस में सहभागिता है – चाहे यह कितना ही अविश्वसनीय लगे: स्वर्गीय पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ सहभागिता। क्योंकि उसने हमें परमेश्वर के जीवन में भागी बनाया।

यीशु के द्वारा हम सब, तुम और हम, बस वे सब जो यीशु के पीछे चलते हैं, एक मन और एक प्राण हैं। एक परिवार की तरह जो एक साथ है और सब कुछ मिलकर बाँटता है। इसी संबंध और इसी एकजुटता में त्रिएक परमेश्वर का आनंद बसता है। एक ऐसा आनंद जो सारे सांसारिक और दुनियावी आनंद से कहीं ऊँचा है। और जिससे बड़ा कुछ नहीं हो सकता। इस स्वर्गीय पारिवारिक आनंद को वे सब अनुभव करते हैं जो जान-बूझकर और सक्रिय रूप से परमेश्वर के परिवार की सहभागिता में जीते हैं।

पर एक बात ऐसी है जो इस सहभागिता और परमेश्वर की निकटता से बिलकुल मेल नहीं खाती। यीशु का संदेश साफ़ और स्पष्ट था। उसने हम प्रेरितों का ध्यान एक बहुत महत्वपूर्ण बात की ओर दिलाया, जो हमें तुम्हें अवश्य बतानी है। यदि हम ऐसा न करें, तो हम तुम्हारे प्रति दोषी ठहरेंगे: सनातन परमेश्वर पवित्र है। वह स्वयं सबसे शुद्ध और सबसे उज्ज्वल **ज्योति** है। वह ज्योति में रहता है। वह पाप को सहन नहीं करता

और किसी ऐसी बात से कभी समझौता नहीं करता जो उसके महिमामय स्वभाव के विरुद्ध हो। उदाहरण के लिए प्रेमहीनता, कृतघ्नता, स्वार्थ, और उसकी अच्छी आज्ञाओं की अवहेलना या उनके विरुद्ध विद्रोह, जो हमारे लिए सबसे उत्तम हैं। इस प्रकार का अन्धकार परमेश्वर में – और यीशु में भी – बिलकुल नहीं पाया जाता। निश्चय ही यहाँ शाब्दिक या भौतिक अर्थ वाले अन्धकार की बात नहीं है। बात उस अंधेरे की है जो हमारे हृदयों को अंधकारमय कर देता है और हमारे जीवन के दृष्टिकोण को दिशाहीन बना देता है। परमेश्वर का वचन इस दशा को पाप और अधर्म कहता है, उस महिमामय परमेश्वर से अलगाव, जो ज्योति है।

इसलिए यदि हम दावा करें – जैसा तुम्हारे बीच कुछ लोग करते हैं – कि इस महिमामय परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता है, पर जीएँ अन्धकार में, अर्थात् अपनी मनमानी में, परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में पूछे बिना, तो यह सरासर झूठ होगा। और कभी सत्य नहीं। पर यदि हम परमेश्वर की ज्योति में जीते हैं, जिसमें यीशु हमें एक ही बार सदा के लिए ले आया है, तो आपस में **और** पिता तथा उसके पुत्र के साथ हमारी एक जीवित और स्थायी **सहभागिता** है। उसकी ज्योति में, उसके प्रेम में और पिता के घर के आनंद में।

पर क्या हम सचमुच परमेश्वर की इस पवित्र ज्योति में जी सकते हैं और वहीं बने भी रह सकते हैं? हम तो बार-बार असफल होते हैं और पाप करते हैं! हाँ, हम जी सकते हैं। परमेश्वर का सदा धन्यवाद हो। एक कारण है जिसके चलते हम उसकी ज्योति में सदा के लिए टिके रह सकते हैं: उसके पुत्र यीशु मसीह ने क्रूस पर अपना लहू और अपना जीवन दे दिया। इसके द्वारा हम अपने पापों से **सदा के लिए** शुद्ध हो गए हैं। यह बहुमूल्य, एक ही बार बहाया गया **लहू** हमें तब तक शुद्ध करता है जब तक हम पाप करते रहेंगे। तब, आज और आगे भी! हम सदा परमेश्वर के साथ सहभागिता में हैं। तब भी जब हम पाप करते हैं। केवल यीशु का लहू ही हमारी अनन्त सुरक्षा और गारंटी है। हमारी आज्ञाकारिता या आज्ञा न मानना परमेश्वर के साथ सहभागिता को न तो संभव बनाता है और न नष्ट करता है। परमेश्वर अपने पुत्र के बहुमूल्य लहू को देखता है – केवल इसी कारण हम सुरक्षित हैं। सदा के लिए। जैसे उस समय फसह के मेम्ने का लहू, जिसने सब इस्राएलियों को न्याय से बचाया। हम अपने **सब** पापों से शुद्ध किए जाते हैं। उनसे भी जिन्हें हम अनदेखा कर देते हैं, भूल जाते हैं या जिनका हमें पता नहीं होता। और जिन्हें दुर्भाग्य से हम आगे भी करेंगे।

पर यदि कोई यह समझे, जैसा झूठे शिक्षक दावा करते हैं, कि हम में कोई पाप है ही नहीं, और हमें यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध होने की आवश्यकता नहीं, तो यह एक बड़ी भूल है। तब हम सत्य और वास्तविकता से कटकर जाएँगे। हम स्वयं को भटका देंगे। हमारे पाप हमें विनाश में धकेल देंगे।

पापहीनता के इस झूठ और आत्म-धोखे से छुटकारा पाने का केवल एक ही मार्ग है। केवल जब हम अपने पापों को **मान लेते हैं** और परमेश्वर के सामने स्वीकार करते हैं, तभी हम अपने पापों से मुक्त होते हैं। केवल इसी तरह हमें वह क्षमा मिलती है जो परमेश्वर यीशु के लहू के द्वारा हमें देना चाहता है। केवल पापों को मान लेने और स्वीकार करने से, अर्थात् उन पापों को मुँह से कह देने से जिनका हमें पता है, हम परमेश्वर पिता और पुत्र के साथ सच्ची और जीवित सहभागिता में आते हैं। और इसी तरह उन सब यीशु के

अनुयायियों की सहभागिता में भी, जो यीशु के शुद्ध करने वाले लहू के अधीन जीते हैं। क्षमा हमें **सब** पापों के लिए दी जाती है। फिर से कहता हूँ: उनके लिए भी जिन्हें हम भूल गए हैं या जिनका हमें पता नहीं है। और जिन्हें हम आगे भी करेंगे।

क्या हम इसके योग्य हैं या क्या हमारा कोई अधिकार है कि परमेश्वर हमारे पाप दूर करे? नहीं! पर यीशु, जिसने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया, इस बात का निश्चय है कि परमेश्वर क्षमा करता है। यीशु का बहुमूल्य लहू उसके पवित्र और निष्पाप जीवन का प्रतीक है। उसने उसे हमारे लिए बलिदान कर दिया। परमेश्वर के लिए इसका मूल्य अनमोल है। इसलिए उसने स्वयं को वचनबद्ध किया है कि अपने पुत्र के इसी लहू के आधार पर वह हर उस व्यक्ति को क्षमा करेगा जो यीशु के बलिदान को विश्वास के साथ अपने लिए ग्रहण करता है और पूरी तरह उस पर भरोसा रखता है। परमेश्वर सदा अपने वचन पर स्थिर रहता है! क्योंकि वह विश्वासयोग्य और धर्मी है!

फिर से कहता हूँ, क्योंकि सब को यह जानना चाहिए: जो दावा करता है कि हम परमेश्वर की सन्तान होने के नाते अपने आप निष्पाप जीवन जीते हैं, वह स्वयं को धोखा देता है। इससे भी बुरा आत्म-धोखा तब है जब हम पाप करते हैं और समझते हैं कि यह पाप नहीं है। तब हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं। क्योंकि उसने हमें साफ़ दिखाया है कि पाप क्या है। जो सचमुच विश्वास करता है कि उसमें कोई पाप नहीं और वह निष्पाप जीता है, वह खोया हुआ है, क्योंकि वह अपने पापों को स्वीकार करके यीशु के लहू को अपने लिए ग्रहण नहीं करता! इसलिए यह एक झूठी शिक्षा है जो विनाश की ओर ले जाती है।

अध्याय 2

प्रिय मित्रो, यह तो स्पष्ट है, और मुझे यह लिखना ही नहीं पड़ना चाहिए: पाप मत करो! जब सनातन और महिमामय परमेश्वर हम मनुष्यों को अपनी सहभागिता में बुलाता है, तो हमें भी पाप के बारे में वैसे ही सोचना और अनुभव करना चाहिए जैसे वह करता है। इसी अनुभूति में हम बढ़ना और आगे बढ़ते जाना चाहते हैं।

परमेश्वर के साथ सहभागिता का एक भाग यह भी है कि हम ईमानदारी से अपनी असफलता को देखें और मान लें। क्योंकि हमें ईमानदारी से स्वयं से पूछना चाहिए: क्या हम कुछ भी ऐसा करते हैं जो **पूरी तरह** शुद्ध और पवित्र हो? पर यदि हम परमेश्वर की सन्तान होकर फिर भी कभी पाप कर बैठें, तो इस कारण हम कभी खोए हुए नहीं होते। पिता और पुत्र के साथ सहभागिता भी न टूटती है और न घटती है। क्योंकि **सब कुछ** पहले ही क्षमा किया जा चुका है। हमें फिर से क्षमा की आवश्यकता नहीं है। और पिता के पास हमारा सहायक और ज़मानतदार कोई और नहीं, स्वयं यीशु है, पिता का पुत्र, जिसने हमारे लिए अपना लहू दिया। वह सदा के लिए हमारी सुरक्षा है। वह **धर्मी** है। हम स्वयं, जो अधर्मी हैं, अपने पापों को कभी मिटा नहीं सकते थे।

हमारे सब पापों को यीशु ने अपने लहू के द्वारा मिटा दिया है। वह हमारे पापों का सिद्ध और अद्वितीय **प्रायश्चित्त** है। अब परमेश्वर हम में कुछ भी अधर्म नहीं पाता। क्योंकि हमारे सब अपवित्र, अधर्मी काम, जो

परमेश्वर और मनुष्यों के विरुद्ध थे, यीशु में क्षमा किए गए और दूर कर दिए गए। उसके बलिदान का मूल्य इतना बड़ा है कि वह संसार के सब मनुष्यों के सब पापों को मिटा सकता है। पर निश्चय ही क्षमा केवल उन्हीं को मिलती है जो मसीह और उसके बलिदान में शरण लेते हैं।

तो हम कैसे जान सकते हैं कि हम यीशु को जानते हैं और उसके पीछे चलते हैं? बस इससे कि हम उसकी **आज्ञाओं** से प्रेम करते हैं और उन पर चलते हैं। यदि कोई दावा करे कि यीशु के साथ उसका एक जीवित और जीवन बदल देने वाला संबंध है, पर उसकी आज्ञाओं पर नहीं चलता, और ऐसा करने का प्रयास भी नहीं करता, तो वह स्वयं से झूठ बोलता है। और दूसरों से भी। ऐसे व्यक्ति में परमेश्वर का सत्य उपस्थित नहीं हो सकता। पर जो यीशु के वचन पर चलता है, उसमें परमेश्वर का प्रेम घर कर गया है – हाँ, अपने लक्ष्य तक पहुँच गया है। उसने परमेश्वर के प्रेम को केवल ग्रहण ही नहीं किया, बल्कि उसका उत्तर भी दिया और उसे आगे भी बाँटा।

जब हम उसके वचन को मानते और उस पर चलते हैं, तो हम यीशु में हैं। और जो कहता है कि वह यीशु में है, उसके पास इसके सिवा कोई विकल्प नहीं कि वह वैसे ही जीए जैसे यीशु जीया। तब यह दिखाई देता है कि यीशु मसीह का प्रेम, उसकी दया, उसका सत्य और उसकी पवित्रता हम में भी दिखाई देती है।

प्रिय मित्रो, वास्तव में मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ। वह नई थी जब यीशु ने उसे हम चेलों को दिया। इस अर्थ में यह पुरानी, मूल और आज भी लागू होने वाली आज्ञा है। तुमने इसे तब पाया जब तुमने विश्वास से यीशु को ग्रहण किया। साथ ही यह सदा के लिए एक **नई आज्ञा** है! क्योंकि यीशु के द्वारा इसे एक बिल्कुल नया आयाम मिला है – **प्रेम** की आज्ञा के रूप में। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। प्रेम की यह आज्ञा सचमुच उसमें जीवित थी – और आज हम में है। उसका जीवन हमारा जीवन भी बन गया है। हाँ, वह हम में जीता है! इसी तरह, और केवल इसी तरह, हम उसके समान जी और प्रेम कर सकते हैं। यीशु में सच्ची ज्योति संसार में आई। इसके साथ नया और आने वाला युग आरंभ हो गया था। अन्धकार को अधिकाधिक हटाना पड़ रहा है। वह हमारे हृदयों से भी निकाल दिया गया है। हम परमेश्वर की ज्योति में जीते हैं। और वह दिन आ रहा है जब अन्धकार पूरी तरह मिट जाएगा और यीशु सब कुछ को प्रकाशित करेगा।

जो दावा करता है कि वह इस ज्योति में जीता है, पर अपने **पड़ोसी** से प्रेम नहीं, बल्कि घृणा करता है, वह अनिवार्य रूप से अन्धकार का है। जो अपने पड़ोसी से प्रेम करता है, वह ज्योति का है। परमेश्वर की ज्योति में वह ठोकर खाने और विश्वास से गिर जाने से सुरक्षित है। मुझे फिर से कहना पड़ता है: जो अपने पड़ोसी से घृणा करता है, वह अन्धकार में है। यह विनाशकारी है, क्योंकि जो अंधेरे में चलता है, वह नहीं देखता कि कहाँ जा रहा है। अंधेरे में वह अंधा है।

परमेश्वर की प्रिय **सन्तानो**: तुम्हारे सब पाप, वे भी जो तुम आगे करोगे, तुम्हें क्षमा कर दिए गए हैं! इसका कारण केवल परमेश्वर की दया है, जिसकी उसने यीशु में हमसे प्रतिज्ञा की और जो उसने हमें दे दी। उसका नाम इसकी ज़मानत है!

हे विश्वास में **पिताओ** और **माताओ**, तुम आत्मिक रूप से ऐसे बन गए हो, क्योंकि तुम यीशु को किसी और से बढ़कर जानते और प्रेम करते हो।

हे **युवाओ**, तुम भी एक दिन ऐसे ही पिता और माताएँ बनोगे। अभी तुमने यीशु के द्वारा विश्वास में उस दुष्ट, शैतान, पर जय पा ली है।

हे बच्चों, जो अभी थोड़े ही समय से विश्वास में हो, तुमने एक बहुत महत्वपूर्ण और मूलभूत बात पहचान ली है: कि परमेश्वर, सनातन, तुम्हारा स्वर्गीय पिता है।

तुम पिताओं और माताओं को मैंने इसलिए लिखा है, क्योंकि यीशु के विषय में तुम्हारा ज्ञान, उसके लिए तुम्हारा प्रेम और उत्साह तुम्हें वह बनाता है जो तुम अब विश्वास में दूसरों के लिए हो सकते हो।

तुम युवाओं को मैंने इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम यीशु में बलवन्त हो। सबसे बढ़कर इसलिए कि परमेश्वर का वचन, वह सब जो यीशु ने कहा है, तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण है और तुम उस पर चलते हो। यीशु और उसके वचन के साथ तुमने शैतान पर जय पा ली है। जितनी झूठी शिक्षाएँ वह फैलाता है और जितने लोगों को उसने भटकाया है, वे तुम्हें अचानक दबोच नहीं सके।

सावधान रहो और उन बातों से प्रेम मत करो जिनसे वे लोग प्रेम करते हैं और जो वे करते हैं, जिन्हें परमेश्वर और यीशु की कोई परवाह नहीं। सच्चे प्रेम में केवल एक ही चीज़ को थामे रखा जा सकता है। जो अविश्वासियों जैसा जीवन चाहता है, या उससे जलता है, वह स्वर्गीय पिता के महान प्रेम को नहीं जानता।

पिता का प्रेम परमेश्वर से दूर इस संसार में घर नहीं कर सकता। और वहाँ उसका स्वागत भी नहीं होता।

एक ऐसा समाज, जिसमें परमेश्वर नहीं, बल्कि वह दुष्ट राज करता है, विशेष रूप से तीन बातों से संचालित होता है:

हर प्रकार की **अभिलाषा** के आगे झुक जाना और उसे पूरा करना – चाहे वह धन का लोभ हो, महत्वाकांक्षा, यौनता, प्रतिष्ठा या कोई लत।

फिर **आँखों की अभिलाषा**, जो केवल इस लोक की, दिखाई देने वाली और लुभाने वाली बातों को देखती है। और इस तरह जीवन के सच्चे अर्थ को सचमुच आँखों से ओझल कर देती है।

और अंत में **जीविका का घमण्ड** – जैसे डींग मारना, अहंकार, स्वयं को बढ़-चढ़कर आँकना और दूसरों से तुलना करना, दूसरों को सताना, और बहुत कुछ।

परमेश्वर के बिना मनुष्य स्वयं को अपने जीवन का राजा समझता है, मानो परमेश्वर ही नहीं। यह सब कभी स्वर्गीय पिता की ओर से नहीं हो सकता। यह सब एक दिन मिट जाएगा और समाप्त हो जाएगा। इस विनाश से बचने का एकमात्र उपाय है, वह करना जो यीशु कहता है। परमेश्वर की इच्छा पर चलना ही संसार के विपरीत एकमात्र सार्थक मार्ग है। यही एकमात्र संभावना है कि हम परमेश्वर के नए, अनन्त, पवित्र, महिमामय आने वाले संसार को ज्योति में अनुभव करें। और अनन्त जीवन में सदा के लिए वहाँ रहें।

हे परमेश्वर की सन्तानो, यीशु के साथ **अंतिम घड़ी** आरंभ हो गई है। उसने कहा था कि **मसीह-विरोधी**, झूठा उद्धारकर्ता, आएगा। पर अब तो बहुत-से मसीह-विरोधी प्रकट हो चुके हैं, जो एक नकली मसीह की तरह स्वयं को यीशु के स्थान पर रखते हैं। वे उसके विरुद्ध खड़े हो गए हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि अंतिम घड़ी आ गई है। यह बहुत दुःख की बात है कि ये लोग हम में से ही, हमारे बीच से ही निकले हैं। उन्होंने दावा तो किया कि वे परमेश्वर के परिवार के हैं। पर यह सच नहीं है। यदि यह सचमुच सच होता, तो वे हमारे साथ बने रहते। पर परमेश्वर ने उनका पर्दाफ़ाश कर दिया: कि वे परमेश्वर की ओर से नहीं, बल्कि उस दुष्ट की ओर से हैं। हमारे बीच उनका कोई स्थान नहीं। क्योंकि वे गलत बातें सिखाते और फैलाते हैं।

हम सब को यीशु से **अभिषेक** मिला है। उसने हमें पवित्र आत्मा दिया है। उसी ने हमें सिखाया है कि यीशु ही मसीह है, पिता का सनातन पुत्र। मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम ये बातें पहली बार सुनो। क्योंकि तुम उन्हें पहले से जानते हो। उन्हें थामे रहो। इन लोगों के झूठ का सत्य से बिलकुल कोई लेना-देना नहीं है।

तो जो लोग यीशु के बारे में बात करते हैं, उनमें से किन्हें झूठा कहना चाहिए? उन्हीं को, जो इनकार करते हैं कि नासरत का यीशु परमेश्वर का चुना हुआ मसीह है! ऐसा व्यक्ति मसीह-विरोधी है, जो **पिता** का और उसके **पुत्र** यीशु का इनकार करता है। वह कहता है कि परमेश्वर पिता है ही नहीं और उसका कोई पुत्र हो ही नहीं सकता। इसलिए जो इनकार करता है कि यीशु पिता का पुत्र है, वह न पिता को जान सकता है और न उसे अपना पिता बना सकता है। पर जिसके लिए यीशु पिता का पुत्र है और जो इस पर स्थिर रहता है, और इसकी गवाही देता है, उसके पास परमेश्वर, पिता है। वह सचमुच परमेश्वर की सन्तान है। यही तुमने आरंभ से सुना है। यदि तुम इसे ऐसे सत्य के रूप में थामे रहो जो किसी मूल्य पर बेचा नहीं जा सकता, तो तुम परमेश्वर की ज्योति में हो। पिता और पुत्र से जुड़े हुए।

और हमारे लिए, जो इसे थामे रहते हैं, पिता की वह अनोखी प्रतिज्ञा लागू होती है, जिसे उसने अपने पुत्र, मनुष्य यीशु में पूरा और सच कर दिखाया है: हम, जो नश्वर मनुष्य और पापी हैं, अनन्त जीवन पाएँगे! पाप और मृत्यु पराजित होंगे। हम परमेश्वर की सन्तान होंगे।

यह सब मुझे तुम्हें लिखना ही है। क्योंकि ऐसे लोग घूम रहे हैं, घुमक्कड़ प्रचारक, जो तुम्हें भटकाना और तुमसे ये महिमामय और जीवन-मरण से जुड़े सत्य छीन लेना चाहते हैं। मैं एक बार फिर उस अभिषेक की बात करता हूँ जो तुमने यीशु से पाया है। वह तो परमेश्वर का आत्मा है, जो तुम में और तुम्हारे साथ बना रहेगा। आरंभ से ही वह वहाँ था। इसलिए तुम्हें इन भटकाने वालों और झूठों से शिक्षा लेने की आवश्यकता नहीं। पवित्र आत्मा पर भरोसा रखो। वही तुम्हें सिखाता है कि सत्य क्या है। पिता के पुत्र, यीशु के निकट बने रहो।

और अब, मेरे मित्रो, मैं आगे की ओर देखता हूँ। मैं उस दिन को देखता हूँ जब यीशु आकाश में दिखाई देगा। वह सबसे बड़े आनंद का दिन होगा। एक अतुलनीय उत्सव का दिन, जब हम अंततः अपने प्रभु यीशु से अपनी सब इंद्रियों के साथ मिलेंगे। यदि हम इस महिमामय दिन को ऐसे अनुभव करना चाहते हैं, तो हमें

अभी से यीशु के साथ ऐसे जीना होगा मानो वह दिखाई देता हुआ हमारे साथ है। और उस दिन तक उत्साह से उसके पीछे चलते रहना होगा। यदि हम ऐसा नहीं करते, तो वह दिन हमें अचानक आ घरेगा। या हमें डरा देगा और लज्जित करेगा। और आशा है कि तब यह प्रकट न हो कि तुम में से कुछ उसके थे ही नहीं।

यदि हमने पहचान लिया है कि परमेश्वर पूर्णतः धर्मी है, तो हम यह भी जान सकते हैं कि कोई यीशु के समान धार्मिकता में जीता है या नहीं: ऐसा व्यक्ति परमेश्वर से जन्मा है।

अध्याय 3

क्या तुम सचमुच समझ सकते हो कि परमेश्वर पिता हमसे कैसे **असीम प्रेम** से प्रेम करता है? उसने तो अपनी ओर से हमें अपनी सन्तान बना दिया है! यही उसकी अनन्त योजना और इच्छा थी। कोई भी, न कोई मसीह-विरोधी और न कोई झूठा भविष्यद्वक्ता, इसे हमसे छीन सकता है या इस पर प्रश्न उठा सकता है: हम सचमुच परमेश्वर की सन्तान बन गए हैं। परमेश्वर ने यही चाहा।

हमारे बाहरी रूप-रंग से यह पता नहीं लगाया जा सकता। यीशु को भी बाहर से देखकर परमेश्वर के पुत्र के रूप में नहीं पहचाना गया। वह और हम सब मनुष्यों से अलग नहीं दिखते थे। फिर भी हम परमेश्वर की सन्तान हैं! चाहे परमेश्वर की सन्तान होने के आने वाले गुण अभी बाहर से दिखाई न देते हों।

एक बात पूरी तरह निश्चित है: परमेश्वर की सब सन्तान शीघ्र ही महिमान्वित यीशु मसीह के पूरी तरह **समान** होंगी। हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और बस चकित रह जाएंगे। यही तथ्य हमारी आशा का केंद्र है। यह हमें प्रतिदिन प्रेरित करता है कि हम बिना किसी समझौते के अपने जीवन से वह सब निकाल दें जो उसकी पवित्रता और महिमा से मेल नहीं खाता। इस तरह हम अभी से उसके और भी अधिक समान होते जाते हैं।

जो ऐसे जीता है मानो कोई परमेश्वर नहीं है, वह वास्तव में पापी है, एक ऐसा व्यक्ति जो अपने अनन्त लक्ष्य से चूक जाता है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे रचा है। वही उसे जीवित रखता है। उसी का उसे धन्यवादी होना चाहिए था। ऐसी जीवन-शैली को व्यवस्था का उल्लंघन भी कहा जाता है। जो परमेश्वर और उसके अधिकार का इनकार करता है, वह अराजकता में जीता है। परमेश्वर के बिना जीवन के द्वारा मनुष्यों ने पाप का अविश्वसनीय रूप से बड़ा दोष इकट्ठा कर लिया है। परमेश्वर और मनुष्यों के विरुद्ध किए गए इन पापों को कोई भी अनकिया नहीं कर सकता। मानवीय साधनों से यह दोष कभी फिर से ठीक नहीं किया जा सकता। पर यीशु ठीक इसी कारण आया, कि हमारे पापों को दूर करे। वह उन्हें ऐसे दूर कर सकता है मानो वे कभी हुए ही न हों। यह कोई नहीं कर सकता था! केवल वही अकेला। क्यों? क्योंकि वह किसी भी प्रकार से पाप से संक्रमित नहीं था और उसने कभी पाप नहीं किया। वह धर्मी था।

जो यीशु के पीछे चलता है और वह करना चाहता है जो वह कहता है, वह पाप की बात नहीं मानता। वे सब जो ऐसे जीते हैं मानो परमेश्वर है ही नहीं, उन्होंने न तो यीशु को समझा है और न ही स्वयं को उसे अपने जीवन के उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में सौंपा है।

हे परमेश्वर की सन्तानो, कोई समझौता मत करो! परमेश्वर की दृष्टि से सदा केवल एक ही बात होती है: या तो यह – या वह! इसलिए मैं धुंधले क्षेत्रों की बात नहीं करता, बल्कि उन सत्तों का, जो मैं तुम्हें सौंप रहा हूँ, साफ़ काला-सफ़ेद आमना-सामना करके दिखाता हूँ। जो परमेश्वर का आज्ञाकारी होना चाहता है और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीता है, वह धर्मी है। ठीक वैसे ही जैसे यीशु अपने जीवन में धर्मी था। जो ऐसे जीता है मानो परमेश्वर है ही नहीं, वह पाप करता है और अपने जीवन के लक्ष्य से चूक जाता है। ऐसे लोग वही करते हैं जो **शैतान** सदा से करता आया है। उसने आरंभ से ही परमेश्वर के अधिकार को ठुकराया और इस अराजकता को फैलाया। हाँ, उसने स्वर्गदूतों और मनुष्यों को भी यही करने के लिए भटकाया। हर वह व्यक्ति जो पाप करता है, अंततः शैतान से प्रेरणा लेता है और उसी के पक्ष में खड़ा होता है। पर यीशु, परमेश्वर का प्रिय पुत्र, इसलिए आया कि जो कुछ शैतान ने बिगाड़ा है, उसके सब बुरे कामों को, नष्ट कर दे। शैतान के कामों का अंतिम शब्द नहीं है! यह अभी से देखा जा सकता है। क्योंकि परमेश्वर की हर सन्तान परमेश्वर से जन्मी है और इसलिए अब पाप से संचालित और पाप के वश में नहीं है। परमेश्वर की कोई सन्तान लगातार पाप करती रहने के लिए विवश नहीं – यह केवल हम में परमेश्वर का काम है! परमेश्वर का जीवन, उसका वचन और उसका आत्मा, उसकी सन्तान में उपस्थित है। इसलिए यह बिलकुल संभव नहीं कि उसकी सन्तान पाप से प्रेम करे और ऐसे जीए मानो पिता है ही नहीं। अंत में कोई भी अपने सच्चे स्वभाव का इनकार नहीं कर सकता। वह या तो परमेश्वर की ओर से है या शैतान की ओर से। इसलिए इस विषय में किसी को भी स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए। वे सब जो परमेश्वर के बारे में नहीं पूछते और वैसे ही जीते हैं, परमेश्वर से जन्मे और परमेश्वर की सन्तान हो ही नहीं सकते। परमेश्वर की सन्तान सबसे बढ़कर पड़ोसी से प्रेम के द्वारा पहचानी जाती है। जो अपने पड़ोसी से निःस्वार्थ भाव से और कामों के द्वारा प्रेम नहीं करता, जैसे यीशु ने किया, वह परमेश्वर से जन्मा नहीं है।

जब तुमने पहली बार यीशु और उसके शुभ संदेश के बारे में सुना था, तब आपस का **प्रेम** ही निर्णायक बात थी, जो बड़ा अंतर पैदा करती है। यह सदा ऐसा ही रहे कि हम एक दूसरे से प्रेम करें। इसके विपरीत का सबसे भयानक उदाहरण कैन की पुरानी और जानी-पहचानी कहानी है। उसने शैतान, उस दुष्ट, की ओर से काम किया, जब उसने अपने भाई हाबिल की हत्या की। उसने ऐसा क्यों किया? जो कुछ वह करता था, वह बुरा था, क्योंकि वह उस दुष्ट की ओर से था। पर उसका भाई धर्मी था। हाबिल शैतान की ओर से नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से था।

इसलिए आश्चर्य मत करो यदि ऐसा आज भी बार-बार होता है। उस दुष्ट के स्वभाव में ही यह है कि वह भले, पवित्र, धर्मी और प्रेमपूर्ण से घृणा करे। हाँ, उसे नष्ट करे। जो लोग परमेश्वर के बिना जीते हैं, वे कम या अधिक हमसे घृणा करते हैं। क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि हम वह करना चाहते हैं जो परमेश्वर चाहता है। उनके और हमारे बीच का अंतर इससे बड़ा नहीं हो सकता। हम, क्योंकि परमेश्वर से जन्मे हैं, मृत्यु से पार होकर जीवन में बचाए गए हैं। मृत्यु जीवन को नष्ट करना चाहती है। यह घृणा के सिवा और कुछ नहीं है। और परमेश्वर की सन्तान के जीवन का सच्चा और असली चिह्न यह है कि हम पड़ोसी से प्रेम करते हैं,

विशेषकर परमेश्वर की सन्तान से। इसके उलट इसका बिना किसी संदेह के अर्थ है: जो पड़ोसी से प्रेम नहीं करता, वह अब भी मृत्यु में है। वह परमेश्वर की सन्तान नहीं है। हर वह व्यक्ति जो अपने पड़ोसी से घृणा करता है, कैन की तरह हत्यारा ही है – चाहे वह किसी को सचमुच मार डाले या अपने मन और हृदय से उससे घृणा करे। सब के लिए यह स्पष्ट होना चाहिए कि जो पड़ोसी से घृणा करता है, उसके पास अनन्त जीवन नहीं हो सकता, चाहे शायद थोड़े समय के लिए ऐसा दिखाई दिया हो।

हम कैसे पहचानें कि प्रेम का सचमुच क्या अर्थ है? सबसे बड़ा **आदर्श**, और साथ ही इसका मापदंड भी कि सच्चा ईश्वरीय प्रेम क्या है, हम यीशु में देखते हैं। प्रेम के कारण उसने अपना जीवन हमारे लिए दौंव पर लगा दिया और क्रूस पर बलिदान कर दिया। जब उसने हमारे लिए यह किया, तो इसके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता: हम भी परमेश्वर की सन्तान के लिए वही करेंगे। पड़ोसी के लिए भी। पर **प्रेम को जीने** का अर्थ यह नहीं कि तुरंत दूसरों के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया जाए। उदाहरण के लिए इसका सीधा-सा अर्थ है कि मैं, जिसके पास कुछ है, दूसरे की ज़रूरत में उसके साथ खड़ा होऊँ और उसे वह दूँ जिसकी उसे बहुत आवश्यकता है। यदि कोई अपने पड़ोसी की ज़रूरत से अपने अंतरतम में द्रवित नहीं होता, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम उपस्थित नहीं हो सकता। परमेश्वर के प्रेम का स्वभाव यही है कि व्यक्ति पड़ोसी की ज़रूरत को देखे, उससे द्रवित हो और सहायता करने के लिए सब कुछ लगा दे।

हे परमेश्वर की सन्तानो, केवल प्रेम के बारे में बातें करना और उस पर बहुत शब्द बनाना बंद करो। परमेश्वर के सच्चे प्रेम को कामों में और बिना स्वार्थी उद्देश्यों के जीओ।

पड़ोसी की सहायता करने के बजाय, हमारा हृदय अक्सर उसी चीज़ से चिपका रहता है जो हमें दे देनी चाहिए। जब हम पड़ोसी के लिए अपने जीवन और अपनी संपत्ति को छोड़ देते हैं, तब हम सत्य में हैं। जब हमारा स्वार्थी हृदय नहीं छोड़ता, बल्कि निःस्वार्थ देने की निंदा तक करता है, पड़ोसी से प्रेम करना अनावश्यक समझता है, या बात को केवल शब्दों तक ही रहने देता है, तब हम परमेश्वर की आज्ञा से ऊपर उठ बैठते हैं, जो हमसे बड़ी है। परमेश्वर हमारे हृदय के उद्देश्यों और आपत्तियों को ठीक-ठीक देखता है। अपने हृदय की इस भावना का विरोध करना हमें सीखना होगा और परमेश्वर के प्रेम की आज्ञा को अधिक ऊँचा मानना होगा। जब हमारा हृदय **छोड़ देता है**, ताकि पड़ोसी की उदारता और निःस्वार्थ भाव से सहायता करे, तब पिता के प्रति हमारा भरोसा खुला और आनंदित होता है। आखिर उसकी सन्तान होने के नाते हम उसके प्रिय हैं। हम उससे अपनी विनितियाँ कह सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं कि वह हमें देता है। जब हम पड़ोसी की ज़रूरत घटाने के लिए उसे खुशी से देते हैं, तब पिता भी हमें खुशी से देता है। क्योंकि उसकी आज्ञा हमारे लिए महत्वपूर्ण है, और हम उसे खुशी से पूरा करते हैं। इस तरह हमारा जीवन उसके लिए आनंद का कारण है। जब हम खुशी से देते हैं, तो वह हमें खुशी से देता है!

परमेश्वर पिता हमें यह **आज्ञा** देता है: कि हम अपना भरोसा पूरी तरह उसके पुत्र यीशु मसीह पर रखें – उसकी महिमामय महानता पर और इस बात पर कि वह हर बात के लिए, सचमुच हर बात के लिए, पर्याप्त है। जीवन में भी और मृत्यु में भी। इस आज्ञा में यह भी उतना ही शामिल है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें,

जैसा यीशु ने भी कहा है। जो इस आज्ञा पर चलता है, वह यीशु में बना रहता है और यीशु उसमें। क्या हम जान सकते हैं कि यीशु हम में है? हाँ, पवित्र आत्मा के द्वारा। वह हमें इस सत्य की गवाही देता है और हमें इसके विषय में भीतरी निश्चय और शान्ति देता है। यह आत्मा केवल इसकी गवाही ही नहीं देता। यीशु ने हमें यह आत्मा इसलिए दिया है कि वह सदा और सब समयों के लिए हमारे साथ रहे।

अध्याय 4

प्रिय मित्रो, संसार में बहुत-से झूठे भविष्यद्वक्ता घूम रहे हैं। ये वही झूठे हैं जिनकी मैं पहले बात कर चुका हूँ, जो हमारे बीच से निकल गए हैं। परमेश्वर के उस आत्मा के विपरीत जो तुम्हारे पास है, इन भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा झूठ की आत्माएँ काम करती हैं। इसलिए हर उस व्यक्ति पर विश्वास मत करो जो तुम्हें सिखाना चाहता है। परखो कि वह परमेश्वर की ओर से है या नहीं। परमेश्वर की ओर से आने वाले सच्चे आत्मा को तुम इससे पहचानते हो कि वह यीशु के विषय में सत्य का प्रचार करता है। अर्थात् यह कि यीशु मसीह सचमुच मनुष्य बना, मनुष्य था और सदा मनुष्य रहेगा। यद्यपि वह पिता के पास सनातन पुत्र था और सदा है। जो इस पर विश्वास नहीं करता और दूसरों के सामने इसे नहीं मानता, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। वह एक भटकाने वाली आत्मा से, मसीह-विरोधी की आत्मा से, भरा हुआ है। वह एक दिन खुले रूप से, बड़े और सनसनीखेज़ ढंग से प्रकट होगा। पर आज भी यह आत्मा ऐसे झूठे भविष्यद्वक्ताओं और नकली मसीहों के द्वारा काम करती है। वे सच्चे मसीह के विषय में झूठ फैलाते हैं।

परमेश्वर की सन्तान परमेश्वर से जन्मी हैं। उन्होंने झूठे भविष्यद्वक्ताओं को पहचान लिया है और उन पर जय पा ली है। तुम में **परमेश्वर का आत्मा** है, जो संसार की आत्मा से अधिक बलवान है। इन भविष्यद्वक्ताओं की जड़ भक्तिहीन, पर फिर भी धार्मिक संसार में है। वे केवल वही बोलते हैं जो संसार से आता है और जो संसार को अच्छा लगता है। इसके विपरीत हम परमेश्वर की ओर से हैं। और जो परमेश्वर को जानता और उससे प्रेम करता है, वह हमें समझता है। जो परमेश्वर की ओर से नहीं है, वह नहीं समझता कि हम क्या कहते हैं। फिर से मेरे लिए बात एक ही है: या तो यह – या वह: या तो सत्य का आत्मा बोलता है या झूठ और भ्रम की आत्मा।

प्रिय मित्रो! आओ, हम एक दूसरे से प्रेम करें। **प्रेम** परमेश्वर से आता है। हर वह व्यक्ति जो वैसे प्रेम करता है जैसे परमेश्वर प्रेम करता है, परमेश्वर से जन्मा है। वह परमेश्वर को जानता है और उससे प्रेम करता है। जो परमेश्वर के समान प्रेम नहीं करता, वह उसे नहीं जानता। क्योंकि परमेश्वर का सबसे गहरा और अनन्त स्वभाव शुद्ध प्रेम है। यह पवित्र प्रेम परमेश्वर ने हमें दिया है। इस तरह कि उसने अपने अद्वितीय पुत्र को हम मनुष्यों के पास भेजा। उसके पुत्र के मनुष्य बनने से हमें जीवन मिला है। वही उसे हमारे पास लाया। यह प्रेम पूरी तरह बिना हमारी योग्यता के है। इसकी जड़ हम में नहीं थी – मानो हमने परमेश्वर से प्रेम किया हो। नहीं, उसने पहले हमसे प्रेम किया और अपने पुत्र को भेजा, ताकि वह अपने बलिदान के द्वारा हमारे पापों को दूर करे।

प्रिय मित्रो, जब हमसे इस तरह सब अपेक्षाओं से बढ़कर, बिना हमारी योग्यता के, प्रेम किया गया है, तो हम मानो बाध्य हैं कि एक दूसरे से प्रेम करें। जब हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हम में बना रहता है। उसका प्रेम मानो हम में जीवित, प्रभावी, हाँ, अपने लक्ष्य तक पहुँच गया है। परमेश्वर आत्मा है और किसी ने, किसी भी मनुष्य ने, उसे कभी नहीं देखा। पर उस प्रेम के द्वारा, जिससे परमेश्वर का परिवार आपस में प्रेम करता है, उसके विषय में कुछ देखा और समझा जा सकता है।

हम कैसे समझ सकते हैं कि हम उसमें हैं? और वह हम में? उसके आत्मा के द्वारा हम इसे समझ सकते हैं। और उसके आत्मा के द्वारा ही यह जीवित और घनिष्ठ संबंध और प्रेम की सहभागिता संभव है।

हम प्रेरितों और यीशु के चेलों ने देखा है और तुम्हें गवाही देते हैं: पिता ने सचमुच हमारी खोई हुई दशा को देखा और अपने पुत्र को भेजा। सारे संसार के उद्धारकर्ता के रूप में। सब मनुष्यों के लिए पिता ने अपने पुत्र को भेजा।

जो विश्वास करता है और मान लेता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उसकी परमेश्वर के साथ सहभागिता है और वह उससे जुड़ा हुआ है। हमने जान लिया है और विश्वास किया है कि परमेश्वर का हमसे कितना बड़ा प्रेम है। **क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।** उसका पूरा स्वभाव सबसे शुद्ध, अपने आप को दे देने वाला प्रेम है। किसी भी देवता ने कभी अपने आप को ऐसा प्रकट नहीं किया। यही उसकी संपूर्ण पहचान है। **सब कुछ** जो वह करता है और जो वह है, प्रेम से आता है। जो इस प्रेम में जीता है, वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें – यह इससे पहचाना जाता है कि हम हृदय से पिता के धन्यवादी हैं और पड़ोसी से प्रेम करते हैं।

परमेश्वर के प्रेम ने हमें पूरी तरह बदल दिया है। हमें परमेश्वर के सामने हियाव और भरोसा दिया गया है। इसलिए **न्याय** के दिन से पहले, जब सब को पवित्र और धर्मी परमेश्वर के सामने हिसाब देना होगा, हमें **कोई डर नहीं** है। वहाँ जो बात गिनी जाती है और टिकी रहती है, वह केवल यह तथ्य है कि हम संसार में वैसे जीए जैसे यीशु जीया। यह तब सच होता है जब हम उसके वचन पर चलते हैं; जो परमेश्वर से जन्मे सब लोगों के लिए स्वाभाविक बात है। चाहे यह कभी सौ प्रतिशत सफल न हो। पर इस कारण भी हमें डरने की आवश्यकता नहीं। परमेश्वर से डर कभी परमेश्वर के प्रेम के स्वभाव में नहीं है। इसके विपरीत, **परमेश्वर का सिद्ध प्रेम** न्याय के दिन के डर को या असफल होने के डर को, कि हम यीशु के समान नहीं जीए, दूर भगा देता है। डर तो अपने आप में एक प्रकार का दंड है, जो निराशा तक ले जा सकता है। जिसे अब भी परमेश्वर और उसके न्याय से डर लगता है, वह अभी भरोसा नहीं करता। वह अभी परमेश्वर के प्रेम और यीशु की क्षमा के द्वारा विश्राम में नहीं आया है।

हम परमेश्वर से और पड़ोसी से प्रेम करते हैं। क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया।

यह महत्वपूर्ण है और कभी भूलना नहीं चाहिए: यदि कोई दावा करे कि वह परमेश्वर से प्रेम करता है, पर अपने पड़ोसी से घृणा करता है, तो वह झूठा है। जो अपने भाई से, जिसे वह अपनी आँखों से देख सकता है,

प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर से, जिसे वह नहीं देख सकता, कैसे प्रेम कर सकता है? परमेश्वर से हमें यह आज्ञा मिली है कि जो उससे प्रेम करता है, वह निश्चय ही अपने पड़ोसी से भी प्रेम करे।

अध्याय 5

हर कोई जो **विश्वास करता है** और **मान लेता है** कि यीशु ही मसीहा है, अर्थात् मसीह, वह परमेश्वर की सन्तान है। परमेश्वर से जन्मा है। पिता और सन्तान प्रेम में जुड़े हुए हैं। हर वह व्यक्ति जो परमेश्वर से प्रेम करता है, स्वाभाविक रूप से उससे भी प्रेम करता है जो उससे जन्मा है। हम किस बात से देख सकते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान से प्रेम करते हैं या नहीं? इससे कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके वचन और उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं। हम में, परमेश्वर की सन्तान में, परमेश्वर का प्रेम यह परिणाम लाता है कि हम उसकी आज्ञाओं को जानते हैं और उन पर चलते हैं। ये आज्ञाएँ उनके लिए कठिन नहीं हैं जिनके पास परमेश्वर से आया जीवन है। वे उन्हें खुशी से पूरा करते हैं। क्योंकि जो परमेश्वर से जन्मा है, वह संसार पर जय पाता है, जो अपनी ओर से परमेश्वर की आज्ञाओं का इनकार करता है। एक ऐसा समाज, जो परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं को ठुकराता है, हमारे हृदय को भी जीत लेना चाहता है। हम भी उनकी तरह जीएँ। पर हम दृढ़ और विजयी बने रहते हैं। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा पर हमारा भरोसा हमें संसार पर विजय को थामे रहने में सहायता करता है। परमेश्वर से दूर इस संसार पर कौन जय पा सकता है और हम पर उसके अधिकार के दावे को कौन ठुकरा सकता है? केवल वे जो **विश्वास करते हैं** कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। संसार और झूठे भविष्यद्वक्ता इस पर विश्वास नहीं करते। पर हम करते हैं और इसी पर बने रहते हैं।

यीशु मसीह हमारे लिए आया। वह पूरी तरह मनुष्य बना। झूठे शिक्षक दावा करते हैं कि बपतिस्मे के समय “ईश्वरीय मसीह” नासरत के मनुष्य यीशु पर उतरा था। और उसकी मृत्यु से कुछ ही पहले वह उसे फिर छोड़कर चला गया। पर यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, ने यूहन्ना से जल में बपतिस्मा लिया, क्योंकि वह यही चाहता था। और उसने स्वयं को क्रूस पर बलिदान के रूप में दे दिया। अपने बहाए हुए लहू के द्वारा उसने हमें पापों से शुद्ध किया। सत्य का पवित्र आत्मा आरंभ से तुम्हें इसी की गवाही देता आया है। हाँ, जैसा मूसा की व्यवस्था माँगती है, मैं तुम्हें दो या तीन गवाहों के नाम बता सकता हूँ: जल, लहू और आत्मा। तीनों एक स्वर से पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बना। उसकी सेवा जल में उसके बपतिस्मे से आरंभ हुई। और परमेश्वर का वही पुत्र गुलगुता पर मरा। मनुष्य कुछ भी दावा कर सकते हैं, पर परमेश्वर की गवाही बड़ी है और इसलिए भरोसे के योग्य है। अंतिम अधिकार वही है। परमेश्वर ने मसीह के विषय में ठीक वही गवाही दी है जो इन तीन गवाहों ने दी है। जो इस मसीह पर विश्वास करता है, वह इस एक स्वर वाली गवाही को अपने हृदय में रखता और सँभाले रहता है। जो अपने पुत्र के विषय में परमेश्वर की गवाही को ठुकराता है, वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है।

परमेश्वर पुत्र के विषय में जो गवाही देता है, वह महत्वपूर्ण और भरोसेमंद है। उसका हमसे भी बिल्कुल ठोस संबंध है। उसने हमें **अनन्त जीवन** दिया है! यह जीवन किसी और में नहीं, केवल उसके पुत्र में है। यीशु मसीह में, जो मनुष्य बना, हमारे लिए मरा और जी उठा। और जिसने पुत्र को भरोसे के साथ अपने हृदय में

ग्रहण किया है, उसके पास पुत्र है और इसके साथ अनन्त जीवन भी। क्योंकि वही जीवन है। जिसने पुत्र को ग्रहण नहीं किया, उसके पास कभी अनन्त जीवन नहीं हो सकता।

यह मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम एक ही बार सदा के लिए जान लो – अर्थात् केवल डगमगाती आशा या भावना से नहीं – और संदेह भी न करो कि तुम्हारे पास अनन्त जीवन है। बशर्ते तुम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो। वह सनातन है। वह मनुष्य बना। वह हमारे लिए मरा, जी उठा और महिमा में उठा लिया गया। वहीं से वह लौटकर आएगा। यह सब और इससे भी अधिक यीशु के उस नाम में समायामा हुआ है, जिस पर तुम विश्वास करते हो।

जो कुछ मैंने तुम्हें परमेश्वर के विषय में लिखा है, वह हमें निमंत्रण देता है कि हम उसके सामने रहें। बच्चों जैसे भरोसे और निश्चित आशा से भरे हुए। उसके कृपालु मुख के सामने। विशेषकर तब, जब हम उससे कुछ **माँगते** हैं। वह हमारी सुनता है और उत्तर देता है। हम तो वही माँगते हैं जो वह चाहता है। क्योंकि हम उसे और उसकी इच्छा को जानते हैं – जो उसे भाता है। हम उससे सचमुच कुछ भी माँग सकते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि वह हमारी सुनेगा। जब माँगी हुई बात परमेश्वर पूरी कर देता है, तब हम जानते हैं कि यही विनती का उत्तर है। परमेश्वर कोई विनती नहीं भूलता और ठीक समय पर उत्तर देता है। तब भी, जब हम वह विनती भूल चुके होते हैं।

परमेश्वर की सन्तान एक **प्रार्थना करने वाला परिवार** है। विशेषकर तब, जब परिवार का कोई सदस्य स्पष्ट रूप से और लगातार परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध चलता है। यह गंभीर बात है। इसलिए उस भाई या बहन को हमारी प्रार्थना की आवश्यकता है, ताकि वह पाप को पहचाने, उसे मान ले और छोड़ दे। हमारी प्रार्थनाएँ अत्यंत आवश्यक हैं। क्योंकि जब परमेश्वर हमारी सुनता है, तो वे उस भाई या बहन को जीवन देंगी। इस तरह वह लौट आता है या लौट आती है, जैसा परमेश्वर चाहता है: पिता और पुत्र के साथ जान-बूझकर जी जाने वाली सहभागिता में। और परमेश्वर के परिवार की सहभागिता में।

ऐसा पाप होता है जो मृत्यु की ओर ले जाता है। कोई भाई या बहन, परमेश्वर की सन्तान, ऐसा पाप नहीं कर सकते। यह पाप झूठे भविष्यद्वक्ताओं की और उस सारे संसार की पहचान है जो मृत्यु में पड़ा है। हर अधर्म पाप है। चाहे उसे परमेश्वर की कोई सन्तान करे या कोई झूठा भविष्यद्वक्ता। पर परमेश्वर की सन्तान के पाप का अर्थ उसकी मृत्यु नहीं है। पर संसार का पाप – वह अनन्त विनाश में ले जाता है। क्योंकि वह मसीह को और पाप के लिए उसके बलिदान को ठुकराता है।

जो परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर की सन्तान है, वह लगातार और आनंद से पाप नहीं करता। इसलिए यह मृत्यु की ओर ले जाने वाला पाप नहीं है। और यह ऐसा हो भी नहीं सकता। इस पत्नी में मैंने स्पष्टता के लिए सत्य को साफ़ विरोधों में, हाँ, काले-सफ़ेद के अंतर में, धार देकर समझाया है। परमेश्वर से जन्मा व्यक्ति पाप नहीं करता, क्योंकि मसीह उसकी रक्षा करता और उसे थामे रहता है। मसीह सदा अधिक बलवान है। वह उस दुष्ट पर विजयी है। इसलिए वह दुष्ट परमेश्वर से जन्मे हुए को न छू सकता है और न नष्ट कर सकता है।

हम निश्चय के साथ जानते हैं कि परमेश्वर ने हमें नया जन्म दिया है। इसके विपरीत, जो लोग परमेश्वर को ठुकराते हैं, वे उस दुष्ट, शैतान, के पक्ष में हैं। वे मृत्यु में हैं। यह अंतर, हाँ, यह विरोध, हमारे अपने कारण नहीं हुआ। यह यीशु के द्वारा हुआ है। परमेश्वर के सनातन पुत्र का मिशन यह था कि वह हमें परमेश्वर को दिखाए – उसका पवित्र स्वभाव, उसकी ज्योति और उसका प्रेम। और हम पर प्रकट करे कि उसे हमारे लिए क्यों आना पड़ा। विश्वास करने वाले के लिए यह जीवन-मरण की तरह महत्वपूर्ण है कि वह मसीह को, उस सत्य को, पहचाने, जो संसार के सब **देवताओं** और **मूर्तियों** से भिन्न है। यीशु पर, जिसका हम तुम्हें प्रचार करते हैं, सब कुछ टिका है और उसी के साथ सब कुछ गिरता है। उसके साथ हम सदा के लिए अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। नासरत के यीशु के साथ, परमेश्वर के पुत्र के साथ। वही सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन है। इसे किसी को अनदेखा नहीं करना चाहिए, इसका इनकार करना तो दूर की बात है।

परमेश्वर के पुत्र के विषय में इस सत्य को देखते हुए मैं अपनी पत्नी के अंत में बस इतना ही ज़ोर देकर कह सकता हूँ: जो कुछ यीशु मसीह को और उसके सम्मान को छोटा करता है, कमज़ोर करता है या उस पर प्रश्न उठाता है – वह मूर्ति है और मूर्ति ही रहेगा। मेरे मित्रो, सावधान रहो कि न कोई दिखाई देने वाली मूर्तियाँ, और न कोई “भीतरी” मूर्तियाँ, जैसे मनुष्यों से मिलने वाला सम्मान या धन, जिससे हम चिपके रहते हैं, किसी भी रूप में तुम्हारे द्वारा सहन की जाएँ या सराही जाएँ।

यूहन्ना की दूसरी पत्री

तुम्हें यूहन्ना, प्राचीन, लिख रहा है। एक ऐसा व्यक्ति जो तुम्हारे लिए चरवाहे के रूप में सेवा में है, और तुम्हारी चिन्ता करता है। तुम्हें, उस चुनी हुई महिला और उसकी सन्तान को। तुम्हें, विश्वासियों के एक छोटे समुदाय को, जिससे मैं हृदय से प्रेम करता हूँ। मेरा अभिप्राय उस प्रेम से है जो परमेश्वर के सत्य से आता है। और यीशु मसीह से भी। वे सब जिन्होंने यीशु मसीह को सत्य के रूप में पहचाना है और उससे प्रेम करते हैं, तुमसे भी प्रेम करते हैं। साझा सत्य ही इस प्रेम का आधार, दिशा और मापदंड है! **सत्य** हम में बना रहेगा, क्योंकि यीशु मसीह हम में है। सदा-सर्वदा! विश्वासियों की सहभागिता सदा के लिए परमेश्वर के प्रेम की सहभागिता में जीती रहेगी। अनन्त जीवन में।

परमेश्वर का अनुग्रह, उसकी दया और उसकी शान्ति हमारे साथ रहेंगे। तुम में से हर एक के साथ – दिन प्रतिदिन। परमेश्वर की ओर से, जो स्वर्ग में हमारा पिता है। और यीशु मसीह की ओर से भी, जो पिता का पुत्र है। वह भी परमेश्वर है। पुत्र परमेश्वर। जो मनुष्य बना और जिसने परमेश्वर का सत्य और प्रेम हम मनुष्यों पर प्रकट किया। इसी सत्य और प्रेम में हम परमेश्वर की सन्तान के रूप में जीते हैं।

मुझे सचमुच बहुत आनंद हुआ जब मैंने तुम्हारी कुछ सन्तान को सत्य में जीते हुए देखा। वे पिता की उस **आज्ञा** को पूरा करते हैं जो यीशु हमारे पास लाया। इसलिए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि वही करो जो हमने आरंभ से सुना है। कोई नई आज्ञा नहीं, जो तुम्हें चकित करे, बल्कि वही पुरानी: कि हम एक दूसरे से प्रेम करें।

पिता के प्रेम में बने रहने और जीने का अर्थ है उसकी आज्ञाओं को मानना: उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और एक दूसरे से प्रेम करना। उसकी आज्ञाएँ हमारे प्रति उसके प्रेम की अभिव्यक्ति हैं। वे सुरक्षा का काम भी करती हैं। इधर-उधर घूमने वाले **झूठे शिक्षकों** के विरुद्ध। आज बहुत-से भटकाने वाले बड़े प्रचार-उत्साह के साथ अपने झूठ फैलाते घूम रहे हैं। वे मानते और प्रचार करते हैं कि यीशु शरीर में होकर नहीं आया। वे इनकार करते हैं कि पुत्र परमेश्वर पूरी तरह मनुष्य बना – जैसे हम हैं: बैतलहम में जन्मा। नासरत में बड़ा हुआ। यरूशलेम के फाटकों के बाहर क्रूस पर मरा। हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए। देह के साथ जी उठा। और मनुष्य के रूप में स्वर्ग में उठा लिया गया। जो इन तथ्यों का आंशिक या पूरी तरह इनकार करता है, वह भटकाने वाला और आने वाले मसीह-विरोधी का साथी है।

ये भटकाने वाले एक वास्तविक **खतरा** हैं। इसलिए अपने विषय में सावधान रहो। चौकस रहो! ताकि जो हमने परिश्रम से पाया है, उसे हम खो न दें। तुम हमारे मिशन-कार्य का फल हो! तुमने स्वयं अनन्त जीवन के लिए परिश्रम किया है। परमेश्वर का काम किया है और अनन्त जीवन के लिए उसके नाम पर विश्वास किया है। हम तो वह पूरा प्रतिफल पाना चाहते हैं जिसकी हमसे प्रतिज्ञा की गई है। वह केवल तभी मिलता है जब

हम सत्य को थामे रहें, उसमें जीएँ और उससे आगे न बढ़ें जो मसीह के विषय में आरंभ से प्रकट किया गया है।

हर वह व्यक्ति जो **मसीह की शिक्षा** में बना नहीं रहता, जैसी तुमने उसे आरंभ से सुना है, ऐसे व्यक्ति में परमेश्वर वास नहीं करता। हर वह व्यक्ति जो मसीह की शिक्षा में, उस परमेश्वर के पुत्र की शिक्षा में जो मनुष्य बना, बना रहता है, वह पिता और पुत्र से जुड़ा हुआ है। वे उसमें वास करते हैं।

यदि कोई तुम्हारे पास आए और मसीह के विषय में वह शिक्षा न लाए, जैसी मैंने तुम्हें आरंभ से समझाई है, तो उसे ग्रहण मत करो। उसे बोलने का अवसर ही मत दो। उसे नमस्कार मत करो और वैसे उसका स्वागत मत करो जैसे तुम सामान्यतः किसी स्वागत-योग्य अतिथि को ग्रहण करते हो। क्योंकि जो ऐसे व्यक्ति का फिर भी इस तरह स्वागत करता है, वह उसके बुरे कामों में भागी होता है। चाहे वह चाहे या न चाहे। यदि कोई यात्रा करने वाला शिक्षक तुम्हारे पास आए, जिसके विषय में तुम नहीं जानते कि वह मसीह के विषय में सत्य बोलता है या नहीं, तो पहले यह **स्पष्ट कर लो**। जब यह स्पष्ट हो जाए, तब उसे ग्रहण करो। जब बात हमारे प्रभु यीशु मसीह की हो, तो सदा एक साफ़ पक्ष लो। यहाँ कभी तटस्थता या उदासीनता नहीं होनी चाहिए। नहीं तो हमारा सारा प्रतिफल ढाँव पर लग जाता है।

मुझे और बहुत कुछ लिखना चाहिए। स्याही और कागज़ से। पर तुम्हारे पास आकर तुमसे बात करना कहीं अच्छा और सुंदर है। क्योंकि ऐसी सहभागिता में, जहाँ हम आमने-सामने बात करते हैं, सदा बड़ा आनंद होता है।

यहाँ से भी, यहाँ के उन विश्वासियों की ओर से हार्दिक नमस्कार, जिनके बीच मेरा घर है।

यूहन्ना की तीसरी पत्र

मैं, यूहन्ना, प्राचीन, प्रेस्बिटर, तुम्हें लिखता हूँ, मेरे प्रिय ग्युस, जिससे मैं सत्य में प्रेम करता हूँ। उस सत्य में, जो यीशु मसीह के द्वारा हमारे पास आया और जिसने हमारे हृदयों को जीत लिया है, ताकि हम परमेश्वर के प्रेम में जीएँ।

प्रिय ग्युस, मैं तुम्हारे लिए कितनी कामना करता हूँ, और इसके लिए प्रार्थना करता हूँ, कि तुम्हारा सब बातों में भला हो। तुम्हारे बाहरी और भीतरी मनुष्यत्व दोनों में। कि तुम्हारा मार्ग अच्छा और समतल हो।

मुझे कितना आनंद हुआ कि जो भाई तुमसे मिले, उन्होंने बताया कि तुम अपने जीवन को कितनी लगन से **सत्य** के अनुसार ढालते हो। मुझे आनंद है कि तुम्हारे हृदय में सत्य के फल सब को दिखाई देते हैं। मेरे लिए इससे बड़ा कोई आनंद नहीं कि मैं देखूँ कि मेरी सन्तान सत्य में जी रही है। वे, जिन्हें मुझे मसीह, सत्य, तक ले जाने का अवसर मिला और जो अब उससे भरे हुए हैं। हाँ, जो सत्य को प्रेम में थामे रहते हैं और अपने विश्वासी भाई-बहनों और अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं।

प्रिय, यह सत्य के प्रति विश्वासयोग्यता ही है, जो तुमने भाइयों के प्रति दिखाई है। ऐसे पुरुषों के प्रति, जिन्हें तुम जानते तक नहीं। इन्होंने यहाँ हमारी घर की कलीसिया में अतिथि-सत्कार में तुम्हारी विश्वासयोग्यता की गवाही दी और उसकी प्रशंसा की। जब ऐसे भाई मिशनरियों के रूप में यात्रा पर हों, तो उन्हें आगे की यात्रा के लिए सब कुछ देकर विदा करो। यह परमेश्वर को भाता है और उसका आदर करता है। उसी की वे सेवा करते हैं। इस तरह उनकी सेवा को सहारा मिलता है। क्योंकि वे अपने लिए यात्रा नहीं कर रहे। हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए वे निकले हैं। उसका प्रचार करने के लिए। इसमें वे अन्यजातियों के सहारे पर भरोसा नहीं करते, बल्कि सदा वहाँ के अपने संगी विश्वासियों को खोजते हैं। ये उन्हें ग्रहण करने के लिए बाध्य हैं, हाँ, यह उनका कर्तव्य है। पर भटकाने वालों को अपने घरों में ग्रहण मत करो। केवल सच्चे मिशनरियों को। इस तरह हम सत्य के सहकर्म बनते हैं और प्रभु के काम में सक्रिय भागीदार होते हैं। उसके राज्य में।

मैंने उस घर की कलीसिया को लिखा है, जिसके तुम, प्रिय ग्युस, सदस्य हो। ताकि इन भाइयों को ग्रहण किया जाए। पर दियुत्रिफेस हमारी बात को गंभीरता से नहीं लेता। उसे उनके बीच **प्रधान** बनना अच्छा लगता है। और अपनी मनमानी से निर्णय लेना।

जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा, तो उसे उसके इस ठुकराने वाले रवैये की याद दिलाऊँगा और उससे जवाब माँगूँगा। इसे अवश्य स्पष्ट किया जाना चाहिए। क्योंकि वह बिना कारण बुरे शब्दों से हम पर दोष लगाता है। वह केवल शब्दों से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि उन भाइयों को, जो हम सब की सेवा करते हैं और ठहरने का स्थान खोजते हैं, सीधे लौटा देता है। और जो उन्हें ठहराना चाहते हैं, उन्हें वह रोकता है। वह उन्हें घर की

कलीसिया से निकाल देने की धमकी तक देता है। यह ऐसा व्यवहार है जो विश्वासियों की सहभागिता में शोभा नहीं देता।

प्रिय ग्युस, ऐसे व्यवहार से उकसाए जाकर वैसा ही मत करना। बुराई की नहीं, बल्कि **भलाई** की नकल करो। एक सरल और साफ़ नियम है: जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि परमेश्वर भला है। जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा। वह अनदेखा करता है कि परमेश्वर कैसा है। वह अनदेखा करता है कि परमेश्वर हमें ग्रहण करता है और हमें एक दूसरे को ग्रहण करना चाहिए।

देमेत्रियुस इन्हीं लौटाए गए लोगों में से एक है। यद्यपि इस पत्री के लाने वाले के रूप में उसके विषय में सब अच्छी गवाही देते हैं। उसे ग्रहण करने के विरुद्ध कोई बात नहीं है। सत्य उसके लिए सबसे पहले है। वह उसके पक्ष में खड़ा होता है और उसके अनुसार जीता है। इसकी गवाही हम भी देते हैं। और तुम भली-भाँति जानते हो कि हम सत्य बोलते हैं।

लिखने को और बहुत कुछ है। पर आमने-सामने बात करना और विश्वासियों की सहभागिता में विचारों का आदान-प्रदान करना अधिक अच्छा है।

परमेश्वर की शान्ति तुम्हारे साथ हो। यहाँ के मित्र तुम्हें नमस्कार कहते हैं। हमारी ओर से उन सब मित्रों को, जो तुम्हारे जैसा मन रखते हैं, व्यक्तिगत रूप से नमस्कार कहना। हर एक को अलग-अलग।

याकूब की पत्री

- विश्वास की परख
- वचन पर चलने वाले
- स्वतंत्रता और प्रेम की राजसी व्यवस्था
- परमेश्वर के राज्य में गरीब और धनवान
- विश्वास और कर्म
- छोटी जीभ – बड़ा असर
- ऊपर से आने वाला ज्ञान – या नीचे से
- संसार से मित्रता
- प्रभु का आगमन निकट है
- न्यायी द्वार पर खड़ा है
- एक दूसरे के साथ व्यवहार
- रोगियों के लिए प्रार्थना

याकूब की पत्री

याकूब, परमेश्वर का और हमारे प्रभु यीशु मसीह का दास। साथ ही उसका सगा भाई। यह बस यूँ ही कह रहा हूँ। मैं इस्राएल के उन सब बारह गोत्रों को लिखता हूँ जो जातियों के बीच तितर-बितर हैं। प्रवास में। तुम भुलाए नहीं गए हो। परमेश्वर का इस्राएल सुरक्षित रखा गया है और खोया नहीं है। तुम उस नई वाचा के परमेश्वर के लोग हो, जिसकी नींव मसीहा ने डाली है! तुम जहाँ कहीं भी रहते हो, मैं तुम्हें नमस्कार कहता हूँ।

घबराओ मत जब तुम्हारे विश्वास पर तरह-तरह की अचानक कठिनाइयों और डरावनी घटनाओं के द्वारा परीक्षा आती है। गरीबी, सताव के कारण अन्यायपूर्ण दुःख, अकेलापन, निराशा और बहुत कुछ तुम्हें उदास कर सकता है और तुम्हारी परीक्षा ले सकता है। पर इसमें आनंद का एक कारण भी है। क्योंकि तुम्हारे विश्वास की **परख** धीरज और दृढ़ता को बढ़ाती है। समस्याओं और कठिनाइयों का एक अर्थ है, चाहे यह तुरंत समझ में न आए। वे तुम्हारे विश्वास को कमजोर करने के लिए नहीं, बल्कि दृढ़ करने के लिए हैं। इसलिए विश्वास में अपने धीरज को बहुत महत्व दो। डटे रहो! हार मत मानो! चाहे परीक्षा में तुम स्वयं को कमजोर अनुभव करो, अपनी सीमाओं तक पहुँच जाओ और तुम्हारे मन में बहुत-से प्रश्न हों। इसी तरह तुम धीरे-धीरे, पर लगातार, आत्मिक परिपक्वता और विश्वास में दृढ़ता तक बढ़ते हो। तब तुम पाओगे कि तुम्हें किसी बात की घटी नहीं है, जैसी आरंभ में थी, जब परीक्षा ने तुम्हें अचानक आ घेरा था। परीक्षाएँ तुम्हें दृढ़ बनाने के लिए हैं। इसे कभी मत भूलना।

यदि तुम में **बुद्धि** की घटी हो, यदि तुम – विशेषकर अपने विश्वास की परीक्षा में – नहीं जानते कि क्या सोचो, क्या करो और क्या कहो, तो अपने परमेश्वर की ओर मुड़ो। वह प्रतीक्षा करता है कि जब तुम उससे माँगो तो वह तुम्हें बुद्धि दे। क्योंकि हमारा परमेश्वर सदा खुशी से देता है। हम मनुष्यों के विपरीत वह हमें उलाहना नहीं देता। हमारे प्रश्नों और भूलों के कारण हमें दोष देना उसका स्वभाव नहीं है। जब हम उससे बुद्धि माँगते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि हम विश्वास के साथ माँगें। यह पक्का मानकर कि वह सचमुच कुछ करेगा। जो संदेह करता है कि परमेश्वर हमें देता है, वह समुद्र की उस लहर के समान है जो हवा से इधर-उधर उछाली जाती है। जो परमेश्वर के खुशी से देने पर लगातार संदेह करता है, उसकी सचमुच सुनी नहीं जाती। जिस मनुष्य के सीने में दो हृदय हैं, विश्वास और संदेह, जिसके भीतर कोई ठहराव नहीं, वह इस खतरे में पड़ता है कि उसके सब मार्ग अस्थिर हों। उसकी प्रार्थना नहीं सुनी जाएगी। छोटे-से-छोटे संदेह का भी सामना करो, जो तुम्हारे विश्वास को खोखला करता है और बढ़कर एक दानव बन सकता है, जो अंत में तुम्हें हरा दे।

तुम में से जो गरीब और दीन भाई-बहन हैं, वे मसीहा यीशु में अपने ऊँचे पद पर घमण्ड करें। धनी और संपन्न भाई-बहनों को इस बात पर घमण्ड करना चाहिए कि उनके धन का अंततः कोई मूल्य नहीं। इस कारण वे गरीबों से ऊँचे या अधिक मूल्यवान नहीं हैं। चित्र की भाषा में धनी (गरीबों की तरह) उस फूल के समान हैं जो उगते सूरज और उसके बाद की गर्म हवा से मुरझा जाता है – घास की तरह। फूल मुरझा गया और उसकी पंखुड़ियाँ झड़ गई। उसकी सुंदरता जाती रही। इसी तरह धनी लोग और उनकी सफलताएँ मुरझा जाएँगी। अचानक वह सब कुछ, जो महत्वपूर्ण लगता था, समाप्त हो जाता है।

मैं एक बार फिर आरंभ की बात पर लौटता हूँ। धन्य हैं वे सब जो अपने विश्वास की परीक्षा और परख में दृढ़ रहते हैं और धीरज धरते हैं। क्योंकि धैर्य से सहने और डटे रहने के बाद अनन्त जीवन आता है। यही विश्वास में समर्पण का विजय-मुकुट है। यह विजय-मुकुट उन सब को मिलेगा जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं! उन्हें, जो कठिनाइयों में भी परमेश्वर को थामे रहे और उसके प्रेम पर संदेह नहीं किया।

जब तुम पर परीक्षाएँ आती हैं, तो वह पहले से ही बुराई की ओर ले जाने वाला प्रलोभन नहीं है। चाहे तुम्हें शायद ऐसा ही लगे। पर बुराई के द्वारा **प्रलोभन** भी होता है। फिर भी, जब किसी को बुराई के लिए लुभाया या भटकाया जाए, तो उसे यह दावा नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर उसकी परीक्षा कर रहा है। प्रलोभन विश्वास में परखे जाने से बिलकुल अलग बात है। क्योंकि परमेश्वर न तो बुराई से परखा जा सकता है और न बुराई की ओर भटकाया जा सकता है। इसलिए वह स्वयं भी कभी किसी को बुरा काम करने के लिए न भटकाएगा और न उकसाएगा।

जब किसी की परीक्षा होती है, तो वह अपनी ही वासनापूर्ण अभिलाषा से उकसाया जाता है और बुराई की ओर भटकाया जाता है। उस मछली की तरह खिंच जाता है जिसने चारा निगल लिया हो और अब कौंटे में फँसी लटकी हो। जब हम अभिलाषा के आगे झुक जाते हैं, तब पाप जन्म की तरह संसार में आता है। फिर जब पाप पूरी तरह पक जाता है, मानो बड़ा हो जाता है, तो वह मृत्यु को जन्म देता है। जो पाप पकता है – खरपतवार की तरह उखाड़ फेंके जाने के बजाय – वह मानो अनिवार्य रूप से आत्मिक मृत्यु की ओर ले जाता है। इसी जीवन में, और निश्चय ही अनन्तकाल में। परमेश्वर के साथ सहभागिता टूट जाती है। समय में भी और अनन्त में भी! जो पाप बोता है, वह पाप और मृत्यु काटेगा। सिवाय इसके कि यह चक्र परमेश्वर के अनुग्रह से तोड़ दिया जाए। जब हम पाप की ओर ले जाने वाली अपनी अभिलाषाओं के आगे झुकते हैं, तो उसके ज़िम्मेदार हम हैं। अभिलाषा और लालसा को देखना और अनुभव करना अभी पाप नहीं है। पर अभिलाषा के आगे झुक जाने का अर्थ है पाप को खुली छूट दे देना। यदि हम उसे नहीं मारेंगे, तो वह हमें मार डालेगा।

कोई धोखा न खाए! हर अच्छा **वरदान** और हर सिद्धि दान सदा ऊपर से उतरता है। हम मनुष्यों से नहीं। चाहे ऐसा दिखाई दे। वह परमेश्वर से आता है, ज्योतियों के पिता से, जिसने आकाश के तारों को रचा। उसका स्वभाव, उसकी विश्वासयोग्यता नहीं बदलती। तारों में परिवर्तन होते हैं, पर उसमें कभी नहीं। यह उसकी इस इच्छा पर भी लागू होता है कि वह हमें बुराई की ओर भटकाने के बजाय बुद्धि दे। उसका स्वभाव,

उसकी विश्वासयोग्यता और प्रेम अपरिवर्तनीय, स्पष्ट और अडिग है। संदेह करने वालों की तरह बँटा हुआ नहीं।

उसका सबसे बड़ा दान यह है कि उसने सुसमाचार के सत्य के वचन के द्वारा हमें **नया जन्म** दिया है। वह स्वाभाविक जन्म नहीं, जो उसने सृष्टिकर्ता के रूप में हमें दिया, बल्कि ऊपर से, स्वर्ग से, उद्धार के लिए हमारा नया जन्म, हमें उसकी सृष्टि का पहला फल बनाता है। एक ऐसा पहला फल, जो उस सारे नए किए जाने की शुरुआत की गवाही देता है, जो शीघ्र आने वाला है।

इसलिए, प्रिय भाइयो और बहनो, हर कोई **सुनने** के लिए सदा तत्पर – और **बोलने** में धीमा हो। विशेषकर क्रोध करने में धीमा। चाहे कोई बात तुम्हें चिढ़ाए या तुम अपमानित और आहत अनुभव करो। अचानक, तीखा और बिना सोचे-समझे किया गया क्रोध आपसी स्थिति में परमेश्वर की धार्मिकता नहीं लाता। वह बात को और बिगाड़ देता है। मनुष्य का क्रोध कभी परमेश्वर की धार्मिकता उत्पन्न नहीं करता। कभी नहीं। इसके बजाय, हर उस बात से दृढ़ता और स्थायी रूप से अलग हो जाओ जो क्रोध के विस्फोट तक ले जा सकती है – जैसे: नीचता, दुष्ट मनोवृत्ति और बुराई का सारा उफान। तुम यह कैसे कर सकते हो? नम्र मनोभाव से परमेश्वर के वचन और उसकी शिक्षा को ग्रहण करो। इस वचन को, जो नए जन्म के साथ तुम में डीएनए की तरह बोया गया है, बढ़ने दो। और तुम्हें बदलने दो। यह वचन तुम्हारा जीवन बदल सकता है। इसके लिए इसमें सामर्थ्य है! और इसमें यह सामर्थ्य है कि हमें आने वाला जीवन दे। क्योंकि यही वचन है जो, जब यीशु फिर आएगा, तुम्हें अनन्त जीवन के लिए बचाता है।

मैं इसके सिवा और कुछ नहीं कहता: **वचन पर चलने वाले** बनो। वचन इसलिए दिया गया है कि उस पर चला जाए। केवल सुना ही न जाए। जो केवल सुनता है, पर उस पर नहीं चलता, वह स्वयं से झूठ बोलता है। यह ऐसा है मानो उसने दर्पण में देखा और जो देखा, उसे तुरंत भूल गया। मानो उसने उसमें झाँका ही न हो। उसने देखा कि उसे क्या बदलना चाहिए, पर उदासीनता से भूल गया, मानो कुछ हुआ ही न हो।

पर जो नियमित रूप से स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था में, मसीह की व्यवस्था में, ध्यान से झाँकता है, और यह नहीं भूलता कि वह कौन है, और साथ ही वह पूरा करता है जो उसने सुना है, वह अपने कामों में परमेश्वर से आशीष पाता है। वह स्वतंत्र किया गया है कि वह करे जो परमेश्वर चाहता है। उसे अब क्रोधित होने की आवश्यकता नहीं, बल्कि अब वह परमेश्वर की धार्मिकता को प्रकट करता है, इस तरह कि वह करता है जो परमेश्वर को भाता है।

यदि कोई अपने विषय में सोचता है कि वह परमेश्वर की सेवा करता है और स्वतंत्रता की व्यवस्था की शिक्षाओं पर चलता है, पर अपनी बोली पर उसका नियंत्रण नहीं, तो उसकी आराधना व्यर्थ है।

हमारे स्वर्गीय पिता के लिए सच्ची, निःस्वार्थ **आराधना** का अर्थ है: विधवाओं और अनाथों को न भूलना, बल्कि उनसे मिलने जाना और उनकी दुःखभरी और जीवन को संकट में डालने वाली स्थिति में उनका साथ

देना। सच्ची आराधना सब असहायों और बेघरों की सहायता करती है, क्योंकि यही परमेश्वर के हृदय के अनुरूप है।

इसका अर्थ यह भी है कि संसार की तरह व्यवहार न करें, जिसे परमेश्वर की शिक्षाओं की कोई परवाह नहीं, जो विधवाओं और अनाथों की उपेक्षा करता है; संसार की सोच और जीवन-शैली को न अपनाएँ, बल्कि उसे उतार फेंकें और जान-बूझकर अलग हों। जैसा परमेश्वर चाहता है।

अध्याय 2

मेरे भाइयो और बहनो! हमारे प्रभु यीशु मसीह पर, जो परमेश्वर की सारी महिमा का प्रभु है, विश्वास को **पक्षपात के बिना** व्यवहार में लाओ। उसके सामने हम सब केवल बराबर ही हो सकते हैं!

कल्पना करो, तुम्हारे आराधनालय में कोई भड़कीले कपड़े और मोटी सोने की अंगूठी पहने आता है। उसी समय एक गरीब भी भीतर आता है – मैले वस्त्र या काफ़ी फटे-पुराने कपड़ों में। तब तुम बाहरी रूप को देखते हो और कहते हो: “आइए, यहाँ आराम से बैठिए।” पर गरीब से कहते हो: “वहाँ पीछे खड़ा रह” – या “यहाँ नीचे मेरे पाँवों की चौकी के पास बैठ।” क्या तुम सचमुच समझते हो कि यीशु ऐसा करता? क्या यह विरोधाभास से भी बढ़कर नहीं है? क्या तुमने यहाँ बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया नहीं की और ऐसा भेद नहीं किया जो है ही नहीं? ऐसा भी लगता है कि तुम स्वयं को न्यायी बना बैठे हो। और ऊपर से अपने लाभ के लिए कपटपूर्ण विचारों के साथ।

ध्यान से सुनो, मेरे प्रिय भाइयो और बहनो: क्या परमेश्वर ने संसार के **गरीबों** को ही नहीं चुना, कि वे विश्वास के द्वारा **धनी** हों? हाँ, कि उन्हें अपने आने वाले राज्य का वारिस बनाए? कम से कम उसने यह उन सब से प्रतिज्ञा की है: गरीबों से भी और धनियों से भी, जो हृदय से उससे प्रेम करते हैं।

पर तुमने गरीब का तिरस्कार किया और उसका अनादर किया। क्या दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है कि धनी ही तुम पर अत्याचार करते हैं और तुम्हें दबाए रखते हैं? और जहाँ संभव हो, तुम्हें अदालतों में घसीट ले जाते हैं? क्या वे इस व्यवहार के द्वारा खुले आम हमारे प्रभु यीशु मसीह के उस नाम की निंदा नहीं करते, जो बपतिस्मे में तुम पर पुकारा गया है?

उन सब के लिए, जो इस नाम को मानते हैं, राजाओं के राजा को, उसकी **राजसी व्यवस्था** ही लागू होनी चाहिए: तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। **इसे** पूरा करना अच्छा और उचित है। पर यदि तुम व्यक्ति को बाहरी रूप से आँकते हो और उसकी संपत्ति के अनुसार उसका मूल्य लगाते हो, तो तुम पाप करते हो। व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है।

यदि तुम समझते हो कि इस तरह तुम व्यवस्था का पालन करते हो, तो यह भूल है। क्योंकि यदि तुम व्यवस्था की केवल एक आज्ञा में ठोकर खाते हो, तो तुमने पूरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है। क्योंकि

जिसने कहा: “तू व्यभिचार न करना,” उसी ने यह भी कहा: “तू हत्या न करना।” यदि तू व्यभिचार नहीं करता, पर हत्या करता है, तो तू व्यवस्था का उल्लंघन करने वाला बन गया है।

इसलिए ऐसे लोगों की तरह बोलो और व्यवहार करो, जिनका हर समय **स्वतंत्रता की व्यवस्था** के द्वारा न्याय होता है। हम स्वतंत्र किए गए हैं! पर इसका अर्थ है: प्रेम करने के लिए स्वतंत्र। जीवन के अंत में परमेश्वर का बिना दया का न्याय उन सब पर होगा जिन्होंने गरीबों और कमजोरों, विधवाओं और अनाथों के साथ निर्दयता से व्यवहार किया है। दया न्याय पर जय पाती है। उसे किसी भी दंड से डरने की आवश्यकता नहीं। हाँ, उसे किसी न्याय की आवश्यकता ही नहीं। यदि सब दयालु होते, तो किसी न्याय की आवश्यकता न होती।

मेरे प्रिय भाइयो और बहनो, इससे क्या लाभ, यदि कोई दावा करे कि उसे हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास है, पर उसके पास ऐसे **कर्म** नहीं जो उस विश्वास की गवाही दें? ऐसा **विश्वास** उसे कैसे बचा सकता है?

यदि कोई भाई या बहन हो, ठिठुरता हुआ, भूखा और प्रतिदिन के खाने-पीने के बिना, और तुम कहो: शान्ति से जाओ। गर्म रहो और पेट भरकर खाओ! और तुम ऐसे लोगों को आवश्यक वस्तुएँ न दो – तो इसका क्या लाभ या मूल्य है? ऐसे व्यक्ति का विश्वास, जो इतनी निर्दयता से व्यवहार करता है, और दया के कोई काम नहीं करता, मरा हुआ है।

कोई इस व्यक्ति से, जो कर्मों के बिना अपने विश्वास पर भरोसा करता है, कह सकता है: तेरे पास विश्वास है और मेरे पास कर्म हैं। अपना विश्वास मुझे कर्मों के बिना दिखा! मैं तेरे विश्वास को किस बात से पहचानूँ? मैं अपना विश्वास तुझे अपने कर्मों से दिखाऊँगा। तेरा विश्वास केवल इतना है कि परमेश्वर है। यह अच्छा है। पर सोच: दुष्टात्माएँ, बुरी आत्माएँ, भी यह विश्वास करती हैं। फिर भी वे अपनी दुष्टता के कारण अपने सृष्टिकर्ता के सामने थरथराती हैं। उनमें भी विश्वास का कुछ अंश दिखाई देता है। पर इस विश्वास के आधार पर उनका उद्धार नहीं होगा, ठीक वैसे ही जैसे तेरा नहीं होगा। क्योंकि कर्मों के बिना तेरा विश्वास मरा हुआ, निर्जीव है।

तुम्हें अपने विश्वास पर अवश्य सोचना चाहिए, हे बिना सोचे-समझे चलने वाले मनुष्य। ज़रा अब्राहम को देखो। क्या वह कर्मों से धर्मी नहीं ठहराया गया, क्योंकि वह इसहाक को बलिदान करने के लिए तैयार था? इससे तुम देख सकते हो कि उसका विश्वास और उसके कर्म साथ-साथ चले। हाँ, उसके कर्मों ने उसके विश्वास पर मुहर लगा दी। उन्होंने उसके विश्वास को पूरा कर दिया। इस तरह उत्पत्ति 15 का पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हुआ: “अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।” वह परमेश्वर का मित्र तक कहलाया।

इससे तुम देखते हो कि मनुष्य अपने उन कर्मों के आधार पर बचाया और धर्मी ठहराया जाता है, जो जीवित और बचाने वाले विश्वास को प्रतिबिंबित करते हैं। केवल विश्वास से, यदि वह मरा हुआ और दया के

कर्मों से रहित, हाँ, निष्क्रिय है, कोई मनुष्य नहीं बचाया जाता।

क्या इसी तरह राहाब वेश्या भी कर्मों से धर्मी ठहराई और बचाई नहीं गई, जो यरीहो की शहरपनाह में रहती थी, जब इस्राएलियों ने कनान को जीता? क्योंकि उसने उन दोनों भेदियों को ठहराया, छिपाया और उन्हें दूसरे मार्ग से विदा कर दिया था।

इस तुलना पर भी विचार करो: जैसे मनुष्य की देह आत्मा-प्राण के बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्मों के बिना मरा हुआ है।

अध्याय 3

कलीसिया में **शिक्षक** या प्रचारक बनने को सबसे बड़ी सेवा मत समझो। सबकी नज़रों में रहने या विशेष ध्यान पाने की इच्छा लुभाने वाली होती है। हमें इसमें क्यों नहीं पड़ना चाहिए? वक्ता होना आकर्षक है! जो सब दूसरों को सिखाते और शिक्षा देते हैं, परमेश्वर एक दिन उनके शब्दों के अनुसार उन्हें परखेगा और उनका न्याय करेगा। ठीक इसलिए कि वे दूसरों से अधिक जानते हैं, उन पर यह बड़ी ज़िम्मेदारी है कि वे इसे प्रतिदिन के जीवन में भी दिखाएँ। और यह तो बहुत बार सफल नहीं होता। क्योंकि हम सब बहुत बार ठोकर खाते और भूलें करते हैं। हाँ, हम बार-बार पाप करते हैं। विशेषकर अपने शब्दों से।

जो बोलने में, उन सब बहुत-से शब्दों में जो हमारे होंठों से निकलते हैं, कोई भूल नहीं करता, वह सचमुच अपनी पूरी देह पर नियंत्रण रखने और उसे लगाम में रखने में समर्थ होगा। घोड़ों से इसकी तुलना की जा सकती है। हम उनके मुँह में लगाम डालते हैं। और इससे उनकी पूरी देह को मोड़ते हैं। इस तरह वे हमारी बात मानते हैं। या समुद्र के बड़े जहाज़ों के बारे में सोचो। उन्हें तेज़ और प्रचंड हवाएँ आगे धकेलती हैं। फिर भी एक छोटी-सी पतवार से वे मोड़े जाते हैं।

इसी तरह जीभ भी एक छोटा-सा अंग है, जो फिर भी बड़ी-बड़ी बातों की डींग मारती है। उदाहरण के लिए, एक छोटी-सी आग एक बड़े जंगल को जला सकती है। हमारी जीभ के साथ भी ऐसा ही है। वह अधर्म से भरे एक संसार को खुला छोड़ सकती है। उसने सारे संसार को सुलगा दिया है और लगातार आग भड़काती रहती है।

जीभ ही है जो पूरी देह को कलंकित करती है और बहुत विनाश करती है। बुरे, कपटपूर्ण, निंदा भरे और झूठे शब्दों के द्वारा वह संसार में लगातार आग लगाती रहती है। वह स्वयं नरक से आग पकड़ती है, जो सारी बुराई का सार है।

थल पर, आकाश में या जल में रहने वाले सब जंगली पशु मनुष्यों के वश में किए जा चुके हैं। पर **जीभ** को कोई मनुष्य अपने नियंत्रण में नहीं ला सकता। कोई मनुष्य जीभ पर इस तरह वश नहीं कर सकता कि उसके होंठों से कभी कोई गलत या अनुचित शब्द न निकल जाए। वह एक ऐसी बुराई है जिसे पालतू नहीं बनाया जा सकता, प्राणघातक विष से भरी हुई।

जीभ से हम परमेश्वर और पिता की स्तुति करते हैं। उसी जीभ से हम उस मनुष्य को शाप देते हैं जो परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया है। एक ही मुँह से स्तुति और शाप दोनों निकलते हैं। इसे कौन अच्छा कह सकता है? क्या यह संभव है कि एक ही सोते से एक साथ कड़वा और मीठा जल फूट निकले? या क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या दाखलता पर अंजीर लगते हैं?

तुम में **बुद्धिमान** और समझदार कौन है? केवल वे, जो इसे अपने जीवन में भी दिखाते हैं। अर्थात् अच्छे आचरण में और उस नम्रता में, जो बुद्धि से आती है। पर यदि तुम्हारे हृदयों में कड़वी जलन और झगड़ालूपन है, तो घमण्ड करने का कोई कारण नहीं, मानो तुम बुद्धिमान और समझदार हो। तुम स्वयं से झूठ बोलते हो, क्योंकि तुम्हारा जीवन इसका उल्टा है।

यह ज्ञान, जो तुम्हारे जीवन को निर्धारित करता और चलाता है, ऊपर से, हमारे परमेश्वर और पिता की ओर से, नहीं आता। यह **नीचे से** आने वाला ज्ञान है, पृथ्वी का। एक सांसारिक, शारीरिक – इससे भी बुरा – एक शैतानी ज्ञान। सारा झगड़ालूपन और सारी जलन नीचे से आती है और नष्ट करती है। जहाँ वे फैलती हैं, वहाँ गड़बड़ी होती है और हर बुरे काम की आशंका रहती है।

ऊपर से आने वाला ज्ञान, स्वर्ग से, परमेश्वर से, बिलकुल भिन्न है। सबसे पहले वह परमेश्वर के समान पूरी तरह शुद्ध है। फिर वह मिलनसार है। कोमल। सिखाए जाने को तैयार। दया से और मनुष्यों के लिए बहुत-सी अच्छी बातों से भरा हुआ, पक्षपात रहित और कपट रहित। यह सब परमेश्वर से आता है। वही हमारा आदर्श है।

जो शान्ति बोता है और मेल कराता है, वह शान्ति काटेगा, क्योंकि यही धार्मिकता के अनुरूप है।

अध्याय 4

तुम क्या सोचते हो: तुम्हारे बीच लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आते हैं? वे कहीं से भी नहीं आ जाते। या सदा दूसरों के कारण, तुम्हारे कारण नहीं। इनका आधार और कारण तुम स्वयं हो। क्योंकि ये संपत्ति और धन की तुम्हारी अभिलाषाओं से आते हैं। ये अभिलाषाएँ तुम्हारे भीतर युद्ध करती हैं और बार-बार भड़क उठती हैं। पर: तुम लालसा करते हो और कुछ नहीं पाते। तुम हत्या करते हो और जलते हो और फिर भी कुछ प्राप्त नहीं कर पाते। तुम लगातार झगड़ते हो, योजनाएँ बनाते हो और अपने पड़ोसियों के विरुद्ध युद्ध करते हो। गरीबों के विरुद्ध भी और धनियों के विरुद्ध भी। फिर भी तुम्हें वह नहीं मिलता जो तुम चाहते हो। तुम्हारे पास कुछ नहीं, क्योंकि तुम स्वयं को सब वरदानों के देने वाले को नहीं सौंपते। तुम सब कुछ अपने हाथ में लेना चाहते हो। और जब तुम परमेश्वर से माँगते हो, तो तुम्हें बस कुछ नहीं मिलता। क्योंकि तुम स्वार्थी उद्देश्य से प्रार्थना करते हो, कि कुछ ऐसा पाओ जिसे तुम अपनी वासनाओं में स्वार्थ से अपने पास रखना और स्वयं भोगना चाहते हो।

हे व्यभिचारियो और व्यभिचारिणियो: क्या तुम नहीं जानते कि संसार से मित्रता, अर्थात् ऐसे समाज से मित्रता जो परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं को ठुकराता है, परमेश्वर से शत्रुता है? जो संसार का मित्र होना

चाहता है, चाहे किसी भी बात में, वह उस क्षण परमेश्वर के शत्रु की तरह व्यवहार करता है। यह ऐसा है मानो उसने पक्ष बदल लिया हो। जो ऐसे लोगों और विचारों के साथ जुड़ता है जो परमेश्वर और उसकी अच्छी आज्ञाओं के विरुद्ध हैं, वह उस बात में स्वयं को संसार का मित्र बना लेता है। या क्या तुम सचमुच समझते हो कि पवित्रशास्त्र व्यर्थ, बस यूँ ही और बिना कारण बोलता है? वह आत्मा, जो हम में वास करता है, जलन के साथ हमारे पूरे हृदय की लालसा करता है। वह हमें **पूरा** चाहता है। वह हमारे स्नेह को किसी और चीज़ के साथ बाँटने को तैयार नहीं। जैसे तुम पुरुष अपनी पत्नियों को दूसरे पुरुषों के साथ बाँटने को कभी तैयार नहीं होते, वैसे ही परमेश्वर हमारी निष्ठा को केवल आधा पाने के लिए तैयार नहीं है।

वह अविभाजित निष्ठा माँगता है। पर जो अनुग्रह वह देता है, वह उतना ही बड़ा है: परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।

इसलिए नम्रता से अपने आप को हमारे परमेश्वर के अधीन कर दो। हृदय के इसी भाव में शैतान और उसके प्रलोभनों का सामना करो। तब वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा। क्योंकि: जब परमेश्वर तुम्हारी ओर है, तो वह तुम्हारे विरुद्ध क्या कर सकता है? परमेश्वर के **निकट आओ**। उसकी ओर लौट आओ। बिना स्वार्थी उद्देश्यों के उससे माँगो। तब वह तुम्हारे निकट आएगा। तब तुम परमेश्वर के साथ सहभागिता में हो।

हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो, जिनसे तुमने अन्याय किया है। अपने हृदयों को फिर से परमेश्वर को समर्पित करो। दुचित्ते होकर जीना छोड़ो और पूरी तरह परमेश्वर को चुनो।

सचमुच गंभीर हो जाओ। परमेश्वर की ओर एक पूरी तरह से मुड़ने का अनुभव करो। अपने ऊपर विलाप करो, शोक करो और रोओ। तुम्हारी हँसी शोक में और तुम्हारा आनंद उदासी में बदल जाए। प्रभु के सामने दीन बनो और वह तुम्हें ऊँचा करेगा! बिलकुल नए सिरे से आरंभ करो और पुराने को पीछे छोड़ दो। अपना मन बदलो। पश्चाताप और मन फिराना वह समझ है जिसका भविष्य सबसे उज्ज्वल है।

भाइयो और बहनो, एक दूसरे के विरुद्ध मत बोलो। बदनामी करके एक दूसरे को बुरा मत कहो। हर वह व्यक्ति जो अपने पड़ोसी के विरुद्ध बुरा बोलता है, वह वास्तव में प्रेम की राजसी व्यवस्था के विरुद्ध भी बोलता है और उसका न्याय तक करता है। तब तू व्यवस्था पर चलने वाला नहीं, बल्कि इस ईश्वरीय व्यवस्था का न्यायी बन बैठता है। व्यवस्थाएँ तू नहीं बनाता और न तू यह तय करता है कि क्या किया जा सकता है और क्या नहीं। व्यवस्था देने वाला एक ही है, जो बचा भी सकता है और नष्ट भी कर सकता है। जब तुम प्रेम की व्यवस्था से ऊपर उठ बैठते हो, तो तुम्हारा वास्ता उसी से है। तुम कौन हो कि अपने पड़ोसी का न्याय करो और उसे दोषी ठहराओ? न्याय तो केवल व्यवस्था देने वाले का काम है।

अब तुम से एक बात, जो **व्यापार के उत्साह** से भरे हो और लाभ कमाना चाहते हो। तुम आत्मविश्वास से कहते हो: “आज या कल हम नगर में जाएँगे और अच्छा व्यापार करेंगे और पैसा कमाएँगे।” वास्तव में तुम तो जानते ही नहीं कि कल क्या होगा। क्योंकि हमारा जीवन है ही क्या? वह भाप या धुंध के समान है, जो थोड़ी देर दिखाई देती है और फिर लुप्त हो जाती है। हमारा जीवन इससे अधिक कुछ नहीं। तुम्हें एक बार

इस अनिश्चितता के प्रति सचेत हो जाना चाहिए। तुम्हारा जीवन तुम्हारे हाथ में नहीं है। अपनी योजनाओं को इस आदर्श-वाक्य के अधीन रखो: यदि प्रभु की इच्छा हो और हम जीवित रहें, तो हम यह या वह करेंगे। पर अब तुम अपनी सफलताओं की डींग मारते फिरते हो। यह डींग मारना और बढ़ा-चढ़ाकर बोलना बुरा है। तुम ऐसा दिखाते हो मानो प्रभु के बिना तुम्हें सब कुछ में सफलता मिल जाएगी। पर वही है जो तुम्हें देता है और तुम्हें वरदानों से भरता है।

यदि कोई पहचानता है कि उसे भलाई करनी चाहिए, पर नहीं करता, तो वह पाप करता है। वह भलाई छोड़ देने का पाप करता है।

अध्याय 5

अब एक बात तुम से, हे **धनवानो**, जो बिना किसी झिझक के अपना धन बढ़ाते हो – और इस तरह अपना भरोसा संपत्ति पर रखते हो: अपनी उस दुर्दशा पर रोओ और चिल्लाओ जो तुम पर आने वाली है। तुम्हारा धन सड़ जाएगा, और तुम्हारे दिखावटी वस्त्रों को कीड़े खा जाएँगे। तुम्हारे सोने और चाँदी में काई लग जाएगी। वह काई तुम पर दोष लगाएगी और आग की तरह तुम्हारे मांस को खा जाएगी।

इन अंतिम दिनों में तुम्हारे पास इससे अच्छा कोई काम नहीं कि लगातार अपना धन बढ़ाते रहो। और वह भी दूसरों की कीमत पर।

देखो! तुम्हारे मज़दूरों और दिहाड़ी करने वालों की मज़दूरी, जिसे तुमने अपने पास रख लिया और नहीं चुकाया, ऊँचे स्वर से प्रभु को पुकार रही है। निराश कटनी करने वालों की सहायता की पुकार सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुँच गई है। वहाँ वह सुनी जाती है और गंभीरता से ली जाती है।

पर तुम भोग-विलास में जीते हो। जिसकी उन्हें बहुत आवश्यकता है, उसे तुम उड़ाते और लुटाते हो। तुमने अपने आप को वध के दिन के पशुओं की तरह मोटा किया है। तुम ऐसा व्यवहार करते हो मानो हर दिन दावत का दिन हो।

और इस बीच तुमने मज़दूरों और धर्मियों को दोषी ठहराया है। अपने व्यवहार से उनकी हत्या की है। और वे, धर्मी, तुम्हारा विरोध नहीं करते। यीशु की तरह वे अपना बचाव नहीं करते। उसकी तरह वे हिंसा से दूर रहते हैं। तुम्हारे उस अन्याय के बावजूद, जो स्वर्ग तक दुहाई देता है।

हे वंचित और सताए हुए भाइयो और बहनो: प्रभु के **आगमन** तक धीरज रखो! तब, जब वह आएगा, ये बुराईयाँ और अन्याय समाप्त हो जाएँगे।

देखो, किसान भूमि की बहुमूल्य उपज की धीरज से प्रतीक्षा करता है। वह धीरज से पहली और पिछली वर्षा की बाट जोहता है। इसी तरह तुम भी धीरज रखो और डटे रहो। एक दूसरे को उत्साहित करो और अपने हृदयों को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का, हमारे मसीहा का, आगमन निकट आ गया है।

एक दूसरे पर कुड़कुड़ाओ मत, ताकि तुम पर न्याय न हो। परमेश्वर उनकी चिंता करेगा जो तुम पर अत्याचार करते हैं। **न्यायी** द्वार पर खड़ा है। ध्यान रखो कि तुम्हारा अपना व्यवहार भी न्याय के अधीन न आ जाए।

उन्हें देखो जो इस बात में आदर्श हैं कि उन्होंने दुःखों को कैसे सहा और झेला। वे भविष्यद्वक्ता, जिन्होंने प्रभु के नाम में भविष्यद्वक्ता की। देखो, हम तो उनका सम्मान करते हैं जो डटे रहे और जिन्होंने हार नहीं मानी। **अय्यूब** भी इस बात में आदर्श रहा कि सबसे बड़ी हानियों, दुःखों, शोक, रोग, संदेहों और विलापों के बावजूद कैसे डटे रहा जाए। और हार न मानी जाए। तुमने देखा है कि प्रभु ने कैसे सब कुछ पलट दिया और उसके दुःखों का अंत कर दिया। हाँ, प्रभु करुणा और दया से भरपूर है। वह तुम्हारे साथ है और तुम्हारी विपत्तियों में साथ दुःख उठाता है। इसलिए हियाव बाँधो, और प्रभु पर भरोसा रखो। उसकी बात जोहो।

पर सबसे बढ़कर, भाइयो और बहनो, जब तक अदालत में तुमसे इसकी माँग न की जाए, अपनी इच्छा से शपथ मत खाओ। बातचीत में यूँ ही शपथ मत खाओ, जब उसकी कोई आवश्यकता ही न हो। न स्वर्ग की, न पृथ्वी की। न किसी और प्रकार की शपथ। तुम्हारी हाँ बस एक भरोसेमंद हाँ हो और तुम्हारी नहीं बस एक भरोसेमंद नहीं। इस तरह लापरवाही से शपथ खाने के कारण तुम न्याय के अधीन नहीं आओगे।

क्या तुम में से कोई कठिनाइयाँ या क्लेश झेल रहा है? वह प्रार्थना में सांत्वना और सहायता खोजे। और कठिनाइयों में डटे रहने की सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करे। यदि कोई क्लेश के बावजूद प्रसन्नचित्त है, आनंद से भरा है, तो वह स्तुति के गीत गाए।

यदि तुम में कोई गंभीर रूप से **रोगी** हो, तो वह स्थानीय कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, ताकि वे उसके पास आएँ। उसके लिए प्रार्थना करने को। उस पर, उस गंभीर रोगी पर – ताकि वह स्वस्थ हो जाए। इस दौरान वे प्रभु के नाम में उस पर तेल मलें और उसे प्रतीक के रूप में नए सिरे से मसीह, अभिषिक्त, को समर्पित करें। दृढ़ भरोसे के साथ की गई **प्रार्थना** रोगी को स्वस्थ कर देगी। प्रभु उसे उठा खड़ा करेगा। यदि रोगी ने कोई ऐसा पाप किया हो जो रोग का कारण बना, तो उसे खुलकर उसे मान लेना चाहिए, ताकि उसे क्षमा मिले। हर रोग पाप के कारण नहीं होता। पर क्षमा पाने का प्रभाव देह की चंगाई से आगे बढ़कर होता है – उद्धार। जब हम एक दूसरे के विरुद्ध पाप करते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि हम एक दूसरे के सामने अपने अपराध मान लें और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें। यदि रोग इन अपराधों का परिणाम था, तो तुम चंगे हो जाओगे। एक धर्मी की प्रार्थना – केवल प्राचीनों की ही नहीं – में बड़ी सामर्थ्य है और वह सब कुछ भलाई में बदल सकती है!

पुराने समय का भविष्यद्वक्ता **एलियाह** हमारे समान ही भावनाओं और अनुभूतियों वाला मनुष्य था। उसने गंभीरता और लगन से प्रार्थना की कि वर्षा न हो। और साढ़े तीन वर्ष तक वर्षा नहीं हुई। फिर उसने दोबारा प्रार्थना की। और तब वर्षा हुई, और पृथ्वी ने फिर से अपनी उपज उपजाई।

मेरे मित्रो, यदि कोई सत्य से भटक जाता है और अपने जीवन को परमेश्वर से दूर ले जाता है, तो ऐसा व्यक्ति आत्मिक मृत्यु के मार्ग पर है। पर यदि कोई ऐसे भटके हुए विश्वासी को समझ और विश्वास तक लौटा लाने में और यीशु के साथ सहभागिता को फिर से स्थापित करने में सफल होता है, तो वह जान ले कि उसने एक मनुष्य को अनन्त मृत्यु से बचाया है। और वह उन बहुत-से पापों को ढाँप देगा, जो परमेश्वर से दूर जाने वाले मार्ग पर हुए हैं।

पतरस की पहली पत्री

- स्वर्गीय मीरास की ओर मार्ग पर
- परमेश्वर हमें शुद्ध करता और बदलता है – निरंतर
- परमेश्वर का वचन, सच्चा माँ का दूध
- अन्यायपूर्ण दुःख – मसीहियों के लिए सामान्य बात
- क्या सचमुच उनके साथ भलाई की जा सकती है जो हमें सताते हैं?
- यीशु, परमेश्वर का मेम्ना – छुड़ाने वाला और आदर्श
- नरक, मृत्यु और शैतान पर क्रूस की विजय
- यात्रा पर परदेशी के रूप में मसीही
- परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और देखभाल

पतरस की पहली पत्री

मैं पतरस, हमारे प्रभु यीशु मसीह का प्रेरित और भेजा हुआ, तुम्हें लिख रहा हूँ। तुम सब को, जो प्रवास में, तितर-बितर होकर, रहते हो। रोमी प्रान्तों में हर जगह – पुन्तुस, गलातिया, कप्पदूकिया, आसिया और बितूनिया में। तुम वहाँ परदेशियों के रूप में हो, जिनके पास नागरिकता के अधिकार नहीं हैं। फिर भी तुम्हारा एक घर है – परमेश्वर पिता के पास। वह तुम्हें तुम्हारे जीवित होने से पहले ही जानता था और तुमसे प्रेम करता था। उसने तुम्हें चुन लिया है। जैसे उस समय अपनी प्रजा इस्राएल को।

पवित्र आत्मा ने तुम्हें पवित्र लोग बना दिया है। संसार में से अलग किए गए, ताकि अब परमेश्वर की आज्ञा मानो। तुम्हें यीशु मसीह के पवित्र करने वाले और शुद्ध करने वाले लहू के नीचे लाया गया है। अब तुम पूरी तरह परमेश्वर के हो!

परमेश्वर की ओर से बहुत-सा अनुग्रह और शान्ति परमेश्वर के लिए तुम्हारे जीवन को सँभाले, भरे और चलाए!

हम अपने परमेश्वर की, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता की, स्तुति करते हैं। हम उसकी आराधना करते हैं। मिलकर। स्तुति के शब्दों और गीतों के द्वारा। उसकी बड़ी **दया** के लिए, जो हमारी ओर बढ़ी। क्योंकि उसने हमें नया जन्म दिया है। मृत्यु से जीवन में। निराशा और खालीपन से जीवित **आशा** में – मरे हुएों में से यीशु के जी उठने के द्वारा। उसने सब कुछ बदल दिया। सदा के लिए।

जी उठे हुए के द्वारा हमें एक अद्भुत भविष्य उपहार में मिला है। एक अविनाशी, कभी न खोने वाली और पवित्र **मीरास**। वह हमारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित रखी हुई है। स्वयं परमेश्वर के पास संभालकर रखी गई है। वह दिन निकट है जब हम उसे पाएँगे, ताकि सदा उसमें जीवित रहें: एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी। यही हमारी जीवित आशा है, हमारा पक्का भरोसा।

उद्धार का वह बड़ा दिन, जब मीरास बाँटी जाएगी, अभी आया नहीं है। हम उसकी ओर मार्ग पर हैं। परमेश्वर स्वयं हमारी रक्षा करता है, हमें सँभालता है और लक्ष्य तक ले जाता है। और इस कभी-कभी कठिन मार्ग पर वह हमारे विश्वास को दृढ़ करता है। शीघ्र ही उद्धार प्रकट होगा। हमारे लिए – और सब मनुष्यों के लिए। तब, जब हम विश्वास से आगे बढ़कर आँखों से देखेंगे।

तब बड़ा आनंद होगा। ऐसा जैसा पहले कभी नहीं हुआ। चाहे आज हम परीक्षाओं और कठिनाइयों में जीते हैं। वे हमारे विश्वास को दृढ़ करने के लिए आवश्यक हैं। चाहे वे थोड़े समय के लिए उदासी और निराशा भी ला सकती हैं। पर इनके द्वारा तुम्हारा विश्वास पक्का होता है और उस महिमामय दिन यीशु का आदर होगा, जब वह फिर आएगा। हमारे विश्वास की कठोर परख और खरा उतरना, हाँ उसकी आग जैसी, तीव्र **शुद्धि**, जिसे हम सताव और बहिष्कार के द्वारा अनुभव करते हैं, सोना गलाने से तुलना की जा सकती है।

धधकती भट्टी से शुद्ध और चमकता हुआ सोना निकलता है। इसी तरह उस महिमामय दिन तुम्हारा शुद्ध किया हुआ विश्वास भी चमकेगा और यीशु के साथ उसका उत्सव मनाया जाएगा।

तुम उससे सब कुछ से बढ़कर प्रेम करते हो। और यह तब भी, जबकि तुमने उसे कभी देखा नहीं। मुझसे भिन्न, जो तीन वर्ष उसके साथ चला और जिसने जी उठे हुए को भी देखा। तुम उस पर विश्वास करते हो और उसके प्रति विश्वासयोग्य हो – यद्यपि तुम उसे देखते नहीं। इसमें तुम बड़ा और गहरा आनंद पाते और अनुभव करते हो। इतना बड़ा आनंद, जो केवल स्वर्ग से ही आ सकता है।

हाँ, हम बड़ी लालसा से उद्धार के उस बड़े दिन की ओर देखते हैं। जब वह हमें हमारे सांसारिक, परीक्षाओं से घिरे और अभी नश्वर अस्तित्व से निकाल लेगा। जब यीशु फिर आएगा। इसी उद्धार के बारे में पुराने भविष्यद्वक्ता भी सोचते रहे। उन्होंने खोज की और छानबीन की, जब उन्होंने भविष्यद्वक्ता करके तुम्हारे लिए परमेश्वर के इस अनुग्रह की आशा दिलाई। उन्होंने मसीह के आत्मा के द्वारा इसे पहले से बताया। वे जानना चाहते थे कि यह कब और कैसे होगा। उन्होंने मसीहा के दुःखों की गवाही दी। पर उसके क्रूस के दुःखों के बाद की महिमाओं की भी।

उन्होंने उस समय ही पहचान लिया था: हम स्वयं ये घटनाएँ नहीं देखेंगे। पर हम इन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए लिख रहे हैं। अब तुम्हें **सुसमाचार**, शुभ संदेश, सुनाया गया है। जिन्होंने तुम्हें इसकी गवाही दी, उन्होंने यह पुराने भविष्यद्वक्ताओं की तरह पवित्र आत्मा के द्वारा किया। उसे सारे संसार में सुसमाचार के प्रचार के लिए स्वर्ग से भेजा गया है। पृथ्वी पर खोए हुए मनुष्यों के लिए एक स्वर्गीय संदेश! इस संदेश के उद्धार और अनुग्रह का धन इतना बड़ा और महिमामय है कि स्वर्गदूत भी – यद्यपि यह उनसे संबंधित ही नहीं – इसमें असाधारण रुचि रखते हैं। वे इस भेद में झाँकने का प्रयत्न करते हैं, जैसे पुराने भविष्यद्वक्ताओं ने भी किया था। इसलिए इस बात के प्रति सचेत रहो कि तुम अनुग्रह के कितने महत्वपूर्ण समय में जी रहे हो, जब तुम ऐसी बहुमूल्य बातें सुनते और उन पर विश्वास करते हो, जो यीशु के साथ ही आई हैं।

उन लोगों के रूप में, जिनके पास उद्धार का बहुमूल्य सुसमाचार है, अपनी सोच को जगाओ और एकाग्र करो! जैसे उस समय इस्राएल मिस्र छोड़ने के लिए तैयार हुआ, वैसे ही तुम भी यीशु के आने के लिए तैयार रहो। सचेत रहो। संयमी रहो। सताव और शत्रुता के दबाव से अपने विचारों और भावनाओं में उलझन में मत पड़ो। अपनी आशा पूरी तरह उस अनुग्रह पर रखो, जो यीशु के फिर आने पर स्वर्ग से तुम्हारे पास लाया जाएगा।

अब तुम परमेश्वर की सन्तान हो। उसकी आज्ञा मानने वाले। परमेश्वर के बिना पुराने जीवन की स्वार्थी अभिलाषाएँ अब तुम्हारे जीवन को निर्धारित नहीं करतीं। उस समय तुम अज्ञानता में जीते थे। पर अब परमेश्वर ने तुम्हें वहाँ से निकालकर अपने पास बुला लिया है। क्योंकि वह **पवित्र** है, इसलिए तुम भी पवित्र बनो! सारी सोच, बोलचाल और काम में पवित्र। लैव्यव्यवस्था 11 में उसकी प्रजा से कहा गया लिखा है: “पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।” यही तुम्हारे जीवन का आदर्श-वाक्य हो। बस भिन्न बनो: परमेश्वर का अनुकरण करने वाले।

बिना नागरिकता के परदेशियों के रूप में परमेश्वर के भय में जीओ। जिसे हम अपना पिता कहकर पुकार सकते हैं, वह एक ऐसा न्यायी है जिसे घूस नहीं दी जा सकती और जो पक्षपात नहीं करता। वह किसी का मुँह देखे बिना परखता और न्याय करता है। परमेश्वर के न्याय में दास और राजा बराबर हैं। एक दिन परमेश्वर अपने मापदंडों के अनुसार कर्मों को परखेगा और आँकेगा, हमारी पदवी को नहीं।

साथ ही हम यह जान सकते हैं और हमें जानना भी चाहिए कि हम अपने उस पुराने और व्यर्थ चालचलन से **छुड़ाए** गए हैं, जो हमें अपने माता-पिता से मिला था। छुटकारे की कीमत नाशवान सोने और चाँदी से नहीं चुकाई गई। क्योंकि तब छुटकारा स्वयं भी नाशवान हो सकता था। नहीं, हम यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू से छुड़ाए गए हैं। उसने एक शुद्ध और सिद्ध बलिदान के मेम्ने की तरह अपने आप को मृत्यु के लिए दे दिया।

पृथ्वी के होने से पहले ही परमेश्वर ने योजना बनाई थी कि वह मनुष्य बनकर आए। पर अब जाकर, समयों के अंत में, वह हमारे लिए आया है। उसी के द्वारा तुम परमेश्वर पर विश्वास करते हो। क्योंकि वह हमें उस परमेश्वर के पास ले आया है, जिसने उसे मरे हुआओं में से जिलाया और उसे अपने सिंहासन पर, अपने दाहिने हाथ, महिमा दी। इसलिए हम अपना विश्वास और सारी आशा इसी परमेश्वर पर रखते हैं। और किसी पर नहीं।

तुम्हारे हृदय परमेश्वर के द्वारा शुद्ध किए गए हैं। उसके लिए समर्पित। क्योंकि तुम उसके सत्य की, तुम्हारे लिए उसके संदेश की, आज्ञा मानते हो। केवल इसी कारण तुम प्रेम भी कर सकते हो। बिना कपट के। एक दूसरे से तन-मन से प्रेम करो। लगातार। उस प्रेम से जो दूसरे की ओर हाथ बढ़ाता और उसकी ओर मुड़ता है। शुद्ध हृदय से। बिना गलत उद्देश्यों के। और बदले में कुछ पाने की आशा के बिना।

तुम्हारा नया जन्म हुआ है। यह मैंने तुमसे आरंभ में ही कह दिया था। नाशवान बीज से नहीं, जो फिर से केवल नाशवान ही उत्पन्न करता। नहीं, तुम्हारा नया जन्म अविनाशी बीज से हुआ है। यह बीज परमेश्वर का जीवित और अविनाशी **वचन** है। यशायाह 40 में लिखा है: “सब मनुष्य घास के समान हैं। उनकी महिमा फूल के समान है। घास सूख जाती और मुरझा जाती है। फूल झड़ जाता और मिट जाता है। पर प्रभु का वचन सदा बना रहता है।” परमेश्वर का यही जीवित वचन सुसमाचार में तुम्हें सुनाया गया है। परमेश्वर के इस बोले हुए वचन में तुम में नया जीवन और विश्वास उत्पन्न करने की सृजनात्मक सामर्थ्य और अधिकार है। इसी वचन ने **नए जन्म** के द्वारा हमें पूरी तरह बदल दिया है। इसलिए आज हम पहले से बिल्कुल भिन्न जीवन जी सकते हैं: अब हम अनन्त जीवन जीते हैं!

अध्याय 2

फिर भी हमारे पुराने अस्तित्व के बुरे विचार, काम और शब्द अपने आप गायब नहीं हो गए हैं। हमसे यह माँग है कि हम उन्हें खरपतवार की तरह अपने जीवन से उखाड़ फेंके, इससे पहले कि वे सब कुछ ढाँप लें। इनमें बैरभाव और बुरी चालें, कपट और भीतर से खा जाने वाली डाह आती हैं। पर दूसरों की पीठ पीछे बुराई करना और बदनामी करना भी।

इसके बजाय – नए जन्मे बच्चों की तरह – आत्मिक और निर्मल माँ के दूध के **लालसी** बनो। वह परमेश्वर का वचन है। केवल इसी तरह तुम बढ़ सकते हो! लक्ष्य की ओर, उद्धार की ओर, जब यीशु फिर आएगा। तुमने तो चख लिया है कि प्रभु कृपालु है। इसलिए वचन से और भी अधिक पीओ।

वह, यीशु, मसीहा, जीवित **पत्थर** है। उसी के पास हम आते हैं। लगातार हम अपने आप को उसकी ओर लगाए रखते हैं। मनुष्यों ने उसे ठुकरा दिया – आज तक। पर परमेश्वर के पास – और केवल यही मायने रखता है – वह चुना हुआ और बहुमूल्य है।

हम भी जीवित पत्थरों के समान हैं। हमें एक आत्मिक **घर** के रूप में, परमेश्वर के मन्दिर के रूप में, बनाया जा रहा है, जहाँ परमेश्वर का आत्मा वास करता है। हमें पवित्र **याजक** ठहराया गया है, ताकि परमेश्वर को आत्मिक बलिदान चढ़ाएँ। वे परमेश्वर को केवल इसलिए भा सकते हैं, क्योंकि हम उन्हें यीशु के द्वारा चढ़ाते हैं। सबसे पहले हमारा जीवन एक बलिदान हो: पड़ोसी के लिए भलाई करना। पर साथ मिलकर धन्यवाद, स्तुति और आराधना के शब्दों और गीतों से परमेश्वर का आदर करना भी।

यशायाह 28 में लिखा है: “देखो, मैं सिय्योन में कोने का एक पत्थर रखता हूँ, एक चुना हुआ बहुमूल्य पत्थर। जो उस पर भरोसा रखेगा, वह नाश नहीं होगा।” सारी बहुमूल्यता तुम्हें उपहार में दी गई है, क्योंकि तुम उस पर भरोसा रखते हो। उनके साथ बिलकुल भिन्न है, जो उसे ठुकराते हैं, जो उस पर भरोसा नहीं रखते। यशायाह 8 कहता है: “यह पत्थर, जिसे राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया और बेकार समझा, घर का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया है। जो सब कुछ को जोड़े रखता है। पर उन सब के लिए जो विश्वास नहीं करते, ठोकर का पत्थर, ठेस और ठोकर का कारण।” जब न्याय आएगा, तब वे ठोकर खाकर गिरेंगे। वे सब, जो इस तरह मसीहा के विरुद्ध खड़े होते हैं, टिक नहीं पाएँगे।

पर देखो, परमेश्वर ने तुम्हें किस बात के लिए चुना है। हर एक को अकेले-अकेले नहीं, बल्कि साथ मिलकर। एक सहभागिता के रूप में। हमें बड़े विशेषाधिकार मिले हैं, जो हमारे पास केवल मिलकर हैं और जिनका अनुभव हम केवल मिलकर करते हैं। क्योंकि तुम उसका चुना हुआ **परिवार** हो! उससे उत्पन्न और नए सिरे से जन्मे। सब समयों से पहले परमेश्वर ने तुम्हें चाहा।

तुम एक **राजसी** याजक-परिवार बन गए हो। यद्यपि न तुम्हारा वंश राजसी है और न याजकीय। तुम राजाओं के राजा की सेवा करते हो।

एक पवित्र जाति। अपने स्वर्गीय राजा यीशु के साथ। एक आत्मिक प्रजा, जिसमें वंश के कारण कोई सम्मिलित नहीं होता। और जो कोई भौगोलिक सीमाएँ भी नहीं जानती।

एक प्रजा, जो केवल परमेश्वर की निज संपत्ति है। वह और किसी की नहीं। संसार की कोई शक्ति, न अदृश्य संसार की कोई शक्ति, उसे उससे छीन सकती है, उस पर हावी हो सकती है और उसे अपने कब्जे में ले सकती है।

यह सब तुम इसलिए बने हो, ताकि तुम्हारे द्वारा संसार में परमेश्वर को जाना और पहचाना जाए। इस तरह कि तुम परमेश्वर के सब गुणों और महान कामों का प्रचार करो। अपने जीवन के द्वारा। वचन और कर्म में। इस तरह तुम याजकों की तरह खोए हुए संसार के लिए खड़े होते हो।

उसने तुम्हें मूर्तिपूजा के और परमेश्वर से दूरी के अन्धकार में से **बुला लिया** है। अपने पास – अपने प्रेम की अद्भुत ज्योति में। पहले तुम कोई प्रजा नहीं थे। पर अब तुम परमेश्वर की प्रजा हो। पहले तुम पर दया नहीं हुई थी। पर अब तुम पर दया हुई है। यह भविष्यद्वक्ता होशे ने भी कहा था। कितना अद्भुत है कि सब कुछ इस तरह तुम्हारे भले के लिए बदल गया और तुम्हें किस बात के योग्य ठहराया गया है।

प्रिय मित्रो, तुम प्रवास में परदेशियों के रूप में रहते हो। पर आत्मिक दृष्टि से भी तुम यही हो। नया जन्म पाए हुए लोगों के रूप में तुम जातियों के बीच परदेशी और मेहमान हो। इसलिए सांसारिक और शारीरिक **अभिलाषाओं** से दूर रहो। वे हमारे नए किए गए हृदय के विरुद्ध लड़ती हैं। उसे बहकाने और फिर से जीत लेने के लिए।

जातियों के बीच आदरयोग्य जीवन बिताओ। भले कामों से भरा हुआ। वे ठीक-ठीक जानते और देखते हैं कि क्या आदरयोग्य और भला है। चाहे वे स्वयं ऐसे न जीते हों। तब भी ऐसे ही जीओ, जब वे जानते-बूझते भी तुम्हें बुरा कहकर बदनाम करते हैं। जब वे एक दिन बड़ी कठिनाइयों में पड़ेंगे, जब कठिन दिन आएँगे, तब वे – क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के साथ तुम्हारा जीवन देखा है – चुप हो जाएँगे। वे परमेश्वर की महिमा करेंगे और अपने पाप के विषय में कायल होंगे।

मानवीय और राज्य की व्यवस्था के अधीन रहो। प्रभु ऐसा ही चाहता है, क्योंकि यह उसकी गवाही है। चाहे सम्राट के, जो सर्वोच्च मानवीय अधिकारी है। या उसके हाकिमों के, जिन्हें उसने अपराधों को दंड देने और उनका पीछा करने का अधिकार दिया है। और उनकी प्रशंसा और सम्मान के लिए, जो भलाई करते हैं।

परमेश्वर चाहता है कि तुम्हारे **भले कामों** के द्वारा अज्ञानी लोग, जो उसे नहीं जानते, चुप हो जाएँ। ताकि उनकी बदनामी बंद हो। हिंसा के द्वारा नहीं, बल्कि **प्रेम के कामों** के द्वारा! सोचो, वे कैसे मार्ग दिखाने वाले काम होने चाहिए, जो उन्हें चुप करा सकें। तुम स्वतंत्र हो और यह किसी दबाव से नहीं, बल्कि नए किए गए हृदयों से करते हो। मसीह में अपनी स्वतंत्रता को तुम बुराई करने के लिए बहाने या आड़ के रूप में इस्तेमाल नहीं करते। तुम तो परमेश्वर के दास और उसकी निज संपत्ति हो।

सब मनुष्यों का आदर करो। परमेश्वर के परिवार से, अपने विश्वासी भाई-बहनों से, प्रेम करो। परमेश्वर का भय मानो। सम्राट का आदर करो।

हे सेवको, अपने स्वामियों की आज्ञा मानो। केवल कोमल और भले स्वामियों की ही नहीं। बल्कि उनकी भी, जो टेढ़े और अप्रिय हैं और तुम्हें सताते हैं। यह परमेश्वर को भाने वाला बलिदान है, जब तुम अन्याय से **दुःख** और हानि सहते हो।

यह तो प्रशंसा की बात नहीं कि तुम दुःख उठाओ और पीटे जाओ, क्योंकि तुम पाप करते हो और अपने स्वामियों का विरोध करते हो। पर यदि तुम भलाई करने में डटे रहते हो और इसमें अपमान सहना पड़ता है, तो तुम परमेश्वर का आदर करते हो। यह उसे भाता है। ऐसे व्यवहार के लिए हम सब बुलाए गए हैं। केवल तुम दास ही नहीं। क्योंकि **यीशु** ठीक ऐसे ही जीया। वह हमारा **आदर्श** है और उसने हमारे लिए ऐसे व्यवहार का सबसे बड़ा उदाहरण छोड़ा है। उसने हमारे लिए दुःख उठाया। हम उसके पदचिह्नों पर चलते हैं। हम यीशु के पीछे चलते हैं – चाहे तुम उसे वैसे नहीं देखते, जैसे हमने उस समय देखा – और उसके जैसे बनना चाहते हैं। वह, जिसने एक भी पाप नहीं किया, छिपकर भी नहीं। जिसके शब्द सदा सच्चे थे, बिना छल और कपट के। जिसकी सबसे बुरी तरह निंदा की गई – और उसने बदले में निंदा नहीं की। दुःख से सताए जाने पर भी उसने किसी को बदले की धमकी नहीं दी, यद्यपि वह ऐसा कर सकता था। उसने यह उसे सौंप दिया, जो धार्मिकता से न्याय करेगा, अर्थात् अपने स्वर्गीय पिता को।

उसी ने हमारे सब अनगिनत पापों को अपनी देह पर गुलगुता के **क्रूस** पर, उस शाप और यातना के काठ पर, चढ़ा लिया। जैसे उस समय हाथ रखकर **पापों** को पशु-बलि पर डाला जाता था, फिर उसे बलि किया जाता, वेदी पर रखा जाता और वहाँ जलाया जाता था; वैसे ही उसने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया और सह लिया। हमारे पापों की क्षमा के साथ हमारा पुराना जीवन समाप्त हो गया है। इस तरह हम पापों में जीने से बच निकल सकते हैं हम पाप की शक्ति से छुड़ाए गए हैं और अब धार्मिकता के लिए जीते हैं। पापों के बोझ से मुक्त। जिन्हें उसने उठाया। गुलगुता पर उसके घावों के द्वारा हम स्वस्थ और चंगे हुए हैं, जैसा कि भविष्यद्वक्ता यशायाह 53 में इससे अधिक सटीक नहीं कह सकता था। हृदय और विवेक में चंगे हो गए।

क्योंकि हम असहाय भेड़ों की तरह भटकते फिरते थे। बिना चरवाहे के। पर अब हम अपने भले और विश्वासयोग्य चरवाहे के पास लौट आए हैं। अब वह हमारी देखरेख करता है और हमें जीवन के मार्ग पर ले चलता है। सुखदाई जल के झरनों और हरी-हरी चराइयों के पास।

अध्याय 3

अधीन रहने का यह भाव पत्नी पर भी लागू होता है। वह अपने उस पति को, जो अभी विश्वास नहीं करता, इस तरह यीशु के पास ले जाएगी कि वह उससे प्रेम करे, उसके साथ भलाई करे और उसका सम्मान करे। उसके भले कामों की प्रशंसा करे। उसका आदर करे। बहुत-से शब्दों के द्वारा नहीं। बल्कि तुम्हारे आदरपूर्ण व्यवहार और उस पवित्र जीवन के द्वारा, जिसे वह बिलकुल निकट से अनुभव करता है। स्त्रियों का असली सिंगार बाहरी चीज़ों से ध्यान खींचने में न हो। तुम्हारा सिंगार तुम्हारे नम्र और संयमी स्वभाव में हो। जो तुम्हारे हृदयों में जड़ पकड़े हुए है। यह परमेश्वर को भाता है और उसे आनंदित करता है। यही उन पवित्र स्त्रियों का भी सिंगार था, जिन्होंने अपनी आशा जीवित परमेश्वर पर रखी और साथ ही अपने पतियों के अधीन रहीं। इसी तरह सारा अब्राहम की आज्ञा मानती थी और उसे स्वामी भी कहती थी। तुम इस दम्पति की आत्मिक सन्तान बन गई हो। तो जहाँ संभव हो, भलाई करो। सब मनुष्यों के लिए। किसी भी बात से विचलित या भयभीत मत होओ कि लगातार ऐसे ही जीती रहो।

हे **पतियो**, अपनी पत्नियों के प्रति समझदार और प्रेमपूर्ण बनो। हर हाल में यह समझने का प्रयत्न करो कि तुम्हारी पत्नियाँ कैसे सोचती और अनुभव करती हैं। पता लगाओ कि उन्हें सहानुभूति, समझ और ध्यान की क्या आवश्यकता है। उनसे बात करो। अपनी बात उन्हें बताओ। उनके सामने अपना मन खोलो। उनसे वही मत माँगो जो तुम अपने आप से माँगते हो। कुछ अपवादों को छोड़कर, वे भावनात्मक रूप से अधिक कोमल होती हैं और अक्सर शारीरिक रूप से तुमसे कमज़ोर। इसलिए उन्हें तुम्हारी शक्ति की आवश्यकता है। वे भी तुम्हारी तरह ही अनन्त जीवन की वारिस होंगी और किसी बात में तुम पुरुषों से कम नहीं हैं। जब तुम अपने विवाह में ऐसे जीओगे, तो तुम आनंद से साथ मिलकर प्रार्थना करोगे, आत्मिक रूप से एक होगे और सही समय पर साथ मिलकर परमेश्वर की दया का अनुभव करोगे।

सब कुछ इस बात में योगदान दे कि तुम यीशु के अनुयायियों के रूप में आत्मिक मेल में जीओ और मिलकर **एक** लक्ष्य की ओर बढ़ो। एक दूसरे के लिए सहानुभूति और सच्चा प्रेम रखो। केवल उनके लिए नहीं, जिन्हें तुम पसंद करते हो। सब भाइयों और बहनों के प्रति प्रेम से भरे रहो। दयालु बनो। वैसे ही जैसे परमेश्वर तुम्हारे प्रति है। नम्र बनो। जो बुराई तुमने सही है, उसका बदला बुराई से मत दो। न गाली का बदला गाली से। इसके विपरीत: उन्हें आशीष दो, अपने विश्वासी भाई-बहनों को और उन मनुष्यों को भी जो अभी विश्वास नहीं करते। उनके भले की कामना करो – और उन्हें यह जानने और अनुभव करने दो। क्योंकि तुम शीघ्र ही आशीष के वारिस होगे। इसी भरपूरी से तुम अभी से आशीष दे सकते हो और यीशु की तरह काम कर सकते हो।

जो जीवन का आनंद लेना और अच्छे दिन देखना चाहता है, और हर पल यह डर नहीं रखना चाहता कि पकड़ा जाएगा, वह किसी के विरुद्ध या किसी के बारे में कोई बुरी बात न बोले। वह हर बुराई से मुँह मोड़े और बस भलाई करे। वह हर किसी के साथ मेल खोजे और लगन से इस मेल के पीछे ऐसे पड़ा रहे, मानो वह भाग सकता हो और सदा के लिए लुप्त हो सकता हो।

यह एक प्राकृतिक नियम के समान है: **प्रभु की आँखें** सारी पृथ्वी पर देखती हैं और धर्मी पर लगी रहती हैं। उस पर, जो भलाई करता है। और उनकी प्रार्थनाओं पर। उनकी विनती वह सुनता है। पर जो बुराई करते हैं, उनसे वह बिलकुल प्रसन्न नहीं होता। जो बुराई करता है, परमेश्वर उसके विरुद्ध है और किसी न किसी दिन उसे उसके क्रोध का अनुभव करना पड़ेगा।

तो जब तुम भलाई करते हो, तो कौन हो सकता है जो तुम्हारी बुराई करे? और तुम उसे करना छोड़ते नहीं? क्या ऐसे व्यक्ति के पास इसके लिए परमेश्वर के सामने कोई सफ़ाई है? पर यदि फिर भी तुम्हें बुराई का अनुभव हो और तुम भलाई करने के कारण दुःख उठाओ, तो तुम धन्य हो। इन लोगों से मत डरो। उन लोगों जैसा भय और चिंताएँ भी मत रखो, जो परमेश्वर की पिता-जैसी विश्वासयोग्यता को नहीं जानते। वे हमारे मसीहा को नहीं जानते। इसलिए और भी अधिक प्रभु पर, मसीहा पर, ध्यान लगाओ! मनुष्यों से नहीं, केवल उसी से डरो। जो उसका भय मानता है, वह फिर किसी से नहीं डरेगा।

कठिन परिस्थितियों में भी, जब तुम दुःख उठाते हो, मसीहा पर अपनी आशा की गवाही समझने योग्य ढंग से देने के लिए सहर्ष तैयार रहो। जब लोग तुमसे पूछें कि तुम इतने भिन्न क्यों हो और हानियाँ और दुःख क्यों सह लेते हो, तो अपनी आशा को मान लो। जिसके बारे में मैंने इस पत्री में तुम्हें पहले ही लिखा है। सबको जितना हो सके अच्छी तरह समझाने का प्रयत्न करो। सरल और स्पष्ट। ऐसे कि बात करने वाला भी उसे समझ सके। उसकी भाषा में। अपनी आशा का बचाव कभी घमण्ड से न हो। पूछने वालों का आदर करो और आनंदित हो जब वे इस कारण तुमसे बात करें। परमेश्वर उनमें काम कर रहा है, जैसे उसने तुम में भी किया।

अपने जीवन के बारे में शुद्ध विवेक रखो। तब जब लोग तुम पर बुरे दोष लगाएँ या बुरी बातें थोपें, तो उन्हें किसी न किसी दिन लज्जित होकर हार माननी पड़ेगी और स्वीकार करना पड़ेगा कि वे गलत हैं।

हर हाल में यह अच्छा है, यदि परमेश्वर ऐसा ही चाहे और होने दे, कि बुरे कामों के बजाय भले कामों के लिए दुःख उठाया जाए। जब हम अपने महान आदर्श की ओर देखते हैं, तो यह तुम्हें कठिन भी नहीं लगना चाहिए: क्योंकि मसीह ने भी इसी तरह **दुःख उठाया**। अन्याय से। उन पापों के लिए, जो उसने नहीं किए। अर्थात् हमारे पापों के लिए। क्रूस पर। धर्म अधर्मियों के लिए – हमारे लिए! किसलिए? ताकि वह हमें परमेश्वर के पास ले आए। ताकि वह हमें परदेश से, पाप की ठंडी और अकेली रात से, अपने परमेश्वर और पिता के पास ले आए। उसकी पवित्र और प्रेम भरी उपस्थिति में। घर!

उसे क्रूस पर मार डाला गया। उसकी सताई और यातना से टूटी देह में। उसके हत्यारों और अन्धकार की अदृश्य शक्तियों ने ऐसी ही ठानी थी। पर वह अंत नहीं था। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसे **जीवित** किया गया। जीवन और पुनरुत्थान के आत्मा के द्वारा। उसके द्वारा अमरता के एक नए अस्तित्व में जिलाया गया। इसी आत्मा में वह जी उठे हुए के रूप में अधोलोक में गया। मृत्यु के बन्दीगृह में। उन आत्माओं के पास, नूह के दिनों के गिरे हुए परमेश्वर के पुत्रों के पास। उन्हें उसने अपनी **विजय** का प्रचार किया। ये स्वर्गदूत नूह के दिनों में – जल-प्रलय से पहले – मानवीय स्त्रियों के पास आए और उनसे दानवों को उत्पन्न किया। प्रभु की दृष्टि में यह एक बड़ा पाप था। इसने पृथ्वी पर अकल्पनीय दुष्टता ला दी। इसी कारण बड़ा जल-प्रलय भी आया। ये गिरे हुए परमेश्वर के पुत्र मनुष्यों को नष्ट करना और परमेश्वर की उद्धार की योजना को विफल करना चाहते थे। उनकी सन्तान, वे दानव, जल-प्रलय में नष्ट हो गए। पर उनकी आत्माएँ जीवित रहती हैं। यही वे दुष्टात्माएँ हैं, जो मनुष्यों को हानि पहुँचाती हैं। पर मसीह ने बन्दी परमेश्वर के पुत्रों के सामने अपनी विजय की घोषणा की। उनका अंत और उनका विनाश। उनके लिए उसका संदेश हम मनुष्यों के लिए एक शुभ संदेश था: तुम्हारी योजना और तुम्हारे वंशजों की, दुष्टात्माओं की, योजना सफल नहीं होगी। मैं नरक, मृत्यु और शैतान पर **विजेता** हूँ। मेरी मृत्यु अंत नहीं थी, बल्कि नए निर्गमन का आरंभ थी। मनुष्य स्वतंत्र होंगे। मैं उन्हें परमेश्वर के पास ले आया हूँ।

बड़े **जल-प्रलय** के मृत्यु के जल के बीच से थोड़े, हाँ केवल आठ मनुष्य, बचाए गए। पुराने संसार से पार होकर शुद्ध की गई पृथ्वी पर। यह आज तुम्हारी ओर एक संकेत है, जो तुम भी थोड़े ही हो। **बपतिस्मा** में,

जल में, तुम्हारे लिए वही झलकता है जो जल-प्रलय में हुआ। उद्धार! बाहरी रूप से नहीं, जैसे बाहरी मैल से कोई धार्मिक शुद्धि। नहीं, बपतिस्मा परमेश्वर के प्रति विश्वास और आज्ञाकारिता की एक बाध्य करने वाली घोषणा है। हृदय का एक निर्णय, हाँ एक मन्त्र, कि शुद्ध विवेक से उसकी सेवा करें। क्यों? क्योंकि यीशु मृत्यु में से जी उठा। स्वर्ग में चला गया। परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा। जहाँ उसके, मनुष्य के पुत्र के, अधीन सब स्वर्गदूत और अदृश्य स्वर्गीय संसार के अधिकार और शक्तियाँ कर दिए गए हैं। उसके प्रति हम **निष्ठा** की शपथ खाते हैं। बपतिस्मा के द्वारा मुहर लगाई और घोषित की गई। केवल उन मनुष्यों के सामने नहीं, जो वहाँ उपस्थित थे। बल्कि अदृश्य संसार और उसके प्रधान, शैतान और उसके दूतों के सामने भी। हर बपतिस्मा उनकी अंतिम **हार** की पुष्टि और घोषणा करता है। चाहे वे अभी थोड़े समय के लिए विश्वासियों को हानि पहुँचा सकते हों। हमने पक्ष बदल लिया है और सदा के लिए विजेता यीशु के हैं।

अध्याय 4

क्योंकि मसीह ने हमारे स्थान पर, हमारे पापों के बदले, अपनी देह में अनुभव होने वाला और पीड़ादायक दुःख उठाया, इसलिए तुम भी ऐसे दुःखों के लिए तैयार रहो। क्योंकि जो ऐसे दुःखों में पड़ता है, क्योंकि वह यीशु के पीछे चलता है और उसे मान लेता है, उसके पास पापों में अपने आप को झोंकने का समय नहीं होता। यद्यपि दुःख उसे कठिनाइयों में डालते हैं, पापपूर्ण प्रलोभन शान्त हो गए हैं। फिर वे उसे उलझाए नहीं रखते। जो समय इस पृथ्वी पर हमारे पास अभी बचा है, उसे हम उन मनुष्यों की रुचियों और अभिलाषाओं में नहीं बिताना चाहते, जो परमेश्वर का इनकार करते हैं। नहीं, हम वही करना चाहते हैं **जो परमेश्वर चाहता है**। वह नहीं, जो हमारे आसपास के लोगों को बढ़िया लगता है। बहुत समय तक हमने वही किया है जो समाज और मुख्यधारा तय करना चाहती है और अच्छा समझती है। इसमें हर प्रकार का बेलगाम भोग-विलास आता है। पियक्कड़पन, खाने-पीने की रंगरलियाँ। धार्मिक वेश्यावृत्ति के साथ घृणित मूर्तिपूजा। सब कुछ अपने आप को पूरा करने और तृप्त करने के लिए। और जो कुछ मिल सके, ले लेने के लिए। अब उन्हें आश्चर्य होता है कि तुम इस व्यर्थ और हानिकारक दौड़ में अब साथ नहीं देते। वे समझ नहीं सकते कि यीशु में वह परिपूर्णता और आनंद है, जिसे वे अपनी खुली छूट में खोजते हैं। इसलिए वे तुम्हारी निंदा करते हैं और अपने आप को जीवन के सही पक्ष में समझते हैं। पर उन सबको इस जीवन-शैली और अपनी निंदा का हिसाब देना पड़ेगा। वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर उनसे लेखा माँगेगा। उन सबसे जो तब तक जीवित होंगे, और उन सबसे भी जो मर चुके हैं। मरे हुएों को भी और तुम्हें भी, जो जीवित हो, मसीह, छुड़ाने वाले, का प्रचार किया गया है। ताकि सब अनन्त जीवन का वरदान पाएँ – पवित्र आत्मा के द्वारा। अनन्त जीवन की इस आशा के साथ दुःख भरा जीवन और मरना भी हार नहीं, बल्कि विजय है। उनके विपरीत, जिन्होंने शुभ संदेश को ठुकरा दिया और अनन्त जीवन की आशा के बिना मर गए और जिन्हें न्याय के दिन की प्रतीक्षा करनी है।

सब बातों का **अंत** द्वार पर खड़ा है! सब पुराना, नाशवान और पापपूर्ण समाप्त हो जाएगा। वे सब, जो यीशु के पीछे चले हैं, परमेश्वर की महिमा में एक नए आरंभ की बाट जोहते हैं।

सचेत बुद्धि रखो। न किसी धार्मिक और न किसी सांसारिक नशे के वश में पड़ो। **प्रार्थना** में सक्रिय रहो। इसका कोई अवसर हाथ से मत जाने दो – चाहे तुम अकेले हो या सहभागिता में। सबसे बढ़कर आपस में एक सच्चा और बना रहने वाला **प्रेम** रखो, जो सहायता करते हुए, निःस्वार्थ और बिना अपने लाभ के दूसरे के लिए समर्पित रहता है। यह प्रेम, जो परमेश्वर से आता है, बहुत-से पापों को ढाँप देता है। वह क्षमा करता है। और वह दूसरों के पापों को बार-बार दोष लगाते हुए बाहर नहीं निकालता। अपने प्रेम को खुले और आमंत्रित करने वाले अतिथि-सत्कार में प्रकट करो। परिश्रम और खर्च के बारे में कुड़कुड़ाए बिना।

हर बात में उन **अनुग्रह के वरदानों** से एक दूसरे की सेवा करो, जो तुम में से हर एक को मिले हैं। और वह भी ऐसे, जैसे पवित्र आत्मा ने हर एक को बाँटे हैं। तुमने परमेश्वर का यह भरपूर, सब कुछ समेटने वाला और बहुरंगी अनुग्रह उपहार के रूप में पाया है। विश्वासयोग्य भण्डारियों के रूप में उसे ज़िम्मेदारी से और उन्नति के लिए काम में लाओ। अनुग्रह को आगे बाँटो। जब तुम्हारी सहभागिता में कोई तुमसे बोले, तो उसके शब्दों को परमेश्वर के शब्दों के रूप में पहचाना और सुना जाए। जब कोई सेवा का काम करे, तो वह परमेश्वर की सामर्थ्य से हो। केवल तब, जब सब कुछ परमेश्वर के द्वारा किया गया हो, उसकी बड़ाई और आदर होता है। क्योंकि लक्ष्य सदा यही है। बात कभी हमारी सफलता की नहीं, बल्कि परमेश्वर की महिमा की है। यीशु मसीह के द्वारा, जो हमें परमेश्वर के पास, पर एक दूसरे के पास भी, ले आया है। उसी ने इसे संभव बनाया। इसे हमें कभी आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहिए। इसलिए उसी की सारी महिमा और सामर्थ्य और प्रताप युगानुयुग हो। आमीन।

परमेश्वर की प्रिय सन्तानो: जब यीशु के कारण **अन्यायपूर्ण दुःख** तुम्हें आग की धधक जैसे लगें, तो आश्चर्यचकित और भयभीत मत होओ। वे तुम्हारे विश्वास की शुद्धि का काम करते हैं, जैसा मैंने तुम्हें आरंभ में ही लिखा था। तब भी आनंदित होओ, जब तुम्हें अब वही दुःख सहने पड़ें, जो उस समय मसीहा ने सहे। क्योंकि तब तुम जयजयकार करते हुए आनंद मनाओगे, जब यीशु सारे संसार के सामने सामर्थ्य और महिमा में दिखाई देता हुआ फिर आएगा और तुम्हारे उद्धार को पूरा करेगा।

हाँ, तुम धन्य हो, जब लोग तुम्हारी निंदा करते हैं, क्योंकि तुम मसीह का नाम धारण करते हो और उसे मान लेते हो। उनके बीच मसीह के नाम की निंदा होती है। हमारे बीच उसका आदर होता है और उसे ऊँचा रखा जाता है। इसलिए परमेश्वर की महिमा का आत्मा तुम सब पर ठहरा हुआ है। परमेश्वर की पवित्र, प्रेम करने वाली और रक्षा करने वाली उपस्थिति सब दुःखों में तुम्हें घेरे रहती है। जैसे उस समय महिमा के बादल में, शकीना में, इस्राएल को। दिन और रात वह दिखाई देती हुई वहाँ थी।

हम में से किसी को उचित रूप से दंड नहीं मिलना चाहिए और इस कारण दुःख नहीं उठाना चाहिए। जैसे हत्यारे, चोर या कुकर्मी के रूप में। या ऐसे व्यक्ति के रूप में, जो ज़बरदस्ती दूसरों के मामलों में दखल देता है, जिनसे उसका कोई लेना-देना नहीं। पर यदि कोई इसलिए दुःख उठाता है कि वह मसीह का है, क्योंकि वह मसीही के रूप में जाना जाता है, तो उसे पहले बताई गई बातों की तरह किसी भी हाल में लज्जित नहीं होना चाहिए।

वह समय आ गया है कि **परमेश्वर का न्याय** प्रकट हो। वह आरंभ हो चुका है। वह सचमुच पहले हमसे ही आरंभ होता है। परमेश्वर के अपने घर से। जैसे उस समय उसकी प्रजा के साथ, जहाँ न्याय यरूशलेम के मन्दिर से आरंभ हुआ। परमेश्वर का पवित्र न्याय हमें दोषी नहीं ठहराएगा, बल्कि शुद्ध करेगा और सुधारेगा। वह हमें उसकी पवित्रता दिखाएगा और हमारे जीवन में से वह सब धो डालेगा जो उसके योग्य नहीं। इसमें दुःखों के द्वारा शुद्धि भी आती है। परमेश्वर के न्याय को ध्यान में रखते हुए हम पवित्र जीवन जीना चाहते हैं, जैसा मैंने आरंभ में ही कहा था। पर उनका अंत कहाँ ले जाता है, जिन्होंने उद्धार और अनुग्रह के शुभ संदेश पर विश्वास नहीं किया? जो आज्ञा न मानने वाले बने रहे? जब हम, धर्मी, ही बड़ी कठिनाई से बचाए जाते और लक्ष्य तक पहुँचाए जाते हैं, तो पापियों और भक्तिहीनों का क्या होगा?

इसलिए वे सब, जो अन्याय सहते हैं, जब परमेश्वर ऐसा चाहे और होने दे, अपनी सब कमज़ोरियों और गलतियों के साथ अपना जीवन उसे सौंप दें। विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता अपने वचनों और प्रतिज्ञाओं पर दृढ़ रहता है। पर परमेश्वर से यह विनती और उसे यह समर्पण एक ऐसे जीवन से आए, जहाँ हम दूसरों के लिए भलाई करते हैं और उनका भला चाहते हैं। बिना हार माने। ठीक उस दुःख में, जो हम पर डाला जाता है, हम अपने आप को परमेश्वर को सौंपते हैं। इस तरह अन्यायपूर्ण दुःखों के बावजूद भलाई करने की शक्ति हमें मिलती है। ऐसा कुछ केवल परमेश्वर ही दे सकता है।

अध्याय 5

परमेश्वर के झुण्ड की, विश्वासियों की सहभागिता की, देखभाल, रक्षा और पालन-पोषण किया जाए। इसकी चिंता करना विशेष रूप से तुम्हारा कर्तव्य और काम है, हे **प्राचीनो**। मैं तुमसे, चरवाहों और आत्मिक अगुवों से, कहता हूँ कि मैं तुम्हारा संगी प्राचीन होकर उसी कर्तव्य में खड़ा हूँ। मैं यह हमारे प्रभु यीशु के दुःखों के एक आँखों देखे गवाह के रूप में कहता हूँ। पर ऐसे व्यक्ति के रूप में भी, जो उसकी चमकती महिमा में सहभागी होगा, जिसे सब देखेंगे जब वह फिर आएगा। हे प्राचीनो, अच्छे चरवाहों की तरह परमेश्वर के झुण्ड की रखवाली करो। तुम्हारी देखभाल विवशता से नहीं, बल्कि हृदय से और स्वेच्छा से हो। इससे कोई लाभ कमाने के लिए भी नहीं। प्रभुता करने वालों की तरह व्यवहार मत करो! तुम्हें अपने आदर्श जीवन से हृदयों को जीतना और कायल करना है। और जब शीघ्र ही **प्रधान चरवाहा**, महान चरवाहा, हमारा प्रभु यीशु, प्रकट होगा, तब तुम्हें अपनी सेवा के लिए महिमा का विजय-मुकुट मिलेगा। हाँ, तब हम सब उसकी महिमा में सहभागी होंगे।

हे जवानो, प्राचीनों का सम्मान करो! उनसे सीखो। अनुभव में तो वे तुमसे आगे हैं। उनके निर्देशों को स्वीकार करो। पर उन्हें प्रभु के सामने परखो भी।

तुम सब एक दूसरे का सम्मान करो और नम्रता को ओढ़ लो। अपने बारे में कभी बड़ा मत सोचो। क्योंकि परमेश्वर अभिमानी का विरोध करता है। दीन को वह अनुग्रह देता है – जैसा सुलैमान ने नीतिवचन 3 में पहले ही कहा था।

अपने जीवन की उस स्थिति को स्वीकार करो, जिसमें परमेश्वर के सामर्थी हाथ ने तुम्हें रखा है। असंतुष्ट मत रहो। और अन्यायपूर्ण दुःखों के कारण भी शिकायत मत करो। या उस बात के कारण जो तुम्हारा जीवन कठिन बनाती है। विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता पर भरोसा रखो और कभी मत भूलो: वह सही समय पर तुम्हें ऊँचा करेगा और बोझ उतार लेगा। इस जीवन में, पर अधिक से अधिक तब, जब यीशु फिर आएगा।

तुम अपनी सारी **चिंताएँ** और बोझ उस पर डाल सकते हो और तुम्हें डालने भी चाहिए! क्योंकि कोई नहीं है जो तुम्हारी इतनी चिंता करता हो – जितनी वह करता है! हमारा सृष्टिकर्ता सब कुछ देखता है। कोई तुम्हारी इतनी सुधि नहीं लेता – जितनी वह लेता है। इसे सदा धामे रहो। चाहे पहली नज़र में ऐसा न लगे।

सदा आत्मिक रूप से चौकस रहो। क्योंकि हमारा सबसे बड़ा शत्रु, शैतान, दबे पाँव घूमता फिरता है। गरजते हुए सिंह की तरह वह शक्ति दिखाना, डराना और भय उत्पन्न करना चाहता है। हाँ, वह शिकार की खोज में रहता है और जब उसे पा लेता है, तो झपट पड़ता है। सताव और मृत्यु के भय के द्वारा वह यीशु के अनुयायियों को विश्वास छोड़ने पर विवश करना चाहता है। पर विश्वास के द्वारा दृढ़ता से उसका सामना करो। मत डरो। भय को कोई स्थान मत दो। इस बात के प्रति सचेत रहो: तुम अकेले नहीं हो, जिन्हें यह सहना पड़ता है। जो मसीह के हैं, उनका सताव सारे संसार में होता है।

हर स्थिति में सबसे बड़ी सुरक्षा और प्रोत्साहन यह ज्ञान है और बना रहेगा: **सारे अनुग्रह का परमेश्वर** हमारा परमेश्वर है। उसने हमें अपने पास, अपनी ही महिमा के लिए, यीशु मसीह में बुलाया है। दुःख के थोड़े समय के बाद वही हमारा अनन्त घर होगा। इस मार्ग पर, दुःखों के बीच से भी, वह हमें उठाएगा, तैयार करेगा और सिद्ध करेगा। जैसा उसे भाए। वह हमारे विश्वास को ऐसा दृढ़ और बलवन्त करेगा कि हम दुःखों के बावजूद डटे रहें, भलाई करें और दृढ़ नींव पर बने रहें। चाहे जो भी आए: कुछ भी हमें मार्ग से नहीं हटा सकेगा।

यह पत्री तुम्हें विश्वासयोग्य सिलवानुस के द्वारा पहुँचाई जा रही है। मैंने तुम्हें केवल संक्षेप में सबसे महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं। परमेश्वर के सच्चे अनुग्रह के बारे में, जिसमें तुम खड़े हो और जीते हो – दुःखों के बावजूद।

बेबीलोन में जो तुम्हारे साथ चुनी गई है, उसकी ओर से तुम्हें नमस्कार। और मरकुस की ओर से, जो विश्वास में मेरा आत्मिक पुत्र है।

प्रेम के चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करो।

तुम सब को शान्ति मिले, जो मसीह से जुड़े और उसमें जड़ पकड़े हुए हो।

आमीन।

पतरस की दूसरी पत्री

- परमेश्वर के स्वभाव के सहभागी
- विश्वास में बढ़ना
- भरोसेमंद वचन
- भविष्यद्वाणी का वचन
- झूठे शिक्षक
- पुरानी और नई पृथ्वी
- न्याय और परमेश्वर की धीरज

पतरस की दूसरी पत्री

तुम्हें शमीन लिख रहा है, जिसका उपनाम पतरस है। मेरे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे यह नाम दिया। मैं पूरी तरह उसी का हूँ – केवल उसी का दास हूँ। मैं उसका भेजा हुआ, उसका प्रेरित, भी हूँ। मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुमने भी यीशु से वही बहुमूल्य विश्वास पाया है, जो हम चेलों ने आरंभ में पाया था। यह विश्वास हम सबने केवल उसी से, अपने परमेश्वर से, पाया है। और अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह से। परमेश्वर धर्मी है। इसलिए उसने हम सबको, प्रेरितों को, हम यहूदियों को और दूसरी जातियों को भी, वही बहुमूल्य विश्वास दिया। यह विश्वास हमें उस सब में सहभागी बनाता है, जो परमेश्वर ने हमें दिया। वह हमें इससे भी बड़ी बातें देगा, क्योंकि मसीह में हमें धर्मी ठहराया गया है।

हमारे परमेश्वर की ओर से बढ़ते हुए अनुग्रह और सहायता से तुम उमड़ती हुई आशीष पाओ। उन सब बातों के लिए, जिनकी हमें प्रतिदिन इतनी आवश्यकता है। विशेषकर सताव और शत्रुता में। वह जीवन की हर स्थिति में तुम्हें शान्ति की आशीष भी दे। इसी में हम अपने परमेश्वर और अपने प्रभु यीशु को पहचानते हैं। क्योंकि वह अनुग्रह और शान्ति का हमारा कभी न सूखने वाला सोता है।

परमेश्वर ने स्वयं अपनी **ईश्वरीय सामर्थ्य** में – जो विशेष रूप से उसकी सृष्टि में पहचानी जा सकती है – हमें सब कुछ से सुसज्जित और योग्य किया है। ताकि हम आखिरकार उसकी महिमा के लिए जी सकें। विशेषकर उसके छुटकारे के काम में, जब परमेश्वर ने हमें बुलाया और अनपेक्षित रूप से और बिना हमारी योग्यता के अपने आप को हम पर प्रकट किया। तब हमने उसकी महिमा और ईश्वरीय सामर्थ्य को पहचाना – जो उसके द्वारा काम करती है, जो हमारे लिए मरा और जी उठा: मसीह। हमने पहचाना कि उसने कितने दृढ़ निश्चय से हमें सबसे बड़ी और सबसे बहुमूल्य **प्रतिज्ञाएँ दीं**: उसका महान उद्धार। अनन्त जीवन। उसके आत्मा का वरदान। और अपने समय पर एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी। इन प्रतिज्ञाओं के द्वारा, जिन्हें वह हम में पूरा करता है, परमेश्वर ने अपने स्वभाव को, अपने जीवन को, हमारा बना दिया है। हम ईश्वर तो नहीं बन जाते, जैसा कुछ लोग सपना देखते हैं। हम परमेश्वर के स्वभाव को उन सब बातों में नहीं पाते जो केवल परमेश्वर की अपनी हैं। पर हम उसके ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हैं। इस तरह परमेश्वर, उसका प्रेम, अनुग्रह और दया, उसकी पवित्रता और धार्मिकता, बहुत-सी परिस्थितियों में हमारे जीवन के द्वारा हम में दिखाई देती है। उसकी महिमा के लिए, क्योंकि उसका कुछ दिखाई देता है! उन सब मनुष्यों के लिए पहचानने योग्य, जिनसे हमारा वास्ता पड़ता है। हमारे द्वारा वे इस अनुपम परमेश्वर को जानेंगे। हम तो परमेश्वर की बुलाहट के द्वारा संसार के पतन और विनाश से भाग निकले हैं। हमने जीवन की उस लालसा से नाता तोड़ लिया है, जो परमेश्वर के बिना मनुष्यों को इतना मोहित करती है। इससे भी बढ़कर: हमने अस्तित्व के इस टूटने वाले और नाशवान ढंग को पीछे छोड़ दिया है। इस तरह हम उस विनाश से बच निकले हैं, जिसकी ओर ये लोग जीते हुए बढ़ रहे हैं।

ठीक इसी कारण हमें उस विश्वास में, जो हमें मिला है, पूरा **परिश्रम**, लगन और समर्पण दिखाना चाहिए। इस विश्वास में हमें उसी दृढ़ निश्चय से, जो परमेश्वर ने भी हमारे प्रति दिखाया है, पक्के और दृढ़ होकर आगे बढ़ना चाहिए। यह सार्थक है!

पर दृढ़ता के लिए **ज्ञान** का होना अनिवार्य है। सारे दृढ़ निश्चय को सही दिशा में मोड़ा जाना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा उसके विचारों को जानना और अधिकाधिक जानते जाना है। हमें हर बात में परमेश्वर की ओर से बुद्धि की आवश्यकता है।

ज्ञान के साथ फिर **संयम** और अनुशासन भी हो। इस आत्म-नियंत्रण और परहेज़ की हमें सदा आवश्यकता है, विशेषकर जब हम ऐसे समाज में चलते हैं, जहाँ लोग अपनी अभिलाषाओं को खुली छूट देते हैं।

संयम जवानों और बूढ़ों में, जीवन भर, दृढ़ता से जड़ पकड़े हुए हो। इसमें हमें धीरज से डटे और स्थिर रहना है।

सारे **धीरज** और स्थिर बने रहने में तुम्हारा उद्देश्य सदा परमेश्वर को प्रसन्न करना हो। बात मानवीय आज्ञाओं या परम्पराओं के पालन की नहीं, जिन पर हम घमण्ड कर सकें।

परमेश्वर को प्रसन्न करने का अर्थ सबसे पहले यह है कि हम अपने उन विश्वासी भाई-बहनों के साथ, जिन्हें परमेश्वर ने भी बुलाया है, सहभागिता खोजें और जीएँ। उन सबके साथ, जिनके साथ उसने हमें हमारे स्थान पर और सारे संसार में जोड़ा है। उनसे हम निःस्वार्थ **प्रेम** करना चाहते हैं।

सबसे ऊँचा सदा स्वयं परमेश्वर का प्रेम है। वह हमें भर देता है। और उसी के द्वारा हम परमेश्वर से, भाइयों से और पड़ोसी से प्रेम करने के योग्य होते हैं। यह प्रेम हमारे हर काम की प्रेरणा होना चाहिए। नहीं तो सब कुछ व्यर्थ है!

ये सब महत्वपूर्ण गुण, जिनका मैंने उल्लेख किया है, यीशु के चेलों के लिए बिलकुल **सामान्य** हैं। इसलिए ये तुम्हारी पहचान हों और तुम्हें अधिकाधिक निर्धारित करें। इसी का अर्थ है विश्वास में परिपक्वता की ओर सच्ची आत्मिक **बढ़ती**। ये सद्गुण हमारे पास कभी बहुत अधिक नहीं हो सकते। तब तुम अपने विश्वास में आलसी, सुस्त या निकम्मे भी नहीं होगे। हाँ, तब तुम परमेश्वर के लिए भरपूर फल लाओगे। इस तरह हम में हमारे प्रभु यीशु मसीह का ज्ञान गहरा होता जाता है। उसका कभी अंत नहीं होता। क्योंकि यीशु अतुलनीय रूप से महिमामय है, कहेँ तो अगम्य। वही सब कुछ का आरंभ, मध्य और अंत है – हमारे समर्पण का भी। हृदय से बढ़ता हुआ यह ज्ञान इस बात का कारण बनता है कि परमेश्वर का स्वभाव अधिकाधिक दिखाई दे, परमेश्वर के आनंद के लिए – जैसा मैं पहले ही लिख चुका हूँ।

पर यदि इन गुणों में से लगभग कभी कुछ भी दिखाई न दे – पहले के विपरीत भी – तो व्यक्ति **अन्धा** है। वह हमारे उद्धारकर्ता की महिमा को अब देखना नहीं चाहता। वह निकट-दृष्टि वाला है, बस आँखें मिचमिचाता है, हाँ वह तब ज्योति से कतराने लगा है। यह ऐसा है मानो कोई भूल जाना चाहता हो कि

महिमा के परमेश्वर ने हमें अपने पास बुलाया है। ऐसा व्यक्ति जल में बपतिस्मा के सार्वजनिक अंगीकार के द्वारा अपने पहले के पापों से शुद्ध किए जाने को भूल गया है। पर अब इससे उसे कोई लाभ नहीं, यदि वह अब वैसे ही जीता है जैसे पहले। चाहे वह बपतिस्मा में पिछले पापों से शुद्ध किया गया हो —, जो पाप वह अब ढेर लगाता जा रहा है, वे उसका विनाश होंगे।

इसलिए, प्रिय भाई-बहनो, — जहाँ तक तुम्हारे बस में हो — परमेश्वर की बुलाहट और अपने चुनाव को **पक्का** करो। इस तरह अपने जीवन में परमेश्वर के हस्तक्षेप की पुष्टि करो। जितनी दृढ़ता से परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया और पकड़ लिया, उतनी ही दृढ़ता से यीशु के पीछे चलो। तुम्हारा जीवन परमेश्वर के अनुग्रह का एक स्पष्ट और आनंद भरा उत्तर हो। तब तुम परमेश्वर की महिमा की ओर मार्ग पर ठोकर नहीं खाओगे, सत्य के मार्ग से भटकने की तो बात ही क्या। हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के आने वाले **राज्य** में एक विजयी और जयजयकार भरा प्रवेश तुम्हारे सामने है। वह एक अतुलनीय और अविस्मरणीय घटना होगी। इस राज्य का, विश्वास के लक्ष्य का, द्वार अभी से पूरा खुला है! यही हमारी जीवित और भरोसेमंद आशा है। इसके लिए हर प्रयास और सारा समर्पण सार्थक है।

जब तक मैं जीवित हूँ, मैं चिंतित और सदा तैयार रहूँगा कि तुम्हें इस महिमामय भविष्य की याद दिलाता रहूँ। इसमें यीशु के पीछे चलने के मुख्य गुण भी आते हैं। मैं यह तब भी करता हूँ, जबकि मुझे स्पष्ट है कि तुम यह सब पहले से जानते हो और इस सत्य में दृढ़ हो। पर जब तक मैं इस नाजुक देह में हूँ, इन बातों की याद दिलाकर तुम्हें जगाए रखूँगा — और आवश्यकता हो तो झकझोरकर जगाऊँगा। क्योंकि इस संसार से मेरी विदाई निकट है। मैं इस सांसारिक और नश्वर देह को शीघ्र ही एक तम्बू की तरह उखाड़ दूँगा। और फिर अपने प्रभु के पास रहूँगा। उसने मुझ पर तुमसे इस शीघ्र विदाई को प्रकट किया है। जो मैं तुम्हें यहाँ लिख रहा हूँ, वह बहुत महत्वपूर्ण है। मैं सदा सब कुछ करूँगा, ताकि तुम इन बातों के ज्ञान को अपने हृदयों और विचारों में सँभाले रखो — विशेषकर तब भी, जब मैं तुम्हारे बीच नहीं रहूँगा।

इसमें सबसे बढ़कर एक अविस्मरणीय घटना आती है। हम चले किसी मिथक, चतुर विचारों, सपनों या भावनाओं के आवेग के पीछे नहीं चले। जब हमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की बड़ी सामर्थ्य और उसके आने वाले महिमामय प्रकटीकरण के बारे में बताया, तो हमने यह **आँखों देखे गवाहों** के रूप में किया। हमने केवल उसकी गवाही दी, जो हमने पवित्र पहाड़ पर, ऊपर बर्फ से ढके हेमॉन पर, अपनी आँखों से अनुभव किया और देखा। हमें यह अनुभव करने का अवसर मिला कि कैसे यीशु को परमेश्वर, उसके पिता, ने चमकती ज्योति से ढाँप दिया और उसका रूप बदल गया। वह सूर्य के समान चमक उठा। इस उदात्त महिमा की ज्योति की चमक में से एक वाणी आई, जिसने कहा: यह मेरा सब से बढ़कर प्रिय पुत्र है। उससे मैं पूरी तरह प्रसन्न हूँ। केवल वही मेरे हृदय का आनंद है।

ठीक इसी पहाड़ पर, जहाँ परमेश्वर के आज्ञा न मानने वाले पुत्र बड़े जल-प्रलय से पहले स्वर्ग से उतरे, स्त्रियाँ ब्याह लीं और दानवों को उत्पन्न किया। इस तरह वे मानवजाति को नष्ट करना चाहते थे। इस पर मैं

अभी आगे बात करूँगा। यीशु इस पहाड़ पर सारे अदृश्य संसार को यह जता देता है कि खोई हुई मानवजाति के लिए एक उद्धारकर्ता है। अन्धकार की शक्ति का अंत हो रहा है।

हम तीनों चले, जो वहाँ उपस्थित थे, श्रद्धा के कारण मुश्किल से बोल पाए। हमने यीशु के साथ ऐसा कुछ पहले कभी अनुभव नहीं किया था। पर हमें स्पष्ट हो गया कि यह **भविष्यद्वाणी के वचनों** की पूर्ति थी: उन सब भविष्यद्वक्ताओं की, जैसे यशायाह, यहजेकेल, दानियेल और जो भी उनके नाम हैं। वे कहते हैं कि समय के अंत में परमेश्वर महिमा में प्रकट होगा। हमने अपनी ही आँखों से इन भविष्यद्वाणियों की **पूर्ति** देखी। उसकी एक प्रकार की झलक, जो एक दिन सब मनुष्य देखेंगे। परमेश्वर का यह भविष्यद्वाणी का वचन, जिसकी पूर्ति हमने देखी और सुनी, एक अन्धेरी और धुँधली जगह में एक दीपक के समान है। वह संसार है, जो यीशु को ठुकराता है और हमें सताता है। यह रात शीघ्र ही बीत जाएगी, क्योंकि उजला **भोर का तारा** उसी समय उदय हो चुका, जब हमने यीशु को इस तरह पहाड़ पर देखा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का दिन रुकने वाला नहीं, वह आ रहा है। भोर पहले ही हो रही है। इस भोर के तारे की ओर देखो, जिसे संसार नहीं देखता। वह रात से प्रेम करता है और ज्योति से कतराता है।

भविष्यद्वक्ता अपने विचारों के पीछे नहीं चले। आने वाली महिमा, जिसके बारे में उन्होंने कहा और लिखा, उन पर प्रकट की गई – परमेश्वर के पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में और उसके द्वारा उभारे जाकर। इसे अपने हृदयों में ग्रहण करो और इसे थामे रहो! उन्होंने परमेश्वर का पाया हुआ वचन फिर हम तक पहुँचाया। यह बात वैसे पूरे भविष्यद्वाणी के वचन पर लागू होती है। वह हमें इब्रानी बाइबल के लेखों में मिलता है, जिन्हें हम पुराना नियम कहते हैं।

भविष्यद्वाणी का वचन, भविष्यद्वाणियों का कुल योग, मनुष्यों का विचार नहीं है। क्योंकि परमेश्वर के बुलाए हुए मनुष्य सीधे पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे गए और **चलाए** गए। जो उन्होंने परमेश्वर से ग्रहण किया, उसकी उन्होंने गवाही दी और उसे लिख लिया। वे आत्मा के द्वारा आगे बढ़ाए गए, जैसे हवा जहाज़ के पाल में भरती है और उसे आगे धकेलती है। पर ये मनुष्य परमेश्वर के टाइपराइटर या कठपुतलियाँ नहीं थे। बल्कि उसने उन्हें व्यक्तियों के रूप में योग्य बनाया कि वे अपनी समझ और अपने शब्दों से वह लिखें, जो वह बताना चाहता था।

अध्याय 2

मैं स्पष्ट रूप से इस बात की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि भविष्यद्वाणी के वचन की उपेक्षा भी की जा सकती है। इससे भी बुरी हैं मनमानी, झूठी भविष्यद्वाणियाँ। उस समय भी इस्राएल में झूठे भविष्यद्वक्ता थे। आज तुम्हारे बीच ऐसे शिक्षक होंगे, जो सत्य नहीं बोलते और परमेश्वर के भेजे हुए भी नहीं हैं। वे और उनकी **झूठी शिक्षाएँ** दलबंदी और पंथ जैसे गुटों की ओर ले जाएँगी। यह पूरी बात उन सबके लिए विनाशकारी है, जिन पर इसका असर पड़ता है और जो इसमें शामिल हैं। क्योंकि झूठे शिक्षक इसके द्वारा अपने स्वामी, यीशु मसीह, का इनकार करते हैं, जिसने उन्हें मोल लिया है। उन्हें उसकी सेवा करनी चाहिए थी। अपनी

नहीं। जो विनाशकारी काम वे करते हैं, दुःख की बात है कि वे उसके नाम में करते हैं। इस भयानक दावे के साथ वे अपने ऊपर विनाश लाते हैं। या तो अपने जीवन में ही; पर निश्चय ही अंतिम दिन के अंतिम न्याय में। यद्यपि उनकी झूठी करतूतें इतनी स्पष्ट हैं, फिर भी बहुत-से लोग उनके पीछे हो लेते हैं। इसके द्वारा सत्य के मार्ग की निंदा होती है। क्योंकि वे दावा करते हैं कि वे सत्य के मार्ग पर चलते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। जो लोग इससे प्रभावित होते हैं, वे समझते हैं कि उन्होंने सत्य का मार्ग पा लिया है, जबकि इसका उल्टा सच है। जब वे इसे पहचानते हैं, तो वे इससे कोई संबंध नहीं रखना चाहते। वे ठीक ही अनुभव करते हैं कि सत्य के मार्ग के विषय में उन्हें धोखा दिया गया है।

ये झूठे शिक्षक तुम्हारी संपत्ति और तुम्हारे पैसे के **लालची** हैं। वे छल भरे शब्दों से, जिनके जाल में तुम फँस जाते हो, उसे तुम्हारी जेब से निकाल लेते हैं। ऐसे काम सदा परमेश्वर का न्याय अपने पीछे लाते हैं। परमेश्वर की दृष्टि से यह कभी इससे भिन्न नहीं रहा। ऐसे लोगों पर विनाश आएगा, जैसा मैं कह चुका हूँ।

परमेश्वर हर एक से उसके पापों का लेखा लेगा। यह अदृश्य संसार के प्राणियों पर भी लागू होता है। **स्वर्गदूतों**, परमेश्वर के पुत्रों, पहरेदारों, के पृथ्वी पर बुरे इरादे थे। उन्होंने स्त्रियों से विवाह किए और फलस्वरूप उनसे शारीरिक संबंध बनाए, जिनसे दानव उत्पन्न हुए। मूसा ने इन संबंधों से उत्पन्न सन्तान को यही नाम दिया। इसके अलावा उन्होंने मनुष्यों को बुरी बातें दिखाई, जिससे पृथ्वी पर बड़ी दुष्टता और भ्रष्टता फैल गई। परमेश्वर के इन पुत्रों का न्याय हो चुका है। परमेश्वर ने उन्हें नहीं छोड़ा। और अंतिम न्याय से बहुत पहले उन्हें अन्धकार में नीचे गिरा दिया गया और ज़ंजीरों में जकड़ दिया गया, ताकि वे और अधिक दुष्टता न कर सकें। वहाँ वे बड़े न्याय के दिन के लिए बन्दी रखे गए हैं।

बहुत-से उदाहरण हैं कि परमेश्वर पाप को सह नहीं सकता और उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। परमेश्वर ने पूरे पुराने संसार को नहीं छोड़ा। उसने उन दिनों के सब भक्तिहीनों पर प्राणघातक जल-प्रलय भेजा। उन बहुत-से दानवों पर भी, जिन्हें परमेश्वर के पुत्रों ने बुरे इरादे से उत्पन्न किया था। केवल नूह धर्मी था, जिसने परमेश्वर की धार्मिकता और आने वाले न्याय का प्रचार किया। उसे उसके परिवार के साथ, जो कुल मिलाकर आठ मनुष्य थे, छोड़ दिया गया और जहाज़ के द्वारा बचाया गया।

सब भक्तिहीनों के लिए चेतावनी का एक और उदाहरण **सदोम** और **अमोरा** का विनाश और उन्हें राख कर देना है। वहाँ धर्मी लूत रहता था, जिसे नगर के नाश से थोड़ा पहले बचाया गया। उसके लिए इन भक्तिहीनों की हिंसा और हिंसा के लिए तत्परता, आकाश के पिंडों की पूजा, और अन्धकार की शक्तियों से उनका संपर्क असहनीय था। दिन-प्रतिदिन यह सब देखना और सहना उसके प्राण को पीड़ा देता था।

ये उदाहरण हमें चेतावनी दें। पर सब भटकाने वालों और भटकाए गए लोगों को भी। और ये हमें उत्साहित करते हैं कि परमेश्वर कैसे अपने लोगों की, जो धर्मी हैं और उसका भय मानते हैं, रक्षा करता है और उन्हें न्याय से बचाता है। वह यह करता है, जब वे इन भक्तिहीनों के बीच परमेश्वर का भय मानते हुए जीते हैं। सब अधर्मी और भक्तिहीन बच नहीं पाएँगे। अधिक से अधिक अपनी मृत्यु के बाद, न्याय के दिन, वे अपना दंड पाएँगे।

न्याय निश्चय ही उन पर आता है, जो अपनी अभिलाषाओं को बेलगाम होकर पूरा करते हैं। क्योंकि वे मसीह को उस शासक के रूप में तुच्छ जानते हैं, जिसकी उन्हें आज्ञा माननी चाहिए। ऐसे मनमाने लोग स्वर्गीय शक्तियों की निंदा करने से भी नहीं हिचकते। उनके विपरीत, स्वर्गदूत, जो पद में इन स्वर्गीय शक्तियों से नीचे हैं, परमेश्वर के सामने उनके विरुद्ध निंदा भरा फ़ैसला सुनाने का साहस नहीं करते। और यह तब भी, जबकि उनके पास इसके लिए पर्याप्त कारण और अवसर होता।

ये झूठे शिक्षक किसकी निंदा करते हैं और किससे टक्कर ले रहे हैं, यह वे नहीं जानते। वे बिना समझ के पशुओं की तरह व्यवहार करते हैं, जो केवल वध के लिए पाले जाते हैं। अपनी ही भ्रष्टता में वे नष्ट हो जाएंगे। जो उन्होंने किया है, उसके लिए वे अपनी उचित मज़दूरी पाएँगे।

उन्हें दिन-दहाड़े भोग-विलास प्रिय है। काम करने के बजाय। वे अपनी ही धोखेबाज़ियों में लोटते हैं। वे तुम्हारे सहभागिता-भोजों में आते हैं, जहाँ तुम इकट्ठे होते हो। उनके मन में बस एक ही बात रहती है, और यह उनके चेहरे पर दिखती है: कोई ऐसी स्त्री ढूँढ़ना, जो उनके साथ व्यभिचार करे। वे पाप के दास हैं। वे उन विश्वासियों के लिए बड़ा ख़तरा हैं, जो अभी दृढ़ नहीं हुए। वे ठीक ऐसे ही लोगों को खोजते हैं। उन्हें बहकाने के उद्देश्य से। उनकी आँखों में लालच पढ़ा जा सकता है। दूसरे का फ़ायदा उठाना और उसका दुरुपयोग करना – यही वे सचमुच अच्छी तरह कर सकते हैं। वे शाप की सन्तान के सिवा कुछ नहीं। उन्होंने सत्य का सीधा मार्ग छोड़ दिया है। हाँ, वे उससे भटक गए हैं। उन्होंने बिलाम का मार्ग चुना है: एक भविष्यद्वक्ता, जो भावी कहने वाले की मज़दूरी के लिए झूठी भविष्यद्वक्ता करना चाहता था। पर उसे एक कड़ी और साथ ही अद्भुत डॉट मिली। उसकी गदही ने, जिस पर वह सवार था, मनुष्य के शब्दों में उसे डॉट और इस तरह भविष्यद्वक्ता की मूर्खता को रोका। गदही ने प्रभु के दूत को देखा, पर भविष्यद्वक्ता ने नहीं।

ये झूठे भविष्यद्वक्ता ऐसे स्रोतों के समान हैं जिनमें पानी नहीं। इसलिए वे बेकार और एक धोखा हैं। वे आँधी से इधर-उधर उड़ाए जाने वाले बादलों के समान हैं। उनके लिए अंत में केवल अनन्त अन्धकार का अन्धेरा बचता है। फूले हुए भाषणों में वे वादे करते हैं और साथ ही यह छिपाते हैं कि उन्हें केवल स्वार्थी इच्छाओं की तृप्ति की परवाह है। इससे वे ठीक उन्हीं को लुभाते और बहकाते हैं, जो अभी-अभी विश्वास के द्वारा संसार की भूल से बच निकले हैं। वे बड़ी स्वतंत्रता की बात करते हैं और इससे उन्हें आकर्षित करते हैं, जो विश्वास में अभी बिलकुल नए हैं। पर वे स्वयं अपनी ही भ्रष्टता के दास हैं। जिस स्वतंत्रता का वे वादा करते हैं, वह स्वतंत्रता नहीं, बल्कि दासता है। वे दासों की तरह अपनी ही भ्रष्टता के अधीन हैं।

जिन पर झूठे शिक्षकों की नज़र है कि उन्हें बहकाएँ, वे अभी-अभी संसार की भूल और उसकी अभिलाषाओं से बच निकले हैं। क्योंकि उन्होंने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह को पहचाना है, उन्होंने उसके पास सुरक्षा और सहारा पाया। पर यदि अब इस बहकावे के द्वारा वे फिर उसी संसार में फिसल जाते हैं, जिससे वे भागे थे, तो अब उनकी दशा पहले से भी बुरी है। यह इतना बुरा है कि उनके लिए, भटकने वालों और भटकाए गए लोगों के लिए, अच्छा होता कि वे धार्मिकता और सत्य के मार्ग को पहचानते ही

नहीं। क्योंकि वे फिर से मुड़ गए हैं, इसलिए वे हमारे प्रभु यीशु मसीह की पवित्र आज्ञा को ठुकराते हैं, जिसे उन्होंने तो सुसमाचार के द्वारा पहचान लिया था।

दुःख की बात है कि ऐसे दुःखद मामलों पर नीतिवचन का यह वचन ठीक बैठता है: कुत्ता अपनी उगली हुई चीज़ की ओर लौट आता है, ताकि उसे फिर खाए। इसी तरह यह कहावत भी ठीक बैठती है: जो सूअरनी अभी-अभी नहलाई गई थी, वह फिर से अपनी ही गन्दगी में लोटती है। मुझे यह इतने कड़े शब्दों में कहना पड़ रहा है!

अध्याय 3

यह अब तुम्हें दूसरी पत्री है। इसके द्वारा मैं तुम्हारी स्मृति को पुकारता हूँ। साथ ही मैं तुम्हारी सोच को सजग करना चाहता हूँ: भविष्यद्वक्ताओं के उस वचन को थामे रहो, जिसकी ओर मैं पहले ही संकेत कर चुका हूँ। हमारे प्रभु यीशु मसीह की उस **आज्ञा** को बार-बार याद करो, जो उसके भेजे हुए लोगों ने, तुम्हारे प्रेरितों ने, तुम तक पहुँचाई है।

सबसे बढ़कर तुम्हें एक बात जाननी चाहिए: अंतिम दिनों में **ठट्ठा करने वाले** आएँगे, जिनका परमेश्वर के भय से कोई लेना-देना नहीं। उनसे न आश्चर्यचकित होओ, न डरो। वे केवल अपनी अभिलाषाओं के अनुसार जीते हैं। वे कहेंगे: **मसीह का आगमन**, जिसकी प्रतिज्ञा तो की गई थी, कहाँ है? उसका कुछ भी दिखाई नहीं देता। सब कुछ वैसा ही बना रहता है जैसा है। जैसा पुराने समय से है। पर वे जानबूझकर एक निर्णायक बात को अनदेखा करते हैं। आरंभ से आकाश और पृथ्वी परमेश्वर की इच्छा से बने रहे। जल में से परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा पृथ्वी को निकाला। उसने भूमि को जल से अलग किया, और नीचे पृथ्वी पर के जल को और ऊपर आकाश के जल को भी। इसी तरह परमेश्वर ने ठहराया कि उस समय का पुराना संसार जल में डूबकर नष्ट हो जाए। आकाश से वर्षा के द्वारा, और उस जल की भारी मात्रा के द्वारा भी, जो पृथ्वी में से फूट निकली और सब कुछ पर छा गई। तो निश्चय ही सब कुछ वैसा **नहीं** रहा, जैसा आरंभ में था। परमेश्वर ने मानो शून्य से, अचानक और प्रचंड रूप से इतिहास के क्रम में हस्तक्षेप किया। जल-प्रलय ने उस समय के पुराने संसार को डुबो दिया और सब भक्तिहीनों से शुद्ध कर दिया।

इसी तरह वर्तमान आकाश और आज की पृथ्वी भी स्वयं परमेश्वर के द्वारा आने वाले न्याय के दिन की आग के लिए रखे गए हैं। उसका अर्थ होगा सब भक्तिहीनों और ठट्ठा करने वालों का विनाश। उस समय वह जल के द्वारा परमेश्वर का शुद्ध करने वाला न्याय था। आने वाला न्याय आग के द्वारा होगा। जितनी निश्चितता से जल-प्रलय आया, उतनी ही निश्चितता से और अचानक परमेश्वर का भस्म करने वाला न्याय आएगा।

यह प्रश्न कि यह सब कब होगा और इसमें कितना समय लग चुका है और अभी कितना लगेगा, तुम्हें, हे प्रियो, बेचैन न करे। क्योंकि हमारे प्रभु के यहाँ हमारा सांसारिक समय का माप नहीं चलता। उसके यहाँ एक दिन हमारे यहाँ के हजार वर्ष हैं। और हमारे यहाँ के हजार वर्ष उसके यहाँ एक ही दिन के समान हैं। निश्चित रहो, प्रभु अपने आने में देर **नहीं** करता। यह उसने हमसे प्रतिज्ञा की है। कुछ लोग समझते हैं कि वह हमें

जानबूझकर बहुत देर तक प्रतीक्षा कराता है – या शायद आएगा ही नहीं! हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए। बल्कि वह सबके प्रति धीरज रखता है। क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो। इसलिए वह हम यहूदियों को, और जातियों को भी, हाँ सब मनुष्यों को, सोच बदलने और लौटने के लिए बहुत समय देता है।

प्रतिज्ञा बदली नहीं है और पूरी होगी: **हमारे प्रभु का दिन** आएगा! और वह भी रात में चोर की तरह। अचानक। ठीक तब, जब बहुत कम लोग उसकी आशा करते हैं। यह दिन प्रचंड और अनुपम होगा। विद्रोही स्वर्गीय शक्तियों का न्याय होगा और पृथ्वी के ऊपर का आकाश तड़तड़ाते हुए शोर के साथ जाता रहेगा। इस तरह पृथ्वी और वह सब कुछ, जो मनुष्यों ने उस पर किया और बनाया है, चित्र की भाषा में कहें तो, खुला पड़ा होगा और परमेश्वर के न्याय की आग के हवाले होगा। जो कुछ टिकने वाला नहीं, वह सब नष्ट हो जाएगा। न्याय की शुद्ध करने वाली आग पृथ्वी पर सब कुछ पिघला देगी। केवल मसीह में धर्मी लोग ही तब उस पर पाए जाएँगे। केवल वे ही सदा बने रहेंगे।

पाप में गिरे हुए स्वर्गदूत, सदोम और अमोरा की विकृत घटनाएँ, और बड़े जल-प्रलय से पहले की एक पूरी पीढ़ी की दुष्टता भी –, उस बात के अग्रदूत हैं, जो निश्चित रूप से हम पर भी आने वाली है।

क्या इस सबका हमारे आज के जीवन के लिए भी कोई अर्थ है? अवश्य: ऐसे जीओ कि तुम्हारे करने और न करने में स्थायित्व और **अनन्त मूल्य** हो। केवल वही आग के न्याय में टिक पाएगा। पवित्र बनों और परमेश्वर की महिमा के लिए जीओ! गहरी लालसा से परमेश्वर के दिन की बाट जोहो! जो ऐसे जीता है, वह परमेश्वर के इस दिन के जल्द से जल्द आने की लालसा करता है। तब स्वर्गीय शक्तियों का सारा अलौकिक विद्रोह मिटा दिया जाएगा और आकाश आग पकड़ लेगा और जलकर पिघल जाएगा।

हम इस भस्म करने वाले आग के न्याय से दुःखी नहीं हैं। क्योंकि इसके स्थान पर परमेश्वर एक **नए आकाश** और एक **नई पृथ्वी** को हमारा अनन्त घर बनाएगा। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने इसकी घोषणा पहले ही कर दी थी। पुरानी पृथ्वी न्याय में शुद्ध की जाएगी – अर्थात् पापियों से और पाप से और उसके सब परिणामों से। जैसे उस समय जल-प्रलय में। पर अब यह आग के द्वारा होगा। सोना गलाने की गरम भट्ठी के समान। पृथ्वी शुद्ध की जाएगी, रूपान्तरित की जाएगी और नए सिरे से रची जाएगी। वह एक ऐसा स्थान होगी, जहाँ – आज के विपरीत – सिद्ध **धार्मिकता** सदा के लिए बसी रहेगी। नई पृथ्वी उससे बिलकुल भिन्न होगी, जिसे हम अभी जानते हैं। वह पूरी तरह मुक्त होगी। मृत्यु से, हर प्रकार के शाप से, अन्याय, रोग, युद्ध, घृणा, भूख, गरीबी, भय और जीवित रहने के संघर्ष से। पर आनंदहीनता, अकेलेपन, अवसाद और भीतरी खालीपन से भी मुक्त। पर इस नई पृथ्वी पर केवल वही बसेंगे, जो परमेश्वर को खोजते और उसका आदर करते हैं।

ठीक यही दृष्टि, और इससे कम कुछ नहीं, हमारी विश्वास-यात्रा का **लक्ष्य** है। इसलिए इस चुनौती को स्वीकार करो कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा के दिन उसके सामने ज्योति में निर्दोष और निष्कलंक खड़े रहो। इस पवित्र परमेश्वर से हम शान्ति में मिलते हैं – बिना किसी भय के। हमें धर्मियों के रूप में पाया जाना चाहिए।

हम उस न्याय के बीच से गुज़रते हैं, जो इस संसार पर आता है, ताकि नए संसार में, यीशु मसीह के अनन्त **राज्य** में, पहुँचें।

और मैं फिर से कहता हूँ: यह तथ्य कि यीशु के फिर आने में देर होती दिखाई देती है, संसार के लिए उद्धार का अर्थ रखता है। क्योंकि वह धीरज रखता है। इसके द्वारा वह मनुष्यों को अभी पश्चात्ताप और मन फिराने के लिए समय और अवसर देता है।

ऐसा ही हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी बड़ी बुद्धि के साथ अपनी पत्रियों में लिखा है। वे कभी-कभी समझने में बिल्कुल सरल नहीं होतीं। और दुःख की बात है कि जो विश्वास में दृढ़ नहीं हैं या अज्ञानी हैं, वे उन्हें तोड़-मरोड़ देते और गलत समझते हैं। ऐसा वे वैसे सब दूसरे लेखों के साथ भी करते हैं और इससे अपने ऊपर विनाश लाते हैं।

पर तुम, मेरे प्रिय भाई-बहनो, जो मेरी पत्री के द्वारा यह सब अब पहले से जानते हो, चौकस रहो! सावधान रहो कि इन दुष्टों की उल्टी हवा और दिखावे से तुम बहा न लिए जाओ और अपने विश्वास की दृढ़ता से गिर न जाओ।

बल्कि तुम्हें मैं प्रोत्साहित करता हूँ: अनुग्रह में **बढ़ते जाओ!** हमारे परमेश्वर के उमड़ते हुए अनुग्रह को अधिकाधिक **पहचानो**। अपना जीवन मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह पर ढाँव पर लगाओ। विश्वास में उन्नति करो। सबसे बढ़कर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ते जाओ। याद रखो कि वह कौन है और उसने हमारे लिए क्या किया है। उसके वचनों और आज्ञाओं को भी याद करो। उसकी गवाही दो। उससे प्रेम करो। उसका आदर करो। उसकी आराधना करो और जो उसने कहा है, वह करो।

उसी की महिमा हो! और किसकी? आज ही हम उससे प्रेम करते और उसका आदर करते हैं। और परमेश्वर के दिन तो कितना अधिक, जब यीशु का राज्य अंतिम रूप से और सदा के लिए चमक उठेगा, जब नया आकाश और नई पृथ्वी प्रभु के ज्ञान और महिमा से भर जाएँगे! आमीन।

यहूदा की पत्री

- हमारा अति पवित्र विश्वास
- भटकाने वाले
- भटकावा
- परमेश्वर का न्याय
- परमेश्वर के प्रेम की सुरक्षा
- एक दूसरे के साथ व्यवहार
- हमारा लक्ष्य

यहूदा की पत्री

यहाँ मैं, यहूदा, लिख रहा हूँ, जो तन-मन से यीशु मसीह का है और उसकी सेवा करता है। मैं याकूब का सगा भाई हूँ – और प्रभु यीशु का भी। मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने सुसमाचार के द्वारा बुलाया है। अपने पीछे चलने के लिए। तुम्हें, जिनसे हमारा परमेश्वर और पिता अपनी ही सन्तान के रूप में प्रेम करता है। तुम परमेश्वर में सुरक्षित हो। उसका खज़ाना और उसकी निज संपत्ति। मसीह के द्वारा सुरक्षित रखे गए, जो हर घटना में तुम्हें थामे रहता है। परमेश्वर की दया, उसकी शान्ति और उसका प्रेम तुम्हें अधिकाधिक भरपूरी से मिलते रहेंगे। इस तरह तुम्हारा जीवन भर जाएगा। और यह दिखाई देगा कि उसने तुम्हें क्या दिया है।

मैं तुम्हें हमारे साझे, महान उद्धार के बारे में लिखने के लिए कितना आनंदित था। तुम्हारी आँखों के सामने परमेश्वर की बड़ी दया रखने के लिए। पर यह भी कि हमारी स्थिति और हमारा खोया हुआ होना कितना निराशाजनक था। पर वर्तमान कारण से मुझे किसी और भी महत्वपूर्ण बात पर ध्यान लगाना पड़ रहा है। मैंने अपने आप को सचमुच विवश पाया कि तुम्हें चेतावनी दूँ और उस विश्वास के लिए लड़ने को कहूँ, जो एक बार साँपा गया। वह विश्वास, जिसे प्रेरितों ने हमारे प्रभु यीशु से पाया और हम तक पहुँचाया। यह विश्वास, जिसने हमें उद्धार दिया, ख़तरे में है! क्योंकि कुछ लोग चुपके से विश्वासियों की सहभागिता में घुस आए हैं। चालाकी और बहकाने की कला के साथ। वे परमेश्वर के अनुग्रह को भोग-विलास और पाप में जीने की अनुमति मान लेते हैं। वे कहते हैं: हम जो चाहें कर सकते हैं, परमेश्वर तो सदा क्षमा कर देगा। इस तरह वे हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु, यीशु मसीह, का इनकार करते हैं। हमें उसकी आज्ञा माननी है – न कि पापपूर्ण अभिलाषाओं के पीछे भागना। पर उनका न्याय और उनका अंत अभी से तय है। इसकी घोषणा पहले ही हो चुकी है। जो ऐसा करते हैं, उन पर परमेश्वर के न्याय का फैसला हम पुरानी परम्पराओं से जानते हैं।

तुम तो इब्रानी बाइबल और यहूदी परम्पराओं की ये कहानियाँ जानते हो। मैं तुम्हें केवल तीन घटनाओं की याद दिलाता हूँ, जो तुम्हारी आज की स्थिति पर अच्छी तरह ठीक बैठती हैं। इन निर्लज्ज भटकाने वालों से चेतावनी के रूप में।

प्रभु ने अपनी प्रजा इस्राएल को अद्भुत रीति से मिस्र की दासता से छुड़ाया। फिर भी उसने प्रजा में से उन्हें दंड दिया और उन सबको जंगल में नष्ट होने दिया, जिन्होंने विश्वास नहीं किया।

यहाँ तक कि स्वर्गदूतों को, परमेश्वर के पुत्रों को, अनन्त जंजीरों में, अन्धकार में, जकड़ दिया गया। न्याय के बड़े दिन तक। क्योंकि उन्होंने अपनी बुलाहट और स्वर्गदूत के पद को छोड़ दिया और नूह के दिनों में मानवीय स्त्रियों के साथ मिल गए। अविश्वसनीय: उन्होंने दानवों को उत्पन्न किया और बड़े जल-प्रलय से पहले जानबूझकर संसार में अराजकता ले आए।

सदोम और अमोरा और आसपास के नगरों ने व्यभिचार किया। पुरुष स्त्रियों के शरीर के बजाय दूसरे शरीर के पीछे गए। उन्होंने उन स्वर्गीय दूतों के साथ शारीरिक संबंध की माँग की, जिन्हें परमेश्वर ने लूत के पास भेजा था। ऐसा उत्पत्ति 19 बताती है। ये नगर, जिन पर न्याय की आग गिरी, इस बात के उदाहरण हैं कि उन्हें आग में अनन्त दंड सहना पड़ता है। सदा के लिए अपने आप पर छोड़े हुए, खोए हुए और अकेले।

परमेश्वर का न्याय टलता नहीं: शारीरिक मृत्यु, जैसे जंगल में इस्राएल के साथ। अधोलोक में बँधे हुए, जैसे परमेश्वर के गिरे हुए पुत्रों के साथ। अनन्त आग का न्याय, जैसे सदोम और अमोरा के साथ।

ये सब या इनसे मिलते-जुलते पाप तुम्हें इन लोगों में मिलेंगे, जिनसे मैं तुम्हें सावधान करता हूँ। वे यह समझ बैठते हैं कि दर्शनों के द्वारा उन्हें अपने कामों की पुष्टि मिलती है। अपने व्यभिचार के लिए। परमेश्वर और मसीह के अधिकार को ठुकराने के लिए। और अन्धकार की स्वर्गदूत-शक्तियों के बारे में अपनी निंदा भरी बातों के लिए, जबकि उनके पास इसके लिए परमेश्वर की कोई सामर्थ्य और अधिकार है ही नहीं।

यहाँ तक कि मीकाईल, सबसे सामर्थी स्वर्गदूतों में से एक, जिसने शैतान से, एक सामर्थी और अन्धकारमय स्वर्गदूत-शक्ति से, परमेश्वर के विरोधी से, मूसा की लोथ के विषय में विवाद किया, उसने भी उसके बुरे इरादों के बावजूद उसके विरुद्ध निंदा भरा फ़ैसला सुनाने का साहस नहीं किया। आदर के कारण! मीकाईल ने केवल इतना कहा: प्रभु तुझे डाँटे!

ये लोग उस बात की निंदा करते हैं, जिसके बारे में उन्हें कुछ पता नहीं। वे नहीं जानते कि वे किससे टक्कर ले रहे हैं। पर जिन बातों का उन्हें पता है, जिन्हें वे पशुओं की तरह स्वाभाविक रूप से समझते और करते हैं, उन्हीं में वे अपनी पशु-जैसी वासना में नष्ट हो जाते हैं। उनके पास न कोई नैतिक दिशा-सूचक है, न आत्मिक समझ।

उन पर हाय! इन भटकाने वालों को डरना चाहिए। वे वही करते हैं, जो हत्यारे और डाह करने वाले कैन ने किया था। वे धार्मिक हैं! पर वे परमेश्वर की उपस्थिति से दूर हो जाते हैं और उसके अधिकार को ठुकराते हैं।

बिलाम की तरह वे पैसे के लिए काम करते हैं। लोभ और लाभ की लालसा से। वे घूस लेते हैं और इस भ्रम में पड़ जाते हैं, मानो वे आत्मिक संसार में कुछ कर सकते हों।

वे विद्रोही कोरह की तरह परमेश्वर के न्याय में नष्ट हो जाएँगे। वे उस पर दावा करते हैं, जो उनका अधिकार नहीं।

यह लज्जा की बात है कि ये लोग तुम्हारे साझे भोजनों में शामिल होते हैं। वे पेट भर-भरकर खाते हैं और ऐसा दिखाते हैं मानो सब कुछ ठीक हो।

वे ऐसे बादलों के समान हैं, जो वर्षा की सूचना देते हैं, पर उसे लाते नहीं। वे झूठ बोलते हैं। हवा उन्हें इधर-उधर उड़ाती है। बिना सहारे के।

वे पतझड़ के अंत के पेड़ों के समान हैं। पर उन पर कोई फल नहीं। वे नंगे हैं, दो बार मर चुके। जड़ से उखड़े हुए।

समुद्र की प्रचंड लहरें। उनकी लज्जा झाग की तरह उफनती है। झाग उड़ाने वाले, खोखली बातें बनाने वाले।

भटकते तारे, जो अपनी कक्षा से भटक गए हैं और कोई दिशा नहीं देते।

गिरे हुए स्वर्गदूतों की तरह वे सबसे घने अन्धकार में जाते हैं। सदा के लिए।

तुम जानते हो, आदम से सातवीं पीढ़ी के वंशज हनोक ने भी ऐसे लोगों के बारे में प्रभु का वचन कहा था: “प्रभु आ गया है, अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ। उनके बीच वह खड़ा है। न्याय करने के लिए। उनके भक्तिहीन कामों के कारण। उनकी ढीठ और भक्तिहीन बातों के कारण। उसके विरुद्ध, जो एकमात्र प्रभु और स्वामी है।”

वे सदा कुड़कुड़ाते हैं और अपनी स्थिति से कभी संतुष्ट नहीं होते।

वे केवल अपनी अभिलाषाएँ खोजते हैं और परमेश्वर की इच्छा के बारे में नहीं पूछते।

वे अपने बारे में बड़ी और घमण्ड भरी बातें करते हैं।

जब उन्हें कोई लाभ मिल सकता है, तो वे लोगों के आगे गिड़गिड़ाते हैं और चापलूसी करते हैं।

जब तुम्हारा सामना इन लोगों से हो, या जब वे पहले ही चुपके से तुम्हारे बीच घुस आए हों, तब हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों के वचनों को याद करो। हे परमेश्वर के प्रियो, उन्होंने पहले ही बता दिया था कि समय के अंत में ठट्ठा करने वाले आएँगे। ऐसे लोग, जो भक्तिहीन होकर अपनी वासनाओं के पीछे चलते हैं। उनका सारा जीवन परमेश्वर की पवित्रता का ठट्ठा उड़ाता है। ये लोग तुम्हारी सहभागिताओं को विषैला करते हैं और फूट डालते हैं। ये ऐसे लोग हैं, जो सांसारिक मन वाले हैं और जिनमें परमेश्वर का आत्मा वास नहीं करता। वे परमेश्वर के सच्चे जीवन को नहीं जानते।

पर तुम, हे प्रियो, अपनी सहभागिता की नींव के रूप में हमारे अति पवित्र विश्वास को रखते हो। उसी पर कलीसिया को बनाओ और इन झूठे लोगों की तरह उसे नष्ट मत करो। यह विश्वास, जिसका प्रचार प्रभु और उसके प्रेरितों ने हमसे किया है, किसी भी चीज़ से बदला नहीं जा सकता। इसलिए हमें इसके लिए लड़ना चाहिए, जैसा मैंने आरंभ में कहा। इन झूठे लोगों के प्रति निष्क्रिय मत रहो। उठ खड़े हो!

इसके लिए प्रार्थना में शक्ति पाओ। पवित्र आत्मा में से प्रार्थना करो! उसकी उपस्थिति और उसके मार्गदर्शन के प्रति सचेत रहो। अपने भीतर और अपने हृदय में उसके द्वारा सँभाले जाओ। वह हमें परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाता है। कभी केवल धार्मिक कर्तव्य निभाने के लिए प्रार्थना मत करो, बल्कि आनंद से परमेश्वर के सिंहासन के पास आओ। सदा नए सिरे से!

परमेश्वर के प्रेम की सुरक्षा में बने रहो, जो कभी न बदलने वाला और महान है। यीशु के प्रेम में बने रहो और उसकी आज्ञाओं को मानो। इन झूठे लोगों से बिलकुल भिन्न, जो स्वामी का इनकार करते हैं।

आने वाले प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा रखो। वह अपने दिन हमसे मिलेगा और हमें बचाकर अनन्त जीवन में पार ले जाएगा।

उन पर दया करो, जो इस आशा पर संदेह करते हैं। उनका साथ दो और उनका कठोरता से न्याय मत करो और उन्हें बुरा-भला मत कहो।

दूसरों को मानो आग में से बचा लो। ऐसे लोगों को, जिन्होंने विश्वास को लगभग छोड़ दिया है। सब कुछ लगा दो, मानो तुम किसी को जलते हुए घर में से बचाकर निकाल रहे हो।

दूसरों पर, जिन्हें ये लोग पहले ही बहका चुके हैं और जो उनकी जीवन-शैली की नकल करते हैं, दया करो। पर ध्यान रखो कि तुम उनकी जीवन-शैली को चुपचाप सहन न करो। इन पापों से घृणा करो और उन्हें उजागर करो। पर इन बहकाए हुए लोगों से कभी घृणा मत करो।

हियाव बाँधो! हमारा उद्धारकर्ता-परमेश्वर हमारी रक्षा कर सकता है कि हम संदेह में ठोकर न खाएँ या बहकाए न जाएँ। वह हमें तब तक सुरक्षित रख सकता है, जब तक हम लक्ष्य तक न पहुँच जाएँ। वह हम सबको अपने सामने इकट्ठा करेगा। हम पर कोई कलंक नहीं होगा। उसकी उपस्थिति में भय नहीं, बल्कि स्वर्गीय आनंद और जयजयकार हमें भर देगा। तब उत्सव आरंभ होगा। और फिर कभी समाप्त नहीं होगा।

ऐसा है हमारा परमेश्वर। हमारा अनुपम उद्धारकर्ता। हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर हमारा बचाने वाला बन गया है।

उसी की है और उसी के योग्य है सारी महिमा, प्रताप, सामर्थ्य और अधिकार। सब समयों से पहले और अब और सदा के लिए।

आमीन।

इब्रानियों के नाम पत्री

- यीशु – ऐसा है परमेश्वर
- यीशु, हमारा महान प्रेरित और महायाजक
- परमेश्वर के सिंहासन के सामने प्रार्थना और आराधना
- पवित्रस्थान में जीवन
- नई वाचा
- पूरा हुआ
- सदा के लिए पवित्र और सिद्ध किए गए!
- महान प्रायश्चित्त का दिन यीशु मसीह में पूरा हुआ
- विश्वास
- न हिलने वाला राज्य

इब्रानियों के नाम पत्री

हे इब्रानियो, पीछे मुड़कर देखो! अपने इतिहास में। आरंभ से यहोवा-परमेश्वर ने बात की है। अक्सर। अलग-अलग और प्रभावशाली रीतियों से। उसने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अपने आप को प्रकट किया। उसने उन्हें भेजा। वे उसके वचन पहुँचाते रहे। पर वह समय अब अंतिम रूप से बीत चुका है। क्योंकि परमेश्वर, पुत्र, आया और संसार से बोला। हाँ, परमेश्वर ने पुत्र के द्वारा ऐसी रीति से बात की, जैसी पहले कभी नहीं। वह अंतिम भविष्यद्वाणी का वचन था, पर सिद्ध – और इसलिए निर्णायक – वचन। वह सबसे बड़ा और सब से बढ़कर संदेश था। हाँ, **पुत्र** स्वयं संदेश था। वह सबके लिए महान उद्धार था।

यह पुत्र सब बातों का वारिस ठहराया गया है। सब कुछ उसी का होगा। सब कुछ पुत्र के द्वारा रचा गया। इसके लिए पिता ने उसे नियुक्त किया। यह सब वैसे ही हुआ जैसे यहोवा-परमेश्वर चाहता था। क्योंकि पुत्र अपने मूल स्वभाव में और अपने सारे कार्य में परमेश्वर की महिमा का सिद्ध प्रतिबिम्ब और प्रकाश है और बना रहता है। यही महिमा यीशु के स्वभाव, उसकी सांसारिक और देहधारी वास्तविकता और उपस्थिति को निर्धारित करती है। पुत्र में, यीशु में, परमेश्वर की महिमा प्रकट होती और दिखाई देती है। दिखाई देने वाली, अनुभव की जा सकने वाली, छूई जा सकने वाली। जो अब तक भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर के बारे में केवल टुकड़ों में, धीरे-धीरे पहचाना जा सकता था, वह अब यीशु में पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। सनातन परमेश्वर ठीक वही है, जो यीशु में आया है। जैसे हमने यीशु को जाना है, वैसा ही परमेश्वर सदा था और है। और वैसा ही वह सदा रहेगा।

जो कुछ पुत्र ने रचा है, वह उसी से जीवित है। मानो एक नाल से जुड़ा हो। सब कुछ केवल उसी के द्वारा अस्तित्व में है – उसके सामर्थी जीवन और सर्वसामर्थ्य के वचन के द्वारा। सब कुछ उसके हाथ में है।

पुत्र, यीशु, ने स्वयं हमारे पापों से उस अत्यंत आवश्यक शुद्धि के लिए संघर्ष किया। इसके लिए उसने अपने जीवन से कीमत चुकाई। उसने **असंभव** को **संभव बनाया**। इस बारे में मैं आगे अक्सर बात करूँगा। क्योंकि यह इतना महत्वपूर्ण है। इसलिए उसने सबसे ऊँचा आदर का स्थान ग्रहण किया है। वह परमेश्वर के प्रताप के दाहिने हाथ है। ऊँचे पर उसके अनन्त सिंहासन पर।

सृष्टि के क्रम में स्वर्गदूत मनुष्यों से ऊपर हैं। पर अब **मनुष्य** यीशु उनसे बड़ा और अधिक सामर्थी हो गया है। उसे एक श्रेष्ठ नाम मिला है। मनुष्य के रूप में। यह नाम स्वयं उसके लिए है। पुत्र के लिए। इस नाम के साथ वह सब स्वर्गदूतों से ऊपर है।

मैं पवित्रशास्त्र के सात उद्धरणों से इसे सिद्ध करूँगा। उसे परमेश्वर से एक श्रेष्ठ पद और नाम मिला है। क्योंकि क्या परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से कहा, जैसा भजन संहिता 2 में मसीहा-राजा के बारे में लिखा है: “तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है”? नहीं! उसका, पुत्र का, कोई आरंभ नहीं था और

न ही वह रचा गया, बल्कि अनुपम रीति से संसार में प्रकट किया गया। यहोवा के अकल्पनीय देहधारण और मनुष्य बनने के रूप में।

या 2 शमूएल 7 में, जहाँ दाऊद के वंशज के बारे में लिखा है: “मैं उसका पिता ठहरूँगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा?” दोनों वचन अपनी भविष्यद्वाणी की चौड़ाई और गहराई में केवल यीशु में पूरे होते हैं। ये वचन हर समय के लिए सत्य हैं। वे विशेष रूप से उसके मनुष्य बनने की ओर संकेत करते हैं। पर उसके पुनरुत्थान और ब्रह्माण्ड के राजा के रूप में उसके ऊँचे किए जाने की ओर भी!

परमेश्वर अपने अनुपम पुत्र यीशु को स्वर्गीय सिंहासन से फिर दृश्य संसार में, बसी हुई पृथ्वी पर, उतार लाएगा। सब मनुष्य यह देखेंगे। और परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसके सामने घुटने टेकेंगे, उसे प्रणाम करेंगे और उसका आदर और उसकी आराधना करेंगे। ठीक ऐसा ही उसके पहले आगमन पर भी हुआ था – जब यीशु, परमेश्वर पुत्र, मनुष्य बना।

स्वर्गदूतों के बारे में परमेश्वर भजन संहिता 104 में कहता है: “मैं स्वर्गदूतों को हवाएँ बनाता हूँ और उन्हें भेजता हूँ। वे मेरे सेवक हैं, जिन्हें मैं आग की लपटें बनाता हूँ।” पर अपने पुत्र के बारे में वह कुछ बिलकुल भिन्न कहता है। क्योंकि वह, पहलौठा, रचा नहीं गया और उसका कभी कोई आरंभ नहीं था। भजन संहिता 45 के शब्दों में पुत्र यीशु के बारे में लिखा है: “हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन दृढ़ है, और सब से ऊपर, बिना आरंभ और बिना अंत के, युगानुयुग। राजदण्ड, तेरे शासन की छड़ी, धार्मिकता है। तेरा राज्य धर्ममय है।” क्योंकि यीशु ने अपने सांसारिक जीवन में परमेश्वर की धार्मिकता से सब से बढ़कर प्रेम किया और अधर्म से घृणा की। इसलिए परमेश्वर ने **उसका** आनंद और जयजयकार के तेल से अभिषेक किया। उसने उसे राजा होने के लिए बुलाया, और किसी को नहीं। किसी स्वर्गदूत को भी नहीं। वही अभिषिक्त है, मसीहा, मसीह।” और **हम** उसके साथी हैं, स्वर्गदूत नहीं!

पुत्र के बारे में परमेश्वर भजन संहिता 102 के शब्दों में कहता है: “तूने आरंभ में ब्रह्माण्ड को रचा, वह तेरे सामर्थी हाथों का काम है। पर वह नाश हो जाएगा, पर तू बना रहेगा। सब कुछ पुराना होकर सड़ जाता है, एक घिसे हुए लबादे की तरह, जिसे लपेटकर बदल दिया जाता है। ब्रह्माण्ड को रूपान्तरित और बदला जाएगा, ताकि वह बिखर न जाए। वह पुत्र के द्वारा नया हो जाएगा। पर तू, पुत्र, तू वही है, कभी न बदलने वाला, जिसके वर्ष कभी समाप्त नहीं होते, और जिसे कभी नए किए जाने की आवश्यकता नहीं।”

क्या परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से भजन संहिता 110 के ये शब्द कहे: “मेरे साथ सिंहासन पर बैठ, और निश्चित रह, वह दिन आएगा, जब तू अपने पाँव अपने सब शत्रुओं पर रखेगा, जैसे पाँवों की चौकी पर”? उसे आदर का स्थान मिलता है। वह राज्य करेगा। स्वर्गदूत नहीं।

स्वर्गदूत आत्मिक प्राणी हैं और बने रहते हैं। सेवा के लिए रचे गए। हाँ, वे इसलिए हैं कि उनकी सहायता करें और उनके सहायक हों, जो पूरे उद्धार की बाट जोहते हैं। वे उनकी सहायता करते हैं, जो पुत्र के अनन्त

राज्य की ओर कठिन मार्ग पर हैं। और परमेश्वर के अनन्त विश्राम की ओर। स्वर्गदूतों ने अक्सर विश्वासियों की सेवा की है। जैसे उन्होंने यीशु की भी की।

अध्याय 2

क्योंकि हम इस महान लक्ष्य की ओर मार्ग पर हैं, हमें ठीक-ठीक ध्यान देना चाहिए कि हमने सुसमाचार में क्या सुना है। नहीं तो हम एक जहाज़ की तरह बंदरगाह तक नहीं पहुँचेंगे। लक्ष्य के पास से बहकर निकल जाएँगे। विश्वास में जहाज़ के डूबने जैसा नाश झेलेंगे।

स्वर्गदूतों के द्वारा हमें, इब्रानियों को, सीनै पहाड़ पर मूसा की व्यवस्था सौंपी गई। स्वर्गदूतों की स्वर्गीय सभा के सामने। और ये वचन स्पष्ट थे: जो इन्हें पूरा करेगा, वह जीवित रहेगा। जो इन्हें पूरा नहीं करेगा, वह मरेगा। हमारे हर काम का उचित बदला मिलता है – उस व्यवस्था के आधार पर, जो स्वर्गदूतों के द्वारा हमें सौंपी गई। पर यदि हम उस महान उद्धार को, पुत्र के द्वारा बचाए जाने को, लापरवाही से अनदेखा करें या दाँव पर लगा दें, हाँ तुच्छ जानें, तो फिर क्या? तब हम परमेश्वर के धर्ममय न्याय से कैसे बच सकते हैं? तब हम कहाँ भाग सकते हैं?

यह उद्धार हमारे प्रभु यीशु के द्वारा आया और आरंभ हुआ। उसने राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद उसने अपने चेलों को आज्ञा दी कि वे इस पूरे किए गए महान उद्धार का हर जगह प्रचार करें। उन्होंने हमारे लिए भी राज्य और उद्धार के उस शुभ संदेश की पुष्टि की, जिसे यीशु ने आरंभ किया था। परमेश्वर ने स्वयं आज तक अलौकिक चिह्नों और आश्चर्यकर्मों के द्वारा इस संदेश की पुष्टि की है। वह अब भी करता है। वह यह पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा करता है, पर असाधारण सामर्थ्य के कामों के द्वारा भी। जहाँ कहीं इस वचन का प्रचार हुआ और उस पर विश्वास किया गया, और किया जाता है, वहाँ परमेश्वर के राज्य की सामर्थ्य काम करती है। ये घटनाएँ इसके सिवा कोई और निष्कर्ष नहीं छोड़तीं कि यह संदेश स्वयं परमेश्वर की ओर से आता है। पुत्र के इस वचन पर तुम्हें ध्यान देना है! वह अंतिम, पर साथ ही सबसे बड़ा भविष्यद्वक्ता था, क्योंकि वह पुत्र है।

परमेश्वर ने उस समय पृथ्वी को मनुष्य के शासन के अधीन किया – स्वर्गदूतों के नहीं। आने वाले संसार को भी उसने स्वर्गदूतों को नहीं सौंपा या मीरास में नहीं दिया। भजन संहिता 8 में लिखा है: “मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है, या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उस पर ध्यान देता है? तूने उसे स्वर्गदूतों से – एलोहीम से, परमेश्वर के रचे हुए पुत्रों से – थोड़ा ही कम बनाया, पर महिमा और आदर का मुकुट उसके सिर पर रखा; तूने सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया।” जब परमेश्वर ने पुत्र को, मसीहा यीशु को, सब कुछ सौंप दिया और उसके अधीन कर दिया, तो ऐसा कुछ नहीं बचता जो उसके अधीन न हो। स्वर्गदूत भी। सब कुछ का अर्थ है सब कुछ। अनुपम, अतुलनीय और अभिषिक्त मनुष्य यीशु मनुष्यों के साथ, हमारे साथ, अपने साथियों के साथ, जिन्हें उसने छुड़ाया और बुलाया है, आने वाले संसार पर राज्य करेगा। यहाँ तक कि स्वर्गदूतों पर भी।

अवश्य, यीशु के इस विश्वव्यापी राज्य को उसके अकल्पनीय आयाम में हम अभी नहीं देख और अनुभव कर सकते। पर एक दिन वह समय आएगा। जब उसका समय आ जाएगा। पर जो हम अभी से विश्वास में और हृदय की आँखों से पहचानते हैं, वह यह है: यीशु, जो अपने सांसारिक जीवन में मनुष्य के रूप में स्वर्गदूतों से नीचा था। जिसने सबके लिए मृत्यु सही और हिंसक मृत्यु की सारी कड़वाहट चखी। हम सबके लिए। ताकि इस तरह परमेश्वर का अनुग्रह सारी सृष्टि के लाभ के लिए हो। और इसी कारण, क्योंकि उसने असंभव किया, अपने आप को क्रूस पर चढ़ाए जाने दिया और मर गया, वह अब परमेश्वर की महिमा और आदर से विभूषित है, हाँ महिमा के विजय-मुकुट से मुकुटित है।

यह पूरी तरह परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप भी है – जिसके द्वारा और जिसके लिए सब वस्तुएँ रची गई – कि उसे, मसीहा यीशु को, पृथ्वी पर उसके दुःखों के द्वारा सिद्ध करे। महायाजक के रूप में अपने पद और सेवा के लिए सिद्ध, जिसके बारे में मैं आगे विस्तार से बात करूँगा। वह, यीशु, हमारे उद्धार का कर्ता, अगुवा, हाँ कप्तान है। इसी रूप में वह हमें, बहुत-से बेटों और बेटियों को, बिना रुके और विजयी होकर उस स्वर्गीय महिमा तक ले जाता है, जो पहले हमारे लिए बंद थी।

मसीह ने हमें पवित्र किया है और परमेश्वर के पास निकाल लाया है। सब कुछ परमेश्वर से आता है, जिसने अपने पुत्र को पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में उत्पन्न किया। वैसे ही जैसे हमें भी, अपने बेटों और बेटियों को। इसलिए मसीहा **मनुष्य के रूप में** स्वर्गदूतों के सामने, जो तो क्रम में मनुष्यों से ऊपर हैं, हम **मनुष्यों** को अपने भाई-बहन कहने से नहीं लजाता। स्वर्गदूतों की, एलोहीम की, स्वर्गीय सभा में वह खुलकर मान लेता है, जैसा भजन संहिता 22 कहता है: “हे परमेश्वर, मैं तेरे महिमामय नाम का प्रचार अपने भाई-बहनों से करूँगा; स्वर्गदूतों की स्वर्गीय सभा के बीच मैं तेरी स्तुति गाऊँगा।” और एक दूसरे स्थान पर लिखा है: “मैं अपना भरोसा उस पर रखूँगा, उस परमेश्वर पर, जो यह नया परिवार चाहता था।” क्रूस पर उसका ठट्ठा उड़ाया गया कि वह परमेश्वर पर भरोसा रखे, ताकि बच जाए: उसने अपने परमेश्वर पर भरोसा रखा, फिर भी मर गया। पर यह अद्भुत परिणाम है, जैसा यशायाह 8 कहता है: “देख, मैं और वे सन्तान, जिन्हें परमेश्वर ने मुझे भाई-बहनों के रूप में दिया है।” मसीहा हम सबको, अपने बड़े, हाँ अनगिनत मानवीय परिवार को, स्वर्गीय सभा के सामने प्रस्तुत करता है, और घोषणा करता और उत्सव मनाता है कि उसने अपने आप को सदा के लिए हमसे जोड़ लिया है।

यह कैसे हो सका? यह कैसे संभव था? वह, नासरत का यीशु, पूरी तरह मनुष्य बन गया। उसने हमारे मानवीय और नश्वर अस्तित्व को पूरी तरह अपना बना लिया, ताकि वह वही हो जो हम हैं। पाप को छोड़कर।

हम मनुष्य दिन-प्रतिदिन मृत्यु और मृत्यु के भय के अधीन थे। पर वह शैतान को हराने आया, जिसके पास मृत्यु की शक्ति है। वह मृत्यु और भय की शक्ति को तोड़ने आया। पाप और अपराध के कारण हम व्यवस्था के मृत्यु-दंड के अधीन हैं। और शैतान, दोष लगाने वाला, इसी फँसले पर अड़ा रहता है। पर मसीह ने अपनी बलिदानी मृत्यु के द्वारा हमें छुड़ाया, इस तरह कि उसने अपनी ही मृत्यु से हमारे पापों के लिए छुड़ाई चुका दी। इस तरह वह उन सबको छुड़ा सका, जो जीवन भर विवेक की पीड़ा में और मृत्यु के भय में

उस व्यवस्था के अधीन थे, जिसे वे कभी पूरा नहीं कर सकते। अब उन सबके लिए मृत्यु की शक्ति टूट चुकी और निष्प्रभावी है, जो हमारे उद्धार के अंगुवे, यीशु मसीह, के पीछे चलते हैं। हमारे उद्धार के कप्तान ने शैतान को हरा दिया है और उससे उसकी शक्ति और उसका हथियार छीन लिया है: उसमें पाप और मृत्यु से स्वतंत्रता है!

उसे स्वर्गदूतों के उद्धार की चिंता नहीं थी। वह तो स्वर्गदूत नहीं, बल्कि मनुष्य बना है। वह वंश की, अब्राहम के वंशजों की, चिंता करता है, हे इब्रानियो। बात तुम्हारी है और उन सबकी भी, जो विश्वास करते हैं। क्योंकि अब्राहम में जातियों को भी आशीष की प्रतिज्ञा दी गई थी। और जो सब विश्वास करते हैं, वे अब्राहम की सन्तान हैं।

इसलिए मैं फिर से कहता हूँ कि यीशु को सब बातों में – निश्चय ही पाप को छोड़कर – अपने भाई-बहनों के समान बनना आवश्यक था। केवल इसी तरह वह परमेश्वर के सामने हमारे लिए एक दयालु, सहानुभूति रखने वाला और विश्वासयोग्य महायाजक बन सका। उसने हमारे लिए क्या किया है? उसने हमारे पापों को दूर कर दिया है। मिटा दिया और उनका अंत कर दिया। ऐसा ही – यीशु की ओर संकेत करने वाले नमूने के रूप में – यरूशलेम के मन्दिर में इस्राएल की प्रजा के लिए होता था। पर वह पूर्ति है। उसने हमारे पापों की क्षमा प्राप्त कराई है। पूरी तरह, एक ही बार में सदा के लिए।

वह केवल हमारी पाप की समस्या के लिए **महायाजक** नहीं बना। नहीं, वह तब तक बना रहता है, जब तक हम लक्ष्य तक न पहुँच जाएँ। वह विश्वास के मार्ग पर हमारी सहायता करता है। वह परमेश्वर के सामने हमारे लिए खड़ा होता है। वह हमारे लिए प्रार्थना करता है। क्योंकि हम कमजोर हैं, प्रलोभनों और सतावों से घिरे हुए, जो हमें मार्ग से हटाना चाहते हैं। इन दुःखों, सतावों और संकटों का उसने स्वयं अनुभव किया और इन्हें सहा। जितनी तीव्रता से हम कभी अनुभव करेंगे, उससे अधिक। इसी ने, जैसा मैंने कहा, उसे इस महायाजकीय सेवा के योग्य बनाया, ताकि वह सहानुभूति रख सके, सहायता कर सके और हमारे साथ खड़ा रह सके। यदि वह मनुष्य न बनता, यदि वह वह सब अनुभव न करता और न सहता जो हुआ, तो वह कभी ऐसा महायाजक नहीं बन सकता था।

अध्याय 3

इसलिए, हे पवित्र लोगो, हे छुड़ाए हुए विश्वासी भाई-बहनो, विश्वास में यीशु की ओर देखो। उस पर ध्यान लगाओ। वह हमारा महायाजक और परमेश्वर का प्रेरित है। महायाजक के रूप में वह परमेश्वर के पास हमारे लिए है। प्रेरित के रूप में वह हमारे पास परमेश्वर के लिए है। तुम सब सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर की बुलाहट के साझेदार और सहभागी हो। परमेश्वर की बुलाहट स्वर्ग से तुम्हारे पास आई। और वहीं वह तुम्हें बुलाता है – अपने स्वर्गीय पवित्रस्थान में।

यीशु उसके प्रति विश्वासयोग्य था और है, जिसने उसे इस सेवा और पद पर नियुक्त किया – जैसे मूसा भी अपने सारे घर इस्राएल में, परमेश्वर की पुरानी प्रजा में, था। पर यीशु को मूसा से बड़ा आदर प्राप्त है।

ठीक वैसे ही, जैसे घर बनाने वाले को उस घर से बड़ा आदर मिलता है, जो उसने बनाया है। हर घर को निश्चय ही कोई न कोई बनाता है; पर जो सब कुछ बनाता है, वह स्वयं परमेश्वर है। यीशु परमेश्वर है, जिसने सब कुछ रचा है, मूसा और उसके घर को भी।

मूसा इस घर में अपनी सेवा में विश्वासयोग्य था। वह उसका नमूना और गवाही था, जिसका प्रचार तुम्हें किया गया। वह मसीह है, पुत्र। वह इस घर के **ऊपर** है। मूसा की तरह नहीं। वह तो इस घर में केवल एक सेवक था। वह घर, जिसे मसीह ने रचा है, और जो उसका है, वह हम हैं: उसका परिवार, परमेश्वर की बेटियाँ और बेटे!

पर सावधान रहो! तुम यह केवल तब हो, जब तुम उस आनंद भरे भरोसे और आशा को, जिस पर हम इतना गर्व कर सकते हैं, **थामे रहते हो** – और साथ ही अपने जीवन के अंत तक या मसीहा के महिमामय आगमन तक दृढ़ बने रहते हो।

पवित्र आत्मा भजन संहिता 95 में कहता है: “आज, जब परमेश्वर की आवाज़ गूँजे, तो ध्यान से सुनो और जो वह कहता है, वह करो। अपने हृदय को कठोर करने के बजाय। क्योंकि ऐसा ही हुआ था कड़वाहट के समय, परीक्षा के दिनों में, जंगल में। उस समय तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे चुनौती देकर और संदेह से परखकर मेरी परीक्षा की, यद्यपि उन्होंने 40 वर्ष तक मेरी विश्वासयोग्यता और देखभाल देखी थी। इसलिए मैं उस पीढ़ी से क्रोधित था। मैंने कहा: वे अपने हृदय में सदा भटकते रहते हैं। उन्होंने मेरे भले मार्गों को कभी पहचाना ही नहीं और पहचानना चाहा भी नहीं। तब मैंने अपने पवित्र क्रोध में शपथ खाई: यह पीढ़ी, जिसने मिस्र छोड़ा है – यहोशू और कालेब को छोड़कर – मेरे विश्राम में, प्रतिज्ञा किए हुए देश कनान में, प्रवेश नहीं करेगी।”

ठीक इसी कारण अपने ऊपर ध्यान रखो कि किसी का ऐसा बुरा हृदय न हो। अविश्वास से भरा हृदय, जो जीवित परमेश्वर और मसीहा से फिर जाने को तैयार हो। इस परमेश्वर और उसकी भलाई को तुमने मसीहा यीशु के द्वारा जाना और अनुभव किया है। इसलिए इस गंभीर और परीक्षाओं से भरे समय में प्रतिदिन एक दूसरे को उत्साहित करो। यह लगातार करो, ताकि तुम में से कोई भी पाप के छल से अन्धा होकर अविश्वास में न बहकाया जाए और कठोर न हो जाए। यह सोचना छल है कि विश्वास छोड़ देने पर विश्राम मिलता है। याद करो: हम तो सदा के लिए मसीहा यीशु के साथी, सच्चे भाई-बहनों की तरह, बन गए हैं। क्या इससे बढ़कर कुछ हो सकता है? क्या तब विश्वास में दृढ़ता से आगे बढ़ते रहना सार्थक नहीं? हम सब कुछ को केवल तब सच्चा और वास्तविक अनुभव करते हैं, जब हम अपने विश्वास के उस भरोसे को, जो हमारे पास आरंभ में था, अंत तक दृढ़ता से थामे रहते हैं। और विश्वास नहीं छोड़ते। परमेश्वर के विश्राम की यात्रा में कोई छोटा रास्ता नहीं है।

परमेश्वर की चेतावनी यह है: “आज, हाँ सदा, जब तुम मेरी आवाज़ सुनो, तो अपने हृदय को कठोर मत करो, जैसे उस समय कड़वाहट में।” वह कौन था, जिसने उस समय अपना हृदय कठोर किया और परमेश्वर को भड़काया? क्या वे सब नहीं, जो मूसा के पीछे-पीछे मिस्र से निकले थे? परमेश्वर किस पर क्रोधित था?

40 वर्ष तक? क्या उन सब पर नहीं, जिन्होंने पाप किया था और जिनकी लोथें जंगल में पड़ी रह गई? किन इस्राएलियों से उसने शपथ खाई थी कि वे उसके विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे? ठीक उन्हीं से, जो आज्ञा न मानने वाले थे और जिन्होंने अपना हृदय उसके विरुद्ध कठोर किया। हम स्पष्ट देखते हैं कि वे अपने अविश्वास के कारण प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश नहीं कर सके।

अध्याय 4

हे इब्रानियो, और मेरी पत्री के सब सुनने और पढ़ने वालो: आओ, हम गंभीरता से इस बात की चिंता करें कि परमेश्वर के उस विश्राम तक, जिसकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की है, सचमुच पहुँचें! वहाँ के मार्ग पर तुम्हें पीछे नहीं गिरना है। और सबसे बढ़कर: अंत में लक्ष्य से चूकना नहीं है। हमें परमेश्वर के आने वाले विश्राम का शुभ संदेश सुनाया गया है। वैसे ही जैसे उन्हें उस समय भेदियों के द्वारा कनान के समृद्ध देश का। पर कनान की महिमा का संदेश उनके किसी काम न आया। क्योंकि उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। हम, वे सब जो मसीहा के संदेश पर विश्वास करते हैं, स्वर्गीय विश्राम में प्रवेश करेंगे। पर उस समय बिलकुल भिन्न था। उन्होंने उस विश्राम में प्रवेश नहीं किया, जिसका परमेश्वर ने उन्हें वचन दिया था। क्योंकि वे बार-बार अपने हृदय कठोर करते रहे और परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया।

आरंभ से परमेश्वर दिखाता है कि अभी एक विश्राम बाकी है। यद्यपि उसकी सृष्टि के काम आरंभ में ही पूरे हो चुके थे। इसलिए उन्हें विश्वास करना चाहिए था। मूसा ने कहा: “और परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों से विश्राम किया।” पर यहाँ लिखा है: “वे, वह पीढ़ी जो मिस्र से निकली, निश्चय ही मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेगी।” पर हमसे विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा की गई है, यदि हम भरोसा रखें। पर उस समय के शुभ संदेश के वे सुनने वाले अपनी आज्ञा न मानने के कारण विश्राम तक नहीं पहुँचे। पर परमेश्वर ने अब फिर से, मिस्र से निर्गमन के बहुत समय बाद, अनुग्रह का एक नया दिन ठहराया है – एक नया “आज”। दाऊद के द्वारा वह भजन संहिता 95 में प्रतिज्ञा करता है, जैसा अभी उद्धृत किया गया: “आज, जब तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने हृदयों को कठोर मत करो।” क्योंकि यदि यहोशू, मूसा के उत्तराधिकारी और इस्राएल के अगुवे, ने उस पीढ़ी को अंतिम विश्राम में पहुँचा दिया होता, तो वह अब किसी और विश्राम की बात न करता। तो परमेश्वर की प्रजा के लिए अब भी एक आने वाला सब्त का विश्राम बाकी है। न सृष्टि का सातवाँ दिन, सब्त का दिन, और न कनान देश परमेश्वर का अंतिम विश्राम लाए। केवल फिर आने वाले मसीहा यीशु के द्वारा, उसके बलिदान और उसके शासन के द्वारा, परमेश्वर का अंतिम और अनन्त सब्त का विश्राम वास्तविकता बनेगा। क्योंकि जो एक दिन इस सब्त के विश्राम में, परमेश्वर की इस शान्ति में, प्रवेश कर चुका है, वह – स्वयं परमेश्वर की तरह – अपने कामों से विश्राम पा चुका है। वैसे ही, जैसा आरंभ में देखा जा सकता था।

तो आओ, हम भरोसे के साथ उसके विश्राम में प्रवेश करने के लिए सब कुछ लगा दें। हम में से कोई भी, उस समय के उन लोगों की तरह, वहाँ के मार्ग पर गिर न जाए। बात उन पापों की नहीं, जो दुःख की बात है

कि हम प्रतिदिन करते हैं। बात यह है कि तुम मसीह पर, मसीहा पर, विश्वास करो और उसे थामे रहो। उसे मत छोड़ो। वह तुम्हें थामे रहता है!

परमेश्वर हमें, हर एक को, परखता है कि हमारे पास सच्चा विश्वास है या नहीं। वह अपने लिखे हुए वचन के द्वारा हमें परखता है। यह वचन जीवित है और इसलिए प्रभावशाली है। वह हमसे ऐसे बात करता है, मानो परमेश्वर सीधे व्यक्तिगत रूप से हमसे बोल रहा हो। साथ ही उसका वचन धारदार है, हाँ दोधारी तलवार की धार से भी अधिक धारदार। क्योंकि वह हमारे प्राण के सबसे भीतरी जीवन में घुस जाता है। वह हमारे सबसे गहरे विचारों और मनोभावों को परखता और खोलकर रख देता है। यह तलवार, चित्र की भाषा में कहें तो, प्राण और आत्मा को अलग कर देती है, ठीक वैसे ही जैसे हड्डियों और गूदे को। इस तरह हम अपने आप को कहीं अच्छी तरह समझ और आँक सकते हैं। पर खतरों को भी पहचान सकते हैं और इस वचन की सामर्थ्य से उन्हें नष्ट कर सकते हैं – या बस उनसे बचकर निकल सकते हैं।

विशाल सृष्टि में ऐसा कुछ नहीं, जिसे सृष्टिकर्ता नहीं देखता। कोई प्राणी, एक भी मनुष्य, परमेश्वर से छिप या भाग नहीं सकता। सब उसके सामने मानो नंगे हैं। हम उसे धोखा नहीं दे सकते। वह सब कुछ देखता है। प्राणियों के रूप में हम उसके प्रति उत्तरदायी हैं और एक दिन हमें उसे लेखा देना है।

ऐसा है परमेश्वर का स्वभाव और उसकी वास्तविकता। और यद्यपि इस कारण अब हमें बड़ा भय हो सकता था, हम निश्चिन्त और साहस से आगे बढ़ सकते हैं। क्योंकि हमारे पास – इस्राएल की तरह – एक महायाजक है। पर पुरानी रीति से नहीं। हमारा महायाजक आकाशों से होकर ऊपर चढ़ गया है। हाँ, परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन तक! स्वर्गीय और अनन्त पवित्रस्थान में। उसने हमारे सब पापों का प्रायश्चित्त कर दिया है। ठीक इसी कारण हम यीशु के अपने अंगीकार को थामे रहते हैं! हमारा महायाजक हमारी कमज़ोरियों को, हमारे भय और चिंताओं को, हमारी थकान और शिथिलता को, पर संदेह और निराशा को भी समझ सकता है। वह हमारे साथ दुःख उठाता और अनुभव करता है। वह यह और किसी की तरह नहीं कर सकता। क्योंकि अपने सारे जीवन में मनुष्य के रूप में वह सब बातों में हमारी तरह परखा गया। क्रूस पर मृत्यु तक। उस पर संकट आए और उसे परखा गया। उसे प्रलोभन दिया गया कि वह क्रूस और भयानक पीड़ाओं को ठुकरा दे और क्रूस के बिना आसान मार्ग चुन ले। पर वह डटा रहा। हमसे भिन्न। क्योंकि उसने कभी पाप और अविश्वास के आगे हार नहीं मानी। वह निष्पाप रहा और उसने पाप नहीं किया!

इसलिए आओ, हम साहस और भरोसे के साथ परमेश्वर के सामने आएँ। चाहे हम कहीं भी हों। क्योंकि परमेश्वर का पुत्र, जो हमें अपने भाई-बहन कहता है, सदा हमारे लिए परमेश्वर के सिंहासन के पास है। वह हमें निमंत्रण देता है कि हम निःसंकोच **अनुग्रह के सिंहासन** के पास आएँ। आओ, हम इस स्वर्गीय सिंहासन के सामने अपनी सब चिंताएँ, भय, आशंकाएँ और संदेह फैला दें। धन्यवाद करें। आराधना करें। आओ, हम वहाँ अनुग्रह के सिंहासन के पास – विश्वास में और पवित्र आत्मा में – समय बिताएँ। विश्राम पाएँ – और उसकी शान्ति पाएँ। उसकी सुनें।

उसका सिंहासन हमारे लिए दोष लगाए जाने का स्थान नहीं है। बल्कि अनुग्रह का। वहाँ हमारा स्वागत है। हमारी प्रतीक्षा की जाती है। वहाँ से हम दया और अनुग्रह पाते हैं। और ठीक तब, जब हमें उनकी आवश्यकता होती है। परमेश्वर सदा हमारी विनती और गिड़गिड़ाहट का उत्तर देगा। वैसे, जैसा हमारे लिए अच्छा है। पर अपने समय पर। सही समय पर! कभी देर से नहीं! हमारी सहायता परमेश्वर की ओर से आती है, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

अध्याय 5

महायाजक मनुष्यों में से चुना जाता है, ताकि वह परमेश्वर के सामने मनुष्यों के लिए खड़ा हो। वह उनके लिए भेंटें और बलिदान वेदी पर लाता है। इस्राएल की प्रजा के पापों के लिए। वह स्वयं अज्ञानियों और भटके हुएों के प्रति, अर्थात् उनके प्रति जिन्होंने पाप किया है, नरमी रखता और उन्हें समझता है। क्योंकि वह स्वयं भी तो एक कमजोर मनुष्य है। ऐसा व्यक्ति, जो सब दूसरों की तरह पाप करता है। इसका अर्थ है: उसे अपने लिए भी बलिदान चढ़ाना पड़ता है।

यीशु के साथ यह बिलकुल भिन्न है: उसे मनुष्यों ने महायाजक नियुक्त नहीं किया। उसे परमेश्वर ने इसके लिए बुलाया है। जैसे आरंभ में हारून को। मसीह के बारे में भजन संहिता 2 में लिखा है: “तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है।” भजन संहिता 110 में वह उसके बारे में कहता है: “तू सदा के लिए याजक है। हारून की तरह नहीं, बल्कि मलिकिसिदक की तरह।”

उसका सांसारिक जीवन कैसा था? किस बात ने उसे महायाजक होने के योग्य बनाया? उसके पास क्या था, जो हारून के पास नहीं था? उसका जीवन प्रार्थना से भरा था। उस एकमात्र से विनती और गिड़गिड़ाहट के साथ, जो उसे मृत्यु से बचा सकता था। यीशु ने तो चिल्ला-चिल्लाकर और रो-रोकर अपने परमेश्वर से विनती की। इतनी गहराई से और इतनी भारी चोट उसे दुःख ने पहुँचाई। उसकी सुनी गई। क्योंकि उसने केवल परमेश्वर पर भरोसा रखा और केवल उसी की आज्ञा मानी। और सब कुछ से बढ़कर उसका भय माना और उसका आदर किया। और यह तब, जबकि वह अनन्त पुत्र था, हाँ परमेश्वर – पिता के तुल्य। मनुष्य बनने से पहले वह इस आज्ञाकारिता को नहीं जानता था। यह उसके लिए नई थी। मनुष्य के रूप में उसने आज्ञा मानना सीखा। वह सब दुःखों, विरोधों और विरोधाभासों के बावजूद आज्ञाकारी रहा। ये चुनौतियाँ व्यर्थ नहीं थीं। क्योंकि अब वह लक्ष्य पर है। परमेश्वर के सिंहासन पर सिद्ध। इस पवित्र जीवन और मरने से कुछ अनुपम उत्पन्न हुआ है। उसका मिशन पूरा हो गया है। उसके विरोधियों के लिए वह क्रूस पर चढ़ाने का कारण था। हमारे लिए वह अनन्त उद्धार का कारण और आधार है। इस तरह उसने अंतिम, अनन्त और सब कुछ समेटने वाला उद्धार रचा है। उन **सबके** लिए, जो उसके पीछे चलते और उसकी आज्ञा मानते हैं।

परमेश्वर ठीक ऐसा ही याजक खोज रहा था! यीशु अब मलिकिसिदक की रीति पर याजक है। इसका क्या अर्थ है, इस पर मैं आगे बात करूँगा। जब वह स्वर्ग पर चढ़ा, स्वर्गीय पवित्रस्थान में, तब परमेश्वर ने बड़े समारोह के साथ उसका स्वागत और सम्मान किया। परमेश्वर ने इन शब्दों से उसका अभिवादन किया: “तू

मलिकिसिदक की तरह महायाजक है”। इस तरह परमेश्वर ने सबको बता दिया कि अब आखिरकार उसके पास वह याजक है, जिसे वह सदा से चाहता था। और इस याजक के साथ आखिरकार एक अनन्त उद्धार भी, जो इसने प्राप्त कराया है!

इसके बारे में कहने को बहुत कुछ और है। पर इसे समझाना इतना आसान भी नहीं। क्योंकि दुःख की बात है कि तुम सुस्त और ऊँचा सुनने वाले हो गए हो। और यह तब, जबकि तुम मसीहा को बहुत समय से जानते हो। तुम बहुत पहले शिक्षक हो सकते थे और तुम्हें होना चाहिए था। पर तुम्हें फिर से परमेश्वर के वचनों की वर्णमाला सीखने की आवश्यकता है। और वह भी बिलकुल शुरू से, मानो तुम इसे पहली बार सुन रहे हो। तुम्हें छोटे शिशुओं की तरह दूध देना पड़ता है, ठोस भोजन के बजाय। हर कोई, जिसे – चित्र की भाषा में – अभी दूध मिलता है, अनुभवहीन है। वह परमेश्वर की उस धार्मिकता के वचन को, जो केवल मसीह के द्वारा दी जाती है, सचमुच नहीं जानता। न ही वह उसे समझने योग्य ढंग से दूसरों तक पहुँचा सकता है। वह एक छोटे नासमझ बच्चे के समान है।

सही भोजन विश्वास में सयानों के लिए, आत्मिक रूप से परिपक्व लोगों के लिए है। वे इसके आदी हैं और इसलिए भले और बुरे, गलत और सही में भेद करने में अभ्यस्त हैं। वे जानते हैं कि सताव और ठुकराए जाने में भी वे यीशु मसीह और उसके सुसमाचार को कैसे और क्यों थामे रहते हैं।

अध्याय 6

फिर भी मैं अब फिर से शुरू से आरंभ नहीं करूँगा – जैसे छोटे पहाड़े के साथ। तुम अब यही आशा कर रहे होगे। नहीं। हमें आगे बढ़ना और सयाना होना है। मैं केवल कुछ बातों का उल्लेख करता हूँ, जो सही और महत्वपूर्ण हैं। वे तुम्हें मसीहा को जानने से पहले ही परिचित थीं। पर मसीहा के द्वारा तुमने और भी बहुत कुछ पाया है। उसकी सारी संपदा को **थाम लो**, जो स्वर्ग पर चढ़ गया है और परमेश्वर के सिंहासन पर बैठा है। उसने सब कुछ पूरा किया है और साथ ही हमें भरपूरी से उपहार दिए हैं। तो अपने देशवासियों से इन पुरानी और जानी-पहचानी बातों के पीछे मत छिपो, जिन पर वे भी विश्वास करते हैं। केवल इसलिए कि कोई विरोध न हो।

कुछ आरंभिक शिक्षाओं को अब हमें पीछे छोड़ना होगा, और फिर से शुरू से आरंभ नहीं करना है: मरे हुए और बेकार कामों और रीतियों से मन फिराना, जो उद्धार नहीं दे सकतीं; परमेश्वर पर विश्वास; धुलाई की शिक्षा, या हाथ रखना; या मरे हुआँ के पुनरुत्थान और अनन्त न्याय की शिक्षा। जब परमेश्वर समय और अवसर देगा, तो हम इन पर भी फिर बात करेंगे। पर अब बात यह है कि हम अपने स्वर्गीय महायाजक की महानता को और उसे, जो उसने पूरा किया है और हमारे लिए करता है, पहचानें और थामे रहें।

दुःख की बात है कि ऐसे लोग भी हैं, जो मसीहा पर विश्वास से फिर जाते हैं और यहूदी धर्म में लौट जाते हैं। और यह तब, जबकि वे एक बार ज्योति पा चुके थे, मसीहा को पहचान चुके थे, पवित्र आत्मा के स्वर्गीय वरदान का ठोस अनुभव कर चुके थे, हाँ उसे चख चुके थे। यद्यपि उन्होंने परमेश्वर का वचन सुना और उसे

समझा था। वे तो परमेश्वर के आने वाले नए संसार के आश्चर्यकर्मों को देख और उनका अनुभव भी कर सके। फिर भी वे मसीह से फिर गए। यह ऐसा है, मानो उन्होंने – उस समय की तरह – मसीहा को अपने लिए फिर से क्रूस पर चढ़ा दिया हो। और यह बात अपने उन देशवासियों को जता दी हो, जो यीशु को ठुकराते हैं। ऐसे लोगों के लिए, जो विश्वास छोड़ देते हैं और व्यवस्था के अधीन जीवन और मरे हुए कामों की ओर लौट जाते हैं, मसीह की स्वतंत्रता और अनुग्रह को फिर से पाना लगभग असंभव है।

एक चित्र, जो विश्वास के जीवन को, पर मसीह से फिर जाने को भी, अच्छी तरह समझाता है: खेत की भूमि अक्सर वर्षा और परमेश्वर की आशीष पाती है और धूप और वर्षा के कारण उपयोगी और खाने योग्य साग-सब्जी उपजाती है। पर वही खेत की भूमि वर्षा के बावजूद केवल काँटे और ऊँटकटारे भी उगा सकती है। किसी को ऐसी चीज़ की आवश्यकता नहीं। वे घायल भी कर सकते हैं। तो काँटे और ऊँटकटारे कोई अच्छा चिह्न नहीं। बल्कि एक प्रकार का शाप। अंत में फिर सब कुछ जला दिया जाता है। जो मसीह से फिर जाता है, वह कहें तो इसी भूमि के समान है। उस आशीष के बावजूद, जिसका उसने अनुभव किया, उस अच्छे फल के बावजूद, जो उसने शायद कभी लाया था, अब वह केवल खरपतवार ही उपजाता है।

परमेश्वर के प्रिय विश्वासी भाई-बहनो: मैं अब जानबूझकर इतनी स्पष्टता और कठोरता से बोल रहा हूँ। पर तुम्हारे बीच हम अच्छे फल देखते हैं। प्रभु का उद्धार तुम्हारे लिए है। परमेश्वर कैसे अन्यायी हो सकता है और भूल सकता है कि तुमने उसके लिए और पवित्र लोगों के लिए क्या किया है? उसके नाम से, मसीहा से, तुम प्रेम करते हो। यह तुम्हारे कामों में, उसके और पवित्र लोगों के लिए तुम्हारी सेवा में देखा जा सकता है। मैं चाहता हूँ कि तुम में से हर एक ऐसा ही परिश्रम लगाए। इसी से विश्वास का निश्चय और अंत तक आशा को थामे रहना पहचाना जाता है। इस तरह तुम सुस्त नहीं होगे। तो उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा के वारिस होते हैं।

अब्राहम के साथ भी ऐसा ही था। परमेश्वर ने उसे प्रतिज्ञा दी और अपनी ही शपथ खाई: “निश्चय मैं तुझे भरपूर आशीष दूँगा और तुझे बहुत बढ़ाऊँगा।” और क्योंकि अब्राहम धीरज से डटा रहा, उसने प्रतिज्ञा पाई – यद्यपि सब कुछ उसके विरुद्ध दिखता था और उसके पूरे होने में इतना लंबा समय लगा। मनुष्य किसी बड़े की शपथ खाते हैं, परमेश्वर अपनी ही। शपथ या सौगंध हर विवाद का अंत है।

इसी तरह परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों को – जो तुम हो – अपनी ही शपथ के द्वारा अपनी योजना का न बदलना सिद्ध किया और उसकी ज़मानत दी। इस तरह दो अटल बातों के द्वारा – अर्थात् उसकी शपथ और प्रतिज्ञा के द्वारा – हमें यह दृढ़ सांत्वना है कि हम लक्ष्य तक पहुँचेंगे। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता। हमने उसके पास, अपने मसीहा के पास, शरण ली है। उसने हमें नई आशा दी है। वह हमारे विश्वास को उस बात की ओर लगाती है, जो हमारे सामने है और निश्चय ही पूरी होगी। यह आशा कोई मनचाहा सपना, कोई भ्रम नहीं। वह हमारे लिए एक सुरक्षित और दृढ़ लंगर के समान है। हमारा अंतरतम स्वर्ग से जुड़ा है। **आशा का लंगर** हम में नहीं, बल्कि सबसे भीतरी स्वर्गीय पवित्रस्थान में डला हुआ है। परमेश्वर के सिंहासन के पास। क्योंकि वहीं यीशु हमारे लिए भीतर गया है। हमारे अग्रदूत के रूप में। वहीं हम एक दिन उसके पीछे जाएँगे।

यही हमारी प्रतिज्ञा है। यही हमारी आशा है। ऐसी ही उसने शपथ खाई है। हाँ, वह मलिकिसिदक की रीति पर हमारा महायाजक बन गया है।

अध्याय 7

तो यह **मलिकिसिदक** कौन है? वह यरूशलेम का राजा था। अब्राहम के समय में। वह परमप्रधान परमेश्वर का याजक भी था। वह एक याजक-राजा था। वह अब्राहम से मिलने आया और उसे आशीष दी, जब वह उन राजाओं पर विजय पाकर लौट रहा था, जिन्होंने उसके भतीजे लूत को बंदी बना लिया था। ऐसा उत्पत्ति 14 में वर्णन किया गया है।

अब्राहम ने उसे युद्ध की लूट का दसवाँ भाग दिया। मलिकिसिदक का अनुवाद है “धार्मिकता का राजा”। शालेम नगर का अर्थ भी शान्ति है। तो वह धार्मिकता और शान्ति का राजा है। उसके न पिता को हम जानते हैं, न माता को। न कोई वंशावली, जो उसे याजकपद का अधिकार देती। हम उसकी तुलना परमेश्वर के पुत्र से करते हैं। वह मसीहा का एक अद्भुत नमूना है। मलिकिसिदक के जीवन का न आरंभ हम जानते हैं, न अंत। परमेश्वर के पुत्र, मसीहा, के साथ भी ऐसा ही है। मलिकिसिदक की तरह वह सदा के लिए याजक है।

यह राजा कितना महान रहा होगा, जिसे अब्राहम ने, हमारे मूलपिता ने, युद्ध की लूट का 10 प्रतिशत तक दे दिया। लेवी के पुत्रों को भी, याजकों को, व्यवस्था के अनुसार यह अधिकार और कर्तव्य है कि वे अपने भाइयों से, अपने देशवासियों से, अपने निर्वाह के लिए 10 प्रतिशत लें। और यह तब, जबकि वे ठीक उन्हीं की तरह अब्राहम के वंशज हैं और इसलिए सब एक ही स्तर पर खड़े हैं। मलिकिसिदक तो अब्राहम का संबंधी भी नहीं है और उसने उससे 10 प्रतिशत पाया। फिर उसने अब्राहम को आशीष दी, जिसने प्रतिज्ञा पाई थी – जैसा मैं कह चुका हूँ। इसमें हमें जिस बात पर ध्यान देना है: सदा छोटा बड़े से आशीष पाता है! तो अब्राहम ने मलिकिसिदक का आदर किया!

लेवी, अर्थात् ऐसे मनुष्य जो नश्वर हैं, 10 प्रतिशत पाते हैं। इस दृष्टि से तो स्वयं लेवी ने भी – जो दसवाँ अंश पाने वाला है – उसे मलिकिसिदक को दिया। क्योंकि लेवी ने यह अप्रत्यक्ष रूप से अपने मूलपिता के द्वारा किया, जब वह मलिकिसिदक से मिला, यद्यपि लेवी तब तक जन्मा भी नहीं था।

तो अब मलिकिसिदक जैसे एक और याजक की आवश्यकता क्यों है? जबकि पापों की क्षमा, सिद्धता और पवित्रस्थान में सबके लिए खुला प्रवेश लेवियों के याजकपद के द्वारा सुनिश्चित होना था! मूसा की व्यवस्था के आधार पर। जब परमेश्वर याजकपद को बदलता है, तो क्या इस व्यवस्था को भी बदलना आवश्यक नहीं?

ठीक यही हम यीशु के विषय में कहते हैं, जो लेवी के गोत्र से नहीं आता। वह यहूदा के गोत्र से आता है। इसके बारे में मूसा ने ऐसा कुछ नहीं कहा, जिसका याजक-सेवा से कोई संबंध हो। सब कुछ और भी स्पष्ट हो जाता है, जब अब सचमुच मलिकिसिदक जैसा एक याजक खड़ा किया जाता है। लेवीय याजक मानवीय वंश के नियमों की व्यवस्था के अनुसार बुलाया जाता है। पर यीशु एक अविनाशी जीवन की सामर्थ्य से!

मसीह के, पुत्र के, विषय में परमेश्वर अनुपम रीति से गवाही देता है: तू – और कोई नहीं – मलिकिसिदक की रीति पर याजक है।

इस तरह याजकपद से संबंधित मूसा की आज्ञा को उसकी कमज़ोरी और निरर्थकता के कारण रद्द ठहराया जाता है। व्यवस्था ने सिद्धता तक नहीं पहुँचाया। इसके विपरीत अब – इस नए याजक के द्वारा – एक बेहतर आशा लाई जाती है। इसी आशा के द्वारा अब हम सब परमेश्वर के निकट आते हैं।

याजक के रूप में उसकी नियुक्ति परमेश्वर की शपथ के साथ हुई। लेवी के गोत्र वालों के साथ नहीं। यीशु के विषय में हम परमेश्वर को कहते सुनते हैं: “प्रभु ने शपथ खाई है और उसे इस पर कभी पछतावा नहीं होगा। तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए याजक है।” इस पद और कार्य में यीशु एक बेहतर वाचा का ज़ामिन, हों उसकी गारंटी और सुरक्षा भी बन गया है। इस पर मैं अभी विस्तार से बात करूँगा।

लेवीय याजकपद में एक याजक के बाद दूसरा आता था, क्योंकि वे सब किसी न किसी दिन मर जाते थे। पर वह सदा बना रहता है। उसका याजकपद नहीं बदलता। वह अब किसी और को सौंपा भी नहीं जा सकता। क्योंकि उसकी याजक-सेवा कभी रुकती नहीं, या समाप्त नहीं होती, इसलिए वह सबको पूरी तरह बचा सकता है और लक्ष्य तक पहुँचा सकता है। उन सबको, जो उसके द्वारा प्रार्थना और आराधना में परमेश्वर के निकट आते हैं। वह सदा जीवित है, ताकि परमेश्वर के सिंहासन के पास उनके लिए खड़ा हो और उनके लिए प्रार्थना करे।

हमें ठीक ऐसे ही महायाजक की आवश्यकता थी। ऐसे की, जो उचित रीति से हमारा प्रतिनिधित्व कर सके। जो उसके समान इतना पवित्र, इतना निर्दोष और इतना निष्कलंक हो। जो पापियों से अलग होकर अब आकाशों से भी ऊँचा हो गया है। और परमेश्वर के सिंहासन पर बैठा है। ऐसा, जिसे सब पहले वालों की तरह पहले अपने पापों के लिए और फिर प्रजा के पापों के लिए बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं। नहीं, उसने अपने लिए बलिदान नहीं चढ़ाया। प्रजा के लिए उसने एक ही बार में सदा के लिए क्रूस पर अपने आप को बलिदान कर दिया।

मूसा की व्यवस्था ऐसे मनुष्यों को महायाजक ठहराती है, जिनमें कमज़ोरी है। ऐसे, जो पाप करते हैं। और मरते हैं! परमेश्वर की शपथ का वचन, जो व्यवस्था दिए जाने के बाद आया, **पुत्र** को ठहराता है। उसे इस सेवा के लिए सिद्ध किया गया। अपने जीवन, अपनी मृत्यु और महिमा में मुकुट पहनाए जाने के द्वारा। सारे अनन्त काल के लिए।

अध्याय 8

जो हम कह रहे हैं, उसकी मुख्य बात यह है: हमारे पास एक ऐसा महायाजक है, जो स्वर्गीय सिंहासन-कक्ष में बैठ गया है। परमेश्वर के प्रताप के दाहिने हाथ। वह सच्चे पवित्रस्थान का सेवक है। उसका नहीं, जिसे कभी मनुष्यों ने बनाया, बल्कि उसका, जिसे स्वयं प्रभु ने रचा है।

हर महायाजक इसलिए नियुक्त किया जाता है कि भेंटें और बलिदान चढ़ाए। उसके पास वे होने भी चाहिए, ताकि वह अपनी सेवा कर सके। यदि मसीह पृथ्वी पर होता, तो वह याजक हो ही नहीं सकता था, क्योंकि लेवीय याजक तो व्यवस्था के अनुसार पहले से भेंटें चढ़ाते हैं। यह लेवीय सेवा और उनका तम्बू-पवित्रस्थान स्वर्गीय वास्तविकताओं का प्रतिबिम्ब है। सारी सांसारिक उपासना-विधि और पवित्रस्थान स्वर्गीय बातों की छाया है। जब मूसा ने यह तम्बू खड़ा किया, तो परमेश्वर का उसे यह निर्देश था: “ध्यान रख कि तू सब कुछ वैसा ही तैयार करे, जैसा मैंने तुझे पहाड़ पर दिखाया है”।

हमारे महायाजक की सेवा कितनी श्रेष्ठ है! इसके अलावा वह एक नई वाचा का मध्यस्थ भी बन गया है। यह हमारे लिए कहीं बेहतर प्रतिज्ञाओं के आधार पर स्थापित की गई। यदि पहली व्यवस्था-वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी कभी खोजी न जाती। क्योंकि उस समय, यिर्मयाह 31 में, प्रभु ने अपनी प्रजा को डाँटते हुए कहा: “देखो, ऐसे दिन आएँगे, जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक **नई वाचा** स्थापित करूँगा। वह उस वाचा से भिन्न होगी, जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ उस दिन बाँधी, जब मैंने तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें मिस्र से निकाला। तुम मेरी वाचा में नहीं जीए। तब मैंने तुम्हारी सुधि लेना छोड़ दिया।”

पर यह वह नई वाचा है, जिसे मैं वाचा तोड़ने के इन अन्धे दिनों के बाद इस्राएल के घराने के लिए नए सिरे से स्थापित करूँगा: मैं अपनी सिद्ध व्यवस्था को उनकी सोच में जमा दूँगा। हाँ, मैं उसे उनके हृदय में लिख दूँगा। मैं फिर से उनका परमेश्वर होऊँगा, जिसे वे जानते हैं। वे मेरी प्रजा होंगे। तब उन्हें अपने पड़ोसी को यह सिखाना नहीं पड़ेगा: प्रभु को, हमारे परमेश्वर को, पहचानो! क्योंकि तब वे सब, छोटे से लेकर बड़े तक, मुझे सचमुच जानेंगे। मैं उनकी भूलों के बावजूद उन पर अनुग्रह करूँगा। मैं उनके पापों को फिर कभी स्मरण नहीं करूँगा।

क्योंकि वह एक **नई** वाचा की बात करता है, उसने पहली को पुरानी ठहरा दिया है। जो पुराना होता है, वह जीर्ण हो जाता है। वह शीघ्र ही सदा के लिए मिट जाता है।

अध्याय 9

पहली वाचा में सांसारिक पवित्रस्थान में आराधना के लिए ठीक-ठीक नियम थे। यह तम्बू-पवित्रस्थान ऐसा दिखता था: पहले भाग में सात शाखाओं वाली दीवट और भेंट की रोटियों की मेज़ थी। वह पवित्रस्थान था। दूसरा तम्बू, अर्थात् दूसरे पर्दे के पीछे का दूसरा भाग, परमपवित्र स्थान कहलाता है। ठीक उसके सामने सोने की धूप-वेदी थी। और परमपवित्र स्थान में वाचा का सन्दूक था। लकड़ी का एक सन्दूक, जो पूरी तरह सोने से मढ़ा हुआ था। उसमें जंगल के मन्ना से भरा सोने का एक घड़ा था। और हारून की छड़ी, जिसमें कोंपलें निकल आई थीं। और अंत में पहली वाचा की व्यवस्था की पटियाएँ। सन्दूक के ऊपर महिमा के करुब थे, सोने के वे दो स्वर्गदूत, जो प्रायश्चित्त के ढकने की ओर नीचे देखते हैं। ये सब बारीकियाँ तुम्हें मालूम हैं। इसलिए मुझे इनका और वर्णन करने की आवश्यकता नहीं।

क्योंकि तम्बू-पवित्रस्थान इस तरह सजाया और बाँटा गया है, याजक अपनी सेवा करने के लिए प्रतिदिन पहले भाग में जाता है। दूसरे भाग में केवल महायाजक जाता है। वर्ष में केवल एक बार। वह बलिदान का लहू लेकर भीतर जाता है। इसे वह अपने लिए और प्रजा के पापों के लिए चढ़ाता है। इसके द्वारा पवित्र आत्मा स्पष्ट करता है कि परमपवित्र स्थान का मार्ग न खुला है और न ज्ञात है, जब तक पहला भाग सीधे प्रवेश को संभव नहीं बनाता। इसलिए वह समय, जिसमें यह सारी सेवा की जाती है, उद्धार और क्षमा की दृष्टि से निष्फल है। क्योंकि सब भेंटें और बलिदान विवेक का बोझ हल्का नहीं कर सकते, चढ़ाने वालों को सिद्ध करना तो दूर की बात। क्योंकि खाने, पीने की वस्तुएँ और धुलाइयाँ बाहरी बातें हैं, जो हृदय को सिद्ध, शुद्ध या परिवर्तित नहीं कर सकतीं। पर अब वह समय आ गया है, जब मनुष्य के पास एक सिद्ध, शुद्ध किया हुआ, हाँ स्वतंत्र किया हुआ विवेक हो सकता है।

क्योंकि मसीहा आ गया है। सिद्ध बातों का महायाजक। जिसकी सेवा सिद्धता उत्पन्न करती है। ऐसा ही पहले से कहा गया था। वह एक बड़े, हाँ सिद्ध पवित्रस्थान के लिए आया है। हाथों से बना हुआ नहीं। वह इस संसार का है ही नहीं। उसका बकरों और बछड़ों के लहू से भी अब कोई लेना-देना नहीं। क्योंकि यहाँ मसीह का लहू काम करता है। जब उसका अपना लहू क्रूस पर बहा और अनन्त छुटकारा प्राप्त कराया, तब वह स्वर्ग में उठा लिए जाने के द्वारा स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश कर गया। वह अपने ही बहाए हुए लहू की सामर्थ्य और स्थायी मान्यता में भीतर गया। उसका लहू पशुओं के लहू से बढ़कर है। उसका मूल्य अनन्त गुना अधिक है।

और वह पवित्रस्थान से फिर बाहर नहीं आता, जैसे सांसारिक पवित्रस्थान में महायाजक आता है। उसे फिर बाहर आने की आवश्यकता भी नहीं। क्योंकि उसने तो हमारे लिए अनन्त और सिद्ध छुटकारा प्राप्त कराया है। दोहराने को कुछ नहीं है।

यदि बकरों और बैलों का लहू और एक कलोर की राख, जो जल के साथ उन पर छिड़की जाती थी जिन्होंने किसी मुर्दे को छुआ था, बाहरी रूप से पवित्र करती है – तो मसीह का लहू कितना अधिक सच्ची पवित्रता उत्पन्न करेगा। क्योंकि उसने परमेश्वर के अनन्त आत्मा की सामर्थ्य और मार्गदर्शन के द्वारा स्वेच्छा से अपने आप को परमेश्वर को सौंप दिया, क्रूस पर बलिदान कर दिया। और वह भी बिना किसी कलंक या दोष के। उसका लहू पशु-बलियों के लहू की तरह बाहरी रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं करता। नहीं। वह तुम्हारे विवेक को शुद्ध करता है! और वह भी व्यवस्था के उन मरे हुए और बेकार कामों से, जिनके बारे में तुम जानते हो कि वे तुम्हें नहीं बचाएँगे। स्वतंत्र और शुद्ध किए हुए विवेक के साथ तुम आखिरकार जीवित परमेश्वर की सेवा कर सकते हो।

वह परमेश्वर के साथ एक नई, दूसरी वाचा का मध्यस्थ बन गया है। क्योंकि वह मरा, और पहली वाचा के अधीन हुए अपराधों से हमारे छुटकारे के लिए उसने अपने आप को बलिदान कर दिया। उसके द्वारा, हमारे मध्यस्थ के द्वारा, वे सब, जिन्होंने सुसमाचार की बुलाहट को ग्रहण किया, प्रतिज्ञा की हुई और अनन्त मीरास पा सकते हैं। वाचा का बाँधा जाना तभी लागू होता है, जब किसी बलिदान की मृत्यु हो चुकी हो।

बलिदान की मृत्यु और लहू के बिना वह निष्प्रभावी है। इसलिए पहली, पुरानी, वाचा का उद्धाटन भी लहू से हुआ। जब मूसा ने प्रजा को वाचा की सब आज्ञाएँ पढ़कर सुनाई, तो उसने बलिदानों का लहू जल और लाल ऊन के साथ वाचा की पुस्तक पर और सारी प्रजा पर छिड़का। उसने कहा, जैसा निर्गमन 24 बताता है: “यह उस वाचा का लहू है, जिसके तुम अब बंधन में हो।” पर केवल व्यवस्था की पुस्तक और प्रजा पर ही छिड़काव नहीं हुआ। तम्बू-पवित्रस्थान और उपासना के पात्र भी, हाँ लगभग सब वस्तुएँ लहू से शुद्ध की जाती हैं। ऐसा स्वयं व्यवस्था निर्धारित करती है। इसके अनुसार **व्यवस्था के अधीन** लहू बहाए बिना पापों की कोई क्षमा या शुद्धि नहीं होती।

यह आवश्यक था कि तम्बू, जो तो स्वर्गीय पवित्रस्थान का प्रतिरूप है, लहू के द्वारा शुद्ध किया जाए। पर स्वर्गीय पवित्रस्थान के लिए कहीं बेहतर बलिदान आवश्यक था। क्योंकि जैसा सब जानते हैं, मसीह सांसारिक और मनुष्यों के बनाए हुए पवित्रस्थान में नहीं, बल्कि सीधे स्वर्ग में, परमेश्वर के सिंहासन के पास, गया है। वहाँ वह महायाजक के रूप में हमारे लिए खड़ा है। परमेश्वर के सामने।

वह वहाँ इसलिए नहीं गया कि बार-बार अपने आप को बलिदान करे। ऐसा पुरानी वाचा के अधीन महायाजक के साथ था, जो बार-बार भीतर जाता है, अपने लहू के साथ नहीं, बल्कि किसी पशु-बलि के लहू के साथ। इस याजक- और बलि-व्यवस्था के अनुसार तो मसीह को बहुत बार दुःख उठाना पड़ता।

नहीं, मसीहा परमेश्वर के ठहराए हुए समय में एक बार पृथ्वी पर प्रकट हुआ। वह इसलिए आया कि क्रूस पर अपने आत्म-समर्पण के द्वारा, सिद्ध बलिदान के रूप में, पाप की समस्या को एक ही बार में और अंतिम रूप से सुलझा दे। और वह भी उतना ही एक बार और अटल रूप से, जितना मनुष्य के लिए एक बार मरना और फिर परमेश्वर के न्याय के सामने उपस्थित होना ठहराया गया है। मसीहा एक बार, हाँ एक ही बार में सदा के लिए बलिदान किया गया, ताकि बहुत-से मनुष्यों के पापों को उनके स्थान पर उठा ले और मिटा दे।

फिर वह पवित्रस्थान को एक बार और छोड़ेगा: इसलिए नहीं कि फिर से पापों की क्षमा के लिए भीतर जाए। नहीं, वह बाहर आएगा और उन सबके लिए प्रकट होगा, जो उसकी बाट जोहते हैं। फिर से कहता हूँ: पाप की समस्या सुलझाने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें, जो उस पर भरोसा रखते हैं, पूरी तरह बचाने और स्वर्गीय पवित्रस्थान में, परमेश्वर के अनन्त विश्राम में, ले जाने के लिए।

अध्याय 10

व्यवस्था, अपने बलिदान के नियमों और तम्बू-पवित्रस्थान बनाने के निर्देशों के साथ, किसी बड़ी चीज़ की छाया के समान है। अर्थात् उन सिद्ध बातों की, जो मसीह में अब प्रकट हुई हैं और आ गई हैं। इसलिए बलिदान, जो बार-बार, हर वर्ष महान प्रायश्चित्त के दिन, चढ़ाए जाते हैं, कभी सिद्ध नहीं कर सकते। सारी प्रजा इस दिन क्षमा की आशा में तम्बू-पवित्रस्थान के पास आती है। यदि वहाँ क्षमा और सिद्धता मिल जाती, तो सारी बलिदान-सेवा तो समाप्त की जा सकती थी। तब प्रजा और याजकों को उन पापों के विषय में, जो क्षमा नहीं हुए, विवेक में कोई चिंता न करनी पड़ती। महान प्रायश्चित्त के दिन – और दूसरे अवसरों पर भी –

बकरों और बैलों का लहू पापों को दूर करना **असंभव** है। यद्यपि हर वर्ष का प्रायश्चित्त का दिन अपनी बलि-विधियों के साथ बार-बार पापों की याद दिलाता है! पर वह क्षमा का कोई स्थायी निश्चय उत्पन्न नहीं कर सका। शायद एक वर्ष के लिए विवेक की शान्ति।

जब यीशु संसार में आया, तो उसने भजन संहिता 40 के शब्दों की ओर संकेत किया और दिखाया कि वे स्वयं उसके द्वारा पूरे होते हैं: “हे परमेश्वर, पशु-बलि और अन्नबलि तूने वास्तव में कभी नहीं चाही। पर मेरे लिए तूने एक देह तैयार की। होमबलि और पापबलि से तू सचमुच प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैंने कहा: मुझ पर दृष्टि कर। मैं तेरी उद्धार की इच्छा पूरी करने आया हूँ। यह पुराने नियम की पुस्तक में मेरे विषय में पहले से लिखा हुआ है।” परमेश्वर के ये वचन बलिदान के नियमों वाली मूसा की व्यवस्था से बहुत बाद आते हैं और किसी नई और कहीं बेहतर बात की घोषणा करते हैं।

जब उसने कहा: “सब बलिदानों से तू प्रसन्न नहीं था, हाँ तू उन्हें चाहता ही नहीं था” (यद्यपि वे परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं) –”, तब पुत्र ने, जो परमेश्वर के हृदय और उसकी इच्छा को समझता था, कहा: “देख, मैं तेरी उद्धार की इच्छा पूरी करने आया हूँ”।

इस तरह वह पहली वाचा और उसकी बलिदान-सेवा को हटा देता है, ताकि दूसरी, नई और अनन्त वाचा को स्थापित करे। क्योंकि परमेश्वर की उद्धार की इच्छा के द्वारा, जिसे मसीहा ने कार्यान्वित किया और पूरा किया, हम पवित्र किए गए हैं। पापों से शुद्ध किए गए। गुलगुता पर क्रूस पर यीशु की देह के एक ही बार चढ़ाए गए बलिदान के द्वारा।

पुरानी वाचा का हर याजक प्रतिदिन **खड़ा** रहकर अपनी सेवा करता है। वह बार-बार वही बलिदान चढ़ाता है, जो कभी पापों को दूर नहीं कर सकते। करें भी कैसे? बलि किए गए पशु तो पाप के बारे में कुछ नहीं जानते। पर मसीह ने, सिद्ध याजक ने, पापों के लिए एक ही बलिदान चढ़ाया। स्वयं को, निष्पाप को। उसके बलिदान ने **सब कुछ** ठीक कर दिया है। उसे दोहराया जाना आवश्यक नहीं। इसलिए वह सदा के लिए **बैठ गया** है। परमेश्वर के सिंहासन पर। परमेश्वर के दाहिने हाथ, जो अपने पुत्र के बलिदान का उत्सव मनाता है। वहाँ वह प्रतीक्षा करता है, जब तक उसके सब शत्रु पूरी तरह उसके अधीन न हो जाएँ। क्योंकि एक ही सिद्ध बलिदान के द्वारा उसने हमें – जो विश्वास करते हैं – सदा के लिए पवित्र कर दिया है। इस तरह उसने हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचा दिया है। हमें वैसा बनना था, जैसा वह हमें चाहता था। हमें, जो स्वयं परमेश्वर के द्वारा पवित्र किए जाते हैं, ताकि उसके साथ रहें, उसके पवित्रस्थान में।

ठीक इसी की गवाही पवित्र आत्मा पुराने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के शब्दों में देता है: “यह वाचा मैं उनके साथ स्थापित करूँगा, प्रभु कहता है। मैं अपनी व्यवस्थाएँ उनके हृदयों में डालूँगा और उनके विचारों में लिखूँगा।” और: “उनके पापों और अधर्म के कामों को मैं फिर कभी स्मरण नहीं करूँगा। वे क्षमा किए गए हैं, मानो कभी हुए ही न हों। मैं उन्हें फिर कभी तुम्हारे सामने नहीं रखूँगा या तुम पर दोष नहीं लगाऊँगा।” तो जब क्षमा हो चुकी है, जब वह घोषित की गई और दी गई है, तब पाप के लिए किसी और बलिदान की कभी आवश्यकता नहीं। इससे सारी बलिदान-सेवा अनावश्यक, हाँ व्यर्थ हो गई है।

अब महान लक्ष्य प्राप्त हो गया है। कुछ ऐसा, जो सदा से परमेश्वर के हृदय की इच्छा थी। स्वर्ग खुला है। सबके लिए। हम उसके पास आ सकते हैं। अब हमें पूरा भरोसा है और हम निश्चिन्त होकर, बिना भय के, सबसे भीतरी स्वर्गीय पवित्रस्थान में परमेश्वर के सिंहासन के सामने आ सकते हैं। विश्वास में। अभी दिखाई नहीं देता। यीशु के लहू के द्वारा। एक **नए मार्ग** से, जो पहले नहीं था। जो जीवित है। वह मृत्यु की ओर नहीं, बल्कि जीवन में ले जाता है। परमेश्वर की उपस्थिति में। इस नए और जीवित मार्ग पर हम लगातार आगे बढ़ सकते हैं। उसने, यीशु ने, स्वयं इसे हमारे लिए खोला और मुक्त किया है। उस पर्दे के बीच से, जो मानो पवित्रस्थान को बंद करता है। इसलिए पर्दे का फटना आवश्यक था। एक जीवित यीशु ने हमें दिखाया कि परमेश्वर कौन है। अपने जीवन में वह उस पर्दे के समान था, जो अभी फटा नहीं था। केवल उसके बलिदान ने, हमारे लिए उसकी मृत्यु ने, मार्ग खोल दिया। इससे पुरानी याजक- और बलि-उपासना सदा के लिए समाप्त हो गई है।

और वह परमेश्वर के घर पर **हमारा** भी महान याजक है। वह परमेश्वर के पास हमारे लिए है। वह हमारा हाथ पकड़कर हमें परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाता है। वह परमेश्वर की उपस्थिति में भी हमारी सब कमज़ोरियों, गलतियों और पापों के बावजूद, जिनका हम अभी अनुभव करते हैं, हमारी अगुवाई करता है। इसके लिए वह हर ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेता है, ताकि हम स्वर्गीय पवित्रस्थान में भरोसे के साथ प्रार्थना, आराधना, विश्राम कर सकें और परमेश्वर की सुन सकें।

तो आओ, अब हम सचमुच और लगातार परमेश्वर के पास जाएँ! उसके सिंहासन के पास। सच्चे हृदय के साथ, जो परमेश्वर को खोजता है। पूरे निश्चय के साथ, जो केवल विश्वास हमें देता है। हमारे हृदय तो उसके लहू से शुद्ध किए गए हैं। ऐसा विवेक, जो हमारे पाप के कारण हम पर लगातार दोष लगाता रहे, अब नहीं रहा। परमेश्वर के वचन के शुद्ध जल से भी हम – निश्चय ही चित्र के अर्थ में – पाप की गन्दगी से धोए गए हैं।

इतना भरपूर उपहार पाए हुए लोगों के रूप में हम इसके सिवा और क्या करें कि अपनी आशा को मान लें और उसे थामे रहें। एक ऐसी आशा, जो स्वयं मसीहा है, परमेश्वर के सिंहासन पर, जहाँ से ब्रह्माण्ड पर शासन होता है। एक ऐसी आशा कि एक दिन वह सच्चा और दृश्य हो जाएगा, जो आज विश्वास में हमारे पास पहले से है। क्योंकि कोई इतना विश्वासयोग्य नहीं, जितना वह, जिसने हमें यह प्रतिज्ञा दी।

हाँ, आओ, हम प्रेम और देखभाल के साथ एक दूसरे का ध्यान रखें। नियंत्रण के रूप में नहीं। बल्कि एक दूसरे को प्रेरित करने के लिए: प्रेम और कृतज्ञता से भलाई करने के लिए। अपने पड़ोसियों के प्रोत्साहन के लिए। आओ, हम बार-बार इकट्ठे हों और सहभागिता बनाए रखें, प्रार्थना और आराधना करें। कुछ भी हमें इसे यथासंभव नियमित रूप से करने से रोक न सके। इस तरह हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं। कुछ लोगों ने इसे पूरी तरह छोड़ दिया है, वे थक गए हैं और इस खतरे में हैं कि विश्वास और आशा को भी छोड़ दें। आओ, हम सक्रिय होकर एक दूसरे को सहभागिता के लिए और आशा में उत्साहित करें। क्योंकि हमारे प्रभु यीशु का और परमेश्वर का बड़ा दिन निकट से निकट आता जा रहा है। दिन-प्रतिदिन।

जो विश्वास और आशा को, जानबूझकर और इरादे से, छोड़ देता है, उसके सामने एक गंभीर समस्या है। क्योंकि उसे एक बार सत्य को पहचानने का अवसर मिला, पर फिर वह उसे फेंक देता है। जब उसने एक बार यीशु के बलिदान को पहचान लिया और फिर उसे ठुकरा देता है – तो उसके लिए कोई और बलिदान नहीं, जिसका वह सहारा ले सके। तब कौन-सा बलिदान उसे बचा सकता है? उसके लिए केवल ईश्वरीय न्याय की भयभीत प्रतीक्षा बचती है। क्योंकि पुरानी बलि-व्यवस्था तो उसके विवेक को स्वतंत्र नहीं कर सकती। केवल न्याय की एक न रुकने वाली आग की प्रतीक्षा बचती है, जो मसीहा के शत्रुओं पर आएगी। जिसने मूसा की व्यवस्था को ठुकराया, वह भी गवाहों की गवाही पर बिना दया के मर जाता है। तुम क्या सोचते हो, उसके लिए दंड कितना भयानक होगा, जो अब परमेश्वर के पुत्र को, यीशु मसीहा को, पाँवों तले रौंदता है – मानो वह कूड़ा हो? और नई और अनन्त वाचा के उस लहू को, जो पवित्र और सिद्ध करता है, अशुद्ध समझता है? और उस आत्मा का, जो कभी उसके पास यह अनुग्रह लाया और उसे इसके विषय में ज्योति दी, अब ऐसा अपमान करता है, मानो वह सबसे बुरी चीज़ हो जो उसके साथ हुई? हम यह इसलिए कहते हैं, क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसके विषय में मूसा ने व्यवस्थाविवरण 32 में कहा है: “पलटा लेना और बदला देना मेरा काम है”, प्रभु कहता है। और यह भी: “प्रभु अपनी प्रजा का न्याय करेगा।” इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता। अपने पापों के साथ, मसीहा और उसके बलिदान को ठुकराने के साथ, जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक है। कोई भी जीवित परमेश्वर से मिलने से बच नहीं सकेगा। एक बात बिलकुल निश्चित है: मृत्यु। और उसके बाद न्याय। सब जीवित परमेश्वर से मिलेंगे।

देखो तो, अपने विश्वास के मार्ग पर तुमने मसीह के लिए अब तक क्या-क्या सहा है। आरंभ में, बहुत दिन पहले, जब तुमने अनुग्रह के आत्मा के द्वारा ज्योति पाई, तब तुमने असाधारण रूप से बहुत संघर्ष और दुःख अपने ऊपर लिए। तुम विश्वास में दृढ़ बने रहे। लोगों ने तुम्हें बुरे शब्दों से ऐसे अपमानित किया मानो तुम सबसे तुच्छ कूड़ा हो, और तुम्हें सताया। इस तरह सबके सामने तुम्हारा तमाशा बनाया गया। जब यह सीधे तुम पर नहीं आया, तब तुम विश्वासयोग्यता से उनके साथ खड़े रहे, जिन पर यह बीता। विश्वास के कारण बन्दी बनाए गए लोगों की तुमने ऐसे सहायता की, मानो तुम स्वयं बन्दीगृह में हो। तुमने आनंद के साथ यह भी सह लिया कि तुम्हारी संपत्ति छीन ली गई। तुम जानते थे कि तुम सबके पास एक ऐसी संपत्ति है, जो कहीं बेहतर है और सबसे बढ़कर सदा बनी रहती है।

तो अब अपने भरोसे, अपने विश्वास और अपनी आशा को फेंक मत दो, जैसे वे करते हैं जो विश्वास छोड़ देते हैं। खुलकर मसीहा के पक्ष में खड़े हो! क्योंकि एक बड़ा प्रतिफल तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। तुम्हें धीरज से डटे रहना चाहिए! तुमने तो परमेश्वर की इच्छा पूरी की है। मसीहा यीशु को ग्रहण किया है। अब उसके पीछे भी चलो! इसमें बने रहो – ताकि तुम्हारे जीवन में परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हो। तब तक बस बहुत थोड़ा समय बाकी है, जैसा भविष्यद्वक्ता हबककूक कहता है। आने वाला मसीह आएगा और – सदा के लिए यहाँ रहेगा। यदि अभी वह समय नहीं आया, तो इसका कारण है।

पर “धर्मी **विश्वास से** जीवित रहेगा! पर यदि वह पीछे हटे और विश्वास को फेंक दे, तो मैं उससे प्रसन्न नहीं होऊँगा।” पर हम उनमें से नहीं, जो पीछे हटते और विश्वास के लक्ष्य को छोड़ देते और विनाश में समाप्त होते हैं। नहीं! हम उनमें से हैं, जो पूरे उद्धार के लिए विश्वास करते हैं, बचाने वाले विश्वास को थामे रहते हैं – जब तक मसीह फिर न आए।

अध्याय 11

विश्वास ही निर्णायक है। पर विश्वास ठीक-ठीक है क्या? विश्वास एक दृढ़ निश्चय है, एक अटल भरोसा, बल्कि मानो उस बात का पहले से अनुभव, जिसकी हम आशा करते हैं – और जो आने वाली है। विश्वास के लिए भविष्य की बात पहले ही सच हो चुकी है।

विश्वास उन बातों का प्रमाण है, उन बातों का निश्चय, जो दिखाई नहीं देतीं। अभी दिखाई नहीं देतीं। यह मैं तुम्हें हमारे पूर्वजों के उत्साह बढ़ाने वाले उदाहरणों से स्पष्ट करूँगा – ऐसे लोग, जो हमारे जैसे ही थे। उनमें विश्वास जीवित था। और जब बहुत कठिन समय आया, तब भी वह मंद नहीं पड़ा – जैसा तुम भी अनुभव कर रहे हो।

केवल विश्वास ही समझता है कि संसार परमेश्वर के वचनों से अस्तित्व में आया। हम मनुष्यों में से कोई वहाँ नहीं था और न किसी ने उसे देखा। उसने शून्य से संसार की सृष्टि की। ऐसा उसका वचन कहता है।

विश्वास ही से हाबिल ने मानव इतिहास के आरम्भ में परमेश्वर को एक ग्रहणयोग्य पशु-बलि चढ़ाई। परमेश्वर के लिए वह उसके भाई कैन के बलिदान से बड़ा बलिदान था। कैन ने भूमि की उपज के फल चढ़ाए थे। उस पशु-बलि को ग्रहण करके परमेश्वर ने गवाही दी कि हाबिल धर्मी था और कैन नहीं। हाबिल और उसका बलिदान आज भी – इतना समय बीत जाने के बाद भी – एक जीवन-मरण का संदेश देता है: हम पापियों को एक स्थानापन्न की आवश्यकता है। अपने भले कर्म परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाने के लिए काफ़ी नहीं हैं।

विश्वास ही से हनोक स्वर्ग में परमेश्वर के पास उठा लिया गया। बिना मरे। वह जीवित मनुष्य के रूप में स्वर्ग में गया। क्यों? क्योंकि परमेश्वर उसके जीवन से बहुत प्रसन्न था और उसे अपने पास रखना चाहता था – हनोक के बहुत से समकालीनों के विपरीत। विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना कभी सम्भव नहीं। जो परमेश्वर के पास आता है, ताकि उसके निकट रहे, उसे निश्चय ही विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर है। पर केवल इतना ही नहीं। उसे यह भी विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर उन्हें प्रतिफल देता है और उन्हें उत्तर देता है, जो सच्चे मन से और लगातार उसे खोजते हैं।

नूह को परमेश्वर से आज्ञा मिली कि वह एक बड़ा जहाज़, एक जहाज़-रूपी नाव, बनाए। सूखी भूमि पर। आसपास कोई समुद्र नहीं। केवल विश्वास ही ऐसा काम कर सकता था। परमेश्वर से चेतावनी पाकर वह कई दशकों तक बनाता रहा, भय भरी प्रतीक्षा के साथ कि आखिर उस पर क्या आने वाला है। अपनी सबसे साहसी कल्पनाओं में भी वह इसकी तस्वीर नहीं बना सकता था। परमेश्वर की आज्ञा मानकर वह उसके पक्ष

में खड़ा हो गया। साथ ही – आज्ञाकारिता से नाव बनाकर – उसने उन लोगों की अभक्ति को दोषी ठहराया, जो परमेश्वर की नहीं सुनते थे। इस प्रकार वह धर्मी ठहरा। विश्वास से।

अब्राहम भी केवल विश्वास ही से आज्ञाकारी हो सका। परमेश्वर की आज्ञा सुनकर उसने अपना देश छोड़ दिया। वह यह जाने बिना निकल पड़ा कि मंज़िल कहाँ है। एक ऐसी जगह की ओर, जिसे उसे परमेश्वर से मीरास में पाना था।

विश्वास ही से वह उस देश में घूमता रहा, जिसकी मीरास की उससे प्रतिज्ञा की गई थी। एक अनजाने क्षेत्र में वह परदेशी होकर तंबुओं में रहा। अपने पुत्र इसहाक और पोते याकूब के साथ। वे सब उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, जो अब्राहम को मिली थी।

वे एक पराए देश में खानाबदोशों की तरह रहे। पर उनकी दृष्टि आगे थी। वे एक ऐसे नगर की बाट जोहते थे, जिसकी नींव दृढ़ और सनातन है। एक ऐसा नगर, जिसे मनुष्यों ने नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर ने बनाया है।

विश्वास ही से सारा, यद्यपि वह बहुत बूढ़ी हो चुकी थी, फिर भी सन्तान पा सकी। केवल इसलिए कि उसने विश्वास किया कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और अपनी प्रतिज्ञा सदा पूरी करता है। इसका अर्थ यह भी है कि एक बहुत बूढ़े अब्राहम से, जो वास्तव में अब सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकता था, फिर भी अनगिनत लोग उत्पन्न हुए। जैसा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी और पहले से कहा था।

ये कुलपिता विश्वास ही की दशा में मरे। वे मीरास की प्रतिज्ञा की शक्ति से जीते तो रहे। पर उसे अपने अधिकार में अभी नहीं ले सके। उन्होंने उस मीरास को मानो दूर से देखा। उनका खानाबदोश जीवन गवाही देता था कि वे उस देश में परदेशी थे, बिना नागरिक अधिकारों के। जो ऐसे जीता है, वह साफ़ दिखाता है कि वह एक दूसरे, हाँ, एक उत्तम देश की खोज में है। उस देश की नहीं, जहाँ से वे आए थे। वहाँ तो वे कभी भी लौट सकते थे। पर कनान में परदेशी होकर उन्होंने आगे देखा। ऊपर की ओर। वे एक स्वर्गीय देश की बाट जोह रहे थे। जहाँ परमेश्वर वास करता है। इसी कारण परमेश्वर इस्राएल के इन तीन कुलपिताओं का परमेश्वर कहलाने से नहीं लजाता। वह अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर कहलाता है। विश्वास में वे उसी की ओर चल रहे थे। इसी कारण परमेश्वर ने स्वर्गीय देश में उनके लिए एक नगर तैयार किया है। एक अनन्त घर।

केवल विश्वास ही से अब्राहम अपने जीवन की सबसे बड़ी विश्वास-परीक्षा में खरा उतरा: जब उसने अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जो प्रतिज्ञा का वाहक था, बलिदान किया। परमेश्वर ने उससे वचन दिया था कि इसी के द्वारा उसका वंश सुनिश्चित है। अब्राहम काँपते हृदय से बलिदान करने चला। क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर मरे हुएों को भी जिला सकता है। यद्यपि इसहाक का बलिदान अंतिम क्षण में स्वयं परमेश्वर ने रोक दिया, फिर भी यह ऐसा था मानो उसने उसे पूरा कर दिया हो। इस अर्थ में अब्राहम अपने पुत्र इसहाक को ऐसे गले लगा सका, मानो वह मरे हुएों में से जी उठा हो।

विश्वास ही से इसहाक ने अपने पुत्रों याकूब और एसाव को आने वाली बातों के विषय में आशीष दी। उसी प्रकार विश्वास से याकूब ने अपने 12 पुत्रों को आशीष दी। हर एक को अलग-अलग। और इस पर परमेश्वर की आराधना की। यूसुफ ने मृत्यु-शय्या पर विश्वास से पहले ही देख लिया कि सब इसाएली मिस्र को कैसे छोड़ेंगे। इसलिए उसने आज्ञा दी कि तब उसकी हड्डियाँ भी साथ ले जाई जाएँ।

विश्वास ही से मूसा के माता-पिता ने अपने बालक को तीन महीने से अधिक छिपाए रखा। उन्होंने देखा कि परमेश्वर उसके साथ कुछ विशेष करना चाहता है। इसलिए वे फ़िरौन से नहीं डरे, जिसने सब नवजात लड़कों को मार डालने की आज्ञा दी थी। विश्वास ही से बड़े होकर मूसा ने फ़िरौन की बेटी का पुत्र बने रहना छोड़ दिया, बल्कि साफ़ इनकार कर दिया। उसने पक्ष बदलकर अपने लोगों का साथ चुना। वह उनकी निन्दा और दुःख में साझी होना चाहता था। इस प्रकार उसने फ़िरौन के दरबार में पाप के थोड़े दिन के और नश्वर सुख को ठुकरा दिया। उसने मसीह के कारण निन्दा को – यदि हम इसे आज के दृष्टिकोण से समझें – मिस्र के भण्डारों से बड़ा धन समझा। मूसा ने आगे की ओर, कनान में मिलने वाले प्रतिफल की ओर देखा। जब उसने एक मिस्री को मार डाला था, तब वह फ़िरौन के क्रोध और पीछा किए जाने से नहीं डरा। वह इस आशा में दृढ़ बना रहा कि उसके लोग छुटकारा पाएँगे। तब भी, जब वह मिस्र से भाग गया और 40 वर्ष एक सूने देश में बिताए। वह परमेश्वर की ओर, जिसे वह देख नहीं सकता था, ऐसे देखता रहा मानो वह उसे अपनी आँखों के सामने देख रहा हो। विश्वास ही से उसने फसह मनाया। मेम्ने का लहू चौखटों पर लगाया – ताकि सब पहिलौठे मृत्यु के दूत से बचे रहें।

विश्वास ही से वे लाल समुद्र में से, जो दो भाग हो गया था, होकर निकल गए। मानो सूखी भूमि पर। मिस्रियों ने, जो उनका पीछा कर रहे थे, ऐसा ही करने का प्रयत्न किया। उनके लिए विश्वास का निश्चय ही कोई महत्त्व नहीं था। इसलिए वे गिरती हुई लहरों में डूबकर नष्ट हो गए।

विश्वास ही से कनान के पहले नगर, यरीहो, की शहरपनाह गिर पड़ी। जब वे सात दिन तक नगर के चारों ओर चक्कर लगा चुके।

एक वेश्या, राहाब, जो इसी नगर की शहरपनाह में रहती थी, औरों के समान उसमें नष्ट नहीं हुई। क्योंकि उसने विश्वास से इसाएल के दोनों भेदियों को शरण दी थी।

मैं और भी बहुत कुछ कह सकता हूँ। गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिप्तह, दाऊद और शमूएल के विषय में बता सकता हूँ, और भविष्यद्वक्ताओं के विषय में भी। कि कैसे उन्होंने विश्वास के द्वारा राज्य जीते। धार्मिकता फैलाई और धर्म के काम किए। प्रतिज्ञाएँ प्राप्त कीं। सिंहीं को परास्त किया। आग को बुझा दिया। तलवार के अत्याचार से बच निकले। और पूरी निर्बलता में फिर से बल पाया। युद्ध और लड़ाई में वे बलवन्त हुए। आक्रमणकारियों के दलों को उन्होंने खदेड़ दिया। और स्त्रियों ने अपने मरे हुआँ को पुनरुत्थान के द्वारा फिर पाया।

दूसरों को यातनाएँ दी गई और उन्होंने छुटकारा स्वीकार नहीं किया। ताकि अपने विश्वास से इनकार न करें। क्योंकि वे एक उत्तम पुनरुत्थान पर विश्वास करते थे – अनन्त जीवन के पुनरुत्थान पर। दूसरों का ठट्ठा उड़ाया गया और उन्हें कोड़े मारे गए। वे बेड़ियों में और बन्दीगृह में रहे। दूसरों को पत्थरवाह किया गया, आरे से चीरा गया, उनके सिर काटे गए। वे भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए इधर-उधर मारे-मारे फिरे। उन्हें बड़ा अभाव सहना पड़ा। सताए गए। दुःख दिए गए। संसार की दृष्टि में न उनका कोई मूल्य था, न महत्त्व, न प्रतिष्ठा। वे जंगलों और पहाड़ों में भटकते फिरे। गुफाओं और धरती की दरारों में छिपते रहे।

ये सब, जिनका मैंने यहाँ नाम लिया है और जिनके विश्वास की गवाही दी गई, उन्हें वह नहीं मिला जिसकी उनसे प्रतिज्ञा की गई थी। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने कुछ उत्तम ठहराया है। हमारे लिए! उसकी उन्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी। ताकि हम भी वारिस बनें और उनमें सम्मिलित हों। इसलिए अब वे और हम एक साथ लक्ष्य तक पहुँचाए जाते हैं। नई वाचा में। हम सब अब मिलकर उससे कहीं उत्तम वस्तु पाते हैं, जिसकी उस समय प्रतिज्ञा की गई थी।

अध्याय 12

मानो किसी अखाड़े में हम विश्वास के इतने सारे गवाहों और शहीदों से घिरे हुए हैं। वे सब हमारे लिए आदर्श हैं। इस बात का प्रमाण कि विश्वास और धीरज का फल मिलता है। यद्यपि वे अब हमारे संसार में नहीं रहते, फिर भी विश्वास के द्वारा हम उनसे जुड़े हुए हैं। इसलिए आओ, हम विश्वास की दौड़ को न छोड़ें और उनसे रिले-दौड़ का डंडा अपने हाथ में ले लें। आओ, हम दौड़ते रहें। जो कुछ बाधा डालता है, उसे फेंक दो। हर व्यर्थ और रुकावट डालने वाला बोझ, जो हमें धीमा करता है, उतार दो। हर ध्यान भटकाने वाली बात और हर प्रलोभन को अनदेखा करो। विशेषकर उस पाप को भी, जो हमें इतनी सहजता से उलझा लेता है और ठोकर खिलाता है।

आगे की ओर देखो, यीशु की ओर! न बाएँ देखो, न दाएँ। केवल उसी की ओर। वह सबसे महान है। वह सब विश्वास करने वालों में सबसे आगे खड़ा है। वह विश्वास में दौड़ा। लक्ष्य तक। वह विश्वास का कर्ता और सिद्ध करने वाला है। हमारे जीवन में उसी ने विश्वास उत्पन्न किया है और वही हमें लक्ष्य तक पहुँचाता है। किसी भी बात ने उसे इससे डिगाया नहीं। उसने लज्जा को कुछ न समझा। उसने भयानक क्रूस का दुःख सह लिया। क्योंकि उसकी दृष्टि उस बड़े आनन्द पर थी, जो उसके आगे रखा था: अर्थात् परमेश्वर के दाहिने जा बैठना। और बहुत से पुत्रों और पुत्रियों को महिमा में पहुँचाना। उसका ध्यान तो करो, जिसने अपने विरोध में दुष्ट मनुष्यों का इतना बड़ा विरोध और प्रतिरोध सहा। फिर भी वह लक्ष्य तक पहुँचा। यदि वह तुम्हारा आदर्श है, तो तुम थककर हियाव नहीं छोड़ोगे।

तुमने अभी तक यीशु की तरह लहू बहने तक सामना नहीं किया और विरोध के सामने टिके नहीं रहे। मसीहा यीशु से फिर जाने के पाप के विरुद्ध। तुम उस उपदेश को भूल गए हो, जो तुमसे पुत्रों और पुत्रियों के समान बात करता है: “हे मेरे पुत्र, यदि प्रभु तुझे वैसा ही नहीं छोड़ देता जैसा तू है, तो इसे आशीष समझकर

स्वीकार कर। जब प्रभु को कभी-कभी तेरे साथ कड़ाई से पेश आना पड़े, तो हियाव न छोड़। यह प्रेम के कारण होता है, क्योंकि वह अपने पुत्रों और पुत्रियों से बिना शर्त प्रेम करता है। यदि तुम्हें कोई ताड़ना और शिक्षा मिलती ही नहीं, तो तुम स्वर्गीय पिता के पुत्र और पुत्रियाँ हो ही नहीं।”

हमारे शारीरिक माता-पिता ने भी तो हमें अनुशासन में पाला। जब ज़रूरी हुआ, तो कड़ाई से। हम उनकी आज्ञा भी मानते थे। तो क्या हमें अपने स्वर्गीय पिता के अधीन नहीं रहना चाहिए और उसकी शिक्षा को स्वीकार नहीं करना चाहिए? वह आत्माओं का पिता है। सब स्वर्गदूत उसके अधिकार में हैं, जो हमारी सेवा करते हैं। चाहे हम उन्हें न देखें। हमारा प्रशिक्षण उसके लिए महत्वपूर्ण है और वह जो कुछ उसके पास है, उस सब के साथ उसकी चिन्ता करता है। आओ, हम उसके भले हाथ को मन से “हाँ” कहें। चाहे कभी-कभी यह कठिन ही क्यों न हो। तब हम जीवित रहेंगे। सदा के लिए।

हमारे शारीरिक माता-पिता ने अपनी मानवीय और भूल करने वाली क्षमता के अनुसार हमें अनुशासन में रखा और दण्ड दिया। केवल कुछ ही वर्षों के लिए। परमेश्वर बिना किसी भूल के हमें प्रशिक्षित करता है, जब तक हम लक्ष्य तक न पहुँच जाएँ। केवल आत्मिक बचपन में ही नहीं। तब भी, जब कोई बहुत समय से विश्वास के मार्ग पर चल रहा हो। क्यों? ताकि हम उसके समान और भी अधिक होते जाएँ। उसके अनोखे ईश्वरीय स्वभाव और उसकी पवित्रता के समान। परमेश्वर की ताड़ना भविष्य की तैयारी है और कभी भी अतीत का दण्ड नहीं।

जब हम कठिन समयों से गुजरते हैं, तब ऐसा प्रशिक्षण आनन्द का कारण नहीं होता। ईमानदारी से कहें तो दुःख का कारण होता है। पर इसी में हमारे जीवन में एक बहुमूल्य फल लगातार बढ़ता जाता है, जो परमेश्वर को भाता है। बशर्ते हम उसके प्रशिक्षण से भाग न जाएँ। क्योंकि जब हम कठिनाइयों को उसके हाथ से स्वीकार करते हैं और उनमें धीरज का अभ्यास करते हैं, तो हम बदल जाते हैं। भलाई की ओर। चाहे हम स्वयं इसे न पहचानें या मानना न चाहें।

यशायाह 35 में लिखा है: “इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को दृढ़ करो और सीधे मार्ग पर चलो।” नहीं तो थके हुए और डरपोक लोग मार्ग से ही भटक जाएँगे, बजाय इसके कि जो लंगड़े हो गए हैं, वे चंगे हों।

एक साथ बने रहो! यीशु के सब अनुयायियों के साथ मिलकर दृढ़ता से आपस में मेल के लिए संघर्ष करो। इसी प्रकार पवित्रता के लिए भी, हर पाप से घृणा करके और हर उस बात से दूरी बनाकर, जो परमेश्वर को नहीं भाती। यदि हम पाप से घृणा नहीं करते, तो उस बड़े दिन हम परमेश्वर को अपने पिता के रूप में नहीं देखेंगे।

और एक दूसरे का ध्यान रखो कि तुम में से कोई परमेश्वर के अनुग्रह से बाहर न जाए और अपने उद्धार और जीवन को अपने आप पर और अपने कर्मों पर निर्भर न कर ले। या व्यवस्था में, पुरानी वाचा में, फिर से न गिर जाए।

ध्यान रखो कि तुम में से किसी में कड़वाहट और दुष्टता की कोई ज़हरीली जड़ न फूटे। पहले हृदय में छिपी हुई। पर फिर, जब वह और बढ़ती है, तो विश्वासियों की सहभागिता में अशान्ति फैलाती है और बहुतें पर बुरा प्रभाव डालती है और उन्हें विषैला कर देती है।

तुम में से कोई व्यभिचारी न हो। हर कोई अपने जीवनसाथी के प्रति विश्वासयोग्य रहे।

तुम में से कोई ऐसा न हो, जिसके लिए कुछ भी पवित्र नहीं। परमेश्वर तक नहीं। एसाव के समान, जिसने एक साधारण दाल के भोजन के बदले अपना पहिलौठे का अधिकार बेच डाला। थोड़े ही समय बाद उसे पता चला कि उसने कैसा लापरवाही भरा काम कर डाला है। आँसू बहाने और बड़ी लगन से जूझने के बावजूद वह अपने व्यवहार को बदलने और सच्चे मन फिराव तक नहीं पहुँच सका।

अपने उद्धार की स्थिति को वैसे ही आँको, जैसे परमेश्वर उसे देखता है। मसीहा के अनुयायी होकर तुम उस पुरानी वाचा के पास नहीं आए, जो उस समय भय और आतंक में आरम्भ हुई थी। एक दिखाई देने वाले पहाड़ पर, सीनै पर:

- जिसे छुआ नहीं जा सकता था।
- जिस पर आग जल रही थी।
- वहाँ एक बड़ा बादल था।
- जिसे काली घटा और अन्धकार ने ढक लिया था।
- जिसके चारों ओर एक भयानक आँधी गरज रही थी।
- जिस पर तुरही का ऊँचा शब्द सुनाई देता था।
- और एक ऊँची और साफ सुनाई देने वाली आवाज़।

सुनने वाले उन शब्दों को और सह न सके और विनती करने लगे कि अब और वचन उनसे न कहे जाएँ। यदि कोई पशु भी उस पहाड़ को छू लेता, तो उसे मार डाला जाना था। सोने के बछड़े के पाप के बाद सीनै पहाड़ पर का पूरा दृश्य इतना भयानक था कि मूसा ने भी मान लिया: मैं प्रभु के क्रोध के भय से काँप रहा हूँ।

हे मसीहा यीशु के अनुयायियों: परमेश्वर ने तुम्हें एक अद्भुत रूप से नई वाचा दी है। तुम्हारे सामने कुछ बिलकुल नया, एक विशाल क्षितिज खुल गया है। एक आत्मिक, अभी अदृश्य वास्तविकता, जो फिर भी हर उस बात से बढ़कर है, जिसकी हम कभी कल्पना कर सकते हैं। हम सिय्योन पहाड़ के पास आए हैं, जहाँ परमेश्वर वास करता है:

- जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम के पास।
- दसों हज़ार स्वर्गीय दूतों, परमेश्वर के स्वर्गदूतों के पास, जो एक बड़ी, आनन्दमय और भव्य उत्सव-सभा में हैं।
- सब छुड़ाए हुआओं के पहिलौठों की सभा के पास, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।
- और स्वयं परमेश्वर के पास, जो सब मनुष्यों का न्यायी है, जिसके सामने हम अब पवित्र हैं।

- उन धर्मियों के पास, जो मर चुके हैं और पहले ही स्वर्गीय लक्ष्य पर पहुँच गए हैं।
- मसीहा यीशु के पास। नई वाचा के मध्यस्थ के पास।
- और उसके लहू के पास। यह हाबिल के लहू से, जो बदले की दोहाई देता था, कहीं उत्तम बातें कहता है। मसीह का लहू हमें पूरी तरह शुद्ध और पवित्र करता है।

सावधान रहो कि तुम उसे न ठुकराओ, जिसने स्वर्ग से यीशु में होकर तुमसे बातें की हैं। जिन्होंने उस समय सीनै पहाड़ पर और जंगल में पृथ्वी पर से ईश्वरीय आवाज़ सुनी, पर उसे ठुकरा दिया, वे बच न सके। यदि हम स्वर्ग से यीशु के द्वारा ईश्वरीय आवाज़ सुनें और उसे ठुकरा दें, तो हमसे और भी अधिक लेखा लिया जाएगा।

उस समय इस आवाज़ ने पृथ्वी को हिला दिया था। उसके बाद उसने हागै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहले से कहा: “एक बार फिर मैं पृथ्वी को हिलाऊँगा, और केवल पृथ्वी को ही नहीं, बल्कि आकाश को भी।” इस हिलाए जाने से सब सृजी हुई वस्तुएँ मिट जाएँगी। परन्तु इस भूकम्प में तब यह प्रकट हो जाएगा कि क्या इस हिलाए जाने में स्थिर रहता है और मिटता नहीं। मसीहा के द्वारा हम एक ऐसा राज्य पाते हैं, जो हिलाया नहीं जा सकता, जो सदा बना रहता है। इसके लिए हम हर दिन परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं! अनुग्रह के द्वारा हम इस परमेश्वर की सेवा करते हैं। आओ, हम यह ऐसे करें, जैसा **उसे** भाता है, न कि हमें। उस भक्ति और आदर के साथ, जो परमेश्वर के योग्य है। डर में नहीं, पर एक प्रकार के पवित्र संकोच के साथ। क्योंकि व्यवस्थाविवरण 4:24 में पहले ही लिखा है: “हमारे लिए भी परमेश्वर, जिसके हम हैं, भस्म करने वाली आग के समान है। एक जलन रखने वाला परमेश्वर।” पर यह भस्म करने वाली आग हमें नष्ट नहीं करना चाहती – हम तो नई वाचा में जीते हैं – बल्कि हमारे धन्यवाद के बलिदान को ग्रहण करना चाहती है।

अध्याय 13

सब विश्वासी भाई-बहनों से प्रेम को जीओ। इसे पहुनाई में दिखाओ। एक दूसरे को उदारता से अपने घर बुलाओ। इसी प्रकार तुम में से कुछ लोगों ने – बिना जाने – स्वर्गदूतों को ठहराया है। वे, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, हमारी सेवा में वहाँ सक्रिय रहते हैं, जहाँ कहीं हमारा स्वर्गीय पिता उन्हें भेजता है। इसलिए यदि तुम पहुनाई नहीं करते, तो तुम स्वर्गदूतों के आगमन से चूक सकते हो।

बन्धियों को स्मरण रखो। और ऐसे, मानो तुम उनके साथ बन्दीगृह में हो। उनको भी, जिनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है और जिन्हें यह अपने शरीर पर सहना पड़ता है।

विवाह की वाचा और वैवाहिक जीवन का आदर और सम्मान किया जाए। साथ जीने की हर बात में। विवाह का बिछौना और यौन-संबंध के आनन्द केवल पति-पत्नी के हैं। इससे विवाह की वाचा दृढ़ होती है। व्यभिचारी और परस्त्रीगामी, जो दूसरी स्त्रियों या पुरुषों के साथ यौन-संबंध बनाकर अपनी विवाह-वाचा तोड़ते हैं, या विवाह की वाचा के बिना मनमाने यौन-संबंध की छूट ले लेते हैं – उनका न्याय परमेश्वर बिना कोई ढील दिए करेगा।

धन के लोभ से रहित जीवन जीओ। जो तुम्हारे पास है, उसी में सन्तुष्ट रहो। नश्वर वस्तुओं को अधिक से अधिक पाने की चाह में कोई समझदारी नहीं। अभाव, गरीबी और भूख के बावजूद एक बात बनी रहती है – परमेश्वर की प्रतिज्ञा: “मैं तुझे नहीं भूलूँगा और न तुझे छोड़ूँगा। इसलिए हम साहस और दृढ़ता से कह सकते हैं: प्रभु हमारा सहायक है। हमें डरने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य हमारा क्या कर सकते हैं?”

उन लोगों के परिश्रम, विश्वास और विश्वासयोग्यता से उत्साह पाओ, जिन्होंने तुम्हें वचन, परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया। देखो, वे कैसे अपने जीवन के अंत तक विश्वास में बने रहे।

यीशु मसीह, हमारा मसीहा, सदा एक-सा रहता है: उसमें जो वह है, जो वह प्रचार करता है और जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है। वह कल, अर्थात् अपने पृथ्वी के समय में, और आज हमारे रोज़मर्रा के जीवन में, और युगानुयुग, उद्धार के इतिहास के लक्ष्य पर भी, वही विश्वासयोग्य और सच्चा प्रभु है।

तरह-तरह की और अनोखी शिक्षाओं से अपना ध्यान भटकने और उलझने न दो। कुछ विशेष भोजनों के द्वारा विश्वास में बढ़ना चाहने का कोई अर्थ नहीं, क्योंकि ऐसी बाहरी और दिखाई देने वाली बातें पुरानी वाचा के स्वभाव का हिस्सा थीं। वह बस व्यर्थ था। हमारा हृदय अनुग्रह से दृढ़ और बलवन्त होता है। क्योंकि हमारे पास एक आत्मिक रूप से उत्तम, अदृश्य वेदी है। उसी से हम खाते हैं। लाक्षणिक अर्थ में हम मसीहा के अनुग्रह से और उसकी उपस्थिति से खाते हैं। इसे वे नहीं जानते – और उन्हें इसका अधिकार भी नहीं – जो अभी भी दिखाई देने वाले मन्दिर में अपनी सेवा करते हैं।

जिन बलि-पशुओं का लहू महायाजक पवित्रस्थान में ले जाता है, उन्हें छावनी के बाहर जलाया जाता है। इसी प्रकार यीशु ने भी यरूशलेम नगर के बाहर दुःख उठाया और क्रूस सहा। जब उसने अपने बहाए हुए लहू के द्वारा हमें पवित्र किया।

इसलिए आओ, हम उसके पास बाहर निकल चलें। आओ, हम पहली वाचा की पुरानी व्यवस्था को पूरी तरह पीछे छोड़ दें। चाहे इसके साथ निन्दा आए और इसकी कुछ कीमत चुकानी पड़े। उसकी निन्दा उठाना कभी व्यर्थ नहीं।

आओ, हम आगे की ओर, हाँ, ऊपर की ओर देखें। क्योंकि पृथ्वी पर कहीं भी हमारा कोई स्थायी नगर नहीं, जिसमें हम घर जैसे हों। हम परदेशी हैं। आने वाले नगर की यात्रा में बस गुज़र रहे हैं। स्वर्गीय यरूशलेम, हमारे महान राजा का नगर, पहले से हमारी बाट जोह रहा है।

जब हम इस आशा में जीते हैं, तो आओ, हम परमेश्वर को स्तुति और धन्यवाद के बलिदान चढ़ाएँ। हर समय। हर स्थान पर। अकेले भी और मिलकर भी। किसी दिखाई देने वाली वेदी पर पशु-बलि नहीं। नहीं। धन्यवाद, स्तुति और आराधना के बोले और गाए हुए शब्द। स्मरण रखो: परमेश्वर अपनी प्रजा की स्तुति में वास करता है।

जब तुम ऐसे बलिदान शब्दों के साथ चढ़ाते हो, तो उन भौतिक बलिदानों को कदापि न भूलो – जिनसे तुम ज़रूरतमन्दों की भलाई करते हो या पैसों से उनकी सहायता करते हो। ऐसे बलिदानों से, जिनकी तुम्हें

कुछ कीमत चुकानी पड़ती है – समय, पैसा, शक्ति – और जिनका अर्थ शायद त्याग भी हो, हमारा परमेश्वर विशेष रूप से प्रसन्न होता है।

अपने आत्मिक अगुवों के पीछे चलो और लगातार उनकी आलोचना न करो। वे तो बस तुम्हें खतरों से बचाना चाहते हैं, ताकि तुम विश्वास में स्वस्थ और दृढ़ बने रहो। उन्हें परमेश्वर के सामने लेखा देना होगा कि उन्होंने यह ज़िम्मेदारी कितनी अच्छी तरह और लगन से पूरी की। इसलिए उनकी सेवा को मूल्यवान समझो और उसका आदर करो। तब वे इसे आनन्द से कर पाएँगे। यह तुम्हारे लिए बहुत लाभदायक होगा। उससे कहीं अच्छा, कि वे इसे आहें भरते हुए या केवल कर्तव्य निभाने के लिए करें।

हमारे लिए प्रार्थना करो! हम हर बात में वही करना और ऐसे जीना चाहते हैं, जैसा परमेश्वर को भाता है। मेरे लिए और भी अधिक प्रार्थना करो! तब मैं शीघ्र फिर तुम्हारे पास आ सकूँगा।

शान्ति का परमेश्वर हमारे प्रभु यीशु को मृत्यु में से निकाल लाया। उसके लहू ने एक नई, उत्तम, हाँ, अनन्त वाचा की नींव डाली। वह भेड़ों का महान चरवाहा है। कितनों को वह शीघ्र स्वयं मृत्यु में से निकालकर अनन्त देश में ले जाएगा और जीवन के सोते के पास उन्हें चराएगा। तब, जब वह फिर आएगा

जब परमेश्वर यीशु को मृत्यु में से निकाल लाया, तो वह तुम्हारे जीवन में भी काम कर सकता है और करना चाहता है। वह – और इसी के लिए हम प्रार्थना करते हैं – हमें भले कामों के लिए प्रेरित कर सकता है और उनके लिए सुसज्जित कर सकता है। उसकी इच्छा पूरी करने के लिए भी। यह सब यीशु मसीह के द्वारा। उसी की, हमारे उद्धारकर्ता की, महिमा और आदर सदा होता रहे।

मेरी पत्री की चेतावनियों को सह लो! मैंने तो तुम्हें थोड़े ही शब्दों में लिखा है और बात संक्षेप में कही है।

हमारा भाई तीमुथियुस छूट गया है। हम दोनों मिलकर शीघ्र तुम्हारे पास आएँगे और आखिरकार तुम्हें फिर देखेंगे।

अपने सब आत्मिक अगुवों को नमस्कार कहना। मसीह में सब पवित्र लोगों को। इटली के पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

अनुग्रह तुम सब के साथ रहे! आमीन।

प्रकाशितवाक्य

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आपको क्या मिलेगा

एपोकैलिप्स नाउ (Apocalypse Now)! यह 80 के दशक की एक विश्व-प्रसिद्ध, अत्यन्त अन्धकारमय युद्ध-विरोधी फ़िल्म का नाम है। बाइबल की जो पुस्तक अब आती है, उसका नाम भी एपोकैलिप्स (अपोकलुप्सिस) है। वह भी अन्धकारमय दृश्यों से भरी है। पर फ़िल्म से भिन्न, इसमें बहुत सी ज्योति, आशा और इतिहास के अंत में भलाई की विजय है। एपोकैलिप्स का अर्थ “अंत-समय या प्रलय का दृश्य” नहीं है – बल्कि “पर्दा हटाना”। इसमें यह प्रकट किया जाता है कि परमेश्वर बुराई और दुःख पर कैसे जय पाता है। अपने संसार के साथ परमेश्वर की कहानी नए यरूशलेम में, एक नई पृथ्वी पर, समाप्त होती है। एक नए संसार में, एक नई सृष्टि में प्रवेश ही इसका चरम बिन्दु है। एक बिन्दु, जो एक ऐसी रेखा बन जाता है, जिसका फिर कभी अंत नहीं होता। इसे साथ अनुभव करने के लिए यीशु के पीछे चलना सार्थक है।

पर मुझे आपको सावधान करना होगा। बाइबल की यह अंतिम पुस्तक उन सब से बिलकुल अलग है, जो आपने अब तक पढ़ा है। यीशु के एक चले यूहन्ना ने बहुत बुढ़ापे में वह लिखा, जो उसने देखा था। उसे परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन-कक्ष में प्रवेश करने की अनुमति मिली। उसने सात मुहरों वाली पुस्तक का खोला जाना देखा, जिसके बाद नाटकीय दृश्यों की एक श्रृंखला आती है।

यूहन्ना एक ऐसे संसार को देखता और उसका वर्णन करता है, जो अपार कल्पना-शक्ति और चित्रों की शक्ति से भरा है। वह हमें मानो आमंत्रित करता है कि हम अपने मन के सिनेमा में इस नाटक में भाग लें। सामान्यतः यह पुस्तक इकट्ठी हुई मसीही कलीसिया को पढ़कर सुनाई जाती थी। लोग सुनते थे। आज की तरह हर कोई अपनी बाइबल में साथ-साथ नहीं पढ़ता था। सुनने वाले के सामने प्रतीकों, चिह्नों और अतिथार्थवादी चित्रों से भरा एक संसार खुलता है, जो 21वीं सदी में हमारे लिए अनजाना है। अक्सर विचलित करने वाला, विचित्र, नाटकीय, बल्कि क्रूर और अतिरंजित। देखने में विरोधाभासी या तर्कहीन। पर अत्यन्त सुन्दर, अभिभूत करने वाले, सात्वना देने वाले और प्रतिज्ञाओं से भरे चित्र भी।

यूहन्ना के समय में यह साहित्यिक शैली काफ़ी लोकप्रिय थी। इसे यहूदी **प्रकाशनात्मक साहित्य** (एपोकैलिप्टिक) कहा जाता है। यह लेखन-शैली बहुत समय से अब नहीं रही। बहुत थोड़ा-सा आज इसकी तुलना “जुरासिक पार्क”, “द लॉर्ड ऑफ़ द रिंग्स” और “स्टार वार्स” के मिश्रण से की जा सकती है। आपको रोलर-कोस्टर की सवारी मिलेगी। स्वर्ग में और वापस पृथ्वी पर। यह सब कई बार। भविष्य में। हाँ, अपनी सीट-बेल्ट बाँध लीजिए!

प्रकाशनात्मक साहित्य विश्वास के अस्तित्व से जुड़े संकट को छूता है। संकट इसलिए, क्योंकि सब कुछ ऐसा दिखता है मानो परमेश्वर अन्याय पर चुप है। बुराई क्यों इतनी बढ़ती जाती है और ऐसी अकल्पनीय सीमा तक पहुँच जाती है? प्रकाशनात्मक साहित्य अपने विशेष ढंग से साहस के साथ इस बात पर बल देता

है कि परमेश्वर ने संसार और अपनी प्रजा से **मुँह नहीं** मोड़ा है। बात इसके ठीक उलट है। उसके हाथ से कुछ भी नहीं फिसला। वह अप्रत्याशित और प्रबल रूप से हस्तक्षेप करेगा। वह निश्चय ही उद्धार लाएगा। बुराई पराजित होगी और उसकी प्रजा बचाई जाएगी।

बड़े चित्र को, पूरे को समझने का प्रयत्न कीजिए। बात सबसे पहले पाठ के ब्योरों और बारीकियों की नहीं है। अपने विचारों में चित्र के बहुत निकट न जाइए। एक या दो कदम पीछे हटिए, ताकि पूरा चित्र आपकी आँखों के सामने हो। यह एक प्रभाववादी (इम्प्रेशनिस्ट) चित्र जैसा है, जिसमें ब्योरे मायने नहीं रखते। मायने रखता है वह समग्र प्रभाव, जिसे चित्रकार दिखाना चाहता है। प्रकाशनात्मक साहित्य छोटे-छोटे ब्योरों पर नहीं, बल्कि पूरे चित्र के संदेश पर बल देता है। ब्योरे कभी-कभी केवल पूरे को और प्रबल करने के लिए होते हैं। यदि आप पूरे को दृष्टि में रखने का प्रयत्न करें, तो आप कई बार विस्मय और श्रद्धा से, बल्कि आराधना से भर जाएँगे।

प्रकाशनात्मक दर्शनों के भीतर अलग-अलग तत्व होते हैं: प्रतीकात्मक, भविष्य बताने वाले, संकेत करने वाले या किसी बात की ओर इशारा करने वाले, शाब्दिक या चित्रात्मक। इन तत्वों के मेल भी। इससे बात हमारे लिए आसान नहीं होती। इस स्थान पर **महत्त्वपूर्ण** यह है: प्रकाशितवाक्य में सब कुछ, और अध्याय 4 से आगे का भी सब कुछ, अनिवार्य रूप से भविष्य की भविष्यद्वाणी के अर्थ में पूर्वकथन नहीं है। किसी बात को भविष्य से जोड़कर समझना हो, तो उसका ठोस आधार होना चाहिए, क्योंकि यह तो लगभग 2000 वर्ष पहले प्राचीन काल के मसीहियों को लिखी गई थी। और यदि ऐसा है भी, तो हम कभी नहीं जान सकते कि यह ठीक-ठीक कैसे पूरी होगी। प्रकाशनात्मक साहित्य भविष्य की कोई रिपोर्टिंग नहीं है।

निश्चय ही बात उन बातों की भी है, जो अभी होने वाली हैं। और उनकी भी, जो हो चुकी हैं। पर यह स्वीकार करना महत्त्वपूर्ण है कि यह पुस्तक भविष्य की समय-सारणी नहीं बनना चाहती। इसमें **कोई समय-रेखा नहीं** है। और हम इसमें कोई समय-रेखा गढ़ भी नहीं सकते। यह मानकर चलिए कि जिन 7 मुहरों, 7 तुरहियों और 7 कटोरों के बारे में आप पढ़ेंगे, वे सब एक के बाद एक नहीं आते, बल्कि साथ-साथ घटते हैं, क्योंकि वे उन्हीं घटनाओं के अलग-अलग पहलुओं का वर्णन करते हैं।

स्पष्ट शब्दों में कहूँ: प्रकाशितवाक्य **कोई जादुई काँच का गोला नहीं** है, जिसमें हम भविष्य के ब्योरे देख सकें। बात जानकारी की नहीं है। यह विश्वासयोग्यता के लिए एक पुकार है।

आत्मिक वास्तविकताओं को, और ऐतिहासिक घटनाओं को भी, प्रतीकों और चित्रात्मक भाषा से स्पष्ट किया जाता है। इसलिए इसका अधिकांश भाग **शाब्दिक रूप से** न समझा जा सकता है, न समझा जाना चाहिए।

ज्योति और अन्धकार के बीच, परमेश्वर और शैतान के बीच संघर्ष का वर्णन युद्ध और हिंसा की भाषा में किया गया है। यहूदी इसी प्रकार मसीहा के आगमन की आशा करते थे – परमेश्वर के एक योद्धा के रूप में, जो शत्रुओं को शाब्दिक अर्थ में नष्ट कर देगा। पर यूहन्ना के यहाँ छुड़ने वाला कैसा दिखता है? वह यहूदा के

सिंह के बारे में सुनता है, जिसने जय पाई है। जब वह सिंह को देखना चाहता है, तो उसे कोई सिंह नहीं मिलता। पर उसे एक मेम्ना दिखाई देता है। परमेश्वर के सिंहासन के ठीक बीच में। एक मेम्ना, जिस पर प्राणघातक घाव है। इसे पुस्तक का मुख्य दृश्य कहा जा सकता है।

प्रकाशितवाक्य में **युद्ध** को **आत्मिक अर्थ में समझना** है। वह शाब्दिक रूप से मनुष्यों के विरुद्ध नहीं है। मेम्ना न हिंसा का प्रयोग करता है, न ज़बरदस्ती का, बल्कि अपनी ही मृत्यु के द्वारा बिना हिंसा के जय पाता है। मसीह और उसके अनुयायी एक ब्रह्माण्डीय संघर्ष का हिस्सा हैं, जो शक्ति से नहीं, बल्कि सत्य और विश्वासयोग्यता से जीता जाता है। यीशु के अनुयायियों का प्रतिरोध यीशु के आदर्श पर आधारित है – **अहिंसक**। जीवन खोने की तत्परता के साथ। क्योंकि यही उनकी विजय है। युद्ध की भाषा सदा चित्रात्मक है। मुख्य योद्धा शाब्दिक अर्थ में कोई मेम्ना या सात सिरों वाला अजगर नहीं हैं। फिर भी झूठ और सत्य के बीच, विश्वासयोग्यता और बहकावे के बीच यह आत्मिक युद्ध किसी शाब्दिक युद्ध से कम वास्तविक नहीं है। यह इतना वास्तविक है कि यीशु के अनुयायी सचमुच अपना जीवन खो सकते हैं। वे एक सच्ची “मुक्ति सेना” हैं, जो लहू और मांस से नहीं लड़ती।

इस युद्ध की भाषा और चित्रों को समझने का प्रयत्न करते समय यह कभी न भूलना अच्छा है: प्रकाशितवाक्य का यीशु वही है, जो सुसमाचारों में है। प्रकाशितवाक्य का यीशु क्रूस पर का यीशु है – अर्थात् बलि किया हुआ मेम्ना। पहली दृष्टि में प्रकाशितवाक्य में यह धारणा बन सकती है कि वह एक योद्धा है, जो हिंसा का प्रयोग करता है। उससे बिलकुल भिन्न, जैसा हम उसे जानते और उससे प्रेम करते हैं। नहीं, वह **वही** है और वही बना रहता है। यूहन्ना बहुत ध्यान रखता है कि वह यीशु का वर्णन कैसे करे। उसके मुँह से निकलने वाली तलवार सत्य है, परमेश्वर का वचन, विश्वासयोग्य गवाही, और **न कि** वह हथियार जो मार डालता है। इसी यीशु को आँखों के सामने रखकर हम प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं। तब हम पहचानते हैं कि यूहन्ना किसी क्रोधित योद्धा का वर्णन नहीं करता, जो बदला लेता है। वह तो संसार की, देवताओं की और पौराणिक कथाओं की सोच का ढाँचा है। फिर भी स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार उसे सौंपा गया है। उसके आगमन के साथ तलवारों की आवश्यकता नहीं – जैसे कभी पतरस यीशु की रक्षा करना चाहता था। एक दिन उसकी दिखाई देने वाली उपस्थिति ही सब को चुप करा देने के लिए काफ़ी होगी।

इस संसार के इतिहास के अंत के लिए उसे पिता से न्याय करने का काम मिला है। और जहाँ लोग लगातार उससे और उसके चेलों से बैर रखते हैं, उन पर हिंसा करते हैं और वैसे भी मनुष्यों और सृष्टि के विरुद्ध हठपूर्वक दुष्ट बने रहते हैं – उसका वह अंत कर देगा। हर कोई उसके सामने उत्तर देगा। **न्याय** की जीत होगी और अंतिम वचन उसी का होगा!

उस समय प्रकाशनात्मक साहित्य कम या अधिक समझ में आता था – कि वह क्या कहना चाहता है और क्या नहीं। आज हमारे साथ ऐसा नहीं है। फिर भी पुरानी कहानियों और हमारे संवत् के आरम्भ के विश्व-इतिहास के थोड़े से ज्ञान से भी काफ़ी दूर तक पहुँचा जा सकता है। यूहन्ना जो कुछ देखता है, उसमें से लगभग सब कुछ इब्रानी बाइबल, अर्थात् पुराने नियम, में अपने समानान्तर या जड़ें रखता है।

प्रकाशितवाक्य में पुराने नियम के धागे एक साथ आ मिलते हैं। क्योंकि यह पूर्ति का, संसार की पूर्णता का वर्णन करता है। इसलिए प्रकाशितवाक्य के चित्रों का अर्थ निकालने के प्रयत्न में अपने पश्चिमी तर्क पर **भरोसा न** कीजिए। यहाँ एक यहूदी इब्रानी विचार-जगत में, और अपने समय की सन्तान के रूप में भी, लिख रहा है। अर्थ अक्सर पुराने नियम के प्रकाश में ही निकाले जा सकते हैं। अपने व्याख्यात्मक रूपांतरण में मैंने यहाँ-वहाँ वे संकेत छोड़े हैं, जिनका आगे पीछा किया जा सकता है।

यूहन्ना उस संसार को भी प्रतिबिम्बित करता है, जिसमें वह जीता था। उदाहरण के लिए रोमी साम्राज्य, जिसमें सम्राटों की परमेश्वर के रूप में पूजा होती थी। हाँ, वह नाम लिए बिना, संकेतों और चित्रों के द्वारा, अपने समय की मूर्तिपूजा और जीवन-शैली की **आलोचना** करता है। संसार के राज्यों और नगरों में यीशु के अनुयायियों की भूमिका संघर्षों से घिरी है और विजयी नहीं दिखती। वे दुःख उठाते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासयोग्य हैं, यीशु को संसार का सच्चा प्रभु मान लेते हैं और बहकावे के आगे नहीं झुकते। बहुत से इसी कारण अपना जीवन खो देते हैं। पर उनकी मृत्यु ही उनकी विजय है।

प्रकाशितवाक्य में बहुत सी बातें वैसी नहीं हैं, जैसी ऊपर से दिखती हैं। बलि के मेम्ने का यह दृढ़ विश्वास एक लाल धागे की तरह पूरी पुस्तक में चलता है। यीशु के कारण मृत्यु एक विजय है, जो परन्तु पूर्णता में जाकर ही प्रकट होती है। इसी तरह उन लोगों के विनाश को भी आँकना चाहिए, जिन्होंने यीशु के अनुयायियों के विरुद्ध अपराध किया। वे विजेता जैसे दिखते थे। पर वे हैं नहीं! महान आदर्श परमेश्वर का मेम्ना है, जिसने अपनी क्रूस की मृत्यु के द्वारा जय पाई। शक्ति और हिंसा के द्वारा नहीं, बल्कि मृत्यु तक अपने आप को दे देने के द्वारा। अहिंसा के द्वारा। केवल इसी प्रकार नई सृष्टि सम्भव हुई – अभी से।

इस दृष्टि से यह पुस्तक आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। एक सच्ची **सांत्वना की पुस्तक**। सबसे गहरा प्रोत्साहन, क्योंकि परमेश्वर की योजना और विजय निश्चित हैं, चाहे इसकी कीमत हमें अपने जीवन से चुकानी पड़े।

इस पुस्तक का लक्ष्य परमेश्वर और यीशु की महिमा बढ़ाना है। यह उसमें, उसके साथ और उसके पास बने रहने की पुकार है। तब भी, जब सारा संसार इसके उलट करता है। सुनने वालों और पढ़ने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे विश्वास और यीशु के पीछे चलना न छोड़ें।

प्रकाशितवाक्य अपने भविष्यद्वाणी के प्रभाव से कठोर हृदयों तक भी पहुँचना चाहता है। यह एक आँधी जैसा है, जो झकझोरकर जगाना चाहता है।

एक और लक्ष्य है आराधना। अक्सर यह वर्णन किया जाता है कि परमेश्वर और मेम्ने की आराधना कैसे होती है। **आराधना में आप भी स्वर मिलाइए**। परमेश्वर की महानता से अपने आप को बहा ले जाने दीजिए।

यह पुस्तक ठोस रूप से एशिया माइनर की, आज के तुर्की की, सात कलीसियाओं को लिखी गई है। सम्बोधित सब मनुष्य हैं। यह हमारे हृदय को प्रभावित करना और हमें बदलना चाहती है। पर ज़रूरत हो तो

हमें एक नया मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित भी करना चाहती है। ऐसा हो सके, इसके लिए हमें होने देना होगा कि एपोकैलिप्स बस हमसे बात करे। इन नाटकीय चित्रों की सहायता से। इसकी भावनात्मक भाषा को सचमुच महसूस करना होगा।

यूहन्ना को हम उसके सुसमाचार से पहले ही जानते हैं, यीशु के जीवन और वचनों के वृत्तान्त से। जब आप प्रकाशितवाक्य पढ़ें, तो यह न भूलिए: यह भी सुसमाचार है, शुभ संदेश। यह उस बात को मुफ्त में ग्रहण करने की अंतिम और सबसे तीव्र पुकार है, जो परमेश्वर अनुग्रह से हर एक को देना चाहता है – पर किसी पर थोपता नहीं। यह परमेश्वर के नए और अनन्त संसार में सम्मिलित होने का एक ऐसा निमंत्रण है, जिसे अनसुना नहीं किया जा सकता!

एक अंतिम बात। प्रकाशनात्मक साहित्य कुछ स्थानों पर रहस्यमय **बना रहता है**। प्रश्न बचे रहते हैं। पर इस कारण पढ़ना बन्द न कीजिए। इस पुस्तक को पढ़िए। बार-बार!

प्रकाशितवाक्य

- मेम्ना, यहूदा के गोत्र का सिंह – और अजगर
- वह पुस्तक जो धन्य बनाती है
- आराधना के योग्य कौन है?
- संसार का राजा कौन है?
- फिर आने वाला प्रभु
- कलीसिया के लिए आशा
- मेम्ने की विजय
- शहीद और विजेता, जो मेम्ने के पीछे चलते हैं
- राजा की वापसी
- कलीसिया के लिए सांत्वना
- सब बातों का लक्ष्य
- प्रकाशितवाक्य का अर्थ है पर्दा हटाना!

प्रकाशितवाक्य

यह प्रभु यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य है। एपोकैलिप्स। पर्दा हटाना। उसके विषय में, मसीहा के विषय में, राजाओं के राजा के विषय में, और इतिहास के लक्ष्य के विषय में।

परमेश्वर ने इसे उसको, मनुष्य के पुत्र को, दिया, ताकि वह इसे आगे पहुँचाए। अपने दासों और अनुयायियों तक। ताकि उन्हें दिखाए और उन्हें उन बातों का भेद बताए, जिनका शीघ्र होना अवश्य है। इस संसार के लिए परमेश्वर की उद्धार-योजना में।

एक स्वर्गदूत भेजा गया, ताकि यूहन्ना को, यीशु के जाने-माने चेले और दास को, वह सब दिखाए, जो नाटकीय चिह्नों में घटित होगा। उसने इसे लिख लिया। और इस प्रकार उसकी गवाही दी, जो उसने लगभग 2000 वर्ष पहले सुना और देखा: परमेश्वर का वचन और यीशु मसीह के विषय में अंगीकार। परमेश्वर का धन्यवाद हो! उसने सब कुछ हमारे लिए लिख दिया!

धन्य हैं वे सब, जो परमेश्वर के इन भविष्यद्वाणी के वचनों को पढ़ते हैं या, जब पढ़कर सुनाया जाता है, सुनते हैं! धन्य हैं वे सब, जो उन बातों को, जिनकी यूहन्ना लिखकर गवाही देता है, एक ईश्वरीय खज़ाने की तरह सँभालकर रखते भी हैं – और उन पर चलते हैं। क्योंकि इन वचनों के पूरे होने का समय निकट है। वह निश्चय आएगा। वह घड़ी किसी भी क्षण आ सकती है।

मैं, यूहन्ना, रोमी प्रान्त एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को लिख रहा हूँ, जिनसे प्रभु ने अपना भविष्यद्वाणी का वचन कहा है।

परमेश्वर का अनुग्रह और शान्ति तुम्हारे बीच बढ़ती जाए! जीवते परमेश्वर की ओर से। जो है, जो सदा से था, और जो आने वाला है! यहोवा की ओर से, जो सनातन से है, जो तुम्हारे लिए उपस्थित है।

और उन सात आत्माओं की ओर से, जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ के सिंहासन के सामने हैं! जो हर स्थान पर और हर समय पवित्र आत्मा की उपस्थिति और उसके कार्य की गारंटी देती हैं। उसकी प्रजा के बीच। और वहाँ, जहाँ परमेश्वर राज्य करता है। और यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य गवाह और शहीद है। वह मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहा। पर मरे हुआँ में से लौट आया। पहिलौठे के रूप में: पुनरुत्थान के नए संसार में प्रथम और सर्वोच्च के रूप में; आकाश और पृथ्वी की नई सृष्टि में। उन सब में प्रथम के रूप में, जो जी उठेंगे। वह पृथ्वी के सब राजाओं का अधिपति है। जो उसे संसार से मिटा देना चाहते थे, वे अब उसके अधीन किए जाएँगे। कोई उसके सामने टिक नहीं सकेगा।

वही है: यीशु, जो हमसे प्रेम करता है! सदा। जैसा कोई और नहीं करता। जो हमारे पक्ष में है! जो हमें ग्रहण करता है!

उसने हमारे पापों को, हमारे अधर्म को, हमारी मनमानी को क्षमा करके दूर कर दिया है। अपने लहू के द्वारा, गुलगुता के कूस पर अपनी बलिदानी मृत्यु के द्वारा।

उसने हम खोए हुए पापियों को **राजा** बनाया है, ताकि हम उसके साथ राज्य करें। बिना इसके कि हम किसी राजवंश के हों।

उसने हम आशाहीन और महत्त्वहीन लोगों को परमेश्वर के **याजक** बनाया है, जो परमेश्वर की उपस्थिति में जी सकते हैं। और उसकी महिमा को संसार में ले जाते हैं।

हम यीशु की ओर से उसके पिता को दिया गया एक उपहार हैं! राजाओं और याजकों के रूप में। अपने लिए नहीं। जैसे आरम्भ में अदन की वाटिका में था। आदम और हव्वा भी परमेश्वर के लिए याजक और राजा थे। पर उन्होंने सब कुछ खो दिया। परन्तु अब पुनःस्थापना का समय आ रहा है। यीशु के द्वारा: एक नई और उत्तम वाटिका!

इस परमेश्वर की, जो अपने प्रेम में सारी सृष्टि को नया करता है और अपने प्राणियों को छोड़ नहीं देता: उसी की महिमा और सब पर प्रभुता युगानुयुग रहे!

आमीन।

यह प्रभु, राजाओं का राजा, आ रहा है! सब मनुष्यों को दिखाई देता हुआ – आकाश के बादलों पर! यह घटना – यीशु मसीह की दिखाई देने वाली उपस्थिति – सब कुछ उलट-पुलट कर देती है, यहाँ तक कि पूरी की पूरी जातियाँ भय और आतंक में पड़ जाती हैं। वे भी, जिन्होंने उसे कूस पर चढ़ाया और बेधा, उसका आना देखेंगे। चाहे वे मर भी चुके हों। यह घटना हर एक को देखनी होगी, जब आकाश और पृथ्वी आपस में मिलेंगे। जब न्यायी और उद्धारकर्ता आएगा, दूसरी बार।

भय और घबराहट विशेषकर उन पर आएगी, जिन्होंने न उसकी प्रतीक्षा की, न उसका आदर किया। अपने दोष, उदासीनता और तिरस्कार के साथ वे काँपते हुए उसके सामने खड़े होंगे, जो सामर्थ्य और महिमा के साथ आता है: यीशु मसीह। हमारे लिए यह दिन हर आशा की पूर्ति है। सब कुछ सदा के लिए बदल जाएगा। लक्ष्य पूरा हो गया। और अब सचमुच शुरुआत होती है। हल्लिलूय्याह! हाँ, आमीन!

मैं ही अल्फ़ा और ओमेगा हूँ, प्रभु परमेश्वर यहीवा कहता है। प्रथम और अंतिम। सनातन से विद्यमान: जो है, जो था और जो आने वाला है। वह, जो सब को जीवित रखता है, एल-शद्वै। जो हर कमी को पूरा करता है। जो सब पर राज्य करता है। जो सब कुछ जानता है। जो सदा उपस्थित है। जो कभी देर नहीं करता। जो लक्ष्य तक पहुँचता है।

मैं, यूहन्ना, तुम्हारा भाई, जो तुम में से बहुतों की तरह उसके नाम के कारण क्लेश और संकट में है। क्योंकि हम उसके राज्य के हैं। दुःखों के बीच से महिमा के मार्ग पर। हम धीरज से उसकी बाट जोहते हैं, जो हमारे सब दुःखों का अंत भी करेगा। अपने समय पर।

मैं **पतमुस** नाम के टापू पर **देश-निकाले** में था। अपनी इच्छा से नहीं। मुझे देश-निकाला दिया गया, क्योंकि मैं परमेश्वर के वचन को थामे रहता हूँ और यीशु मसीह को संसार के सच्चे शासक के रूप में मान लेता हूँ। यह रोमी अधिकारियों को बिलकुल नहीं भाता! इसलिए उन्होंने एशिया माइनर प्रान्त के मसीहियों के बीच प्रेरित होने के कारण मुझे बन्दी बना लिया, ताकि हमें कमज़ोर कर दें।

सप्ताह के पहले दिन, प्रभु के दिन – मुझे ठीक-ठीक याद है – आत्मा मुझ पर उतरा। मैं परमेश्वर के आत्मा में आ गया। मैंने अपने आप को बार-बार एक दूसरे, स्वर्गीय संसार में पहुँचाया हुआ पाया। मैंने बड़ी-बड़ी बातें सुनीं और देखीं!

यह ऐसे शुरू हुआ: जब मैं आत्मा में था, तो पीछे से एक ऊँची, प्रबल आवाज़ ने मुझसे कहा। तुरही के समान। “जो कुछ तू अब देख रहा है, और जो कुछ अभी देखेगा, उसे चर्मपत्र की एक पुस्तक में लिख। उसे एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को भेज देना। इफिसुस, स्मरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया और लौदीकिया को।”

मैं मुड़ा, उस आवाज़ की ओर, यह देखने के लिए कि कौन मुझसे इतनी प्रबलता से बोल रहा है। और तब मैंने सबसे पहले सोने की सात दीवटें और उनकी ज्योति देखी। और इन सात दीवटों के बीच उसे, जिसने मुझसे बात की थी। वह मनुष्य जैसा दिखता था।

यह कौन है, मैंने अपने आप से पूछा। कोई स्वर्गदूत? नहीं। स्वयं परमेश्वर? वह **यीशु** था। पर वह परिचित, निकट का यीशु नहीं, जैसा मैं उसे जानता था। नहीं। बिलकुल अलग। स्वयं सुनो।

वह एक लम्बा वस्त्र पहने हुए था, एक चोगे जैसा, जो पाँवों तक पहुँचता था। छाती की ऊँचाई पर वह सोने के पटुके से बँधा था।

मुझे तुरन्त समझ आ गया कि यह मनुष्य का पुत्र एक याजक की तरह दीवटों का निरीक्षण करता है, उन्हें साफ़ करता है और उनमें तेल डालता है। याजकीय गरिमा में। राजसी सम्मान के साथ भी। और न्यायी के अधिकार में।

उसके सिर के बाल ऊन के समान श्वेत थे। बर्फ़ के समान। केवल वही पवित्र और शुद्ध है। और अति प्राचीन भी, जैसा दानियेल 7 कहता है। क्योंकि वह सनातन है और उसे कोई छू नहीं सकता। मुझे उसकी याद आई, जो प्राचीन भविष्यद्वक्ता दानियेल ने देखा और अनुभव किया था। क्योंकि यह उससे बहुत मिलता-जुलता था। और इन क्षणों में मुझे वही अनुभव करना था, जो उसने किया था।

उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं। उनसे परमेश्वर की महिमा चमकती थी। वे सब कुछ भेद लेती थीं और सब कुछ प्रकाश में ले आती थीं। सिद्ध पवित्रता के साथ।

उसके पाँव भट्ठी में तपे हुए पीतल के समान चमक रहे थे। उसकी दृढ़ता और शक्ति महान है। अपने पृथ्वी के जीवन में परखी हुई और खरी निकली हुई।

उसकी आवाज़ प्रचंड थी। एक विशाल जलप्रपात के गर्जन के समान, जो पृथ्वी को हिला देता है। अपने लोगों की सांत्वना के लिए और शत्रुओं के भय के लिए।

उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे।

उसके मुँह से एक तेज़ दोधारी तलवार निकलती थी। परमेश्वर के वचन का और सत्य और विश्वासयोग्यता का प्रतीक। वह ऐसा न्यायी है, जिसे घूस नहीं दी जा सकती। सिद्ध धार्मिकता का ही अंतिम वचन होगा।

उसका चेहरा दोपहर के चमकते सूर्य के समान था, जिसे अन्धा हुए बिना देखा नहीं जा सकता।

यह दर्शन इतना भयानक, इतना डरावना था कि मैं, जैसे कभी दानियेल, उसके पाँवों पर गिर पड़ा। मेरे हुए के समान। मेरे भीतर कुछ भी उसके सामने टिक नहीं सका। यह बस अभिभूत कर देने वाला था। परमेश्वर से एक सच्ची भेंट।

फिर मैंने महसूस किया कि उसने अपना **दाहिना हाथ** मुझ पर रखा। एक मित्र की तरह। और उसने मुझे कहा: “मत डर! मैं प्रथम और अंतिम हूँ। मैं सब समयों से पहले था और सदा रहूँगा। और जीवित हूँ। जी उठा मनुष्य का पुत्र। क्योंकि मैं मर गया था। क्रूस पर लज्जा के साथ मार डाला गया। पर अब मैं जीवित हूँ। सदा के लिए। युगानुयुग। मैंने मृत्यु को तोड़कर उस पर जय पाई है और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे पास हैं। मृत्यु की शक्तियाँ हटेंगी। भय फिर न रहेगा।”

जो तू देखेगा, उसे लिख ले। जो अंतिम दिनों में होता है – बैतलहम में मेरे आगमन से लेकर आकाश के बादलों पर मेरे फिर आने तक।

उसने मुझे उन सात दीवटों और उन सात तारों का भेद समझाया, जिन्हें वह अपने हाथ में थामे था। उनका क्या अर्थ था? सात तारे स्वर्गदूत हैं। सात कलीसियाओं के प्रतिनिधि। यह मुझे एक साथ विचित्र भी लगा और अद्भुत भी। वे इन कलीसियाओं के प्रतीक हैं, जो पृथ्वी पर, एशिया माइनर के सात नगरों में हैं। साथ ही, स्वर्गदूतों के द्वारा, वे अभी से स्वर्ग में उपस्थित हैं, जहाँ उनका घर है। परमेश्वर के सिंहासन के पास। वे उसके बलवन्त हाथ में थमी हुई हैं। ये कलीसियाएँ उसकी हैं, मनुष्य के पुत्र की।

अध्याय 2

इस अद्भुत प्रभु ने, परमेश्वर के कुरियोस (Kyrios) ने, मुझे आज्ञा दी कि मैं **इफिसुस** की कलीसिया के स्वर्गदूत को – और इस प्रकार संसार भर की कलीसिया को भी – एक महत्वपूर्ण संदेश के साथ एक पत्र लिखूँ। उसकी ओर से, जिसकी ये सात कलीसियाएँ हैं। उसकी ओर से, जो उन्हें अपने सामर्थ्य हाथ में थामे रहता है और सोने की सात दीवटों के बीच याजकीय सेवा करता है। उसका संदेश यह है:

मैं तुझे एक-एक बात तक जानता हूँ। तेरे भले कामों और पड़ोसी से तेरे प्रेम को भी। तू बहुत परिश्रम करता है। हर सेवा में तेरा धीरज से टिके रहना भी अनुकरणीय है।

यह भी, कि तू अपने बीच दुष्ट लोगों को कोई जगह नहीं देता और उन्हें अपने यहाँ सहन नहीं करता। ऐसे लोग, जो आए और कहने लगे कि वे प्रेरित हैं, तूने उन्हें परखा और उनकी पोल खोल दी। क्योंकि वे झूठे प्रेरित थे।

मेरे नाम के कारण दुःखों को भी तूने धीरज से सहा है। तू थका नहीं।

परन्तु सारी भलाई के बीच एक मूल बात है, जिसे तूने छोड़ दिया है! **तेरा पहला प्रेम**। तेरे आरम्भ का प्रेम – जब मैं पहली बार तुझसे मिला और तेरा हृदय जीत लिया। तब मेरे प्रति, विश्वासी भाई-बहनों के प्रति और तेरे आसपास के लोगों के प्रति तेरा प्रेम धधकता हुआ और ताज़ा था। वही उस सब का कारण और प्रेरणा था, जो तूने किया।

स्मरण कर कि तू कहाँ से गिरा है। लौट आ, मन फिरा। वे काम कर, जो तूने आरम्भ में किए थे। सच्चे प्रेम से।

यदि तू वहाँ नहीं लौटता, तो मैं तेरी दीवट को हटा दूँगा। तब तू इफिसस में मेरी गवाही के लिए किसी काम का नहीं रहेगा। यदि तू पछतावा नहीं दिखाता और मन नहीं फिराता, तो तू फिर मेरे लिए नहीं चमकेगा। क्योंकि प्रेम सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा है। उसके बिना सब कुछ व्यर्थ है।

फिर भी मैं इस बात के लिए तेरी प्रशंसा करता हूँ कि तू नीकुलियों के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूँ – अर्थात् उनसे, जो अनैतिकता को सहन करते हैं, दूसरों को बहकाते हैं और मूर्तियों पर चढ़ाया गया मांस खाने की सलाह देते हैं।

जिसके कान खुले हों, वह सुन ले कि मैं परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कलीसियाओं से क्या कहता हूँ। जो इस दशा पर जय पाए और पहले प्रेम की ओर लौट आए, उसे मैं भरपूर प्रतिफल दूँगा। मैं उसे जीवन के वृक्ष में से खाने को दूँगा। वह परमेश्वर की वाटिका के बीच में है। नए और उत्तम अदन में। नए यरूशलेम में। उस नए संसार में, जिसे मैंने अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान के द्वारा रचा है। वहाँ वह बिना रुकावट सदा उसका आनन्द ले सकेगा।

स्मरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को – और उन सब को, जो इस नगर में इस कलीसिया के हैं – मैं यीशु की आज्ञा से लिखता हूँ। मैं वह आगे पहुँचाता हूँ, जो वह कहता है, जो प्रथम और अंतिम है। जो सब से पहले था और अंत में विजयी होकर खड़ा रहेगा। जो मर गया था, पर फिर जीवित हो गया। जो सदा जीवित रहता है। मृत्यु पर जय पाने वाला।

मैं तेरे प्रेम के कामों को, उन सतावों और दुःखों को, जो तू मेरे लिए सहता है, ठीक-ठीक जानता हूँ। और तेरी गरीबी को भी। पर यह कभी न भूलना: तू मुझ में धनी है। आने वाला संसार तेरा है।

मैं उनकी निन्दा और बदनामी को भी जानता हूँ, जो घमण्ड से अपने आप को यहूदी कहते हैं। यद्यपि वंश के अनुसार वे यहूदी हैं, वास्तव में वे शैतान का आराधनालय हैं। वे मसीहा यीशु से घृणा करते हैं – और उन

सब से, जो उसके पीछे चलते हैं। विशेषकर तुम में से उन यहूदियों से, जो मुझ पर विश्वास करते हैं।

उन दुःखों के कारण, जो तुझे यीशु के लिए अभी सहने हैं, **मत डर**। शैतान, वह विरोधी, तुम में से कुछ को बन्दीगृह में डालेगा। वह यहूदियों और अन्यजातियों को तुम्हारे विरुद्ध भड़काएगा, ताकि तुम विश्वास छोड़ दो। पर होगा इसका उलटा: तुम्हारा विश्वास परखा जाएगा और दृढ़ किया जाएगा। तुम्हारा क्लेश दस दिन तक रहेगा। एक ऐसा समय, जिसे मैं ठहराता हूँ और जिसे कोई नहीं बदल सकता। शैतान भी नहीं।

प्राण देने तक विश्वासयोग्य रह! यदि तुझे सम्राट या मूर्तियों को दण्डवत् करने के बदले जीवन और स्वतंत्रता दी जाए, तो हार न मान। क्योंकि मैं तुझे जीवन का विजय-मुकुट दूँगा। यदि तू मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहे, तो तू जीवित रहेगा, हाँ – सच्चे जीवन का अनुभव करेगा। मेरे अनन्त राज्य में। मेरी महिमा में। मेरे पास।

जिसके कान हों, वह ध्यान दे, सुने, और वह करे, जो मैं आत्मा के द्वारा कलीसियाओं से कहता हूँ। तुम्हें मुझे गम्भीरता से लेना होगा। मेरी बात को पकड़ लेना होगा। यह महत्त्वपूर्ण है और मैं बार-बार अपनी बात नहीं दोहराता।

जो जय पाए और मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहे, उसे दूसरी मृत्यु से कोई हानि नहीं पहुँचेगी। वह अनन्त मृत्यु है, मुझसे अलग। मुझसे दूर आग की झील में। उसे वे सब भोगेंगे, जो मेरे पीछे नहीं चले और जिन्होंने मुझे ठुकरा दिया। पर तुम जीवित रहोगे, क्योंकि मैं जीवित हूँ।

पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत को – और उन सब को, जो इस कलीसिया के हैं – मैं यीशु मसीह की आज्ञा से लिखता हूँ। मैं वह आगे पहुँचाता हूँ, जो वह कहता है, जिसके पास तेज़, आर-पार भेदने वाली दोधारी तलवार है। उसके वचन का कोई सामना नहीं कर सकता।

मैं तेरे प्रेम के सब भले कामों को जानता हूँ। मैं ठीक-ठीक जानता हूँ कि तू कहाँ रहता और जीता है। अर्थात् वहाँ, जहाँ शैतान का सिंहासन है। जहाँ वह राज्य करता है और लोगों को मूर्तिपूजा में बन्दी बनाए रखता है। जहाँ मेरा कुछ भी दिखाई नहीं देता, वहाँ तू मेरे नाम को थामे रहता है। अपने नगर के इन सब दिखाई देने वाले मन्दिरों के सामने भी तूने मुझ पर, उस अदृश्य पर, अपने विश्वास का इनकार नहीं किया। तब भी नहीं, जब मेरा विश्वासयोग्य गवाह अन्तिपास पिरगमुन में मार डाला गया। वहाँ, जहाँ शैतान का घर है और जहाँ वह लोगों को तुम्हारे विरुद्ध भड़काता है।

परन्तु मुझे तेरे विरुद्ध कुछ कहना है, जिसे मैं स्वीकार नहीं करूँगा। तुम्हारे यहाँ कुछ ऐसे लोग हैं, जो बिलाम की शिक्षाओं को अच्छा समझते हैं और उन्हें थामे रहते हैं। उसने उस समय बालाक को सिखाया था कि वह इस्राएल की प्रजा को कैसे हरा सकता है। सैनिक शक्ति से नहीं, बल्कि बहकावे से। अर्थात् मूर्तियों के बलिदानों में भाग लेने और उससे जुड़ी यौन-स्वच्छन्दता के द्वारा।

इसी प्रकार तुम में से कुछ ऐसे हैं, जो नीकुलड्यों की शिक्षा को थामे रहते हैं, जो यौन-स्वच्छन्दता को भी अच्छा समझते हैं। मैं इन शिक्षाओं से घृणा करता हूँ, जो कलीसिया को नष्ट करती और हानि पहुँचाती हैं।

क्योंकि तुम सब इसके लिए उत्तरदायी हो, इसलिए मन फिराओ। पछताओ और लौट आओ! तुम्हें इसे बदलना होगा और इसके विरुद्ध कदम उठाना होगा। यदि तुम ऐसा बिलकुल नहीं करते या आधे मन से करते हो, तो मैं स्वयं आऊँगा। अपनी प्रचंड तलवार के साथ, जो मेरे मुँह से निकलती है। मैं उनसे युद्ध करूँगा और ऐसा करूँगा कि वे लौट आएँ और मन फिराएँ। या ऐसा करूँगा कि वे तुम्हारे बीच से हटा दिए जाएँ।

जिसके कान हों, वह ध्यान दे, सुने, और वह करे, जो मैं आत्मा के द्वारा कलीसियाओं से कहता हूँ।

जो बिलाम के और नीकुलइयों के लोगों पर जय पाए, और मूर्तियों के उत्सवों और यौन-स्वच्छन्दता में भाग न ले, उसे मैं गुप्त मन्ना में से खाने को दूँगा। मूर्तियों पर चढ़ाया गया मांस नहीं, बल्कि सच्चा स्वर्गीय भोजन तुम्हारी बात जोह रहा है।

मैं उन्हें एक श्वेत पत्थर दूँगा। मन्ना के समान श्वेत। शुद्ध। और उस पर उसका नया नाम लिखूँगा, जिसे केवल वही जानता है, जो उसे पाता है: कोई दण्ड की आज्ञा नहीं, बल्कि दोषमुक्ति और एक नए युग में जीवन की नवीनता, जो आरम्भ हो चुका है। मेरे व्यक्तिगत मित्रों के रूप में मेरे साथ एक सम्बन्ध में।

धुआतीरा की कलीसिया को वह लिखता है, जिसकी आँखें आग की ज्वाला के समान चमकती हैं, जो सब कुछ भेद लेती हैं और कोई बुराई सहन नहीं कर सकतीं। जिसके पाँव चमकते पीतल के समान हैं, मानो वे भट्टी में दहक रहे हों। जो पवित्रता और सत्य की बात आने पर बिना समझौते का पक्ष रखता है।

मैं उस सब भलाई को जानता हूँ और उसका मूल्य समझता हूँ, जो तू करता है। तेरे सच्चे प्रेम को और तेरी विश्वासयोग्य सेवा को। और तेरे धीरज से टिके रहने को। अब तू मेरे लिए जो कुछ करता है, वह उससे स्पष्ट रूप से अधिक और गहरा है, जो तूने आरम्भ में किया था। मैं तेरी उन्नति से भली-भाँति परिचित हूँ।

फिर भी मुझे तेरे विरुद्ध कुछ कहना है। तू एक स्त्री को सहन करता है, जो ईज़ेबेल के समान है, अहाब की पत्नी के समान, और उसे मनमानी करने देता है। वह अपने आप को भविष्यद्वक्तीन कहती है, जिसकी तुम्हारे यहाँ बहुत से लोग सुनते हैं। पर जो वह कहती है, वह मेरी ओर से नहीं है। वह मेरे दासों को सिखाती है और उन्हें **बहकाती** है कि वे मूर्तिपूजा वाले मन्दिर-भोजों में भाग लें। इसके साथ यौन-स्वच्छन्दता भी होती है। व्यभिचार और मूर्तियों के बलिदान का भोजन। और तुम हस्तक्षेप नहीं करते!

वह यह बहुत समय से कर रही है। मैंने उसे मन बदलने का समय दिया, ताकि वह अपने बहकावे और व्यभिचार को छोड़ दे। पर वह किसी भी तरह मेरी सुनना नहीं चाहती थी। इसलिए मैं उसका न्याय करूँगा और उसके व्यभिचार के बिछौने को बीमारी का बिछौना बना दूँगा। अर्थात् मैं उसे ठुकरा दूँगा! पर उन बहकाए हुए और भटके हुए लोगों को भी, जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं। यदि वे मन न बदलें और न लौटें और ईज़ेबेल के कामों को न छोड़ें, तो मैं उन्हें बड़े क्लेश में डालूँगा। उसकी आत्मिक सन्तानों को, जो उससे बँध गई हैं और आज्ञाकारी होकर वही करती हैं जो वह कहती है, मैं प्राणघातक बीमारी से मार डालूँगा, यदि वे मन न फिराएँ और सचमुच न लौटें।

सब कलीसियाएँ जान लेंगी कि मैं ही हूँ, जो मन और हृदय को जाँचता है। जो सब कुछ भेद लेता और देखता है। मेरी कलीसिया में कोई ऐसा काम नहीं करेगा, जिसके लिए वह उत्तरदायी न ठहरे और जिसका उसे लेखना न देना पड़े। मैं हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूँगा।

पर तुम बाकी लोगों से, जो ईज़ेबेल की शिक्षा के पीछे नहीं चलते: **जो तुम्हारे पास है, उसे थामे रहो।** तुमने शैतान की उन गहरी बातों को नहीं जाना, जिन पर वे लोग घमण्ड करते हैं। तुम इस दिखावटी ज्ञान के पीछे नहीं चले, जैसे वे, जो डींग मारते हैं कि उन्होंने अपने कथित विशेष ज्ञान से यह सब समझ लिया है। इससे भी बुरा उनका यह दावा है कि ऐसा करना पाप नहीं है। बाकी सब पर मैं कोई बोझ नहीं डालता। पर मैं अपने प्रति और अपने वचन के प्रति विश्वासयोग्यता और समर्पण चाहता हूँ – जब तक मैं न आऊँ।

जो ईज़ेबेल और उसके कामों पर जय पाए, और लक्ष्य तक पहुँचने तक मेरे कामों को करता रहे, उसे मैं जातियों पर अधिकार दूँगा। तब भी, जब तुम अभी महत्त्वहीन दिखते हो और ईज़ेबेल और उसके अनुयायियों के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर पाते। मेरे साथ मिलकर तुम जातियों पर राज्य करोगे और एक चरवाहे की तरह देखभाल और प्रेम के साथ उन्हें चराओगे। हठीले लोगों को तुम मिट्टी के बर्तनों की तरह चकनाचूर कर दोगे। यह मैंने अपने पिता से पाया है। और यही सामर्थ्य और अधिकार जय पाने वाले भी मुझसे पाएँगे।

मैं उन्हें भोर का तारा दूँगा। वे मेरे साथ, मसीहा-राजा के साथ, जो चमकता हुआ भोर का तारा है, चमकेंगे और राज्य करेंगे। सदा के लिए। बहुत जल्द दिन निकलेगा।

जिसके कान हों, वह सुन ले कि मैं आत्मा के द्वारा कलीसियाओं से क्या कहता हूँ। मेरी इच्छा पूरी करो! मैं अपने आत्मा और अपने वचन के द्वारा सारी पृथ्वी की हर कलीसिया से बात करता हूँ!

अध्याय 3

सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को – और इस प्रकार उन सब को, जो इस कलीसिया के हैं – लिख: यह वह कहता है, जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। यशायाह 11 भी इसी के विषय में बोलता है। जो साथ ही सात तारों को, कलीसियाओं के सात स्वर्गदूतों को, और इस प्रकार सब कलीसियाओं को अपने हाथ में थामे रहता है।

मैं तेरे कामों को और उस सब को जानता हूँ, जो तू करता है। मैं जानता हूँ कि सच में तेरा क्या हाल है। तू एक जीवित और सक्रिय कलीसिया के रूप में जाना जाता है। पर वास्तव में तू **निर्जीव** है, हाँ, आत्मिक रूप से मरा हुआ। तुझ में मेरे साथ जीवित, सचेत सम्बन्ध की कमी है। तू अपने चैन, अपनी शान्ति और अपने सुख को कब्र के और आत्मिक मृत्यु के सन्नाटे से गड़बड़ा देता है। इसलिए जाग उठ! उनकी चिन्ता और देखभाल कर, जो पहले ही आत्मिक रूप से मरने की प्रक्रिया में हैं। उन्हें दृढ़ कर, ताकि वे मर न जाएँ। मैंने अपने परमेश्वर के सामने तेरे कामों को अच्छा नहीं पाया। वे टिकने वाले नहीं हैं।

स्मरण कर कि तूने किस आनन्द से मेरा वचन ग्रहण किया था, जब तूने उसे पहली बार सुना। इस वचन को, मेरे सुसमाचार को, थामे रह और मन बदल। मेरे वचन की ओर लौट आ। अभी देर नहीं हुई है। तू फिर से जगाया जा सकता है।

यदि तू नहीं जागता और अपने लोगों को दृढ़ नहीं करता और मेरे वचन की ओर नहीं लौटता, तो मैं तेरे पास आऊँगा। आशीष के साथ नहीं, बल्कि चोर के समान। तू नहीं जानेगा कि विपत्ति कब आएगी। यदि तू नहीं लौटता, तो मैं तेरा न्याय करूँगा।

पर सचमुच तेरे यहाँ कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए। वे उन बातों से दूरी बनाए रखते हैं, जो मुझे नहीं भातीं। वे तुम्हारे अन्यजाति और मूर्तिपूजक परिवेश के अनुसार अपने आप को ढालते भी नहीं। **मैं ठीक ऐसे ही लोगों को खोजता हूँ।** पुनरुत्थान में उन्हें श्वेत और शुद्ध वस्त्र मिलेंगे – मुझसे। मेरे साथ वे नए यरूशलेम में टहलेंगे और घूमेंगे। नई पृथ्वी पर। क्योंकि वे योग्य हैं। सरदीस के दूसरे लोग उनसे दूरी रखते थे और उनसे कतराते थे, क्योंकि वे मुझे प्रसन्न करना चाहते थे। पर ठीक वही मेरे सम्मानित अतिथि होंगे।

सरदीस में जो कोई – और अब मैं हर एक से अलग-अलग बात करता हूँ – आत्मिक मृत्यु पर जय पाए, अपने वस्त्र मैले न करे और मेरे वचन की ओर लौट आए, उसे मुझसे श्वेत वस्त्र मिलेंगे। जीवन की पुस्तक में से – उस रजिस्टर में से, जिसमें वे सब लिखे हैं जो मेरे परमेश्वर के हैं – मैं उसका नाम नहीं काटूँगा। उसके नाम को मैं अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूँगा।

जिसके कान हों, वह सुन ले कि मैं आत्मा के द्वारा कलीसियाओं से क्या कहता हूँ, और मेरी इच्छा पूरी करे! मैं अपने आत्मा और अपने वचन के द्वारा सारी पृथ्वी की हर कलीसिया से बात करता हूँ!

फिलदिलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को – और इस प्रकार पूरी कलीसिया को, उन सब को जो उसके हैं – मुझे लिखना है: यह वह कहता है, जो पवित्र और सत्य है, जिस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। वह दाऊद का पुत्र है, जिसके पास राजा की कुंजियाँ हैं – और इस प्रकार द्वार खोलने या बन्द करने का अधिकार। कोई और ऐसा नहीं कर सकता। और किसी के पास यह अधिकार नहीं कि जो मैं करता हूँ, उसे रोके या पीछे धकेले।

तेरे कामों को भी मैं बहुत ध्यान से जानता और परखता हूँ। देख: मैंने तेरे सामने एक द्वार खोल दिया है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता। आत्मिक फल होगा। मैं तुझे लोगों तक पहुँच देता हूँ, ताकि तू उन्हें मेरे पास ले आए। यों तो तेरी **सामर्थ्य थोड़ी** है, पर वह बहुत कुछ कर सकती है। तूने छोटे आरम्भों और साधारण बातों को तुच्छ नहीं जाना। क्योंकि जो मैं कहता हूँ, उसे तूने माना और उस पर चला। और तूने फिलदिलफिया नगर में मेरे नाम का इनकार नहीं किया, बल्कि साहस से उसे मान लिया। विरोध, ठट्टे और शत्रुता के बावजूद।

मैं ही हूँ, जो यह करता है कि यहूदियों में से कुछ विश्वास में आएँ। जैसा पहले ही हो चुका है। पर मैं उन यहूदियों को भी जानता हूँ, जो इस कारण बुरी बातें फैलाकर और निन्दा करके तुझ पर आक्रमण करते हैं। उन्होंने तुम्हें आराधनालय से बाहर निकाल दिया है। पर वे सच्चे यहूदी नहीं हैं। वे उस सब का इनकार करते हैं, जो उन्हें सच्चे यहूदियों के रूप में करना और विश्वास करना चाहिए। वे शैतान के आराधनालय के हैं। मैं ऐसा करूँगा कि वे तुम्हारे सामने और अपने उन देशवासियों के सामने, जो मेरे पीछे चलते हैं, गिरकर दण्डवत् करें। उन्हें मानना पड़ेगा कि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। न कि उनसे, जो मुझे, सच्चे यहूदी को, मसीहा को, ठुकराते हैं।

तूने धीरज से मेरी बात जोहने के मेरे वचन को थामे रखा और सुनाया। तू मेरे आगमन की आशा में जीता है। इसलिए मैं भी बड़े बहकावे के समय में तुझे बचाए रखूँगा। वह शीघ्र सारे संसार पर बाढ़ की तरह छा जाएगा, ताकि पृथ्वी पर रहने वाले सब की परीक्षा हो।

इसे बार-बार अपनी आँखों के सामने रख: मैं शीघ्र आने वाला हूँ। हाँ, अचानक! इसलिए जो तेरे पास है, उसे हर हाल में थामे रह। उसे छोड़ न दे। लगा रह। तब कोई तुम्हारा विजय-मुकुट नहीं छीन सकेगा।

जो जय पाए, और मेरे वचनों को माने और मेरे नाम को मान ले, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर-पवित्रस्थान में एक खम्भे के समान महत्त्वपूर्ण बनाऊँगा। उसका धीरज और मेरे नाम का अंगीकार सदा उसका सम्मान रहेगा। वह इस स्वर्गीय परमेश्वर-मन्दिर से फिर कभी बाहर न जाएगा। वहाँ उसका घर होगा। मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम लिखूँगा। और अपने परमेश्वर के नगर का नाम। वह नया यरूशलेम है, जो स्वर्ग से उतरकर नई पृथ्वी पर आएगा। और अपना नया नाम मैं उस पर लिखूँगा। इस प्रकार वह सदा मेरे परमेश्वर का रहेगा। और सदा नए यरूशलेम का नागरिक रहेगा। वह मेरा भी होगा, जिसने उसे अपने लहू से मोल लिया है। मेरा, नई विश्व-व्यवस्था के सृष्टिकर्ता का, जी उठे हुए का।

जिसके कान हों, वह सुन ले कि मैं आत्मा के द्वारा कलीसियाओं से क्या कहता हूँ – और मेरी इच्छा पूरी करो! मैं अपने आत्मा और अपने वचन के द्वारा सारी पृथ्वी की हर कलीसिया से बात करता हूँ!

लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को – और इस प्रकार पूरी कलीसिया को – मुझे लिखना है, उन सब को जो उसके हैं: यह वह कहता है, जो आमीन है। जिसमें सब कुछ निश्चय पूरा होता है। जिसका अंतिम वचन होता है। विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह बोलता है। मैं, यीशु, जिसने अपने अंगीकार और अपने समर्पण की कीमत अपने लहू से चुकाई। वह बोलता है, जो सृष्टि का आरम्भ है, पहली और नई दोनों सृष्टियों का सृष्टिकर्ता – अपने पुनरुत्थान की सामर्थ्य के द्वारा।

सब दूसरी कलीसियाओं की तरह मैं तुझे भी जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि तू क्या करता है। मैं तुझसे तुरन्त, सीधे और साफ़ कहता हूँ: तू न ठंडा है, न गरम! भला होता कि तू ठंडा होता, जैसे ठंडे और साफ़ पानी का एक ताज़गी देने वाला घूँट। या गरम – एक सुखद स्नान या गरम चाय के लिए। पर तू गुनगुना है। न ठंडा, न गरम। जब कोई ऐसी अनिश्चित चीज़ पीता है, यह सोचकर कि वह ठंडी या गरम होगी, तो वह उसे

थूक देता है। ठीक यही मेरा तेरे साथ हाल है। तू एक चरित्रहीन अधूरापन है। अनिर्णीत। तेरे पास सब कुछ थोड़ा-थोड़ा है। पर बहुत ही कम। भला होता कि तू मेरे लिए धधकता। या सीधे मेरे विरुद्ध होता, तब अभी से अधिक आशा होती।

तू इतना गुनगुना क्यों है? क्योंकि तू घमण्डी है और अपने आप पर मुग्ध है। तू कहता है: मैं धनी हूँ और समृद्ध हो गया हूँ। मुझे किसी वस्तु और किसी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं। न अनुग्रह की, न अपनी कलीसिया के बाहर के विश्वासी भाई-बहनों की। पर जो तू नहीं देखता, वह यह है: वास्तव में तू एक दयनीय, तरस खाने योग्य दशा में है। तू एक भिखारी के समान है। कंगाल और अन्धा। नंगा, बिना ऊपरी वस्त्र के।

इसलिए मैं तुझे केवल एक ही सलाह दे सकता हूँ: मुझसे सोना मोल ले। शुद्ध सोना, आग में ताया हुआ। केवल इसी प्रकार तू सचमुच धनी होगा। और श्वेत वस्त्र, ताकि तू फिर नंगा न रहे और तेरी दयनीय दशा ढक जाए। आँखों में लगाने का सुरमा भी तू मुझसे पा सकता है, ताकि आखिरकार तू देख सके कि सत्य क्या है और तू मेरे सामने कैसा खड़ा है।

जिन सब से मैं प्रेम करता हूँ, तुमसे भी, उन्हें मैं डाँटता हूँ। मैं उनके पाप को उनकी आँखों के सामने रखता हूँ, ताकि वे लौट आएँ। मैं उन्हें अनुशासन में रखता हूँ। यह पीड़ादायक हो सकता है, पर बहुत हितकारी है। प्रयत्न कर और उत्साही बन कि जो कुछ तुझ में कम है, वह सब मुझसे माँगे। पछता! लौट आ! अपनी दयनीय दशा को मान ले, ताकि तू नए सिरे से आरम्भ कर सके।

तुम्हारे यहाँ मेरा बिलकुल स्वागत नहीं है। पर मैं तुम्हारे द्वार पर खड़ा हूँ। मैं खटखटाता हूँ, ताकि भीतर आऊँ। मैं पुकारता हूँ। यदि तुम में से कोई मेरी आवाज़ सुने और अपने हृदय का द्वार मेरे लिए खोले, तो मैं उसके जीवन में आऊँगा। तब हम साथ भोजन करेंगे और जीवित, व्यावहारिक सहभागिता रखेंगे। मैं प्रतीक्षा करता हूँ कि कोई द्वार खोले। मैं किसी को इसके लिए विवश नहीं करता।

जो जय पाए और मेरे पास आए, जो सचमुच वह माँगे, जिसकी उसे इतनी आवश्यकता है, वह मेरे साथ मेरे राज-सिंहासन पर बैठेगा और साथ राज्य करेगा। ठीक वैसे ही, जैसे मैंने विश्वासयोग्य गवाह के रूप में जय पाई और मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहा। इसी कारण मेरे पिता ने मुझे अपने सिंहासन पर बैठाया, ताकि मैं उसके साथ राज्य करूँ।

जिसके कान हों, वह सुन ले कि मैं आत्मा के द्वारा कलीसियाओं से क्या कहता हूँ – और मेरी इच्छा पूरी करो! मैं अपने आत्मा और अपने वचन के द्वारा सारी पृथ्वी की हर कलीसिया से बात करता हूँ!

अध्याय 4

जब मैंने सात दीवटों के बीच प्रतापी मसीह को देख लिया और कलीसियाओं को सात पत्र लिख लिए, तो मैंने ऊपर दृष्टि की और आकाश में एक खुला हुआ द्वार देखा। फिर मैंने एक आवाज़ को अपने से बात करते सुना, – तुरही जैसी ऊँची। मैं उसे पहले भी सुन चुका था। उसने मुझे आज्ञा दी कि ऊपर आ और द्वार में से

होकर स्वर्ग में प्रवेश कर। वहाँ मुझे देखना था कि जो कुछ मैं देख चुका था, उसके बाद आगे क्या होगा और क्या दिखाई देगा।

कुल मिलाकर, जैसा मुझे बाद में याद आया, इसके बाद चार बार और स्वर्ग में बातें **खुलनी** थीं। कुल मिलाकर मेरे सामने अलग-अलग चित्रों वाले **पाँच दर्शन** खुले, पर वे सब मसीहा की वापसी पर समाप्त होते थे। मुझे स्पष्ट हुआ कि वे सदा एक के बाद एक नहीं आते थे, बल्कि किसी ऐसी बात का वर्णन करते थे, जो साथ-साथ, अगल-बगल और एक ही समय में भी चल रही थी, क्योंकि वे सब एक ही बड़े लक्ष्य पर समाप्त होते थे।

फिर आत्मा मुझ पर उतरा और मुझे उस द्वार से होकर स्वर्ग में ले गया। मैंने परमेश्वर को देखा। एक सिंहासन-कक्ष में। पर उससे कहीं बड़ा। कहीं भी, किसी भी ओर उसका अंत नहीं था। क्योंकि मैंने वहाँ बीच में एक विशाल सिंहासन देखा। एक ऐसा स्थान – जैसे आँधी की आँख। जैसे सब वस्तुओं का केन्द्र-बिन्दु।

इस प्रतापी **सिंहासन** पर एक व्यक्ति बैठा था। मैं केवल उसकी रूपरेखा पहचान सका। सिंहासन खाली नहीं था। और इससे मुझे बहुत चैन मिला। स्पष्ट था कि मुझे यह दृश्य सबसे पहले देखना था। अर्थात्: कि परमेश्वर बड़ा है और सब के ऊपर है। और अंतिम वचन उसी का है। और वह राज्य करता है और सब कुछ अपने वश में रखता है, चाहे ऐसा दिखाई न दे।

और जो वहाँ बैठा था, वह यशब या माणिक्य के रत्न के समान दिखता था, जो सुन्दर लालिमा लिए अद्भुत रूप से चमकते हैं। अभिभूत कर देने वाला।

सिंहासन के ऊपर एक छोर से दूसरे छोर तक एक मेघधनुष जैसी तेजोमय आभा चमक रही थी। पर मरकत के हरे रत्न की तरह जगमगाती हुई। बस प्रभावशाली।

सिंहासन के चारों ओर मैंने घेरे में और भी सिंहासन देखे। वे छोटे थे। मैंने 24 गिने। उन पर कुछ आकृतियाँ बैठी थीं, जिन्हें मैं पहचान सका। वे प्राचीन थे। अधिक आयु के पुरुष। वे श्वेत वस्त्र पहने थे। अपने सिरों पर वे सोने के मुकुट पहने थे, विजय-मुकुटों के समान। जैसे स्वर्गदूत कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करते थे, वैसे ही मैंने प्राचीनों में सब युगों के पवित्र लोगों को देखा। जैसे इस्राएल के 12 कुलपिता और 12 प्रेरित एक साथ। वे पूरी तरह श्वेत में थे और जय पाने वालों के रूप में उन्हें विजय-मुकुट मिले थे। राजाओं और याजकों के समान।

बीच के सिंहासन में से बिजलियाँ निकल रही थीं। आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। और प्रचंड गर्जन। जैसे उस समय, जब परमेश्वर ने सीनै पर मूसा पर अपने आप को प्रकट किया था। मुझे बोध हुआ कि इसी सिंहासन से पृथ्वी समेत सारा ब्रह्माण्ड थामा और सँभाला जाता है।

सिंहासन के सामने आग की सात मशालें धधक रही थीं। ये परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। वे, अर्थात् परमेश्वर का आत्मा, उद्धार के मार्ग को प्रकाशित करती हैं और परमेश्वर की धार्मिकता को चमकाती हैं।

सिंहासन के सामने का क्षेत्र मुझे एक बड़े समुद्र जैसा लगा। पर तूफानी और उफनती लहरों का नहीं, बल्कि ठोस काँच का। स्फटिक के समान चमकता हुआ। वह सब शक्तियों और प्रकृति की सब शक्तियों से बलवन्त है। बेचैन और भक्तिहीन जातियों का जनसमुद्र भी इस सिंहासन के सामने मानो जमकर बर्फ हो जाता है। परमेश्वर के पाँवों के नीचे नीलमणि की पटियों के समान। निर्गमन 24 की बातों से तुलना करने योग्य, जब मूसा और प्राचीन सीनै पर परमेश्वर के पास ऊपर चढ़े थे।

सिंहासन के पास, हाँ, सिंहासन के ठीक बीच में, और उसके चारों ओर, मैंने चार प्राणी देखे। वे स्वर्गदूतों की तरह चलते-फिरते थे। और फिर भी बिलकुल अलग। बस अनोखे। सिंहासन पर बैठे हुए के इतने निकट। उनके हर ओर आँखें थीं। आगे और पीछे। ऐसा ही कुछ बहुत पहले भविष्यद्वक्ता यशायाह और यहजकेल भी देख चुके थे। वे मुझे उन शक्तियों के समान लगे, जो ब्रह्माण्ड को एक साथ बाँधे रखती हैं।

मैंने इन प्राणियों को एक क्रम में देखा। पद के क्रम के अर्थ में नहीं। वे सृष्टिकर्ता के रूप में सनातन परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते थे। और **उसकी सृष्टि** से उसके जीवन-भरे सम्बन्ध का। कि कैसे वह उसमें सब कुछ और हर एक को देखता है और देखना चाहता है। चारों दिशाओं में। उसके देखभाल करने वाले सृष्टिकर्ता और सामर्थी पालनहार के रूप में सब कुछ उसकी दृष्टि में है:

पहला प्राणी सिंह के समान दिखता था। वह जंगली, राजसी पशु।

दूसरा प्राणी एक युवा बैल के समान दिखता था। एक बलवान पशु।

तीसरे प्राणी का मुँह मनुष्य के समान था। मैंने उसे दूसरे प्राणियों से अलग अनुभव किया। उसने मुझे मनुष्य को उसकी विशेष भूमिका में दिखाया – परमेश्वर के स्वरूप को धारण करने वाले के रूप में।

चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान था। तेज़, ऊँचा और रहस्यमय।

चारों प्राणियों के, जो भीतर और बाहर आँखों से भरे थे, छाः-छाः पंख थे।

ये प्राणी, जो सब कुछ देखते हैं और बिना रुके बोलते हैं, बिना थके बार-बार ये थोड़े-से, पर एकमात्र योग्य शब्द दोहराते हैं: पवित्र, पवित्र, पवित्र है परमेश्वर यहोवा, प्रभु परमेश्वर! सर्वशक्तिमान, पान्तोक्रातोर (सर्वाधिपति), एल-शद्दै! सनातन से विद्यमान! जो था, जो है, और जो आने वाला है!

वह हम मनुष्यों और बाकी प्राणियों की तुलना में कितना **असीम** रूप से महान और असीम रूप से भिन्न, हाँ, कितना श्रेष्ठ है!

जब चारों प्राणी उस परमप्रधान को, जो युगानुयुग जीवित है, आराधना करते हुए आदर और धन्यवाद, प्रताप और महिमा पुकारते हैं, तब 24 प्राचीन अपने सिंहासनों के सामने घुटने टेक देते हैं। उसके सामने, जो सिंहासन पर बैठा है। परमेश्वर के सामने।

वे उसको दण्डवत् करते हैं, जो युगानुयुग जीवित है। हाँ, वे अपने विजय-मुकुट सिंहासन के सामने रख देते हैं और सब मिलकर कहते हैं: हम नहीं, केवल तू ही योग्य है। केवल तू ही महिमा और कीर्ति, आदर और

सामर्थ्य पाने के योग्य है।

क्योंकि तूने सब कुछ – सारे ब्रह्माण्ड को – रचा है। यह केवल तेरी **इच्छा** थी। अपने लिए तूने इसे रचा। तेरे ही कारण यह सब है। तेरी इच्छा के बिना कुछ भी न होता। केवल तू ही होता।

कैसी गरिमा है कि हम उसकी इच्छा का परिणाम हैं! उसकी सृष्टि में सम्मिलित। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरी है।

अध्याय 5

फिर मैंने उसके, जो सिंहासन पर बैठा था, ईश्वरीय दाहिने हाथ में एक **पुस्तक** देखी – एक लपेटी हुई पुस्तक। वह दोनों ओर लिखी हुई थी। इतनी विस्तृत कि एक ओर काफ़ी नहीं थी। पर वह मोम की पूरी सात मुहरों से बन्द की गई थी। स्वयं परमेश्वर के द्वारा।

मैंने उस पुस्तक की ओर देखा। और मुझे एकाएक स्पष्ट हो गया कि यहाँ किसी असाधारण रूप से महत्वपूर्ण बात का प्रश्न है। स्पष्टतः संसार का भाग्य उसी पर टिका था। वह परमेश्वर की सर्वशक्ति, सर्वज्ञता और इतिहास के संचालन का मानो एक दस्तावेज़ थी।

तब एक बलवन्त, बड़ा स्वर्गदूत सिंहासन के सामने आया। उसने ऊँची, गरजती आवाज़ में पुकारा, जिसे ब्रह्माण्ड के सब प्राणियों ने सुना: “कौन इस योग्य है और किसे अधिकार है कि सात मुहरों वाली इस पुस्तक को खोले? ताकि जो उसमें लिखा है, उसे पूरा करे!”

पर कोई आगे नहीं आया, जो ऐसा करने का साहस रखता। न स्वर्ग में कोई, न पृथ्वी पर कोई, न पृथ्वी के नीचे, अधोलोक में। मृत्यु जैसा सन्नाटा था। दम घोटने वाला। कोई मुहरें नहीं खोल सका, न उसमें झाँक सका।

मुझ पर निराशा छा गई। मैं फूट-फूटकर **रोने** लगा। क्योंकि इसका अर्थ यह होता कि सब कुछ वैसा ही बना रहे, जैसा है। मृत्यु, पीड़ा और बीमारी से स्वतंत्रता या छुटकारे की कोई आशा नहीं। युद्ध चलते ही रहते। भूख और दुःख बने रहते। कोई नई पृथ्वी न होती। अधिकांश मनुष्यों के लिए जीवित बचे रहने का दयनीय संघर्ष कभी समाप्त न होता। क्या संसार को कोई विजेता नहीं मिलेगा?

पर 24 प्राचीनों में से एक मेरे पास आया और उसने मुझ पर अपना हाथ रखा। वह वह जानता था, जो मैं उस क्षण नहीं जान सकता था। उसने मुझसे कहा: मत रो! एक समाधान है। देख, एक ने जय पाई है। यहूदा के गोत्र का राजसी **सिंह**। प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा। यहूदा और दाऊद का वंशज। वही, मसीहा, इस योग्य है कि पुस्तक को खोले और सातों मुहरों को तोड़े।

मैंने राहत के साथ ऊपर देखा, ताकि उस सामर्थी सिंह को, उस विजेता को, देखूँ। पर मैंने क्या देखा? मैंने एक मेम्ना देखा, – मानो वध किया हुआ। बलि का एक मेम्ना। गले पर एक प्राणघातक घाव के साथ। तो सिंह एक मेम्ना था। सिंह ने शक्ति और हिंसा से नहीं, बल्कि अपनी मृत्यु से जय पाई थी – एक **मेम्ने** की

तरह! शासकों और कैसरों के संसार से बिलकुल अलग। परमेश्वर उस असुरक्षित, छोटे मेम्ने के द्वारा जय पाता है। बिना हिंसा के। सिंह से भिन्न। उसकी मृत्यु सब युगों की सबसे महत्वपूर्ण घटना है: इस संसार की दुःख-गाथा पर निर्णायक विजय। वह सब प्रतिज्ञाओं की गारंटी है। और सब शत्रु शक्तियों पर परमेश्वर की विजय की भी।

मेम्ना – सिंह के हृदय के साथ – अब सिंहासन के ठीक बीच में खड़ा था। वहाँ, जहाँ उसका स्थान है। चारों प्राणियों के बीच। और 24 प्राचीनों के घेरे के भीतर। वह केन्द्र में खड़ा था! सब की दृष्टि इस छोटे मेम्ने पर थी, जिस पर प्राणघातक घाव था। हाँ, परमेश्वर ने अपने आप को मेम्ने के साथ एक कर दिया और इस प्रकार दिखा दिया कि वह स्वयं कैसा है और इतिहास को कैसे चलाता है। बिना हिंसा, शक्ति और ज़बरदस्ती के, बलिदानी आत्म-समर्पण में वह इतिहास के उस महिमामय लक्ष्य तक पहुँचता है, जिसे मुझे अभी देखना था।

उसके, सब मेम्नों से भिन्न, जिन्हें मैंने अब तक देखा था, दो नहीं, बल्कि सात सींग थे। अर्थात् ईश्वरीय सम्पूर्ण सामर्थ्य। यद्यपि वह एक छोटा मेम्ना था, फिर भी उसे सारी सामर्थ्य और अधिकार सौंपा गया था। इसके साथ सात आँखें भी। ये फिर परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं और सब कुछ देखती हैं। और साथ ही मनुष्यों को उद्धार के लिए प्रकाश देती हैं।

यह मेम्ना अब सिंहासन के पास गया। उसने उस पुस्तक को उसके दाहिने हाथ से ले लिया, जो सिंहासन पर बैठा था। उसने उसे मेम्ने की ओर बढ़ा दिया। यह अनन्तकाल के लिए एक क्षण था। प्रतापी और फिर भी विचित्र। वह तो बस एक मेम्ना ही था। पर अब उसके हाथ में, मरे हुए और जी उठे हुए मसीहा के हाथ में, संसार का भाग्य था। और इससे अच्छे हाथों में वह हो ही नहीं सकता।

और जब उसने पुस्तक ले ली, तब यह हुआ: 24 प्राचीन पहले की तरह गिर पड़े। चारों प्राणी भी बहुत नीचे झुक गए। उन सब ने मेम्ने को दण्डवत् किया। 24 प्राचीनों के, जो राजा और याजक हैं, हाथों में धूप से भरे धूपदान थे, जैसे किसी स्वर्गीय मन्दिर में। धूपदानों का धूप पवित्र लोगों की सब प्रार्थनाएँ थीं। उनकी आराधना, उनकी विनितियाँ और उनके विलाप भी। वे वीणाएँ भी थामे थे, जिनसे उन्होंने एक नया गीत छेड़ा। यह सचमुच एक नया गीत ही होना था! क्योंकि मेम्ने के द्वारा अब सब कुछ, हाँ, सचमुच सब कुछ बदल गया था। उन्होंने आराधना और धन्यवाद के साथ मेम्ने के लिए गाया:

केवल तू ही योग्य है कि पुस्तक को खोले, मुहरों को तोड़े और जो उसमें लिखा है, उसे पढ़े और पूरा करे।

क्योंकि तू, परमेश्वर का मेम्ना, बलि किया गया। अपने लहू से तूने हमें परमेश्वर के लिए मोल लिया है। हर गोत्र, हर भाषा और जाति और लोगों में से।

तूने उन सब को, **सारी पृथ्वी** के उन बहुतों को, हमारे परमेश्वर के लिए **राजा** और **याजक** बनाया है।

वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे! और वह करेंगे, जो परमेश्वर के हृदय में था। आरम्भ से। और उसके सामने उसकी सेवा करेंगे।

जब उनका गीत समाप्त हुआ, तो मैंने स्वर्गदूतों को देखा, जो प्राणियों और प्राचीनों के साथ सिंहासन के चारों ओर इकट्ठे थे। स्वर्गदूतों की इतनी बड़ी भीड़ थी, जैसे आकाश के तारे। स्वर्गदूतों का मानो एक समुद्र, जो अब मेम्ने की इस स्तुति में स्वर मिलाने लगा। यह एक अकल्पनीय स्वर्गीय स्तुति थी। इतनी प्रचंड, कि जो मैंने देखा और सुना, उस पर मुझे लगभग विश्वास न हुआ:

वध किया हुआ मेम्ना योग्य है!

वह सारी सामर्थ्य, धन और बुद्धि पाए।

सारा बल, आदर, महिमा और स्तुति।

जब स्वर्गदूत यह कह चुके, तो सारा ब्रह्माण्ड इस स्तुति में सम्मिलित हो गया। स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे, समुद्र पर और समुद्र में के हर प्राणी को मैंने यह कहते सुना:

जो सिंहासन पर बैठा है, अर्थात् परमेश्वर पिता, और मेम्ने को, जो पिता का अनन्त पुत्र है, केवल उन्हीं को स्तुति और आदर और महिमा और सामर्थ्य मिले। और वह भी युगानुयुग।

तब चारों प्राणियों ने कहा: आमीन। और 24 प्राचीन फिर मुँह के बल गिर पड़े और आराधना की।

अध्याय 6

अब मेम्ना एक के बाद एक मुहरें खोलने लगा। पर हर बार खोलने के साथ वह प्रचंड, गरजती आवाज़ होती थी। सिंहासन के पास के चारों प्राणियों में से एक की, जो पुकारता था: इधर आ, और ध्यान से देख!

मैंने ऐसा ही किया। **पहली मुहर** खुलने पर मैंने एक श्वेत घोड़ा देखा। उस पर एक बैठा था, जिसके पास एक धनुष था। और इस सवार को एक विजय-मुकुट पहनाया गया। और वह, वह स्वर्गदूत-सा प्राणी, जहाँ कहीं वह पहुँचा, वहाँ जय पाने के लिए सरपट दौड़ पड़ा। एक विश्व-विजेता की तरह। वह कोई भला स्वर्गदूत नहीं था।

मुझे स्पष्ट हुआ कि कोई सुरक्षा नहीं है। कहीं भी नहीं। राज्य पराजित होते हैं और रौंदे जाते हैं। नए साम्राज्य उठते हैं। रोमी साम्राज्य और रोमी शान्ति भी एक दिन गिर जाएँगे। क्योंकि परमेश्वर ऐसा चाहता है।

जब मेम्ने ने **दूसरी मुहर** खोली, तो दूसरे प्राणी ने भी पहले की तरह कहा: इधर आ और ध्यान से देख!

अब मैंने फिर एक घोड़ा देखा। आग जैसा लाल। उस पर एक बैठा था, जिसे मनुष्यों और जातियों के बीच से शान्ति छीन लेने का अधिकार दिया गया। तब वे एक दूसरे को मार डालेंगे। अनगिनत युद्धों और गृहयुद्धों में। सवार को एक बड़ी तलवार मिली, जिससे उसने शान्ति को नष्ट किया। यह भी कोई भला स्वर्गदूत नहीं था।

परमेश्वर और मेम्ने ने बुराई की इन दुष्ट और विनाशकारी शक्तियों को अब और नहीं रोका। जब परमेश्वर बुराई की शक्तियों को स्थान देता है, तो यह उसका न्याय है। उसे उन्हें आज्ञा देने की आवश्यकता नहीं, वे अपने आप ही वह बुराई करती हैं, जो यहाँ प्रकाशितवाक्य में फैलती जाती है।

जब मेम्ने ने **तीसरी मुहर** खोली, तब तीसरे प्राणी ने भी कहा: इधर आ और ध्यान से देख!

फिर मैंने एक काला घोड़ा देखा। उस पर एक बैठा था, जिसके हाथ में एक तराजू था, जिससे गेहूँ और जौ तौले जाते हैं।

चारों प्राणियों के बीच से एक आवाज़ यह संदेश लेकर आई: 12 घंटे काम करने वाले एक दिहाड़ी मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी में एक दिन का गेहूँ। और एक दिन की मज़दूरी में तीन दिन का जौ। तेल और दाखरस की हानि न की जाए। ये बुनियादी भोजन-वस्तुओं के अत्यधिक बढ़े हुए दाम हैं। पर कम ज़रूरी तेल और दाखरस सस्ते मिल जाते हैं। असमान समाज, जिनमें अधिकांश लोग हर दिन जीवित बचे रहने के लिए संघर्ष करते हैं, जब युद्ध और सूखा फ़सलों को नष्ट कर देते हैं – और भूख आती है। और फिर भी कुछ लोग विलासिता में जीते हैं। हाँ, यह एक ऐसा संसार है, जो कभी ऐसा होने के लिए नहीं था। यह छुटकारे के लिए पुकारता है। मनुष्यों को अपने सृष्टिकर्ता और पालनहार की ओर लौटना चाहिए।

चौथी मुहर खुलने पर चौथे प्राणी ने कहा: इधर आ और ध्यान से देख!

अब मैंने फिर एक घोड़ा देखा, एक राख जैसे पीले रंग का। उस पर बैठे सवार का नाम था “मृत्यु”। अधोलोक (हेडीज़), मृतकों का लोक, उसके साथ चल रहा था। उसने सब मरे हुए लोगों को, मारे गए लोगों को, बन्दी बना लिया, जो परलोक में, अदृश्य संसार में, बड़े न्याय के दिन तक जीवित रहते हैं। इस मृत्यु के दूत और नाश करने वाले को पृथ्वी के निवासियों के एक चौथाई को मार डालने का अधिकार मिला। युद्ध की तलवार से, अकालों और महामारियों से, और पृथ्वी के जंगली हिंसक पशुओं के द्वारा।

इन सब सवारों ने मुझे दिखाया कि परमेश्वर न्याय के द्वारा मनुष्यों को मन फिराने के लिए कैसे बुलाता है। वह न्याय में भी अपना अनुग्रह दिखाता है और सब कुछ करता है कि मनुष्य उसकी सुनें। अपनी भलाई के द्वारा, पर विपत्तियों के द्वारा भी।

जब मेम्ने ने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने कुछ बिल्कुल अलग देखा। स्वर्गीय मन्दिर में मैंने होमबलि की वेदी को पहचाना। वेदी के नीचे मैंने ऐसे लोगों को खड़े देखा, जो हिंसा से मार डाले गए थे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन को माना था और यीशु की गवाही दी थी। मेम्ने के समान उन्होंने भी अपना जीवन बलिदान कर दिया और मृत्यु को सौंप दिया। अब वे स्वर्ग में हैं, मेम्ने के पास और परमेश्वर के पास।

इन **शहीदों** ने सिंहासन के सामने एक साथ ऊँचे स्वर में विलाप करते हुए पुकारा: “हे सर्वाधिकारी शासक, हे पवित्र और सत्य, कब तक, जब तक तू हमारे निर्दोष लहू के लिए हमारे हत्यारों से लेखा न ले और पृथ्वी पर उनका न्याय न करे, जिन्होंने हमें मार डाला? ताकि इस अन्याय का अंत हो।”

तब इन सब को सबसे पहले श्वेत वस्त्र दिए गए। क्योंकि वे जय पाने वालों के रूप में योग्य थे। हाँ, मृत्यु के द्वारा उन्होंने जय पाई है – मेम्ने की तरह। सिंहासन पर बैठे हुए ने स्वयं उनसे कहा कि वे यीशु के गवाहों के रूप में अपने कठिन जीवन-मार्ग से थोड़ी देर विश्राम करें। तब तक, जब तक पृथ्वी पर उनके दुःख के साथी भी मार न डाले जाएँ, और इस प्रकार शहीदों की गिनती पूरी न हो जाए। लेखा लेने का दिन आ रहा है। इन बहुत से शहीदों के कारण उसे निश्चय ही आना है। बुराई अब बहुत समय तक नहीं रहेगी।

फिर **छठी मुहर** आई। और वह विश्व-इतिहास का अंत था। विश्व का न्याय। लेखा लेने का दिन। एक बहुत बड़े भूकम्प ने पृथ्वी को हिला दिया। सूर्य ने चमकना बन्द कर दिया और काला हो गया। चन्द्रमा लहू के समान लाल हो गया। आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े, जैसे कच्चे अंजीर गिरते हैं, जब पेड़ ज़ोर से हिलाया जाता है। आकाश पुस्तक की तरह लिपट गया। इस अराजकता में सब पहाड़ और टापू अपने-अपने स्थान से हट गए।

कुछ भी वैसा नहीं रहेगा, जैसा था। ब्रह्माण्ड की व्यवस्था और समाज की व्यवस्था मिट जाएगी। इन सब की अब आवश्यकता नहीं रहेगी। ये सब घटनाएँ अंत का और परमेश्वर के प्रकट होने का सार हैं।

इस ब्रह्माण्डीय प्रलय के सामने मनुष्यों ने क्या किया? सब राजा, बड़े और धनी लोग, प्रधान और बलवान, सब दास और सब स्वतंत्र लोग पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों में शरण ढूँढने लगे। अब हर सामाजिक भेद का कोई महत्त्व नहीं रहा। सब पर एक समान बीती।

अपनी निराशा में वे पहाड़ों और चट्टानों से गिड़गिड़ाकर कहने लगे कि उन पर गिर पड़ो। ताकि उन्हें उससे छिपा लें और बचा लें, जो सिंहासन पर बैठा है। सनातन, जीवते, एकमात्र और पवित्र परमेश्वर से, जो सारी पृथ्वी का न्यायी है। और मेम्ने के क्रोध से। क्रोधित मेम्ने के बारे में मैंने अब तक न कुछ सुना था, न देखा था। पर मसीहा को, जिसे कभी यरूशलेम में यातना दी गई और मार डाला गया, संसार का शासन और न्याय सौंपा गया है। मैंने यीशु को लगभग कभी क्रोधित नहीं देखा था। एक बार मन्दिर में वह सचमुच क्रोधित हुआ था, क्योंकि उसके पिता के घर का अनादर किया जा रहा था।

वह अपने अनुयायियों को बचाएगा और उनके सताने वालों से धार्मिकता के साथ निपटेगा। क्योंकि हर अधर्म पर उसके क्रोध-भरे न्याय का बड़ा दिन अब आ पहुँचा है। उससे कोई बच नहीं सकता। कोई भी नहीं। और मनुष्यों को बोध होता है कि यह अंत है और वे गलत पक्ष में खड़े थे। क्योंकि उन्हें परमेश्वर और मेम्ने की कोई परवाह नहीं थी।

और **मेम्ने के क्रोध** के सामने कौन ठहर सकता है?

यह मुझे आगे देखना था। सचमुच ऐसे लोग थे, जो ठहर सकते हैं।

अध्याय 7

इसके बाद मैंने चार स्वर्गदूतों को पृथ्वी के चारों कोनों पर खड़े देखा। वे हवा को थामे हुए थे। ताकि पृथ्वी पर, पेड़ों पर और समुद्र पर कोई हवा न चले। फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को, एक पाँचवें को, देखा, जो सूर्य के उदय होने की दिशा से, पूर्व से, आ रहा था। परमेश्वर का भेजा हुआ। और वह एक मुहर साथ लाया था। जीवते परमेश्वर के स्वामित्व की मुहर।

इस स्वर्गदूत ने उन चार स्वर्गदूतों को ऊँचे स्वर से पुकारकर कहा: जब तुम आँधी को छोड़ो, तो न पृथ्वी की, न पेड़ों की और न समुद्र की हानि करना। और तब तक नहीं, जब तक हम पृथ्वी पर परमेश्वर के सब दासों के माथे पर इस मुहर से दिखाई देने वाला चिह्न न लगा दें। इसके द्वारा वे क्लेश में सुरक्षित रहेंगे, और लक्ष्य तक, परमेश्वर के सिंहासन के पास अनन्त जीवन में, पहुँचेंगे।

प्रकृति की शक्तियों के ये स्वर्गदूत सदा और हर समय मनुष्यों को हानि पहुँचाना चाहते हैं। पर परमेश्वर मनुष्यों की रक्षा करता है। न्याय में वह अपनी सुरक्षा हटा लेता है और केवल उन्हीं को बचाए रखता है, जो उसकी सेवा करते हैं।

फिर मैंने सुना कि उन्हें कितनों पर मुहर लगानी थी: 144000। इस्राएल के, अर्थात् याकूब के, पुत्रों के सब गोत्रों में से। उनका जो क्रम मैंने अब सुना, वैसा मैंने पहले कभी न सुना था, न पढ़ा था।

यहूदा में से 12000। रूबेन में से 12000। गाद में से 12000। आशेर में से 12000। नफ्ताली में से 12000। मनश्शे में से 12000। शमौन में से 12000। लेवी में से 12000। इस्साकार में से 12000। जबूलून में से 12000। यूसुफ में से 12000। बिन्यामीन में से 12000।

ये इस्राएल के वे सब लोग थे, जो मसीहा यीशु के पीछे चलते थे और इसी कारण अपने ही जाति-भाइयों, यहूदियों, द्वारा इतने तिरस्कृत और सताए गए। शैतान के आराधनालय द्वारा, जैसा मैं पहले लिख चुका था। वे, जिन्हें सुसमाचार सबसे पहले सुनाया गया था, कलीसिया का केन्द्र और आरम्भ बने। वे पहले फल थे। परमेश्वर के जाने-पहचाने और उसकी निज सम्पत्ति। उन सब दूसरे यहूदियों के बिल्कुल विपरीत, जिन्होंने मसीहा को ठुकरा दिया। वास्तव में सच्चे चुने हुए लोग अब भी परमेश्वर के हृदय और योजना में जीवित हैं, जिन्हें 12 गोत्रों की प्रतीकात्मक पूर्ण संख्या में दिखाया गया है। चाहे वे इस समय ढूँढे न मिलें। हाँ, सारा इस्राएल उद्धार पाएगा, जब जातियों की बड़ी फ़सल – जिसे मुझे अभी देखना था – इकट्ठी हो जाएगी। मेरे जाति-भाई, जिनके लिए मैं इतनी लालसा रखता हूँ कि वे यीशु को अपने मसीहा के रूप में पहचान लें।

इसके बाद मैंने जातियों की एक असंख्य, विशाल भीड़ देखी। परमप्रधान के सिंहासन के सामने मनुष्यों के एक बड़े समुद्र के समान। वे सब लोगों, गोत्रों, जातियों और भाषाओं में से आए थे। यह जातियों की बड़ी, अन्तरराष्ट्रीय फ़सल थी, हाँ, उसके प्राण के परिश्रम का फल, जैसा यशायाह ने यीशु के दुःखों के विषय

में पहले से कहा था। वे सब सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़े थे। वे श्वेत वस्त्र पहने थे। अपने हाथों में वे खजूर की डालियाँ और पत्ते थामे हुए उन्हें हिला रहे थे और मेम्ने की विजय और उस नए, **अंतिम निर्गमन** का उत्सव मना रहे थे। जब मैंने उन्हें एक ही प्रचंड जयजयकार के गायन-मण्डल में ये शब्द पुकारते सुना, तो मैं सिंहर उठा: उद्धार के लिए हम केवल उसके ऋणी हैं, जो सिंहासन पर बैठा है। अपने परमेश्वर के और मेम्ने के।

जब यह हुआ, तो मैंने सब असंख्य स्वर्गदूतों को सिंहासन के चारों ओर खड़े देखा। जैसे किसी अखाड़े में, पर उससे बड़े, जितना मनुष्य बना सकते हैं। उनके लिए छुड़ाई हुई अन्तरराष्ट्रीय मानव-भीड़ आश्चर्यों का आश्चर्य थी। इनमें 24 प्राचीन और चारों प्राणी भी थे। वे सब मुँह के बल गिर पड़े और परमेश्वर की आराधना की। जो कुछ मनुष्यों ने पुकारा था, उस पर उन्होंने आमीन कहा। फिर उन्होंने यह कहते हुए आराधना की: हमारे परमेश्वर की ही सारी स्तुति, सारी महिमा और बुद्धि, और धन्यवाद और आदर और सामर्थ्य और बल है! केवल उसी का, सदा के लिए! अब और सदा।

तब, पहले की तरह, 24 प्राचीनों में से एक ने मुझसे बात की। उसने मुझसे पूछा और जानना चाहा कि क्या मैं सोच सकता हूँ कि ये लोग, जो श्वेत वस्त्र पहने सिंहासन के सामने खड़े थे, कौन हैं और कहाँ से आए। मैं नहीं जानता था। मुझे सचमुच कोई अंदाज़ा नहीं था और मैंने उससे यही कह दिया। मैं उत्सुक था कि वह क्या कहेगा।

उसने कहा: ये वे हैं, जो उस **बड़े क्लेश** में से निकलकर आए हैं। इन सब ने अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं। उन्होंने मसीह के लहू के द्वारा क्षमा पर विश्वास किया। यही, और केवल यही, कारण है कि वे अब यहाँ, परमेश्वर के सिंहासन के सामने, उसके सम्मुख हैं और उसकी सेवा करते हैं। दिन-रात और सदा के लिए। राजाओं और याजकों के रूप में। उसके स्वर्गीय मन्दिर में। और परमेश्वर, जो सिंहासन पर बैठा है, उनके ऊपर और उनके चारों ओर अपना निवास खड़ा करेगा और उनके पास रहेगा। वह उनके पास आएगा और उनके बीच डेरा करेगा। वे फिर कभी भूखे-प्यासे न होंगे। जीवित बचे रहने का संघर्ष और अस्तित्व की चिन्ता फिर न रहेगी। न कभी सूर्य की झुलसाने वाली गर्मी उन पर पड़ेगी। क्योंकि मेम्ना स्वयं, जो सिंहासन के केन्द्र में है, एक देखभाल करने वाले और प्रेम करने वाले **चरवाहे** की तरह उनकी रखवाली करेगा और उन्हें चराएगा। वह उन्हें अनन्त जीवन के जीवित और उमड़ते **जल के स्रोतों** तक ले जाएगा।

परमेश्वर उनकी आँखों से सब **औसू पोंछ डालेगा**। वे फिर कभी नहीं रोएँगे, क्योंकि इसका कोई कारण ही न रहेगा। न पीड़ा, न शोक, न युद्ध फिर कभी होगा। परमेश्वर और मेम्ना सब कुछ नया कर देते हैं।

जब प्राचीन ने मुझे यह बताया, तो मैं इसे मुश्किल से समझ पाया। क्या मेम्ने की फ़सल सचमुच इतनी विशाल होगी? मैंने तो पिन्तेकुस्त पर और यरूशलेम में अनुभव किया था कि कैसे हज़ारों लोग विश्वास में आए। और उसके बाद भी बहुत लोग आए। और अब यहाँ एशिया माइनर में भी बहुत थे। पर इतने सारे? मेरे पास शब्द नहीं थे। अद्भुत! तब सुसमाचार पृथ्वी की छोर तक पहुँच चुका होगा। परमेश्वर की प्रजा सदा उससे **बड़ी** होती है, जितना हम सोचते हैं।

पर सब उस क्लेश में से आए थे, जिसमें मैं स्वयं भी था, और उन्होंने विश्वास के कारण कठिन बातें सही थीं। पर वे विश्वासयोग्य बने रहे। अब वे स्वर्गीय सिंहासन-कक्ष में प्रवेश कर चुके थे। हर ओर से। लक्ष्य पर पहुँच चुके थे। सीधे अपने परमेश्वर के पास और उस मेम्ने के पास, जिसने उन्हें परमेश्वर के लिए मोल लिया था।

अब मैं जान गया कि मेम्ने के क्रोध के सामने और सिंहासन पर बैठे हुए के सामने कौन ठहर सकता है। और कौन नहीं।

अध्याय 8

अब मेम्ने ने सातवीं मुहर खोली। इसके साथ पुस्तक पूरी तरह खुल गई। तनाव के मारे स्वर्ग में सन्नाटा छा गया। आधे घंटे तक चुप्पी और ठहराव। जैसे सब कुछ चुप हो जाता है, जब न्याय में परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट होती है और न्याय निकट होता है।

अब दूसरी बार कुछ खुला था, इस बार वह सातवीं मुहर थी। इसके साथ **दर्शनों की दूसरी श्रृंखला** आरम्भ हुई, जिसे भी मसीह के फिर आने पर समाप्त होना था।

फिर बात आगे बढ़ी और मैंने **सात स्वर्गदूतों** को सिंहासन के सामने खड़े देखा। उनमें से हर एक को एक **तुरही** दी गई।

पर वहाँ एक और स्वर्गदूत भी था। सोने का धूपदान लिए हुए। वह परमेश्वर के सिंहासन के सामने धूप की वेदी के ठीक पास खड़ा था। उसे बहुत सा धूप दिया गया। यह धूप उसने वेदी पर डाला। पवित्र लोगों की बहुत सी, हाँ, अनगिनत प्रार्थनाओं के साथ, ताकि वे सुगन्ध के धुएँ में परमेश्वर के सामने ऊपर उठें। सताई जा रही कलीसिया के लिए कैसी सांत्वना कि प्रार्थनाएँ उसके पास पहुँचती हैं, जो उन्हें सुन सकता है।

पर फिर स्वर्गदूत ने वेदी के अंगारों में से कुछ अपने धूपदान में भरे – और उसे पृथ्वी पर फेंक दिया। यह उन सब प्रार्थनाओं का उत्तर था, जो पृथ्वी से स्वर्ग में ऊपर उठी थीं। इसके बाद गर्जन, आवाज़ें, बिजलियाँ और एक भूकम्प हुए। परमेश्वर अपनी प्रजा और शहीदों की प्रार्थनाओं का उत्तर केवल अंतिम दिन ही नहीं देता।

इसके बाद सातों स्वर्गदूत अपनी तुरहियों के साथ तैयार थे कि तुरही फूँकें और और भी न्यायों की घोषणा करें, जिन पर यहाँ एशिया माइनर के लोग विशेष रूप से भयभीत होते हैं।

पहले स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी। तब ओले और कौंधती, बड़ी, चकाचौंध करने वाली बिजलियाँ पृथ्वी पर फेंकी गईं। तब एक तिहाई पेड़ और सारी हरी घास जल गई।

दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी। तब कुछ ऐसा, जो आग से जलते हुए एक बड़े पहाड़ जैसा दिखता था, समुद्र में डाला गया। समुद्र का एक तिहाई भाग लहू बन गया। समुद्र के एक तिहाई प्राणी मर गए। और समुद्र पर के एक तिहाई जहाज़ नष्ट हो गए।

तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी। तब आकाश से एक बड़ा तारा गिरा, जो मशाल की तरह जल रहा था। वह नदियों और जल के स्रोतों के एक तिहाई भाग पर गिरा। उस तारे का नाम नागदौना है। इससे एक तिहाई जल नागदौना बन गया। बहुत से लोग, जिन्होंने वह जल पिया, मर गए। क्योंकि जल कड़वा हो गया था।

चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी। तब सूर्य और चन्द्रमा और तारों का एक तिहाई भाग मारा गया। वे अन्धकारमय हो गए, यहाँ तक कि दिन के एक तिहाई भाग में उजाला न रहा और रात का भी यही हाल हुआ।

बहुत सी बातों ने मुझे मिस्र की उन 10 विपत्तियों की याद दिलाई, जो उसने एक हठीले फ़िरौन और मिस्रियों पर डाली थीं।

फिर मैंने एक उकाब को आकाश में ऊँचे उड़ते देखा, जो इतने ज़ोर से चिल्ला रहा था, मानो वह भी दुःख में सहभागी हो: हाय, हाय, हाय! जो पृथ्वी पर रहते हैं, वे तुरहियों के तीन और न्याय भोगेंगे! वे पहले चार से भी बुरे होने वाले थे।

अध्याय 9

फिर **पाँचवें स्वर्गदूत** ने तुरही फूँकी। मैंने देखा कि एक तारा आकाश से गिरा हुआ था। एक स्वर्गदूत, जिसे अथाह कुण्ड की, अबुस्सोस की, खाई की कुंजी मिली। उसने उसे खोला, और खाई में से घना, काला धुआँ निकला। जैसे किसी भट्ठी से। सारी हवा और सूर्य अन्धकारमय हो गए।

पर धुएँ में टिड्डियाँ छिपी थीं, जो अब निकलकर पृथ्वी पर आ गईं। उन्हें बिच्छुओं जैसी शक्ति दी गई, जो अपने विषैले डंक से हिंसा करते हैं।

उन्हें एक भयानक काम मिला। उन्हें, जैसा टिड्डियाँ सामान्यतः करती हैं, पेड़ों और खेतों को चट नहीं करना था, ताकि मनुष्यों का भोजन छीन लें। नहीं, उन्हें अपने विषैले डंकों से मनुष्यों को पीड़ा देनी और हानि पहुँचानी थी। पर केवल उन्हीं को, जिनके माथों पर परमेश्वर के स्वामित्व की मुहर नहीं है। उन्हें मनुष्यों को सचमुच यातना देने के लिए पाँच महीने का समय मिला। परमेश्वर द्वारा सीमित एक समय, जो टिड्डी के जीवन-चक्र के बराबर है। उन्होंने मनुष्यों को मार नहीं डाला, बल्कि उन्हें पीड़ा देने में आनन्द लेती थीं। ऐसी भयानक पीड़ाएँ, मानसिक भी और शारीरिक भी, कि मनुष्य अपने आप को मार डालने का प्रयत्न करते हैं और मरने में ही अपना एकमात्र रास्ता देखते हैं। पर यह उन्हें नहीं मिलता। मृत्यु मानो उनसे भागेगी। पर जो परमेश्वर की निज सम्पत्ति हैं, वे इससे बचाए जाएँगे।

टिड्डियों के आकार युद्ध के लिए तैयार की गई सेना के समान थे। उनके सिरों पर सोने के विजय-मुकुट थे। उनके मुँह मनुष्यों के मुँह के समान थे। उनके बाल स्त्रियों के बालों के समान लम्बे थे। उनके दाँत सिंहों के दाँतों के समान थे, शिकार को फाड़ने के लिए। वे लोहे की झिलमलों से सुरक्षित थीं। उनके फड़फड़ाते पंखों का शोर ऐसा सुनाई देता था, जैसे बहुत से युद्ध-रथ, जिन्हें घोड़े खींचते हैं, लड़ाई में दौड़ रहे हों। उनकी

पूँछें बिच्छुओं की पूँछों के समान थीं, जिनके सिरे पर विषैला डंक था। इसी से उन्हें मनुष्यों को पाँच महीने तक पीड़ा देने का अधिकार मिला।

दुष्ट आत्माओं की एक सेना, जो उन मनुष्यों को दुष्टता से सताती है, जो परमेश्वर की सहनशीलता को लगातार ठुकराते रहते हैं।

उनका अगुवा और राजा अथाह कुण्ड का एक गिरा हुआ प्रधान स्वर्गदूत है। इब्रानी में उसका नाम अबद्नेन है। यूनानी में उसका नाम अपुल्लयोन है – नाश करने वाला। जब मनुष्य ही भ्रष्ट और दुष्ट हैं, तो अथाह कुण्ड के स्वर्गदूत, वे अन्धकारमय आत्मिक प्राणी, जिन्हें उस दुष्ट ने अथाह कुण्ड से बाहर फेंका है, कितने अधिक होंगे! नाश करने वाला पहले भी कितनी बार निकल चुका था। तब भी, जब उसने मिस्र में पहिलौठों को मार डाला।

अब **पहली विपत्ति** बीत चुकी है। अभी दो विपत्तियाँ और आएँगी।

इसके बाद **छठे स्वर्गदूत** ने तुरही फूँकी। और मैंने उस वेदी के चारों सींगों में से एक से, जो परमेश्वर के सामने है, एक आवाज़ सुनी। उसने छठे स्वर्गदूत से कहा: उन चार दुष्ट स्वर्गदूतों को खोल दे, जो बड़ी नदी फ़रात के पास बँधे हुए हैं, ताकि वे अपना दुष्ट काम कर सकें। फ़रात के पास, जो रोमी साम्राज्य की सीमा है, जो उसे भयानक फ़ारसियों से अलग करती है।

और वे चार स्वर्गदूत खोल दिए गए, जो इसी घड़ी के लिए तैयार किए गए थे, ताकि मानवजाति के एक तिहाई भाग को मार डालें। वे घुड़सवारों की प्रचंड सेनाएँ थीं, जो न्याय पूरा करने निकल पड़ीं। एक विशाल, लगभग अनगिनत सेना। पार्थियों के समान, जो रोम के सामर्थी शत्रु थे, जो रोमी साम्राज्य के लिए खतरा हैं और कभी पराजित नहीं हुए।

घोड़े और उन पर बैठे सवार ऐसे दिखते थे: उनकी झिलमें आग जैसी, धूम्रकान्त (हायसिंथ) जैसी नीली और गन्धक जैसी पीली थीं। घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के समान थे। उनके मुँहों से आग, धुआँ और गन्धक निकलती है। घोड़ों की शक्ति उनके मुँह में और उनकी पूँछों में है। क्योंकि उनकी पूँछें विषैले साँपों के समान हैं, जिनसे वे हानि पहुँचाते हैं।

बाकी मनुष्यों ने, जो इन विपत्तियों से नहीं मारे गए, फिर भी कोई पछतावा नहीं दिखाया। वे अपना पहले जैसा जीवन जीते रहे। इन न्यायों के बावजूद वे उस सारी बुराई से नहीं लौटे, जो वे करते थे। वे दुष्टात्माओं और दुष्ट आत्माओं से नाता जोड़ते रहे और मूर्तियों की आराधना करते रहे – जो सोने, चाँदी, लोहे, पत्थरों और लकड़ी की बनी थीं – जो न देख सकती थीं, न सुन सकती थीं, न चल सकती थीं। उन्होंने न मन फिराया और न अपनी हत्याओं और गुप्त जादू-टोनों से लौटे – और न अपने आप को देवता बनाने से। न अपने बेलगाम व्यभिचार और अपनी चोरियों से। बुराई से कोई मुँह मोड़ना नहीं और परमेश्वर की ओर कोई मुड़ना नहीं।

ये सब घटनाएँ, परमेश्वर के ये न्याय, तो मानो एक भोपू थे, ताकि मनुष्यों को ऊँचे और साफ़ स्वर में मन फिराने के लिए बुलाएँ, कि वे आखिरकार समझ लें कि वे केवल जीवते परमेश्वर के पास ही सुरक्षित हैं।

अध्याय 10

इसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को पृथ्वी पर उतरते देखा। एक विशेष रूप से बलवन्त – बादल से ऐसे घिरा हुआ, मानो वस्त्र से। उसके सिर के ऊपर मेघधनुष जैसी एक तेजोमय आभा थी। उसका मुँह सूर्य के समान तेज़ चमक रहा था। उसके पाँव आग के खम्भों के समान थे। उसके हाथ में एक खुली हुई छोटी पुस्तक थी। यह वही पुस्तक थी, जिसकी सात मुहरें मेम्ने ने खोली थीं: उसमें इस संसार के लिए परमेश्वर की सारी योजना थी, और ईश्वरीय बुद्धि में उसका पूरा किया जाना भी।

उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर रखा, बिना उसमें डूबे। और बायाँ पाँव पृथ्वी पर। इस प्रकार परमेश्वर के नाम से उसने पृथ्वी और समुद्र पर परमेश्वर की सम्पत्ति के रूप में दावा किया। फिर उसने ऊँचे स्वर से पुकारा, जैसे सिंह गरजता है। और जब वह ऐसे पुकार चुका, तो सात गर्जनों ने अपनी-अपनी आवाज़ में पुकारा।

तब मैं वह सब लिखने लगा, जो सात गर्जनों ने प्रकट किया था। पर स्वर्ग से एक आवाज़ ने मुझे चेताया कि इसे न लिखूँ। इस पर मुहर लगाई जाए और इसे गुप्त रखा जाए। यह केवल परमेश्वर का विषय था। हम मनुष्य सब कुछ नहीं जान सकते और न जानेंगे, और यदि जानेंगे भी, तो लक्ष्य पर पहुँचकर ही।

और उस बलवन्त स्वर्गदूत ने, जो समुद्र पर और पृथ्वी पर खड़ा था, पुस्तक वाला अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया और उसकी शपथ खाई, जो सदा जीवित है। उसकी, जिसने स्वर्ग को और जो कुछ उसमें रहता है, रचा। उसकी, जिसने पृथ्वी को और जो कुछ उस पर रहता है, रचा। और जिसने समुद्र को और जो कुछ उसमें रहता है, रचा। इस शपथ ने बहुत स्पष्ट कहा: अब और कोई मोहलत और कोई देरी न होगी। अंत आ पहुँचा है। वह उन दिनों में होगा, जब सातवाँ स्वर्गदूत तुरही फूँकना आरम्भ करेगा। तब परमेश्वर का भेद, इस संसार के लिए उसकी योजना, पूरी हो जाएगी। जैसा उसने अपने दासों को बताया है।

फिर मैंने स्वर्ग से वही आवाज़ फिर सुनी। वह यीशु था, जो मुझसे बात कर रहा था। मुझे उस स्वर्गदूत के पास जाना था, जो समुद्र पर और पृथ्वी पर खड़ा था, और उसके हाथ से वह पुस्तक लेनी थी। मैं उसके पास गया और वह पुस्तक माँगी। उसने वह मुझे दे दी और कहा, इसे खा ले। तेरे मुँह में यह मधु के समान मीठी होगी। पर तेरे पेट में यह कड़वी हो जाएगी। तब मैंने उसे लिया और खा लिया, जैसे कभी यहजेकेल ने किया था। और वह सचमुच मेरे मुँह में मधु के समान मीठी थी। पर अपने पेट में मैंने महसूस किया कि वह कड़वी थी। न्यायों से आने वाले सारे दुःख और विलाप उसमें थे। पर वह मेरे मुँह में मीठी भी तो थी और उसने मुझे अपने दासों के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता दिखाई, जिन्हें वह प्रतिफल देगा और अपने नए संसार में आमंत्रित करेगा।

फिर उन्होंने मुझे कहा कि मुझे फिर से लोगों, जातियों और भाषाओं के विषय में और बहुत से राजाओं के विषय में भविष्यद्वाणी करनी और नबूवत करनी होगी। जो पुस्तक मैंने खाई थी, उसमें ये सब भविष्यद्वाणियाँ थीं।

अध्याय 11

फिर मुझे नापने के लिए एक सरकण्डा दिया गया। उठ और **मन्दिर के पवित्रस्थान** को और वेदी को और उनको, जो उसमें आराधना करते हैं, नाप ले। पर मन्दिर के बाहर के आँगन को नहीं। वह जातियों को दे दिया गया है। वे पवित्र नगर, यरूशलेम, को 42 महीने तक रौंदेंगी।

पीछे मुड़कर देखें तो यह यरूशलेम का वह मन्दिर था, जो कभी 70 ईस्वी तक मौजूद था। उसमें मैंने प्रतीक रूप में उन्हें पहचाना, जो विश्वासयोग्यता से सेवा करते थे। मसीही यहूदियों को (मसीहा को मानने वाले यहूदियों को), इस्राएल के सच्चे बचे हुए भाग को, अपने उन जाति-भाइयों के बीच, जिन्होंने मसीहा को तुच्छ जाना और जातियों के बहकावे में आ गए थे। इससे मुझे फिर इस्राएल के सब गोत्रों में से मुहर लगाए गए उन 144000 की भी याद आई, और उनके अविश्वासी भाइयों के मसीह-विरोधी प्रतिरोध की।

और इस समय में मैं अपने **दोनों गवाहों** को सारा अधिकार दूँगा। 1260 दिन, अर्थात् 42 महीने, वे भविष्यद्वाणी करेंगे। दीनता और विलाप के साथ – टाट ओढ़े हुए। ये दोनों वे दो जैतून के पेड़ और वे दो दीवटें हैं, जो सारी पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़ी हैं। और जो कोई उन्हें हानि पहुँचाता या उन्हें चुप कराना चाहे –, तब उनके मुँह से आग निकलती है, जो शत्रुओं को नष्ट कर देती है। हाँ, जो उन्हें हानि पहुँचाता है, उसे मार डाला जाना अवश्य है। उनके पास आकाश को बन्द करने का भी अधिकार है, ताकि उस समय में, जब वे भविष्यद्वाणी करते हैं, मनुष्यों के पापों को प्रकट करते हैं और उन पर दोष लगाते हैं, मेंह न बरसे। जैसा कभी एलिय्याह के समय हुआ था। मूसा की तरह उन्हें जल को लहू में बदलने का भी अधिकार है। वे जितनी बार चाहें, पृथ्वी पर हर प्रकार की विपत्ति ला सकते हैं।

मैं सोचने लगा कि ये दोनों कौन हो सकते हैं। क्या इन्हें प्रतीक के रूप में समझना है? अंततः मैंने इनमें सबसे अधिक कलीसिया के प्रतिनिधियों को पहचाना। चाहे पहली दृष्टि में यह समझना कठिन हो। पर उनकी विश्वासयोग्यता, उनकी गवाही, आरम्भ से उनका समर्पण, इसी ओर संकेत करते लगते हैं। उन्होंने सब क्लेशों को सह लिया। उन दो गवाहों की तरह विश्वासियों की कलीसिया भी परमेश्वर की सुरक्षा और अधिकार के अधीन रोकी नहीं जा सकती थी। चाहे उस पर कितना ही भारी दबाव डाला गया। न्याय उसी के कारण पूरे हुए, जब तक अंत में सब कुछ पूरी तरह चरम पर न पहुँच गया। कलीसिया ने अपने शत्रुओं को शाब्दिक रूप से नष्ट नहीं किया। उसका संघर्ष आत्मिक है। उसके संदेश के द्वारा शत्रु चुप हो गए। कभी-कभी घटनाएँ अद्भुत रीति से उसके पक्ष में मुड़ गईं।

जब गवाहों के दिन पूरे हो जाएँगे, तो वह पशु, जो अथाह कुण्ड में से निकलता है, और जिसके विषय में मैं आगे विस्तार से बताऊँगा, उन पर आक्रमण करेगा। सचमुच: पशु उन पर जय पाएगा और उन्हें मार

डालेगा। और उनकी लाशें बड़े नगर यरूशलेम की सड़क पर पड़ी रहेंगी, जो आत्मिक और नैतिक दृष्टि से सदोम और मिस्र जितना ही भक्तिहीन है। यह वह नगर है, जिसमें हमारा प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया। पर जो इस नगर के विषय में कहा जाता है, वह अंततः सब नगरों पर, बल्कि सारी पृथ्वी और पृथ्वी के सब निवासियों पर लागू होता है

बुराई की इस विजय को सब लोगों, गोत्रों, भाषाओं और जातियों में से बहुत से लोग देखेंगे। साढ़े तीन (3 ½) दिन तक वे सड़क पर पड़े रहते हैं। सारा संसार, वे सब, जो मूर्तियों की सेवा करते हैं और जीवते परमेश्वर और यीशु को ठुकराते या तुच्छ जानते हैं, इस पर आनन्द मनाते हैं। वे एक दूसरे को बधाइयाँ और उपहार भेजेंगे। क्योंकि आखिरकार वे मारे गए, जिन्होंने उन्हें 3 ½ वर्ष तक अपनी विपत्तियों से सताया था और लगातार उनके पापों और अधर्मों की ओर उनका ध्यान दिलाया था। इस उद्देश्य से कि वे पश्चाताप करें और लौट आएँ, जैसे उस समय फ़िरौन को भी पश्चाताप करना था।

पर फिर, उन 3 ½ दिनों के बाद, कुछ बिलकुल अप्रत्याशित हुआ, हाँ, मनुष्यों के लिए तो बिलकुल बेतुका। उन दोनों गवाहों में फिर जीवन आ गया। जैसे परमेश्वर ने आरम्भ में आदम में जीवन फूँका था, या यहजेकल के यहाँ मरे हुआओं की हड्डियों में अपनी साँस फूँकी थी, वैसे ही अब इन दोनों विश्वासयोग्य शहीदों में भी। वे मृत्यु से जी उठे। इससे वे सब बहुत से लोग, जिन्होंने यह देखा, घबरा गए। उन पर बड़ा भय छा गया। क्योंकि उन सब ने स्वर्ग से वह ऊँची आवाज़ सुनी, जिसने उन दोनों से कहा: यहाँ ऊपर आओ! और जैसे उस समय एलिय्याह, और जैसे उनका प्रभु यीशु, वैसे ही वे एक बादल में स्वर्ग पर चढ़ गए। अपने शत्रुओं की आँखों के सामने।

इसी प्रकार अंत में विश्वासियों की कलीसिया लगभग मिटा दी जाएगी। पर अंत में उनकी **शहादत** ही उनकी **विजय** होगी। जैसे मेम्ने ने मृत्यु के द्वारा जय पाई। वह परमेश्वर के पास उठा ली जाएगी। और उसके द्वारा ग्रहण की जाएगी और ऊँची की जाएगी। यही उसकी विजय है और साथ ही उसके शत्रुओं के अंत का आरम्भ।

उन दोनों भविष्यद्वक्ताओं और उनके उठा लिए जाने पर भय की इसी घड़ी में फिर एक बड़ा भूकम्प हुआ। यरूशलेम नगर का दसवाँ भाग ढह गया। इस भूकम्प में सात हजार लोग मर गए। बाकी सब डर गए और तब उन्होंने स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की। हाँ, पछतावा और मन फिराव हुआ, जो न्याय का उद्देश्य था। अंत के दिनों में सारा इस्राएल उद्धार पाएगा।

इसके साथ **दूसरी विपत्ति** बीत गई। **तीसरी विपत्ति** शीघ्र आती है।

फिर मैं उत्सुकता से **सातवें स्वर्गदूत** की और उसकी तुरही की प्रतीक्षा करने लगा। और जब उसने तुरही फूँकी, तो स्वर्ग में ऊँची आवाज़ें हुईं। वे कह रही थीं: अब सारा संसार, सारी पृथ्वी परमेश्वर के राज्य के रूप में प्रभु यहोवा को और उसके मसीह, उसके अभिषिक्त, को सौंप दी गई है। अब उसका शासन आरम्भ होता है, जो सदा बना रहेगा।

24 प्राचीन, जो परमेश्वर के सामने अपने सिंहासनों पर बैठे हैं, यह सुनकर मुँह के बल गिर पड़े और यह कहते हुए आराधना की: हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो सदा था, जो है और जो आने वाला है, हम तेरा धन्यवाद करते हैं। क्योंकि तूने अब आखिरकार अन्धकार के समय का अंत कर दिया है और अपना अंतिम **शान्ति का राज्य** आरम्भ किया है।

जातियाँ हज़ारों वर्षों तक क्रोधित रहीं। पर अब, लम्बे धीरज के बाद, तेरा अंतिम क्रोध आ पहुँचा है। और आखिरकार वह समय, कि सब मरे हुआँ को तेरे सिंहासन के सामने न्याय हो। और अपने सब दासों को, सब सहस्राब्दियों में से, तू उनका **प्रतिफल** देगा। भविष्यद्वक्ताओं को, सब पवित्र लोगों को, हाँ, उन सब को, जो तेरे नाम का भय मानते हैं। छोटों को भी और बड़ों को भी। पर जैसे तू अपने दासों को प्रतिफल देता है, वैसे ही तू उन्हें विनाश के हवाले कर देता है, जिन्होंने पृथ्वी को और उस पर के मनुष्यों को बिगाड़ा है।

और अंत के समय के इस विशाल दर्शन का समापन यह था कि स्वर्ग में मन्दिर, परमपवित्र स्थान, खोला गया, और परमेश्वर की वाचा का सन्दूक दिखाई दिया। तब बिजलियाँ, आवाज़ें, गर्जन और एक भूकम्प और बड़े ओले हुए। जो कुछ हुआ था, वह सब उस भीतरी पवित्रस्थान से आया था, जहाँ परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान है। सब कुछ उसकी सर्वोच्च इच्छा थी, जो यहाँ हम पर प्रकट की जाती है।

यह **तीसरी बार** थी कि कुछ **खुला**। इस बार मन्दिर। इसके साथ **दर्शनों की तीसरी श्रृंखला** आरम्भ हुई, जो भी प्रभु यीशु के महिमा के साथ आने पर समाप्त हुई।

अध्याय 12

फिर आकाश में एक बड़ा चिह्न दिखाई दिया। मैंने एक युवा **स्त्री** को देखा, जो पूरे दिनों की गर्भवती थी और सूर्य ओढ़े हुए थी। उसके पाँवों के नीचे चन्द्रमा था। उसके सिर पर 12 तारों का मुकुट था। वह प्रसव की पीड़ा में दर्द से चिल्लाती है। जन्म देने ही वाली है।

पर मैंने आकाश में एक और बड़ा चिह्न देखा। एक विशाल, आग जैसा लाल **अजगर**। कई सिरों वाला एक जल-सर्प, हाड़ड़ा के समान, भजन संहिता 74 के लिख्यातान, उस समुद्री दानव, के समान। उसके सात सिर और दस सींग थे। उसके सिरों पर सात मुकुट थे। उसकी बड़ी पूँछ तारों के एक तिहाई भाग को बुहारकर नीचे पृथ्वी पर गिरा देती है। एक अत्यन्त सामर्थी, बुद्धिमान और भयावह, हाँ, हत्यारा प्राणी।

यह सर्प-अजगर उस स्त्री के सामने, जो जन्म देने ही वाली है, उठ खड़ा हुआ। वह बच्चे को जन्म लेते ही निगल जाना चाहता है। स्त्री ने एक **बेटे** को जन्म दिया। उसे संसार और सब जातियों पर राज्य करने के लिए ठहराया गया था। पर अजगर इसे रोकना चाहता था, क्योंकि वह स्वयं संसार पर राज्य करना और उसका स्वामी बनना चाहता है। पर कुछ विचित्र हुआ: अजगर उस बालक को पकड़ न सका, क्योंकि वह परमेश्वर के पास, उसके सिंहासन के पास, उठा लिया गया। स्पष्ट था कि अजगर परमेश्वर की योजना को रोक नहीं सका।

मुझे कुछ आभास हुआ कि इन चिह्नों का क्या अर्थ होना था। स्त्री इस्राएल थी, जिसे रोमियों ने घेर रखा था। विशेषकर इस्राएल के विश्वासयोग्य लोग, जो लालसा के साथ मसीहा की बात जोह रहे थे।

और उस बड़े विरोधी को, परमेश्वर के शत्रु को, दिखाने के लिए सात सिरों वाले अजगर से अधिक उपयुक्त कोई चिह्न नहीं था। हाँ, वही था, जिसने हेरोदेस को यीशु को मार डालने के लिए बैतलहम के बच्चों की हत्या के लिए उकसाया। उसके बाद भी, बार-बार, उसने मसीहा को मार डालने का प्रयत्न किया। जब अंत में वह इसमें सफल होता दिखा, तो उसे यह जानना पड़ा: यीशु की क्रूस की मृत्यु उसकी विजय नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी और अंतिम पराजय थी।

ऐसे चित्र और कहानियाँ मैं मिस्रियों, बेबीलोनियों और यूनानियों की पौराणिक कथाओं से जानता था। स्पष्ट है कि परमेश्वर ने उनमें से कुछ बातें लेकर उन्हें एक नए प्रकाश में नया अर्थ दिया, अर्थात् उस पर लागू करके, जिसका संसार पर शासन सचमुच है। क्योंकि वही छुड़ाने वाला है – मसीह प्रभु। वही सताए गए मसीहियों का सच्चा परमेश्वर है। यह कोई मिथक नहीं, बल्कि सत्य है। और इन स्वर्गीय चिह्नों के द्वारा, जिन्हें मैंने देखा, वह सब पुरानी पौराणिक कथाओं और उनके देवताओं को महत्त्वहीन कर देता है।

हाँ, और आकाश के ये चिह्न **तारों की एक विशेष स्थिति** की ओर संकेत करते थे, जो उस बालक के, मसीहा के, जन्मदिन की घोषणा करती है। उसी ने पूर्व से आए ज्ञानियों को उस गौशाले का मार्ग दिखाया था, जहाँ बालक का जन्म हुआ। जब सूर्य कन्या राशि के ठीक बीच में होता है, वहाँ, जहाँ वह बच्चे को गर्भ में लिए है; चन्द्रमा उसके पाँवों के पास; उसके नीचे विषैले बिच्छू की राशि (वृश्चिक), सिंह राशि के तारे उसके सिर के ऊपर एक मुकुट की तरह; और फिर, बहुत ही कम होने वाली घटना, जब बृहस्पति, ग्रहों का राजा, और राजसी तारा रेगुलस सिंह राशि में एक दूसरे को छूते हैं: यह हमारे संवत् से तीन वर्ष पहले का 11 सितम्बर था। तारों की यह स्थिति बैतलहम के एक गौशाले में मसीहा के आगमन की ओर संकेत करती थी। यहूदी पंचांग में यीशु मसीह का जन्मदिन नए वर्ष के दिन पड़ा। और **नूह** का जन्मदिन भी। हाँ, मसीहा का आगमन एक सच्ची नई शुरुआत थी। एक नया नूह, जो एक नई सृष्टि लाता है, और शैतान और उसके स्वर्गदूतों पर, परमेश्वर के गिरे हुए पुत्रों पर, और उनकी सन्तानों, दुष्टात्माओं, पर सदा के लिए जय पाता है। अजगर ने अपनी पूँछ से एक तिहाई स्वर्गदूतों को स्वर्ग से बूझा दिया था। हाँ, इतने सारे स्वर्गदूत उसके विद्रोह में उसके पीछे हो लिए थे। पर अंत में वह बालक, वह पुत्र, वह मेम्ना जय पाएगा।

फिर स्त्री जंगल में भाग गई। एक ऐसे स्थान पर, जिसे परमेश्वर ने तैयार किया है। वहाँ 1260 दिनों तक, अर्थात् **3 ½ वर्ष** तक, उसका पालन-पोषण किया गया। ठीक उतने ही समय तक, जितने समय उन दोनों गवाहों ने भविष्यद्वान्नी की थी। यह समय-अवधि मुझे कई बार अलग-अलग इकाइयों में मिली। समयों, दिनों और वर्षों के रूप में। यह अवधि, जिसके विषय मैं दानियेल भी बोलता है, यहाँ मेम्ने के सब अनुयायियों के क्लेश का प्रतीक और सार बन जाती है। यह तब आरम्भ हुई, जब वह बालक परमेश्वर के सिंहासन तक उठा लिया गया और महिमामन्वित किया गया। एक समय, जब तक वह फिर न आए और अपना विश्व-शासन आरम्भ न करे। हाँ, सीरियाई राजा अन्तियोकुस एपिफ्रेनीज़ (Antiochus

Epiphanes) के अधीन विश्वासयोग्य यहूदियों का भयानक सताव 3 ½ वर्ष तक चला। हमारे प्रभु की गवाही 3 ½ वर्ष तक चली। और रोमियों द्वारा विनाश से पहले यरूशलेम 3 ½ वर्ष तक घेरा गया। इस्राएल की तरह वह स्त्री जंगल में गई, ताकि परमेश्वर की देखभाल का अनुभव करे, स्वयं उसकी ओर की यात्रा में।

तब स्वर्ग में युद्ध छिड़ गया। प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल अपने स्वर्गदूतों के साथ उस आग जैसे लाल अजगर और उसके स्वर्गदूतों से लड़ा। पर अजगर और उसके स्वर्गदूत मीकाईल और उसकी सेना के सामने टिक न सके। अजगर के लिए, शैतान के लिए, और उन स्वर्गदूतों के लिए, जो उसके पीछे चलते हैं, स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन तक अब कोई पहुँच नहीं है। यह उनके अंत का आरम्भ है।

वह बड़ा अजगर अदन का वही पुराना साँप है, जिसने पहले मनुष्यों को बहकाया। उसे इब्लीस और शैतान भी कहा जाता है। वह परमेश्वर का विरोधी और बहकाने वाला है, हाँ, सारे संसार का ईश्वर। वह जातियों को भटकाता है। उसे पृथ्वी पर पटक दिया गया। इस संसार का सरदार बाहर निकाल दिया गया, जैसा मैंने कभी यीशु को कहते सुना था।

अब, जब वह बालक, अर्थात् मसीहा यीशु, परमेश्वर के सिंहासन पर, परमेश्वर के दाहिने, विराजमान हो गया है, तो स्वर्ग में भाइयों पर दोष लगाने वाले का कोई अधिकार नहीं रहा। यीशु ने अपने लहू के द्वारा अनन्त छुटकारा प्राप्त किया है।

स्वर्ग में इस प्रचंड घटना का उत्सव एक ऊँची आवाज़ के साथ मनाया गया। मैंने ये युगान्तरकारी शब्द सुने: **अब उद्धार पूरा हो गया है।** हमारे परमेश्वर की सामर्थ्य और राज्य आ गए हैं। और उसके मसीह की, परमेश्वर के अभिषिक्त की, सामर्थ्य और अधिकार भी।

क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला स्वर्ग से निकाल दिया गया है। नीचे पृथ्वी पर पटक दिया गया है। वह, जिसके पास इससे अच्छा कोई काम नहीं था कि हजारों वर्षों तक बिना रुके भाइयों पर उनके पापों के कारण परमेश्वर के सामने दोष लगाए और उनके दण्ड की माँग पर अड़ा रहे। पर अब कोई कारण नहीं है, और फिर कभी कोई कारण नहीं होगा, कि भाइयों पर परमेश्वर के सामने दोष लगाया जाए। यह बीती बात है! क्योंकि पवित्र लोग, यीशु के अनुयायी, अब मेम्ने के लहू के द्वारा अपने पापों से छुड़ाए गए हैं। मेम्ने के लहू में सब कुछ धुल गया है। लहू के द्वारा उन्होंने शैतान पर जय पाई है। मेम्ने के लिए अपने अंगीकार और अपनी विश्वासयोग्यता के द्वारा। इसी कारण उनमें से बहुत से मार डाले गए। उन्होंने मृत्यु तक भी अपने प्राणों को प्रिय न जाना। ठीक उस मेम्ने की तरह, जिसने उन्हें छुड़ाया है।

इसलिए स्वर्ग, और वे सब जो वहाँ रहते हैं, स्वर्गदूत और सिद्ध किए गए पवित्र लोग, आनन्द मनाएँ। वे उत्सव मनाएँ, क्योंकि युग बदल गया है। मेम्ने की विजय सब कुछ बदल देती है और सब कुछ सदा के लिए बदल देगी। पर पृथ्वी पर अभी उत्सव नहीं मनाया जाता। क्योंकि शैतान तो नीचे पटक दिया गया है। वह भली-भाँति जानता है कि उसके पास अधिक समय नहीं बचा, क्योंकि स्वर्ग में मसीहा की विजय का उत्सव मनाया जा रहा है। और क्योंकि उसके पास अधिक समय नहीं है, वह बड़े क्रोध के साथ मनुष्यों को

बहकाएगा और नष्ट करेगा। इस पागलपन और भ्रम में कि वह मसीहा से विश्व-शासन छीन सकता है और उसे अपने लिए स्थापित कर सकता है। हाय पृथ्वी के मनुष्यो, क्योंकि शैतान तुम्हारे पास उतर आया है।

सबसे बढ़कर उसका क्रोध उस स्त्री पर भड़का, जिसने मसीहा को जन्म दिया था। अर्थात् इस्राएल के उन लोगों पर, जिन्होंने मसीहा पर विश्वास किया और उसके पीछे चले। उसने उसे सताया। स्त्री की अलौकिक रीति से सहायता की गई। उसे बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, ताकि वह जंगल में उस शरणस्थान पर उड़ जाए, जहाँ उन 1260 दिनों तक, उन 3 ½ वर्षों तक, एक समय और समयों और आधे समय तक, उसका पालन-पोषण किया जाता है और उसकी **आत्मिक रक्षा** की जाती है। अजगर उसे पकड़ न सका, और उसने अपने मुँह से पानी की धारा बहाकर उसे डुबो देने का प्रयत्न किया। पर फिर से स्त्री की सहायता की गई: पृथ्वी खुल गई और अजगर के मुँह से निकली बाढ़ को बस निगल गई। उसने सब कुछ करके देखा, पर जय न पा सका।

वह इस बात पर बहुत क्रोधित हुआ कि वह स्त्री को हानि न पहुँचा सका। तब वह उन सब दूसरों के विरुद्ध मुड़ा, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं और यीशु मसीह को मान लेते हैं। ये स्त्री की सन्तान हैं। सब जातियों के वे बहुत से लोग, जो यहूदी मसीहियों के मिशन-कार्य के द्वारा मसीह तक पहुँचे। अजगर उन सब पर आक्रमण करता है, जो मेम्ने के पीछे चलते हैं, जहाँ कहीं उसे अवसर मिलता है। सारी पृथ्वी पर।

अध्याय 13

फिर मुझे समुद्र के किनारे पहुँचाया गया, ताकि और भी चिह्न देखूँ।

मैंने **समुद्र में से एक पशु** को ऊपर आते देखा, जो भयानक दिखता था और उस आग जैसे लाल अजगर से मिलता-जुलता था। क्योंकि उसके भी सात सिर और दस सींग थे। दसों सींगों पर मुकुट थे। सिरों पर परमप्रधान परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा का एक नाम लिखा था।

वह पशु, या कहें वह दरिदा, उन पशु-आकृतियों जैसा था, जिन्हें दानियेल ने कभी देखा और जिनका वर्णन किया था। वे विश्व-साम्राज्यों और उनके शासकों के प्रतीक थे। ऐसा ही यह पशु भी था, जो जातियों के उफनते समुद्र में से निकला। बस अब यह एक ऐसा पशु था, जिसमें दानियेल के वे सब पशु एक साथ जुड़े या मिले हुए थे। वह एक खतरनाक और फुर्तीले जगुआर या चीते जैसा दिखता था। उसके पाँव एक कभी तृप्त न होने वाले भालू के पाँवों जैसे थे। उसका शक्तिशाली मुँह सिंह के मुँह जितना बड़ा था। एक भयावह शिकारी पशु, जो एक शैतानी विश्व-शक्ति का रूप है।

और अब मैंने यह भी देखा कि इस पशु को शक्ति और राज्य करने का सिंहासन किसने दिया। वह **अजगर** था। हाँ, यह पशु अजगर के मानो एक अवतार जैसा था, उसका देह धारण करना। मुझे ऐसा लगा मानो अजगर ने ही इस पशु को समुद्र से निकलवाया हो। वह उसकी रचना थी।

फिर मैंने देखा कि उसके सात सिरों में से एक तलवार से प्राणघातक रूप से घायल हुआ और पशु मरने पर था। पर यद्यपि घाव प्राणघातक था, वह जल्दी भर गया। इससे पृथ्वी के लोग चकित हो गए और उन्होंने पशु की प्रशंसा की।

इसलिए उन्होंने अजगर की आराधना की, क्योंकि उसने पशु को ऐसी सामर्थ्य और शक्ति दी। और उन्होंने उसी प्रकार पशु की भी आराधना की और कहा: पशु के समान कौन है? कौन उससे युद्ध कर सकता है या उसे हरा सकता है?

मुझे अचम्भा हुआ। सिंहासन के बीच के उस छोटे मेम्ने पर भी एक प्राणघातक घाव था। यह मुझे एक नकल जैसा लगा, एक **उपहास-रूपी नकल** (पैरोडी) जैसा। मानो अजगर परमेश्वर पिता जैसा बनना चाहता हो और पशु उसका पुत्र। अजगर को मनुष्यों ने नहीं देखा, केवल पशु को। पशु अजगर का प्रकट रूप था।

यह एक परमेश्वर-विरोधी और मसीह-विरोधी गठबंधन था। उस पशु को, जो एक राजा और सम्राट जैसा शासक था, यह दिया गया कि वह घमण्ड से बड़ी-बड़ी और मनुष्यों को प्रभावित करने वाली बातें कहे। और परमेश्वर और मेम्ने के विरुद्ध निन्दा की बातें बोले। वह जैसा चाहता, वैसा मनमाना कर सकता था। 42 महीने तक। पशु लगातार जीवते परमेश्वर की निन्दा करता रहा। उसने स्वर्ग के परमेश्वर को और उन सब को, जो स्वर्ग में उसकी सेवा करते हैं, ढिठाई से ललकारा। पशु अपने आप को बलवान और अजेय समझता था। पशु को यह छूट भी दी गई, और वह भी स्वयं जीवते परमेश्वर के द्वारा, कि वह सब पवित्र लोगों से युद्ध करे और उन पर जय भी पाए। जितने अधिक पवित्र लोगों को सम्भव था, पशु ने मार डाला, ताकि पृथ्वी पर से जीवते परमेश्वर और उसके मसीह की स्मृति को मिटा दे।

पशु को छूट मिली – चाहे मेरे लिए इसे समझना कितना ही कठिन था – शासन करने के लिए राजनीतिक और सैनिक अधिकार। परमेश्वर ने अपनी सुरक्षा हटा ली, ताकि यह सब होने दे। वह हर गोत्र, हर भाषा और हर लोगों पर राज्य करता था। एक नई विश्व-व्यवस्था में पशु उन सब को एक कर देता है, जो पृथ्वी पर रहते हैं और स्वर्ग के परमेश्वर को नहीं जानते। वे इस शासक को दण्डवत् करते हैं। ये वे सब हैं, जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं हैं – उस मेम्ने की, जो बलि किया गया, ताकि सब गोत्रों, भाषाओं और लोगों में से मनुष्यों को छुड़ाए।

यदि किसी के कान हों, तो वह ध्यान से सुने। **पवित्र लोगों** के लिए इसका अर्थ है हर जगह बन्दी बनाया जाना। बहुतांश के लिए इसका अर्थ है तलवार से मृत्यु। इस विषय में कोई भ्रम नहीं होना चाहिए। पर यह केवल तभी तक होता है, जब तक परमेश्वर चाहता है। जो मेम्ने के पीछे चलता है, वह वैसे ही भाग्य की अपेक्षा कर सकता है। इसी में इस अन्धकारमय समय में पवित्र लोगों का, यीशु के अनुयायियों का, धीरज और टिके रहना दिखाई देता है। और उनकी विश्वासयोग्यता और उनका विश्वास।

मैंने समझा कि मेरे दिनों में भी एक बहुत मिलता-जुलता शासक था। मैं स्वयं तो पतमुस में बन्दी था। मुझे मार नहीं डाला गया। पर कुछ स्थानों पर यह भी हुआ। जैसे स्मरना और पिरगमुन में, जिसके विषय में

मैं लिख चुका हूँ। अंत तक विश्व-साम्राज्यों पर ऐसे शासक होते रहेंगे, जो अपनी आराधना करवाएँगे और यीशु के अनुयायियों को मार डालेंगे। क्या अंत से पहले कोई ऐसा होगा – उस पशु के समान, जिस पर वह सब कुछ, जो मैंने देखा, पूरी तरह लागू होगा? पूरी तरह विकसित अमानवीय और परमेश्वर-विरोधी, दुष्ट स्वभाव के साथ? परमेश्वर सर्वोच्च है और अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। तब भी, जब शायद अंत-समय में बातें ऐसे चरम पर पहुँचें, जैसा पृथ्वी और मनुष्यों ने कभी नहीं देखा।

इसके साथ एक **दूसरा पशु** भी होना था। वह भी एक अतिथार्थवादी मिश्रित प्राणी जैसी पशु-आकृति। इसे अब मैंने पृथ्वी में से ऊपर आते देखा। मानो किसी कब्र से। उसके मेम्ने जैसे दो सींग थे। पर उसमें से अजगर की आवाज़ सुनाई देती थी, मानो वह इस पशु के द्वारा बोल रहा हो। वह पहले पशु से जुड़ा था और उसे पहले पशु से सारे अधिकार मिले थे। इस पशु ने सब कुछ किया, ताकि मनुष्य पहले पशु की आराधना करें। उस पशु की, जिसका प्राणघातक घाव इतने अद्भुत ढंग से भर गया था। दूसरे पशु ने बड़े चिह्न दिखाए। वह आकाश से आग भी बरसा सकता था।

इस प्रकार एक अन्धकारमय, शैतानी त्रिएकता प्रकट हो गई थी। यह दूसरा पशु पवित्र आत्मा की एक उपहास-रूपी नकल जैसा था, जो मसीह की महिमा करता है। दूसरे पशु ने पहले पशु की, उस शासक की, महिमा की। दूसरा पशु एक मनुष्य का भी प्रतीक है, एक प्रचार-मंत्री का, जो उन मनुष्यों को, जो मेम्ने के पीछे नहीं चलते, भटका देता है। विनाश की ओर। एक झूठा भविष्यद्वक्ता, जो उन असाधारण चिह्नों के द्वारा सफल होता है, जिनका अधिकार उसे दिया गया था। ये चिह्न इतने प्रभावशाली थे और पहले पशु की महानता का ऐसा आदर और गुणगान करते थे कि वे मनुष्य, जो सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते, समुद्र से निकले इस पहले पशु की परमेश्वर के रूप में आराधना करते हैं।

फिर दूसरा पशु मनुष्यों से कहता है कि उस पहले पशु के लिए, जिसका प्राणघातक घाव भर गया था और जो फिर जीवित हो गया, एक मूर्ति खड़ी करें। इस मूर्ति को, जो पहले पशु का रूप थी, इस झूठे भविष्यद्वक्ता ने, जो मेम्ने जैसा दिखता था, अब जीवन दिया। हाँ, उसे जीवते परमेश्वर की ओर से यह क्षमता दी गई कि यह मूर्ति जीवित हो जाए, बोल सके और उसे इतनी बुद्धि भी मिले कि वह उन सब को ढूँढ़ निकाले, जो पहले पशु की आराधना नहीं करते थे। जिन्होंने ऐसा नहीं किया, वे सब इसके बाद इस जीवित हो उठी मूर्ति के द्वारा मार डाले गए।

झूठा भविष्यद्वक्ता, समुद्र से निकले पहले पशु का प्रचार-मंत्री, ऐसा करवाता है कि सब मनुष्य, छोटे और बड़े, धनी और गरीब, स्वतंत्र और दास, एक दिखाई देने वाली छाप लगाएँ। या तो अपने दाहिने हाथ पर, या माथे पर। इससे यह निश्चित किया गया कि केवल वही खरीद-बेच सकें, जो पशु को दण्डवत् करते थे और इस छाप से इसका प्रमाण देते थे। छाप में या तो पशु का नाम था या उसके नाम का अंक-मान। जिसमें बुद्धि हो, वह पशु का अंक गिन ले। वह एक मनुष्य का अंक है। पशु एक मनुष्य है। और उसका अंक 666 है।

मैं, यूहन्ना, पहले से ही एक कठिन और संघर्षों से भरे समय में जी रहा था, जब मसीहियों को सताया जाता था और सम्राट अपनी परमेश्वर के रूप में पूजा करवाते थे। जो कुछ मैंने देखा, उसमें से कुछ मेरे समय को प्रतिबिम्बित करता था और बार-बार करता रहेगा। पर जो मैंने अब देखा था, वह उससे भी बढ़कर था। शायद यह भविष्य का वर्णन करता है, मानव इतिहास के शायद अंतिम समय का, ठीक उससे पहले, जब मेम्ना अपना राज्य आरम्भ करने के लिए फिर आएगा। परमेश्वर अपनी सुरक्षा हटा लेगा और अन्धकार की शक्तियों को और उन मनुष्यों को, जिनका वे उपयोग करती हैं, सामर्थ्य रखने और चिह्न दिखाने का, मानवजाति को बहकाने और पूरी तरह अपने वश में करने का अवसर देगा। क्योंकि वे न्यायों और विपत्तियों के द्वारा भी नहीं लौटे। परमेश्वर का न्याय वहाँ होता है, जहाँ परमेश्वर बहुत धीरज के बाद अपनी सुरक्षा हटा लेता है और मनुष्यों को उनके अपने हाल पर और अन्धकार की दुष्ट शक्तियों के हवाले छोड़ देता है।

अध्याय 14

जब मैं अभी उस अन्धकार के बारे में सोच ही रहा था और वह मुझे भीतर तक झकझोर रहा था, तब मेरी दृष्टि फिर ऊपर स्वर्ग की ओर मोड़ी गई। ज्योति की ओर। वहाँ स्वर्गीय पर्वत **सिय्योन** पर परमेश्वर का सच्चा मेम्ना खड़ा था। मेम्ने के साथ वे 144000 मुहर लगे हुए लोग थे, जिनके माथे पर उनके पिता का नाम लिखा था। वही, जिन्हें मैं पहले देख चुका था। वे मेम्ने के साथ एक थे। थोड़ी ही देर बाद मुझे और भी जय पानेवालों को देखना था, जैसे पहले उस बड़ी अन्तरराष्ट्रीय भीड़ को देखा था।

मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी। वह प्रचंड जलधाराओं के गर्जन जैसी थी, और प्रचंड गड़गड़ाहट जैसी। परन्तु मैंने वीणा बजानेवाले गायकों का स्वर भी सुना, जो अपनी वीणाएँ बजा रहे थे।

वे एक बिलकुल **नया गीत** बजाते हैं। सिंहासन के सामने और चारों प्राणियों और 24 प्राचीनों के सामने। यह गीत केवल वे 144000 ही गा सकते थे। वे पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे। और कोई इसे नहीं जानता था। ये मेम्ने से ऐसे प्रेम करते हैं, जैसे कोई कुँवारी अपने दूल्हे से। ये जहाँ कहीं मेम्ना गया, उसके पीछे-पीछे चले। अपने प्राणों को प्रिय जाने बिना। वे मनुष्यों में से परमेश्वर और मेम्ने के लिए पहले फल होने को मोल लिए गए हैं।

उन्होंने कोई बुरी बात नहीं कही, न झूठ बोला, न कोई असत्य बात कही। मेम्ने के द्वारा वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने निर्दोष हैं।

कैसी सात्वता! कैसा प्रोत्साहन कि अन्धकार का अंतिम वचन नहीं होगा। मेम्ना और पवित्र लोग जय पाएँगे और उनके जयजयकार का कभी अंत न होगा।

फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश में उड़ते देखा। वह सारी पृथ्वी के ऊपर उड़ रहा था। क्योंकि उसके पास पृथ्वी पर रहनेवाले सब लोगों के लिए एक संदेश था। हर जाति, गोत्र, भाषा और लोगों के लिए। यह एक शुभ संदेश था, **सनातन सुसमाचार**। ऊँचे स्वर से, कि सब सुन लें, उसने पुकारा: जीवित और

सच्चे परमेश्वर का भय मानो। केवल उसी की महिमा करो। उस सृष्टिकर्ता की आराधना करो, जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए। क्योंकि न्याय की घड़ी बिलकुल निकट है।

यह संदेश हर युग के लिए था। और अंतिम घड़ी तक यह लागू रहता है। तब भी, जब वे दोनों पशु मानवजाति को अन्धा कर चुके होंगे और परमेश्वर का कोई ज्ञान शेष न रहेगा। परमेश्वर निश्चित करेगा कि मनुष्य शुभ समाचार, अर्थात् सुसमाचार, सुनें।

उसके पीछे एक दूसरा स्वर्गदूत आया, जिसके पास भी एक संदेश था। सब पवित्र लोगों के लिए सात्वना का संदेश, परन्तु बाकी सबके लिए एक भयानक समाचार: गिर पड़ा, गिर पड़ा वह बड़ा नगर **बेबीलोन**। उसने सब जातियों को अपने व्यभिचार और विश्वासघात की कामना की मदिरा से मतवाला कर दिया है।

बेबीलोन के बारे में मैं आगे और बताऊँगा। इस नगर के बारे में मैंने बहुत कुछ देखा था। बेबीलोन उस वैश्विक और अत्यंत विकसित विश्व-व्यवस्था का प्रतीक है। एक नगर, जिसमें परमेश्वर वास नहीं करता और जिसमें उसका स्वागत नहीं है – नए यरूशलेम के बिलकुल विपरीत।

एक तीसरा स्वर्गदूत पीछे आया और ऊँचे स्वर से कहा: यदि कोई समुद्र से निकले पशु और उसकी मूर्ति की आराधना करे और उसको दंडवत् करे, और अपने हाथ या माथे पर उसकी छाप ले, तो वह परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा पीएगा। यह मदिरा बिना मिलावट के उसके क्रोध के कटोरे में रखी हुई है। हाँ, जो कोई पशु की आराधना करते हैं और सनातन सुसमाचार को नहीं सुनते, वे पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक से पीड़ा पाएँगे। हाँ, वे मेम्ने को पहचानेंगे, परन्तु वह उनकी सहायता नहीं कर सकेगा, क्योंकि वे तब भी उसे ठुकरा देंगे।

इस आग और इस पीड़ा का धुआँ उठता रहता है और कभी नहीं थमता। आग सदा जलती रहती है, युगानुयुग। ये लोग किसी अक्षरशः आग में नहीं जलेंगे। वे अस्तित्व में रहेंगे और उन्हें कोई विश्राम न मिलेगा। उनका विवेक उन्हें पीड़ा देगा। उनका अकेलापन उन्हें पीड़ा देगा। यह जानना: जीवित परमेश्वर है। परन्तु उन्होंने उसकी आराधना नहीं की। अब वे सदा के लिए बाहर रहेंगे। एक ऐसी पीड़ा, जो आत्म-धिवक्कार से भरी है। उन्हें कड़वा पछतावा होगा कि उन्होंने पशु और उसकी मूर्ति की आराधना की। परमेश्वर कभी नहीं चाहता था कि वे एक दिन उससे त्यागे जाकर अपने ही हाल पर छोड़ दिए जाएँ। उन्होंने कभी परमेश्वर की निकटता नहीं चाही, और इसलिए वे फिर कभी अनुभव नहीं करेंगे कि परमेश्वर की निकटता कितनी असीम रूप से भली है। ये कठोर चित्र इससे अधिक प्रभावशाली नहीं हो सकते, और ये सबसे अधिक अत्यावश्यक चेतावनी हैं। वह स्थान चाहे जैसा भी हो, कोई वहाँ होना नहीं चाहेगा।

इसके विपरीत है पशु के जानलेवा समय में पवित्र लोगों का आत्म-बलिदान की धीरज। वे, जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को और यीशु पर विश्वास को थामे रखा। बड़ी परीक्षा के समय में धीरज धरे रहना उनके लिए कठिन होगा। जो पशु की आराधना करते हैं, उनके लिए सब आसान होगा। परन्तु मृत्यु के पार यह उलट जाएगा। और तब सदा के लिए।

क्योंकि मैंने एक आवाज़ को यह कहते सुना: धन्य हैं वे **मृतक, जो प्रभु में मरते हैं!** हाँ, आत्मा आनंद से कहता है: वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएँगे। जो कुछ उन्होंने यीशु के लिए परिश्रम किया, उसमें से कुछ भी व्यर्थ न होगा। उनके काम उनके साथ हो लेते हैं, और वे सदा बने रहते हैं।

फिर मैंने कुछ देखा। एक उजला बादल, जिस पर कोई बैठा था, अर्थात् मनुष्य का पुत्र। जैसा दानियेल ने भी उसे देखा था। वह यीशु था। उसके सिर पर राजसी मुकुट था और उसके हाथ में एक तेज़ **हँसिया**। वह किसी बात की प्रतीक्षा करता हुआ लगता था। तब स्वर्गीय मन्दिर में से एक स्वर्गदूत निकला और ऊँचे स्वर से मनुष्य के पुत्र को पुकारकर कहा: अपना **हँसिया** लगाकर लवनी कर! क्योंकि लवनी का समय आ पहुँचा है। फ़सल काटने की यह बिलकुल अंतिम घड़ी है, क्योंकि वह लगभग सूख चुकी है। और बादल पर बैठे मनुष्य के पुत्र ने अपना **हँसिया** पृथ्वी पर चलाया, और पृथ्वी की लवनी हो गई।

हाँ, अंत तक, जब तक किसी भी तरह संभव हो, परमेश्वर की सहनशीलता प्रतीक्षा करती है। फिर यीशु अपनी प्रजा की फ़सल इकट्ठी करता है और उसे घर ले आता है। उन सबको, जो उसके पीछे चले और जिन्होंने उसके नाम को थामे रखा।

अपने लोगों के लिए इस अंतिम घड़ी में यह उद्धार होगा। आशीष की फ़सल। परन्तु **न्याय की फ़सल** भी है। बाकी लोगों के लिए। क्योंकि एक और स्वर्गदूत उस स्वर्गीय मन्दिर में से निकला। उसके पास भी एक तेज़ **हँसिया** था। अब एक और स्वर्गदूत स्वर्गीय वेदी में से निकला। उसे आग पर अधिकार था। वह न्याय का स्वर्गदूत था। उसने **हँसियेवाले** स्वर्गदूत से बड़े ऊँचे स्वर से पुकारकर कहा: अपना **हँसिया** अंगूरों की फ़सल में लगा। पृथ्वी की दाखलताओं के गुच्छे काट ले, क्योंकि उसके अंगूर पक गए हैं। तब उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी की दाखलता की फ़सल काट ली और अंगूरों को रसकुंड में डाल दिया, जहाँ अंगूर रौंदे जाते हैं। यही परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप का बड़ा रसकुंड है। उसे यरूशलेम नगर के बाहर रौंदा जाता है। रसकुंड में से बहुत-सा लाल अंगूर का रस निकला, लहू के समान। इतना, कि वह घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया। 300 किलोमीटर के घेरे में।

एक भयानक चित्र। प्रभावशाली। फिर भी सब मनुष्यों के पास समय था, जब तक फ़सल बढ़ती और पकती रही। जब अंत में बुराई और अधर्म हृदय से बढ़ जाएँगे, तब फ़सल आएगी। परमेश्वर का न्याय गंभीर है और उसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। परमेश्वर ठठों में नहीं उड़ाया जाता। किसी को उसे चुनौती देने का प्रयास नहीं करना चाहिए, जैसा समुद्र से निकले पशु ने किया – उन सबके लिए अनुकरण का एक नमूना बनकर, जो उसे दंडवत् करते हैं।

अध्याय 15

फिर मैंने स्वर्ग में एक और चिह्न देखा। एक बड़ा और अद्भुत चिह्न। सात स्वर्गदूत, जिनके पास **अंतिम सात विपत्तियाँ** थीं। उनके द्वारा परमेश्वर का क्रोध पूरा होता है।

परन्तु इन विपत्तियों के टूट पड़ने से पहले वह बात, जो मैंने पहले देखी थी – उन दोनों अत्याचारी पशुओं का उत्पात – समाप्त हुई। उस पशु ने यीशु के कितने ही गवाहों को मार डाला था। पशु ने पवित्र लोगों पर जय पाई थी। परन्तु अब मैंने उन्हें देखा। क्योंकि वास्तविक विजेता वही थे। उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय नहीं जाना और मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहे।

मैंने काँच का-सा एक समुद्र देखा। आग से मिला हुआ। बर्फ़ की तरह जमा हुआ। इस समुद्र के तट पर, परमेश्वर के सिंहासन के पास, जैसा मैं आरंभ में देख चुका था, वहाँ वे खड़े थे। वे, जिन्होंने पशु पर और उसकी मूर्ति पर और उसके नाम की रहस्यमय संख्या पर जय पाई थी। उनके पास वीणाएँ थीं और वे परमेश्वर की स्तुति में बजा रहे थे। ऐसे, मानो वे एक **नए निर्गमन** में अभी-अभी तट के सुरक्षित किनारे पर निकल आए हों। मसीह-विरोधी पशु से बचाए गए – जैसे उस समय इस्राएल फ़िरौन से बचाया गया था। जो समुद्र में डूब गया और जिसका अंत हो गया। जैसा उन दोनों पशुओं के साथ भी होगा। इसलिए वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत भी गाते हैं: “हे प्रभु परमेश्वर, सब वस्तुओं के पालनहार, तेरे काम महान और अद्भुत हैं। तेरे मार्ग धर्मी और सच्चे हैं, जिन पर तू अपनी प्रभुता में जातियों को अपने लक्ष्य तक ले चलता है। क्योंकि तू ही जातियों का वास्तविक राजा है। अपने स्वर्गीय सिंहासन पर। कौन इतना मूर्ख है कि तेरा भय न माने और यह स्वीकार न करे कि परमेश्वर परमेश्वर है और रहेगा? और तेरी महिमा न करे? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है। तेरे समान कोई नहीं। सब जातियाँ आकर तुझे दंडवत् करेंगी। क्योंकि वह दिन आ रहा है, जब तेरे काम सब जातियों पर प्रकट होंगे और वे मान लेंगी कि केवल तू ही परमेश्वर है, और कोई नहीं।”

फिर मैंने स्वर्गीय मन्दिर को देखा। उसका द्वार खुलता है और वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास अंतिम विपत्तियाँ थीं, बाहर निकले। वे शुद्ध और चमकते हुए वस्त्र पहने हुए थे और छाती पर सोने का पटुका बाँधे हुए थे। फिर उन चार प्राणियों में से एक ने आकर उन सात स्वर्गदूतों को सोने के सात कटोरे दिए। ये परमेश्वर के प्रकोप और क्रोध से भरे थे, जो युगानुयुग जीवित है।

तब सारा मन्दिर परमेश्वर की महिमा की उपस्थिति और उसकी सामर्थ्य के कारण धुँएँ से भर गया। तब तक, जब तक स्वर्गदूत अपने क्रोध के सात कटोरे उंडेल न चुके। तब तक कोई मन्दिर में प्रवेश न कर सका।

अध्याय 16

फिर मैंने एक ऊँची आवाज़ सुनी। यह स्वर्गदूतों को आज्ञा थी कि परमेश्वर के प्रकोप से भरे अपने कटोरे पृथ्वी पर उंडेल दें।

एक **पहले स्वर्गदूत** ने पहला कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया। तब मनुष्यों को एक बुरा और दुखदायी फोड़ा निकला। परन्तु केवल उन मनुष्यों को, जिन पर पशु की छाप थी और जो पशु की मूर्ति को दंडवत् करते थे। परमेश्वर भेद करता है, जैसे उस समय मिस्र में, जब उसकी प्रजा मिस्रियों के विपरीत अधिकतर विपत्तियों से बचा ली गई थी।

दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा समुद्र पर उंडेला। और सारा समुद्र लहू बन गया। सारा समुद्र मर गया और जो कुछ उसमें जीवित था, वह भी। जैसे मिस्र में भी हुआ था, जब फ़िरौन मूसा के द्वारा दिए गए परमेश्वर के निर्देश का लगातार विरोध करता रहा।

तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा जल के सोतों और नदियों पर उंडेला। वे भी लहू बन गए और मर गए। तब पृथ्वी के जल के लिए नियुक्त स्वर्गदूतों ने – अर्थात् क्षेत्रों के स्वर्गदूतों ने, इस मामले में प्रकृति के लिए नियुक्त – कहा: “तू पूरी तरह धर्मी है। तू, जो है और जो था, जो कभी सृजा नहीं गया। पवित्र और अनुपम। जो पाप को सह नहीं सकता। यह न्यायसंगत है कि तू जल को लहू में बदल देता है और मनुष्य अब जीवित नहीं रह सकते। क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का बहुत-सा निर्दोष लहू अकारण और हिंसा से बहाया है। अब तू उन्हें पीने के लिए लहू देता है। वे इससे अधिक किसी बात के योग्य नहीं। और शहीद इस योग्य हैं कि उनके बहाए गए लहू को स्मरण किया जाए।” ऐसे ही परमेश्वर ने मिस्रियों को उन बहुत-से नर शिशुओं के बदले लहू पिलाया, जिन्हें फ़िरौन ने मरवा डाला था।

फिर मैंने वेदी को, जिसके नीचे मैं उन सब शहीदों को पहले ही देख चुका था, यह कहते सुना: “हाँ, हे प्रभु परमेश्वर, सब वस्तुओं के पालनहार! तेरे न्याय और तेरा प्रकोप और क्रोध सच्चे, धर्मी और उचित हैं।”

फिर **चौथे स्वर्गदूत** ने अपना कटोरा सूर्य पर उंडेला। तब सूर्य की तपन इतनी बढ़ गई कि मनुष्य मानो आग से झुलसने लगे। और ऐसा ही हुआ कि मनुष्य भयंकर तपन से झुलस गए। परन्तु इसके द्वारा मन बदलने और परमेश्वर को दंडवत् करने के बजाय उन्होंने उस परमेश्वर की निन्दा की, जिसे इन विपत्तियों पर अधिकार है।

पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के सिंहासन पर उंडेला। उसका सारा राज्य-क्षेत्र अन्धकारमय हो गया। जैसे उस समय मिस्र में, जहाँ तीन दिन तक घोर अन्धकार रहा, यहाँ तक कि अन्धकार को छुआ जा सकता था। यह अन्धकार ऐसा होगा कि वह शरीर और आत्मा में पीड़ा उत्पन्न करेगा। अपनी पीड़ा के मारे मनुष्य अपनी जीभें चबाने लगे। और इन सबके बीच वे स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करते रहे, जैसा उनके राजा, उस पशु ने, उन्हें करके दिखाया था। उन्होंने अपनी जीवन-शैली पर पश्चाताप नहीं किया और अपने पापमय कामों में जीते रहे। अपनी पीड़ा और फोड़ों के कारण उन्होंने परमेश्वर से उद्धार की विनती करने के बजाय उसकी निन्दा की।

छठवें स्वर्गदूत ने अपने क्रोध का कटोरा बड़ी नदी फरात पर उंडेला। इससे वह नदी सूख गई, जो इस बड़ी नदी के साथ और कभी नहीं हुआ था। इस प्रकार यह प्राकृतिक सीमा हट गई और पूर्व दिशा के राजाओं के लिए मार्ग खुल गया। फिर मैंने अजगर के मुँह से, और समुद्र से निकले पशु के मुँह से, और पृथ्वी से निकले पशु के – अर्थात् झूठे भविष्यद्वक्ता के – मुँह से तीन अशुद्ध आत्माओं को निकलते देखा। ये आत्माएँ मेंढकों की तरह दिखती थीं। ये दुष्टात्माओं की आत्माएँ हैं, जो चिह्न दिखाती हैं। ये आत्माएँ पृथ्वी के सब राजाओं के पास निकल जाती हैं, ताकि अपने प्रचार के चिह्नों से उन्हें बहकाएँ और वे सब युद्ध के लिए इकट्ठे हों। परमेश्वर और मेम्ने के विरुद्ध युद्ध के लिए। परन्तु वह उनका युद्ध नहीं होगा। वह परमेश्वर का युद्ध होगा।

वे परमेश्वर के उस बड़े दिन के युद्ध में आएँगे – एल-शद्दाई के, उस सर्वशक्तिमान के, जो सब कुछ अपने हाथ में थामे हुए है।

यीशु कहता है – जैसा उसने सरदीस की कलीसिया से भी कहा था: देख, मैं **चोर** की नाई आता हूँ। धन्य है वह, जो जागता रहता है और चौकस रहता है और अपने वस्त्रों की चौकसी करता है, ताकि उसे वस्त्रहीन और नंगा न फिरना पड़े और लोग उसका नंगापन और लज्जा न देखें। इन कठिन समयों के लिए मैं ये शब्द दोहराता हूँ, जैसे मैंने इस्त्राएल में स्वयं उसी से सुना था। सब इन्हें सुनें और मन में रखें। बहुत कुछ दाँव पर है, हाँ, सब कुछ।

और पृथ्वी के राजा अपनी सेनाओं के साथ एक निश्चित स्थान पर इकट्ठे हुए। वे हर-मगिदोन पहुँचे। इब्रानी भाषा में उस स्थान का यही नाम है। यह यरूशलेम और सिय्योन पर्वत है। वहाँ ज्योति और अन्धकार के बीच, मसीह और उस शैतानी त्रिएकता – शैतान, पशु और भविष्यद्वक्ता – के बीच अंतिम बड़ा युद्ध होगा। ये परमेश्वर के पर्वत, सभा के पर्वत, पर धावा बोलना चाहते हैं, ताकि अपनी विश्व-सरकार स्थापित करें। क्या पृथ्वी के राजा यशायाह 14 के उस विश्व-शासक के समान बनना चाहते हैं? हाँ, परन्तु उनका यह हाताश प्रयास सफल नहीं होगा। इसका वर्णन मैं आगे करूँगा। क्योंकि वह भी मैं पहले ही देख सका था। मुझे यह जानने दिया गया कि एक दिन क्या इतिहास बनेगा।

फिर **सातवें स्वर्गदूत** ने अपना कटोरा हवा में उड़ेला। तब मन्दिर में से, परमप्रधान के सिंहासन से, उसके सिंहासन से जो सब कुछ अपने हाथ में थामे और सँभाले हुए है, एक ऊँची आवाज़ निकली: “हो चुका!”

और आवाज़ें, बिजलियाँ और गर्जन हुए। यह मैं अब **चौथी** बार देख रहा था। और हर बार घटनाएँ और तीव्र होती गईं। प्रचंड साथ-साथ होनेवाली घटनाएँ संसार के अंत का वर्णन करती हैं। ठीक वैसे ही भूकम्प भी। वह इतना प्रचंड था, जितना मानव इतिहास में पहले कोई नहीं हुआ। उससे बड़ा नगर यरूशलेम तीन भागों में बँट गया। और जातियों के सब नगर भी गिर पड़े। और बेबीलोन, अर्थात् रोम, वह बड़ी वेश्या, परमेश्वर के सामने स्मरण की गई, ताकि उसे परमेश्वर के क्रोध की मदिरा का कटोरा दिया जाए।

यह पुरानी विश्व-व्यवस्था का अंत था, जैसा मैं कई बार देख चुका था। हर टापू लुप्त हो गया। पहाड़ों का पतन न चला। वे बस गायब हो गए। तोड़े भर भारी, 40 किलो भारी ओले आकाश से मनुष्यों पर गिरते हैं।

परन्तु मन फिराने और उसकी ओर लौटने के बजाय, जो इन विपत्तियों का अंत कर सकता है, मनुष्य अब भी ओलों की इस विपत्ति के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करते हैं। क्योंकि वह बहुत बड़ी है। मूसा के समय मिस्र की विपत्ति से कहीं बड़ी।

अध्याय 17

फिर उन सात स्वर्गदूतों में से, जिनके पास कटोरे थे, एक मेरे पास आया और कहा: मेरे साथ आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या, **बेबीलोन**, पर परमेश्वर का निर्णय और न्याय दिखाऊँगा, जो बहुत-से जलों पर बैठी है। उसने

सब मनुष्यों को बहकाया है। पहले पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया और उसमें आनंद लिया। उन्होंने बेबीलोन के हृदय को अपना हृदय बना लिया। फिर उस विश्वासघाती वेश्या और उसके वश में पड़े राजाओं के द्वारा पृथ्वी पर रहनेवाले सब मनुष्य उसकी कामना और व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए। उसने उन्हें पूरी तरह अपने इशारों पर नचाया। इसी अर्थ में एक समय भविष्यद्वक्ता नहूम ने पुरानी महानगरी नीनवे को और यशाय्याह ने सोर नगर को वेश्या कहा था। अक्षरशः वेश्याएँ नहीं। बल्कि लाक्षणिक अर्थ में: मूर्तिपूजा और भक्तिहीनता के ऐसे स्थान के रूप में, जो इस जीवन-शैली को विष की तरह हर जगह फैलाता है।

फिर परमेश्वर का आत्मा मुझे एक जंगल में ले गया। शरीर में या आत्मा में – यह मैं नहीं कह सकता। वहाँ से मैंने एक स्त्री को एक लाल पशु पर बैठे देखा। वह बड़ी वेश्या बेबीलोन थी। वह पशु मुझे जाना-पहचाना लगा। उस पर परमेश्वर की निन्दा की बातें लिखी दिखाई देती थीं। उसके सात सिर और दस सींग थे। यह वही पहला पशु था, जिसे मैंने समुद्र में से ऊपर आते देखा था। वह पशु, जिसे लाल अजगर, शैतान, चलाता और प्रेरित करता था।

वह स्त्री, जो पशु पर बैठी थी और जिसे यह पशु उठाए हुए था, सचमुच आँखों में खटकनेवाली थी: वह बैजनी और लाल रंग के मोहक वस्त्र पहने थी। सोने से मढ़ी हुई और मोतियों और बहुमूल्य रत्नों से लदी हुई। उसके हाथ में सोने का एक प्याला था, जिसमें से वह पी रही थी। वह प्याला ऊपर तक घृणित वस्तुओं से भरा था। विशेषकर उसके व्यभिचार की गन्दगी से। उसके माथे पर भी कुछ लिखा था:

भेद

बड़ा बेबीलोन

वेश्याओं की माता

पृथ्वी की घृणित वस्तुओं की माता।

यह स्त्री यीशु के मार डाले गए गवाहों के लहू से मतवाली थी। हाँ, परमेश्वर के मारे गए सेवकों को देखकर आनंद लेने से उसका जी नहीं भरता था। एक भयानक दृश्य। जो मैंने वहाँ देखा – इस महानगरी की सारी धिनीनी बातें, उसके सब मोहित भागीदारों सहित – वह मसीह-विरोधी राज्य का अंतिम बड़ा गढ़ है। मैंने उसमें रोम को पहचाना, परन्तु यह सब बड़े नगरों पर लागू हो सकता है।

मैं, यूहन्ना, बहुत चकित हुआ। मैं डर गया। ऐसी अश्लीलता, बेलगाम लालच और मनुष्य को तुच्छ जाननेवाली हिंसा देखकर मैं अवाक् रह गया। इसका क्या अर्थ था, इस चिह्न का? वह तो किसी वास्तविक बात को प्रकट कर रहा था। किसी ऐसी बात को, जो अभी होनेवाली थी? स्वर्गदूत को मुझ पर आश्चर्य हुआ और उसने पूछा: तू क्यों चकित होता है? मैं तुझे इस स्त्री का, और उस पशु का, जिसके सात सिर और दस सींग हैं और जो उसे उठाए हुए है, भेद समझाऊँगा।

जो पशु तूने देखा, वह एक बार था और फिर नहीं रहा। वह फिर लौटने और अथाह कुंड में से ऊपर आने पर है। परन्तु उसके अंतिम विनाश को रोका नहीं जा सकता। तो यह था वह मसीह-विरोधी विश्व-साम्राज्य, जिसका राजनीतिक शासक और तानाशाह मसीह-विरोधी था। सब कुछ फिर से सच्चे परमेश्वर की केवल नक़ल था। क्योंकि परमेश्वर सदा से था। वह है और आनेवाला है। वह – पशु के विपरीत – मेम्ने के साथ **सदा बना रहेगा**।

पृथ्वी पर रहनेवाले वे लोग, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं हैं, इस पशु से बहुत प्रभावित होंगे। क्योंकि वह एक बार था, फिर नष्ट हुआ, और अब पहले से भी अधिक बलवान होकर फिर प्रकट होता है। मानो वह मृतकों में से जी उठा हो। यह भी मेम्ने यीशु की एक भद्दी नक़ल थी, जो मर गया था और अब युगानुयुग जीवित है।

जिसमें बुद्धि है, उसके लिए इसका अर्थ यह है। पशु के सात सिर सात पहाड़ों के अनुरूप हैं। इन पर वह स्त्री बैठी है। और ये पहाड़ सात राजा भी हैं। पाँच राजा गिर चुके हैं। एक जीवित है। एक और, सातवाँ, अभी नहीं आया। और जब वह आएगा, तो उसे थोड़ी देर रहना होगा।

यह पूरा चित्र मुझे अपनी सात पहाड़ियों वाले रोम की याद दिलाता था। यह रोम था। और वहीं साथ ही वह वेश्या बैठी थी। परन्तु यह शायद इतिहास का केवल एक पड़ाव था। जो मैंने देखा, उसकी पूर्ति मेरे दिनों का रोम नहीं थी। इस चित्र की पूर्ति कुछ और भी बड़ी बात हो सकती है। कुछ ऐसा, जिसे मैं अब देख ही नहीं पाऊँगा, क्योंकि मैं अपने जीवन के अंत पर पहुँच चुका हूँ।

सात राजाओं में से **पाँच** गिर चुके थे। हाँ, मिस्र से लेकर अशूर, बेबीलोन, मादी-फ़ारस और यूनान तक के विश्व-साम्राज्य अब नहीं रहे। **छठवाँ** विश्व-साम्राज्य रोम है। फिर एक ऐसा आना था, जिसे अभी कोई नहीं जानता। परन्तु एक **आठवाँ** राजा आना था – अंतिम विश्व-साम्राज्य, जिसका राजा एक झूठा मसीह होगा। एक ऐसा विश्व-साम्राज्य, जो पहले के सब साम्राज्यों की तरह अपने मूल और स्वभाव में सच्चे और जीवित परमेश्वर को तुच्छ जानता है, और जिनमें मूर्तियों और उनके शासकों को देवता मानकर पूजा गया। यह अंतिम साम्राज्य, और उसके साथ पहले के सब साम्राज्य, नष्ट हो जाएँगे, जैसा दानिय्येल वर्णन करता है। दानिय्येल ने एक पत्थर देखा। अर्थात् मसीह को। वह पहाड़ से लुढ़का और उस मूर्ति को चूर-चूर कर दिया, जो विश्व-साम्राज्यों को दर्शाती थी। फिर मसीह का शान्ति-राज्य आता है। वह सदा बना रहता है।

और वह पशु, जो था, नष्ट हुआ और फिर जीवित हो गया, वही **आठवाँ** राजा है, और साथ ही वह पहले वालों की तरह उन्हीं में से एक है – अक्षरशः नहीं, बल्कि अपने स्वभाव में। जब वह आता है, तो तुरन्त विनाश में चला जाता है, जैसा स्वर्गदूत ने मुझ पर अभी-अभी प्रकट किया था। एक मूर्तिपूजक मसीह की तरह, जो मनुष्यों को बहकाकर अपने पीछे ले चलता है। परन्तु जिसे सच्चा मसीह पकड़ लेता है, जिसका मुखौटा उतार देता है और जिस पर जय पाता है। इस गिनती के अनुसार **नौवाँ** राजा सच्चा मसीह-राजा है, जो सदा बना रहेगा।

और दस सींग राजा हैं, जैसा दानियेल 7 में भी वर्णित है। वे अंत समय के मसीह-विरोधी के समय में होंगे। उनके पास आरंभ से अधिकार नहीं है और अभी अपना कोई राज्य नहीं है। परन्तु जब पशु की घड़ी आ पहुँचेगी – वह थोड़ा-सा समय, वे 3 1/2 वर्ष, जिनमें उसे असीमित अधिकार मिलता है – तब इन दस राजाओं को उनका राज्य और उनका अधिकार मिलेगा। दसों पूरी तरह पशु की सेवा और अधीनता में चले जाएँगे और एक गठबंधन बनाएँगे। वे सब मिलकर, घोर आत्म-अहंकार और अन्धेपन में, स्वर्ग में मेम्ने से युद्ध करने का प्रयास करेंगे। ताकि उसे सिंहासन से गिरा दें।

परन्तु मेम्ना उन पर जय पाएगा। उनके पास कोई अवसर नहीं है। क्योंकि और कोई प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा नहीं है। और मेम्ना अकेला नहीं है। मेम्ने के पीछे वे सब चलते हैं, जिन्हें उसने सुसमाचार के द्वारा अपने पास बुलाया है और जो चुने हुए हैं और अंत तक विश्वासयोग्यता से मेम्ने के पीछे चले हैं। उन्हें यह आदर मिला है कि वे अंतिम युद्ध में मेम्ने के पीछे चलें। घटनाओं के गवाहों के रूप में। क्योंकि मेम्ने को किसी सहायता की ज़रूरत नहीं। उसके पीछे चलनेवालों में से बहुत-से पशु और वेश्या के द्वारा मार डाले गए थे, और अब वे विजेता के पक्ष में खड़े हो सकते हैं।

स्वर्गदूत ने आगे कहा: जिन जलों पर वेश्या बैठी है, वे पृथ्वी की सब जातियाँ, गोत्र और भाषाएँ हैं।

परन्तु फिर स्वर्गदूत ने कुछ बिलकुल अप्रत्याशित बात कही: तब वह पशु अपने दस सींगों के साथ, अर्थात् दस राजाओं के साथ, अचानक उस वेश्या से घृणा करने लगेगा। यद्यपि वह पशु उसे उठाए हुए था और वे आपस में मिले हुए थे। पशु उस स्त्री के वस्त्र फाड़ डालेगा, उसे खा जाएगा और जो कुछ उसका था, सब हड़प लेगा। जो कुछ पशु के काम का नहीं, उसे वह आग में जला देगा। पशु अपने बराबर किसी शक्ति और महानता को सहन नहीं करता। जैसा हम पहले देख चुके हैं, वह मनुष्यों की आराधना केवल अपने लिए माँगता है।

पशु को अचानक उस स्त्री से ऐसी घृणा क्यों हो गई? क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं पशु और दस राजाओं के मन में यह बात डाल दी थी कि वे ऐसा करें। परमेश्वर हर बात और हर चीज़ को जैसे चाहे मोड़ सकता है, और वैसे, जैसा पूरी तरह उचित है। परमेश्वर अपने उन सब प्राणियों से, जो उससे फिर गए हैं, हर प्रकार से श्रेष्ठ है। अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए उसे न ज़बरदस्ती की ज़रूरत है, न हिंसा की।

वह स्त्री, बेबीलोन, अपनी सारी शक्ति पशु के हाथ खो बैठी। इसके साथ उसका न्याय तय हो गया। इस प्रकार मसीह-विरोधी पशु परमेश्वर की इच्छा पूरी करनेवाले एक औज़ार से अधिक कुछ न था – शायद बिना यह जाने। परन्तु पशु का शासन भी, जो अब और बड़ा हो गया था, केवल तब तक चलना था, जब तक अंतिम दिनों के लिए परमेश्वर का वचन पूरा न हो जाए।

वह स्त्री, जिसे मैंने देखा था, अंत समय की बड़ी विश्व-राजधानी है। रोम जितना कभी था, उससे भी बड़ी और शक्तिशाली। और फिर भी अपने विकृत देवताओं, अपने पतन, अपनी परमेश्वर-विरोधी संस्कृति और साथ ही आर्थिक सफलता की होड़ में रोम से पूरी तरह मिलती-जुलती। इसके अतिरिक्त उसकी धार्मिक

आत्मा का आकर्षण भी – एक प्रकार का एकीकृत धर्म, जो दूसरे सब नगरों में, हाँ, सारी पृथ्वी पर फैल जाएगा। यह बेबीलोन, हाँ, सुन्न कर देनेवाला और मदहोश करनेवाला कटोरा सारी पृथ्वी पर घुमाया जाएगा। इस सबका जन्म हजारों वर्ष पहले उस अक्षरशः बेबीलोन नगर में हुआ, जब लोग एक बड़े गुम्मत के द्वारा स्वर्ग तक, परमेश्वर के सिंहासन तक चढ़ना चाहते थे। जब अंत का समय आया, तो यह कई गुना बिगड़ जाएगा। पशु के द्वारा नष्ट किए जाने से पहले बेबीलोन सब पर शासन करनेवाली थी।

अध्याय 18

फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा। उसे बड़ा अधिकार था। पृथ्वी उसके तेज और उस महिमा से जगमगा उठी, जो परमेश्वर ने उसे दी थी। यह सच्ची और ईश्वरीय महिमा थी – बेबीलोन की नश्वर महिमा के दिखावे के विपरीत। और उसने ऊँचे स्वर से सारी पृथ्वी पर पुकारा: गिर पड़ा! गिर पड़ा बड़ा बेबीलोन।

क्योंकि वह बहुत-सी दुष्टात्माओं का निवास बन गया था। ये उन दानवों की दुष्ट आत्माएँ थीं, जो नूह के जल-प्रलय में नष्ट हुए थे। वे परमेश्वर के पतित पुत्र थे, जो मनुष्यों को हानि पहुँचाना और परमेश्वर की योजना को विफल करना चाहते थे। बेबीलोन ने इन अशुद्ध आत्माओं को ख़ुशी से अपने यहाँ ठहराया और फिर जाने नहीं दिया। ठीक वैसे ही, जैसे उसने उन अशुद्ध पक्षियों को आश्रय दिया, जो इन अन्धकारमय अदृश्य प्राणियों के प्रतीक हैं। बेबीलोन अदृश्य दुष्ट शक्तियों से भरा था, अजगर के सेवकों से। वे सब कुछ इस प्रकार चलाते और प्रभावित करते थे कि वह सच्चे परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध हो जाए।

उसकी बेलगाम कामना, धन के लोभ, मूर्तिपूजा और टोने, पतन और भोग-विलास, और यौन उच्छृंखलता की मदिरा सब जातियों ने पी है। यद्यपि बहुत-से गरीब लोग वास्तव में उसमें भागी नहीं हुए। पृथ्वी के सब राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया और उससे जुड़ गए। पृथ्वी के व्यापारी उसके द्वारा धनी हो गए हैं।

फिर मैंने एक और आवाज़ सुनी, जो परमेश्वर की प्रजा से, यीशु के गवाहों से, कह रही थी: बेबीलोन में से निकल आओ, ताकि तुम उसके पापों में भागी न हो। नहीं तो तुम उसकी विपत्तियों में भी भागी होगे। उसके पापों का पहाड़ स्वर्ग तक पहुँच गया है। इसके कारण अब परमेश्वर ने उसे स्मरण किया है। वह आज्ञा देता है: “जैसा उसने दूसरों से किया, वैसा ही उससे करो! परन्तु उसने जो-जो बुराई की है, उसके अनुसार उसे दुगना बदला दो। मेरे प्रति भी और मनुष्यों के विरुद्ध भी। जो कुछ उसके प्याले में था – पवित्र लोगों का लहू – उसका बदला उसे दुगना दो।

जितनी उसने दूसरों की क्रीमत पर अपनी बड़ाई की और भोग-विलास में जीवन बिताया, और कभी नहीं पूछा कि क्या गलत है और क्या सही, क्या भला है और क्या बुरा –, उतनी ही पीड़ा और शोक और अकेलापन उसे लौटा दो। क्योंकि वह अपने मन में कहती थी: ‘मैं यहाँ रानी होकर सुरक्षित बैठी हूँ। मैं विधवा नहीं हूँ और कभी नहीं होऊँगी, क्योंकि सब राजा मुझे चाहते हैं। शोक मैं कभी नहीं देखूँगी।’”

विश्व-व्यवस्था में लोग ऐसे सोचते और काम करते हैं, मानो सब कुछ हमेशा ऐसे ही चलता रहेगा। प्रगति हमारे भविष्य को सुरक्षित करती है। बस उस पर से विश्वास नहीं खोना चाहिए। परन्तु प्रगति पर यह विश्वास परमेश्वर पर नहीं, बल्कि मनुष्य पर आधारित है। इसलिए वह पहले से ही विनाश के लिए ठहराया हुआ है।

इसलिए उसकी विपत्तियाँ अचानक और एक ही दिन में आएँगी। मृत्यु, शोक और अकाल। वह आग में जला दी जाएगी। क्योंकि उसका न्याय करनेवाला प्रभु परमेश्वर सामर्थी है। और वह पशु को, समुद्र से निकले उस हिंसक जानवर को, यह न्याय पूरा करने की आज्ञा देता है।

और सब लोग इस विनाश – बेबीलोन के उजड़ने – पर रोएँगे और विलाप करेंगे। विशेषकर वे सब राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और इस कारण ठाठ-बाट से जी सके – स्वयं उस वेश्या की तरह।

जब वे उस दिन दूर से उसके जलने का धुआँ देखेंगे, और उन पर स्वयं भय और आतंक छा जाएगा, तब वे कहेंगे: “हाय! हाय! वह बड़ा नगर, बेबीलोन, वह बलवान और शक्तिशाली नगर! केवल एक घड़ी में उसका न्याय आ पहुँचा, और उसका धन और प्रभाव ढहकर मलबे का एक बड़ा ढेर बन गया।”

पृथ्वी के व्यापारी स्तब्ध हैं और वेश्या की मृत्यु पर रोते और विलाप करते हैं, क्योंकि अब कोई उनका माल नहीं खरीदता। क्योंकि पूरी विश्व-अर्थव्यवस्था ढह गई है। व्यापार होता था सोने, चाँदी, रत्नों, मोतियों और महीन मलमल का; बैजनी, रेशमी और लाल कपड़े का; सुगंधित थूजा लकड़ी का, हाथीदाँत की वस्तुओं का, बहुमूल्य लकड़ी की वस्तुओं का; पीतल, लोहे और संगमरमर का; दालचीनी, सुगंधित मसाले और मलहम का; राल से बनी वस्तुओं और धूप का; दाखरस, तेल, मैदे और गेहूँ का, पशुओं और भेड़ों, घोड़ों और रथों का; दासों का और मनुष्यों के प्राणों का। वे सब उत्तम फल, जिनका तूने आनंद लिया, अब नहीं रहे। तेरी चमक-दमक लुप्त हो गई है।

जो व्यापारी इन सब वस्तुओं का व्यापार करके धनी हो गए हैं, वे उसकी पीड़ा के डर से दूर खड़े होकर रोएँगे और विलाप करेंगे। वे घबराकर कहते हैं: “हाय! हाय! वह बड़ा नगर! जो महीन मलमल और बैजनी और लाल वस्त्र पहने था, और सोने से मढ़ा हुआ और रत्नों और मोतियों से सजा हुआ था।”

व्यापारियों को गहरा धक्का लगा है, क्योंकि इतने बड़े धन को उजाड़ने और विश्व-अर्थव्यवस्था को नष्ट करने में केवल एक घड़ी लगी।

जहाज़ों पर के लोगों ने भी, माँझियों और सारे दल ने, समुद्र पर से उस बड़े नगर का विनाश देखा। उन्होंने धुएँ के उस विशाल बादल को आकाश में एक चिह्न की तरह देखा और कहा: इस बड़े नगर के समान कौन है?

और उन्होंने अपने सिरों पर धूल डाली और शोक करते और रोते हुए पुकारा: “हाय! हाय! वह बड़ा नगर!” क्योंकि उसने उन सबको, जिनके पास व्यापारी जहाज़ थे, धनी बना दिया था। और अब एक घड़ी में सब कुछ समाप्त हो गया और मिट्टी में मिल गया। उनका भविष्य जाता रहा।

परन्तु स्वर्ग में इस विनाश को बिलकुल भिन्न दृष्टि से देखा गया। हे सब पवित्र लोगो, प्रेरितो और भविष्यद्वक्ताओ, आनंदित हो और उत्सव मनाओ! क्योंकि परमेश्वर ने उसका न्याय पूरा कर दिया है! उस नगर का, जिसमें तुम कभी घर जैसे नहीं रहे। उस नगर का, जो तुमसे घृणा करता था, क्योंकि तुमने उसके विनाश की भविष्यद्वाणी की थी। उस नगर का, जिसमें से तुम निकल आए हो।

फिर मैंने देखा कि एक बलवान स्वर्गदूत ने चक्की के पाट जैसा एक बड़ा पत्थर उठाया और उसे समुद्र में फेंक दिया। उसने कहा: इसी प्रकार बड़ा नगर बेबीलोन बड़े वेग से गिरा दिया जाएगा। अटलांटिस की तरह उसका फिर कभी पता न मिलेगा।

बाँसुरी बजानेवालों, वीणा बजानेवाले गायकों, संगीतकारों और तुरही फूँकनेवालों का स्वर उसमें फिर कभी सुनाई न देगा। उसने संस्कृति का, अंतहीन मनोरंजन और ध्यान भटकाने का प्रबंध किया था और मनुष्यों को अपने वश में कर लिया था। कलाकार और उनकी रची हुई कला भी उसमें फिर न मिलेगी। चक्की की आवाज़ भी, जो अनाज को महीन आटे में पीसती थी, फिर सुनाई न देगी। बहुत-से दीपकों का प्रकाश तुझमें फिर न चमकेगा। दुल्हन और दूल्हे का आनंद-भरा स्वर भी तुझमें फिर सुनाई न देगा।

क्योंकि तेरे व्यापारी पृथ्वी के बड़े लोग थे, जो तेरा माल हर जगह पहुँचाते और सब मनुष्यों को उससे भर देते थे। परन्तु यह मनुष्यों के लिए नशे की तरह था। तेरा व्यापार टोने की तरह था, जिसने मनुष्यों को भटका दिया। तेरा नशा, हाँ, तेरी मूर्ति उपभोग था, और धन – मैमन (Mammon)।

क्योंकि साथ ही तुझमें, उस बड़े नगर में, पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का लहू बहाया गया, और उन सबका लहू पाया गया, जो पृथ्वी पर मार डाले गए हैं। इन लहू-गवाहों के द्वारा बोलती परमेश्वर की आवाज़ को लोग सुनना नहीं चाहते थे। बेबीलोन उसे ख़तरा समझती थी। वह वेश्या परमेश्वर की – इन सब वरदानों और योग्यताओं के दाता और सृष्टिकर्ता की – हर याद को मिटा देना चाहती थी। और यीशु के गवाहों को, जहाँ कहीं वे हाथ लगे, हिंसा से मार डालना चाहती थी।

अध्याय 19

फिर मैंने स्वर्ग में एक ऊँची आवाज़ सुनी। वह एक विशाल भीड़ की ओर से आ रही थी, जो पुकार रही थी: “हल्लिलूय्याह” – परमेश्वर की स्तुति करो! उद्धार प्रभु परमेश्वर की ओर से आता है, जिसकी सारी महिमा, सारा आदर और सामर्थ्य है! क्योंकि उसके न्याय सच्चे और पूरी तरह धर्मी हैं। उसने तो उस बड़ी वेश्या का न्याय किया, जिसने अपने व्यभिचार से सारी पृथ्वी को बिगाड़ दिया। उसने अपने दासों के उस बहुत-से लहू का, जो उसने हिंसा से बहाया, हिसाब लिया और उस पर न्याय पूरा किया। उसने हिंसा से जीवनों को मिटाया – और अब अपना जीवन खो रही है।

और स्वर्ग में उन्होंने कहा: “हल्लिलूय्याह! उसका धुआँ युगानुयुग उठता रहता है!” यह नगर फिर कभी न होगा। वह सदा के लिए मलबे का ढेर बना रहेगा।

मैं, यूहन्ना, सचमुच आनंदित था कि नगर में ये सब बातें देखने के बाद अब मुझे फिर से स्वर्गीय दृष्टिकोण मिल रहा था।

और चौबीसों प्राचीन और चारों प्राणी मुँह के बल गिर पड़े और परमेश्वर को, जो सिंहासन पर बैठा है, दंडवत् किया। और उन्होंने एक स्वर से पुकारा: “आमीन! हल्लिलूय्याह!”

फिर सिंहासन की ओर से एक आवाज़ आई, जिसने कहा: “हे उसका भय माननेवालो, हे उसके सब सेवको, हमारे परमेश्वर की स्तुति करो। छोटे और तुच्छ भी, और बड़े भी!”

फिर मैंने एक बड़ी भीड़ का स्वर सुना, जिसे मैं पहले भी एक बार सुन चुका था। वह प्रचंड जल के गर्जन और प्रबल गड़गड़ाहट की घुमड़न जैसा था: “हल्लिलूय्याह! प्रभु, हमारे परमेश्वर ने अब अपना शासन और अपना राज्य सँभाल लिया है! अब हम अपने आनंद को खुलकर बहने दे सकते हैं और मगन हो सकते हैं और उसकी महिमा कर सकते हैं! समय आ गया है। लक्ष्य प्राप्त हो गया है। हम सदा के लिए सुरक्षित हैं। सदा के लिए परमेश्वर और मेम्ने के पास घर पर। सब शत्रु पराजित हो गए हैं। एक नया युग आरंभ होता है। क्योंकि परमेश्वर ने अपना शासन स्थापित कर दिया है – दृश्य और सर्वव्यापी।”

जब से मैं स्वर्ग में उठा लिया गया था, तब से मैं कई बार विश्व-इतिहास का अंत और परमेश्वर के शत्रुओं का विनाश देख चुका था। अब शायद यह **चौथी बार** था कि मुझे उद्धार के इतिहास के लक्ष्य तक का मार्ग दिखाया गया – जयजयकार, आराधना, ऊँची आवाज़ों और गर्जनों के साथ।

इस **चौथी इकाई** का शिखर-समापन पिछले दर्शनों से भी अधिक सुंदर था। क्योंकि वह एक स्वर्गीय विवाह में जाकर पूरा हुआ। लंबे समय से प्रतीक्षित **मेम्ने का विवाह** आ पहुँचा था! और मेम्ने की पत्नी ने इस अद्भुत विवाह के लिए स्वयं को तैयार किया और वस्त्र पहन लिए। वह मेम्ने के पीछे चलने और उसके फिर आने की प्रतीक्षा करने को तैयार थी। दुल्हन को विवाह का वस्त्र दिया गया। महीन मलमल का, चमकदार और उजला।

यह स्त्री सच्ची **दुल्हन** थी। वह राजा की प्रिया है। उसकी सुंदरता सादी थी, परन्तु सच्ची, गहरी और शुद्ध। उस झूठी दुल्हन, वेश्या बेबीलोन, से बिलकुल भिन्न। पहले उसका अंत होना ज़रूरी था, तभी अब विवाह का उत्सव आरंभ हो सकता है।

दुल्हन मेम्ने की प्रिया है। अकल्पनीय प्रेम से प्रिय। मृत्यु तक का प्रेम। क्योंकि उसने अपना वस्त्र मेम्ने के लहू में उजला किया है।

दुल्हन, मेम्ने की पत्नी – ये सब युगों के सब पवित्र लोग हैं। और उनका विवाह-वस्त्र उन सब भले कामों को झलकाता है, जो पवित्र लोगों ने पृथ्वी पर किए। वहाँ, उस बड़े दिन, वे पहचाने और देखे जाएँगे। उन्होंने यीशु के लिए अथक लगन से जो कुछ किया, उसमें से कुछ भी वह कभी नहीं भूला। दूल्हा, मेम्ना, दुल्हन की सुंदरता को सराहेगा – उस सब में, जो वह उसके लिए है और जो उसने उसके लिए किया है।

और एक स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: “धन्य हैं वे सब, जो मेम्ने के इस विवाह-भोज में बुलाए गए हैं!” और स्वर्गदूत ने इसे फिर से पक्का करते हुए कहा: “ये जीवित परमेश्वर के सच्चे और भरोसेमंद वचन हैं!” यह तो मैं अपने प्रभु से जानता ही था। **सब** विवाह में बुलाए गए हैं और सबका स्वागत है। परन्तु वहाँ केवल वही हो सकते हैं, जिन्होंने निमंत्रण स्वीकार किया है।

विवाह आरंभ हुआ, और वह फिर कभी समाप्त नहीं हुआ। उत्सव अंतहीन चलता है। मेम्ने के प्रेम का उत्सव मनाया जाता है। परमेश्वर के शासन और उसकी उपस्थिति का उत्सव मनाया जाता है। सदा के लिए।

इससे मैं इतना द्रवित और अभिभूत हुआ कि मैं स्वर्गदूत के पाँवों पर गिर पड़ा, ताकि उसे दंडवत् करूँ। परन्तु उसने लगभग घबराकर कहा: “नहीं, मुझे दंडवत् मत कर। कभी नहीं। किसी भी हालत में नहीं। मैं एक सृजा हुआ प्राणी हूँ। मैं एक सेवक हूँ – तेरी तरह, और तेरे उन भाइयों के साथ, जिनके पास भी यीशु की गवाही है। सदा केवल परमेश्वर की आराधना कर। मनुष्यों की कभी नहीं। तब भी नहीं, जब वे मर चुके हों। स्वर्गदूतों की भी नहीं। परमेश्वर की और मेम्ने, यीशु, की आराधना कर। क्योंकि भविष्यद्वाणी की आत्मा यीशु की और यीशु के विषय में गवाही है।” परमेश्वर का आत्मा यीशु की गवाही देता है और उसकी बड़ाई करता है।

अब मेरे लिए **पाँचवीं बार** कुछ खुला। अंतिम बार। इस बार पूरा स्वर्ग पृथ्वी के सामने खुल गया और उसके अंत का वर्णन किया। इसका आरंभ सीधे मसीह के फिर आने से हुआ। क्योंकि अब वह स्वयं प्रकट हुआ। स्वयं, व्यक्तिगत रूप से। यीशु। वह एक **श्वेत घोड़े पर सवार** होकर आया।

वह, विजेता, मेरा यीशु। उस सवार का नाम “विश्वासयोग्य और सत्य” रखा गया। वह अपने पिता के नाम से धार्मिकता से न्याय करता है, जिसने उसे इसके लिए अधिकार और आदेश दिया है। वह न्याय को कार्यान्वित करता है, न्याय पूरा करके।

फिर मैंने, जैसे पहले भी, उसकी आँखें देखीं, जो आग की ज्वाला जैसी थीं। ऐसी आँखें, जो सब कुछ देखती हैं, सब कुछ भाँप लेती हैं, परखती हैं और न्याय करती हैं। उसके सिर पर बहुत-से राजमुकुट हैं। राजसी गरिमा केवल उसी की है। न उस पशु की, न अपने राजमुकुटों वाले उस अजगर की। उस पर एक नाम लिखा है, जिसे केवल वही जानता है, और कोई नहीं। एक नाम, जो उसे अपने पिता से मिला है और जो उसके साथ उसके अनोखे संबंध को व्यक्त करता है।

वह लहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहने था। मैंने ध्यान दिया कि वह पृथ्वी पर आने से पहले ही लहू में डुबोया हुआ था। हाँ, यह उसका अपना लहू था, जो उसने हमारे लिए बहाया। इसी बलिदानी मृत्यु ने उसे यह अधिकार दिया कि वह अब इस आत्मिक युद्ध के लिए निकले। दूसरे नामों के साथ वह यह उपाधि भी धारण करता है: **परमेश्वर का वचन**। हाँ, वह वही है, जो परमेश्वर को कहना है। वह लोगोस (Logos) है – वह, जो प्रकट करता है कि परमेश्वर कौन है, परमेश्वर क्या चाहता और क्या कहता है।

जैसा मैंने पहले देखा था, वह अकेला नहीं था। स्वर्ग की सेनाएँ, स्वर्गदूत और पवित्र लोग, श्वेत घोड़ों पर उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। महीन मलमल पहने हुए, विजय के रंग के शुद्ध उजले सन के वस्त्र में। एक विशाल सेना।

पहले सवार के मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती थी, ताकि वह उससे विद्रोही जातियों को मारे। वह जो कहेगा, वह होगा, और वह सत्य है। उसका वचन उसका सबसे शक्तिशाली हथियार है। सत्य और धार्मिकता का वचन।

मैं समझ गया कि ये सैनिक और युद्ध के प्रचंड चित्र अक्षरशः और ज्यों के त्यों लागू नहीं होते। वास्तव में कोई भौतिक युद्ध नहीं होगा। नहीं, विजय तो क्रूस पर ही प्राप्त हो चुकी थी। वह प्रकट होने के इस दिन प्राप्त नहीं होगी। मसीह, मेम्ना, कोई रक्त-पिपासु और क्रूर योद्धा नहीं है। मसीह-विरोधी पशु अवश्य ऐसा है। मसीह कोई प्रतिशोध का दूत नहीं। नहीं! वह धर्मी और अडिग न्यायी है, जो अपने वचन की सच्चाई के द्वारा न्याय सुनाता और न्याय पूरा करता है। वह मेम्ना है और मेम्ना ही रहता है। इस घटना में भी ऐसा ही है। वह अकेला पशु की सेना का न्याय करता है, न कि वे, जो उसके पीछे चलते हैं। उसका वचन दोधारी तलवार है। उसका वचन पर्याप्त है। यह मैंने उस समय बगीचे में अनुभव किया था, जब लोग यीशु को ढूँढ़ रहे थे और पकड़ना चाहते थे। जब उसने कहा, “मैं ही हूँ”, तो वे सब मानो बिजली के झटके से भूमि पर गिर पड़े। जब वह आएगा, तो उसकी दृश्य उपस्थिति ही सबको घुटनों पर ला देने के लिए पर्याप्त होगी।

वह लोहे की छड़ी वाला चरवाहा होगा। वह एक अच्छे चरवाहे की देखभाल और स्नेह से मनुष्यों पर शासन करेगा।

और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रकोप और क्रोध का रसकुंड रौंदता है। यद्यपि मसीह मेम्ना है, और यद्यपि परमेश्वर का अनुग्रह अक्षय है, फिर भी यहाँ, इस अंतिम टकराव में, वह चुप रहता और छिप जाता है, क्योंकि अब उन पर न्याय पूरा होना है, जो उसके विरुद्ध लड़ते हैं, जो उसे ठुकराते हैं, हाँ, जो उससे घृणा करते हैं। बात यही रहती है: इस प्रकार जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

उसके वस्त्र और उसकी जाँघ पर एक और नाम लिखा है, एक ऐसा नाम, जो हर विरोध के अंत का अर्थ रखता है: **राजाओं का राजा** और प्रभुओं का प्रभु।

जब मैंने इस सवार को उसकी सेना के साथ स्वर्ग से पृथ्वी की ओर आते देखा, तो एक और स्वर्गदूत प्रकट हुआ, जिसने ऊँचे स्वर से आकाश के सब पक्षियों को पुकारा: “तुम सब यहाँ आओ और परमेश्वर के बड़े भोज के लिए इकट्ठे हो जाओ। ताकि तुम राजाओं का, सरदारों का, शक्तिशालियों का, घोड़ों का और उन पर सवारों का मौस खा सको। सबका मौस – स्वतंत्रों और दासों का, बड़ों और छोटों का।” मेम्ने के उस विवाह-भोज से यह कितना विपरीत, जिसमें तो सब बुलाए गए थे! यह भाषा भयानक थी, परन्तु प्रकाशनात्मक साहित्य की विशिष्ट भाषा भी। इस कठोर भाषा का एक ही उद्देश्य था: सबको उस मार्ग पर चलने से चेतावनी देना, जिस पर वे सब चले, जिन्होंने पशु की आराधना की थी।

अब मैंने पृथ्वी पर एक विशाल सेना देखी। समुद्र से निकला पशु, वह मसीह-विरोधी विश्व-शासक, और पृथ्वी के राजा और उनकी सेनाएँ इकट्ठी थीं, ताकि उससे, जो घोड़े पर बैठा था, और उसकी सेना से, जो स्वर्ग से आई थी, युद्ध करें।

यह एक विचित्र स्थिति थी। यह कैसे हो सकता था कि मनुष्य गठबंधन बनाएँ और राजाओं के राजा का सामना करें? अन्धापन कितना बड़ा हो सकता है? आत्म-अहंकार कितना बड़ा? परमेश्वर के पुत्र से लड़ना और उसे चुनौती देना – एक पागलपन भरा दुस्साहस। परन्तु अंततः यह टकराव सदा से इसी में भी था कि पशु एक शैतानी बहकानेवाला था और मसीह परमेश्वर का सच्चा वचन।

इसलिए कोई युद्ध हुआ ही नहीं। दोनों ओर लाशों वाला कोई नरसंहार नहीं। नहीं। पशु पकड़ लिया गया। प्रतिरोध व्यर्थ था। पशु के साथ झूठा भविष्यद्वक्ता भी हटा दिया गया, जो अपने आश्चर्य-चिह्नों से मनुष्यों को बहकाता था, ताकि वे पशु की सेवा करें और उसे दंडवत् करें। वे दोनों पुरुष, जिन्हें मैंने समुद्र से निकलनेवाले पशु के रूप में और पृथ्वी से निकलनेवाले पशु के रूप में देखा था, पकड़ लिए गए और जीते जी आग की झील में डाल दिए गए, जो आग और गन्धक से जलती है। वहाँ उन्हें मिटा देने के लिए नहीं ले जाया गया। बल्कि आग की झील परमेश्वर से दूरी, अकेलेपन और खालीपन और अन्धकार का सार है। एक ऐसा स्थान और ऐसी दशा, जिसका – जैसा पहले कहा गया – कोई अंत नहीं। एक स्थान, जिसमें न कोई निकास है, न भागने का मार्ग। बिना आशा के। यहाँ इन दोनों पुरुषों का पार्थिव इतिहास समाप्त हुआ, और परमेश्वर के पास उनके लिए इसके सिवा कोई और स्थान न था। पृथ्वी पर उन्होंने जो सब न्याय अनुभव किए थे – मित्र में उस फ़िरौन की तरह, जब मूसा से उसका सामना हुआ था – उन्होंने इन पुरुषों को मन फिराने तक नहीं पहुँचाया। वे शब्द के पूरे अर्थ में पशुओं की तरह केवल अपनी सहज प्रवृत्तियों के पीछे चले।

बाकी लोग, जो इन दोनों पशुओं के पीछे चले थे, उसकी तेज़ तलवार से मारे गए, जिसने अपने श्वेत घोड़े पर स्वर्गीय सेना की अगुवाई की थी। सब पक्षी, जो स्वर्गदूत की पुकार पर आए थे, तृप्त हो गए। इतने सारे सैनिक उन मेंढक-आत्माओं के पीछे चले थे, जो पृथ्वी के राजाओं को इस स्थान पर, हर-मगिदोन में, इकट्ठा करने निकली थीं, जैसा मैंने क्रोध के छठवें कटोरे के समय देखा था।

मसीह, संसार का उद्धारकर्ता और संसार को पूर्णता तक पहुँचानेवाला, बुराई के विरुद्ध संघर्ष को उतनी ही जल्दी समाप्त कर चुका, जितनी जल्दी वह शुरू हुआ था। वह दुष्ट, और उसके साथ बुराई, पराजित हो गए हैं।

अध्याय 20

फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा। उसके पास अबिस्सोस (Abyssus), अर्थात् अथाह कुंड, की कुंजी थी। साथ ही उसके हाथ में लोहे की एक बड़ी जंजीर थी। और अजगर, वह पुराना सर्प, शैतान, पकड़ लिया गया। उसे 1000 वर्ष के लिए जंजीरों में बाँधा गया और अथाह कुंड में डालकर बन्द कर दिया गया। उसने कोई प्रतिरोध नहीं किया। वह जानता था कि उसका समय आ गया है। अथाह कुंड बन्द किया

गया और उस पर मुहर लगा दी गई। हजार वर्ष तक वह जातियों को फिर नहीं बहका सकता था। जब 1000 वर्ष पूरे होंगे, तो उसे थोड़े समय के लिए छोड़ा जाना अवश्य है।

मुझे आनंद हुआ कि शैतान ताले-कुंडी के पीछे चला गया। परन्तु मुझे आश्चर्य हुआ कि उसे भी पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता की तरह आग की झील में नहीं डाला गया! क्या यह संभव था कि परमेश्वर मानवजाति के बहकानेवाले को, उस आरंभ से हत्यारे को, बुराई का एक और अवसर दे? क्या यह नाटक एक बार फिर दोहराया जाना था? जब मैंने अगला दृश्य देखा, तो मैं समझने लगा कि मुझे क्या समझना था और इसका अर्थ क्या था।

मैंने सिंहासन रखे हुए देखे। उन पर वे शहीद बैठे थे, जो पशु के शासन-काल से आए थे। अब उनका समय आ गया था कि वे न्याय करें। शहीदों के विषय में कहा गया: मैंने उनकी आत्माओं को देखा, जिन्होंने यीशु की गवाही को विश्वासयोग्यता से थामे रखा था और अंत तक परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानी थी। इसी कारण उनके सिर काटे गए थे, और अपनी विश्वासयोग्यता के कारण उन्होंने अपना सिर और इसके साथ अपना जीवन खो दिया था। उन्होंने पशु की, उस मसीह-विरोधी तानाशाह की, आराधना नहीं की थी, न उसकी मूर्ति की। पशु की छाप भी उन्होंने अपने माथे या हाथ पर नहीं ली थी। ये लहू-गवाह और शहीद अब मृतकों में से पुनरुत्थान में जीवित हो गए। और इसके साथ उनका समय आ गया कि वे मसीह, अभिषिक्त राजा, के साथ न्याय करें और शासन करें। 1000 वर्ष तक।

कुछ ऐसा ही मैंने भविष्यद्वक्ता दानियेल के सातवें अध्याय में पढ़ा था। वहाँ चार पशुओं में से सबसे भयानक, अंतिम पशु पराजित हुआ, जिसने पवित्र लोगों को मार डाला था। परन्तु फिर इन पवित्र लोगों को स्वयं परमेश्वर से सिंहासन और प्रभुता और एक राज्य मिला। और यहाँ भी ऐसा ही हुआ। जहाँ पहले पशु ने अपने राज्य में, जो 3 ½ वर्ष चला, पवित्र लोगों पर जय पाई थी, वहाँ अब शहीद धर्मी ठहराए गए। सब कुछ उनके पक्ष में पलट गया। उन्हें न्याय सौंपा गया और मसीह के साथ शासन दिया गया। परन्तु **3 ½ वर्ष** के लिए नहीं, बल्कि **1000 वर्ष** के लिए।

बाकी सब, जो मर चुके थे – और ये वे सब थे, जो पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के पीछे चले थे – जीवित नहीं हुए। तब तक नहीं, जब तक 1000 वर्ष पूरे न हो गए।

मैंने यहूदियों के लेखों में अक्सर एक मध्यवर्ती राज्य के बारे में पढ़ा था, जिसे मसीह के आने के बाद और नई सृष्टि से पहले स्थापित होना था। यहाँ मैंने देखा कि कैसे – जैसे पहले यहूदियों की विचार-दुनिया और यूनानियों के मिथकों के दूसरे पात्रों के साथ हुआ था – इसे एक नया अर्थ दिया गया। इस चित्र के द्वारा पशु के विनाश और शहीदों की विजय का प्रभावशाली वर्णन होना है। 1000 वर्ष के राज्य के इस चित्र का काम पशु पर शहीदों की विजय को दिखाना है। इसका लक्ष्य केवल यही है – न कि सीमित अवधि वाला कोई अक्षरशः राज्य। बल्कि मुझे इन 1000 वर्षों को केवल उन थोड़े-से 3 ½ वर्षों के सामने रखकर देखना था।

क्योंकि शहीदों का पुनरुत्थान **पहला** पुनरुत्थान है। धन्य और पवित्र है वह, जो इस पहले पुनरुत्थान में भागी है। इन जी उठे हुआँ पर **दूसरी मृत्यु** का कोई अधिकार नहीं। ये सब जी उठे हुए – और इनमें **सब** यीशु के अनुयायी भी शामिल हैं – परमेश्वर के और मसीह के याजक होंगे। हाँ, मसीह ने हमें याजक और राजा बनाया है। और अब वह समय आ गया था, जब यह बिना किसी सीमा के पूरा होता है। वे मसीह के साथ हजार वर्ष तक शासन करेंगे।

इसके विपरीत पशु **दूसरी मृत्यु** भोगता है, और इसके साथ यह अन्धकारमय राज्य समाप्त हो जाता है।

शैतानी त्रिकृता के – अजगर, पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के – विनाश का यह चित्र एक बार और तीखा किया जाता है। अंततः यह दिखाने के लिए कि मसीह के राज्य में शहीदों की विजय फिर कभी पलटी नहीं जा सकती, शैतान को जातियों को फिर से बहकाने का एक अंतिम अवसर दिया जाता है।

हजार वर्ष के बाद शैतान अपने बन्दीगृह से छोड़ दिया जाएगा। वह सब दिशाओं में निकलेगा और सब जातियों को बहकाएगा। वह गोग और मागोग को युद्ध के लिए इकट्ठा करेगा। एक प्रतीकात्मक सेना, समुद्र की बालू के समान बड़ी। वे देश के चौड़े मैदान पर चढ़ आएँ और पवित्र लोगों की छावनी और उस प्रिय नगर, उस अजेय स्वर्गीय यरूशलेम, को घेर लिया।

क्या होगा? यह शीघ्र और बिना युद्ध के हुआ। स्वर्ग से आग बरसी और उस विशाल सेना को भस्म कर दिया।

अब वह क्षण आ गया था, जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा था। जातियों का बहकानेवाला, शैतान, आग की झील में डाल दिया गया, जो गन्धक से जलती है। वहाँ पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता पहले से प्रतीक्षा कर रहे थे। वहाँ वे रात-दिन, युगानुयुग पीड़ा पाएँगे। वहाँ वह शैतानी त्रिकृता फिर इकट्ठी हुई, जिसने जातियों को परमेश्वर और मेने के विरुद्ध भड़काया था और पवित्र लोगों पर, यीशु के अनुयायियों पर, जय पाई थी।

पवित्र लोगों की विजय परमेश्वर का **अंतिम वचन** है। शैतान का यह दोबारा बहकाना पशु के शासन की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि इस बात का **चिह्न** है कि मसीह के – श्वेत घोड़े के सवार के – दृश्य रूप में आने के बाद सत्ता का प्रश्न अंतिम रूप से और सदा के लिए सुलझ गया है। अब सचमुच कोई नया विद्रोह नहीं हो सकता। जैसे 1000 वर्ष के बाद मसीह का राज्य भी फिर इस खतरे में नहीं पड़ता कि उसे एक बार फिर रौंदा जा सके। वह अनन्त है और परमेश्वर के नए संसार में पूरा होता है, जिसे मुझे जल्द ही देखने दिया गया।

मैं, यूहन्ना, समझने लगा कि अब विश्व-इतिहास का अंत और पहली, पतित सृष्टि का अंत आ गया था। मैंने एक बड़ा **श्वेत सिंहासन** देखा और उसे, जो उस पर बैठा था। उस व्यक्ति के सामने से आकाश और पृथ्वी, सारा ब्रह्मांड, मानो भाग खड़े हुए।

मैंने अनगिनत मनुष्य देखे। वे सब, जो कभी जीवित रहे थे, सिंहासन के सामने खड़े थे। छोटे और बड़े। सब वहाँ बुलाए गए और सबको वहाँ उपस्थित होना पड़ा। एक भी अपवाद नहीं था। और सबके साथ एक

जैसा व्यवहार हुआ।

यह न्याय का बड़ा दिन था। **अंतिम न्याय**। वह दिन, जब मनुष्यों ने जो कुछ किया है, उसका परमेश्वर धार्मिकता से निर्णय करता है। वह दिन, जब हर मनुष्य को अंतिम रूप से यह बोध होता है कि उसने जो कुछ किया है, उस सबका हिसाब उसे अपने सृष्टिकर्ता के सामने देना है।

पुस्तकें खोली गईं, जिनमें मनुष्यों का जीवन-वृत्तांत और उनके सब विचार, उद्देश्य और काम सुरक्षित थे, मानो असीम भंडारण-क्षमता वाली किसी सिद्ध स्मृति में। परन्तु वहाँ एक और पुस्तक भी थी। जीवन की पुस्तक। वह खोली गई।

जो मृतक वहाँ खड़े थे, उनका न्याय उनके कामों के अनुसार धार्मिकता से किया गया।

मृतक सचमुच हर जगह से आए। वहाँ से भी, जहाँ लोग सोचते थे कि वे सदा के लिए लुप्त हो गए हैं। वे समुद्र की गहराइयों से आए। मृत्यु और अधोलोक ने भी उन मृतकों को, जो उनमें थे, दे दिया। और सब मृतकों का न्याय उनके अपने कामों के अनुसार किया गया।

फिर मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाल दिए गए। मृत्यु अंतिम रूप से पराजित हुई, और उसके साथ मृतकों का लोक भी, क्योंकि अब उसकी कोई ज़रूरत न रही। सब वस्तुओं की अब तक की व्यवस्था का यहाँ अंत हुआ। आग की झील दूसरी मृत्यु है, अंतिम और निर्णायक मृत्यु। यह विनाश का स्थान नहीं है। क्योंकि वहाँ मनुष्य अस्तित्व में बने रहते हैं। परन्तु ऐसी दशा में, जिसमें वे अनुभव करेंगे कि उन्होंने परमेश्वर और मनुष्यों के विरुद्ध क्या बुराई की है।

यद्यपि सब मनुष्यों का न्याय उनके कामों के अनुसार बिलकुल ठीक-ठीक और धार्मिकता से किया गया, फिर भी यह भी जाँचा गया कि उनका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा है या नहीं। वहाँ यह एक महत्वपूर्ण, हाँ, सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न था। प्रश्न यह था कि क्या किसी ने अनन्त जीवन पाने के लिए मेम्ने पर विश्वास किया था और उसके पीछे चला था। मेम्ने की इस जीवन की पुस्तक में वे सब लिखे थे, जिन्होंने जीवित परमेश्वर की आराधना की थी।

सिंहासन के सामने खड़े लोगों में से यदि कोई इस पुस्तक में न पाया गया, तो उसे आग की झील में डाल दिया गया। तब भी, जब पुस्तकों में बहुत-से भले काम पाए गए, परन्तु उनका नाम इस पुस्तक में नहीं था। वे आग की झील के हवाले कर दिए गए। लोग भय और निराशा से जड़ हो गए। क्योंकि कोई भी कभी इस भयानक स्थान में नहीं आना चाहता था। और कोई इसके लिए पहले से ठहराया हुआ नहीं था। यह वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपना न्यायोचित दंड, अपने बुरे कामों का परिणाम पाते हैं, और जहाँ परमेश्वर अनुग्रह में उनके उन भले कामों का भी ध्यान रखता है, जो उन्होंने जानबूझकर किए। जो जीवन की पुस्तक में पाए गए, वे अपने प्रभु के अनन्त आनंद में प्रवेश कर गए। बिना योग्यता के, अनुग्रह से, क्योंकि उन्होंने उस मेम्ने पर भरोसा किया, जो उनके बुरे कामों के लिए मरा था।

दूसरे परमेश्वर से दूरी में चले गए। जो आग की झील में डाले गए, उनके लिए यह बिना वापसी की विदाई थी। यहाँ भी यह चित्र इतना प्रभावशाली इसलिए था, क्योंकि यह उन सबके लिए चेतावनी है, जो इसे सुनते हैं। उन सबके लिए, जिन्हें परमेश्वर की कोई परवाह नहीं। उन तक भी यह कठोर भाषा पहुँचनी है।

अध्याय 21

मैंने, यूहन्ना ने, अपनी स्वर्ग-यात्रा में बहुत कुछ देखा था, जिसे मैं इसी रूप में या इससे मिलते-जुलते रूप में अपनी इब्रानी बाइबल से जानता था। अब मुझे उन सब प्रतिज्ञाओं की पूर्ति, हाँ, उनकी परिपूर्णता देखने को मिली। केवल इसलिए कि मैं पुरानी वाचा के पवित्रशास्त्र को जानता था, मैं समझ ही सका कि जो चिह्न और घटनाएँ मैंने देखीं, उन सबका क्या अर्थ था।

अब मैंने वह देखा, जो हमारी आशा और अपेक्षा की **पूर्ति** है: मैंने एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखी। पुरानी पृथ्वी, जैसी मैं उसे जानता था, अब नहीं रही।

समुद्र अब नहीं रहा। लाक्षणिक अर्थ में वह समुद्र, जिसमें से पशु ऊपर आया था – जातियों का वह खतरनाक और उफनता समुद्र – जाता रहा।

मैंने इस नई पृथ्वी को वैसा नहीं देखा, जैसी मैंने अपेक्षा की थी। पहाड़ों, नदियों, पौधों और झीलों वाले किसी प्राकृतिक स्वर्ग के रूप में। पहले की बहुत-सी बातों की तरह यह भी मुझे फिर से प्रतीकों और चित्रों में दिखाई गई – एक **नगर** के रूप में, एक **दुल्हन** और एक **वाटिका** के रूप में। इससे नई वास्तविकता का वर्णन उस दृष्टिकोण से हुआ, जिसकी हमारा हृदय सबसे अधिक लालसा करता है: अर्थात् परमेश्वर और मेम्ने के साथ संबंध, उनकी निकटता और उपस्थिति में। निस्संदेह पहली सृष्टि की तरह पहाड़, नदियाँ, पौधे, झीलों और पशु होंगे, क्योंकि वह तो बहुत अच्छी थी।

नए आकाश और नई पृथ्वी की प्रतिज्ञा मैं यशायाह 65 और 66 से जानता था।

फिर मैंने पवित्र नगर, नए यरूशलेम, को स्वर्ग से नई पृथ्वी पर उतरते देखा। परमेश्वर की ओर से, उसके सिंहासन में से निकलते हुए। यहाँ उसकी युक्ति पूरी हुई।

यह नगर उस दुल्हन जैसा था, जिसने अपने पति के लिए श्रृंगार किया हो। और मुझे तुरन्त पता चलना था कि इस नगर का भेद क्या है। यह छुड़ाए हुए लोगों की सिद्ध सहभागिता थी। एक ओर वे स्वयं नगर थे, और दूसरी ओर वे नगर में रहते थे। जो चित्र मैंने देखे, वे सब एक विशेष ढंग से बहुआयामी और अनेकार्थी थे। बस, बहुत कुछ कहनेवाले। हमारी पुरानी, पार्थिव वास्तविकता से भिन्न, जिसमें हम अभी जीते हैं।

मैंने सिंहासन में से एक ऊँची आवाज़ को यह कहते सुना: देखो, मनुष्यों के बीच **परमेश्वर का निवास**। और परमेश्वर मनुष्यों के बीच अपना अनन्त घर, अपना निवास-स्थान, स्थापित करेगा। और वह उनके बीच वास करेगा। नई पृथ्वी पर। और मनुष्य उसकी प्रजाएँ होंगे। और स्वयं परमेश्वर, सनातन और सर्वशक्तिमान,

उनके साथ सहभागिता रखेगा। उनका परमेश्वर। वे उसे वैसा ही देखेंगे, जैसा वह है। स्वर्ग और पृथ्वी एक हो जाते हैं। अदृश्य संसार दृश्य संसार बन जाता है। विश्वास अब आँखों से देखने में बदल गया है।

और वह, एक सांत्वना देनेवाली माँ की तरह, उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ डालेगा। शोक, भय और निराशा के आँसू फिर कभी न होंगे। सब कुछ बदलकर निश्चित आनंद बन जाएगा। हर अपमान दूर कर दिया जाएगा। मृत्यु, जिससे सब डरते हैं और जो सब कुछ नष्ट करती है, फिर न रहेगी। न शोक, न विलाप, और न पीड़ा फिर होगी। क्योंकि पहली बातें – पुरानी, पतित, खोई हुई और आशाहीन बातें – अब नहीं रहीं।

और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा: देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।

और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने सीधे मुझसे बात की और कहा: “लिख, क्योंकि ये वचन निश्चित और सत्य हैं। ये पूरी तरह भरोसेमंद हैं।” जिसने वह देखा, जो मैंने देखा, और वह सुना, जो मैंने सुना, उसके लिए ये शब्द बिलकुल उचित थे। क्योंकि जिस संसार में मैं जी रहा था, उसके सामने इतना भिन्न संसार अनुभव करना अविश्वसनीय रूप से महिमामय था। और यह सचमुच ऐसा ही होगा। हाँ, परमेश्वर के लिए सब कुछ पहले से विद्यमान है। क्योंकि मैंने उसे अपने आप से यह कहते सुना: “हो चुका। मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ। आदि और अंत। मैं सदा से था और सदा रहूँगा। जो मैं वादा करता हूँ, वह मैं करूँगा। तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो।”

मैं प्यास को अपने सोते में से जीवन का जल ढूँगा। मुफ्त और सेंटमेंत। ऐसा जल, जो शरीर की प्यास नहीं, बल्कि मेरी और सच्चे और वास्तविक जीवन की प्यास बुझाता है। हर कोई आकर पी सकता है: अनन्त जीवन में से, मेरी नई सृष्टि में से, उस महिमामय घर में से। मुझ पर इस बात ने गहरी छाप छोड़ी कि मेरा परमेश्वर मनुष्यों के लिए कैसे तरसता था, कैसे वह उन सबको पुकारता था कि उसकी नई सृष्टि में सम्मिलित हों। परन्तु उसने मनुष्यों के बदले निर्णय नहीं लिया। उन्हें **स्वयं** निर्णय करना था कि वे अनुग्रह के सुसमाचार को ग्रहण करके इस जीवन के जल को पिएँ।

जो जय पाते हैं और जो मैं कहता हूँ उस पर विश्वास करते हैं और उसे थामे रहते हैं, वे इस नई सृष्टि के वारिस होंगे। परन्तु संघर्ष के बिना कोई विजय नहीं! विजयी ठाठ से या सिद्ध रूप से नहीं, परन्तु यीशु के लिए दृढ़ निर्णय के साथ। कोई हल्की-फुल्की विजय नहीं। बल्कि चुनौतियों से भरा और बिना समझौते का है यह सँकरा मार्ग, जो परमेश्वर के नए संसार तक जाता है। नया संसार उनका होगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा बेटा और मेरी बेटी होगा।

परन्तु सब मनुष्य परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ नहीं बनेंगे। सब नई पृथ्वी को नहीं देखेंगे: डरपोक, जो सताव के डर से यीशु के पीछे केवल आधे मन से चले; अविश्वासी, जिन्हें परमेश्वर की कोई परवाह नहीं; धिनौने काम करनेवाले लोग; हत्यारे और यौन विकृत लोग; तांत्रिक, जिन्होंने दुष्टात्माओं से संबंध जोड़ा; मूर्तिपूजक, जिनके लिए पैसा, सम्मान और आत्म-सिद्धि सबसे महत्वपूर्ण थे – और झूठे, जिनका पूरा जीवन एक झूठ था – वे सब दूसरी मृत्यु भोगेंगे, क्योंकि उन्होंने मन नहीं फिराया। क्योंकि उन्होंने जीवन का जल,

परमेश्वर का यह मुफ्त वरदान, नहीं पिया। उनका अंत आग की झील में होगा, जो गन्धक से जलती है। उन्होंने हर चेतावनी को ठुकरा दिया। उनका अनन्त अस्तित्व आत्म-धिक्कार से भरा है, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की चेतावनियों को नहीं माना।

फिर उन सात स्वर्गदूतों में से एक आया, जिनके पास क्रोध के अंतिम कटोरे थे। उसने मुझसे कहा: “आ! मैं तुझे दुल्हन, मेम्ने की पत्नी, दिखाऊँगा।” और वह मुझे आत्मा में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया। जैसे एक समय प्राचीन भविष्यद्वक्ता यहजेकेल को ले जाया गया था। वहाँ से दृश्य विशाल था। और मैंने बड़े नगर, पवित्र यरूशलेम, को देखा, कैसे वह स्वर्ग में से परमेश्वर के पास से पृथ्वी पर उतर रहा था। यह नगर परमेश्वर की महिमा से बसा हुआ, हाँ, भरा हुआ था। वह एक बहुमूल्य रत्न की तरह चमक रहा था। उसकी ज्योति की चमक बिल्लौर की, यशब की-सी थी।

नगर के चारों ओर एक बड़ी शहरपनाह थी। हाँ, कलीसिया की निरन्तर असुरक्षा और उसका खदेड़ा जाना परमेश्वर की सदा बनी रहनेवाली रक्षा और सुरक्षा में बदल गए थे।

उसके 12 फाटक थे। अर्थात् एक भीतर था और एक बाहर। फाटकों पर द्वारपालों के रूप में बारह स्वर्गदूत खड़े थे। साथ ही इस्राएल के 12 गोत्रों के प्रतिनिधियों के रूप में। फाटकों पर उनके नाम पढ़े जा सकते थे। वे मुझे पहले से ज्ञात थे, सिंहासन के सामने उस बड़ी अन्तरराष्ट्रीय भीड़ को देखने से पहले ही। पूर्व की ओर तीन फाटक थे – और उत्तर, दक्षिण और पश्चिम की ओर भी।

परमेश्वर की प्रजा, पुरानी वाचा की भी और नई वाचा की भी, सदा के लिए इस नगर में एक हो गई थी। यह नगर के नीचे भी दिखाई देता था। मैंने बारह नीवें देखीं। इन नीवों पर मेम्ने के बारह प्रेरितों में से एक-एक का नाम था। मैं, यूहन्ना, बहुत चकित हुआ – वहाँ मैंने अपना नाम भी खुदा हुआ पाया। हम चेलों के लिए कैसा आदर!

जो स्वर्गदूत मुझसे बातें कर रहा था, उसके हाथ में नगर और उसके फाटकों और शहरपनाह को नापने के लिए एक माप, सोने का एक नापने का गज था।

नगर चौकोर था। एक वर्ग की तरह। उसने लगभग 2300 किलोमीटर का माप पाया। नगर की लंबाई, उसकी चौड़ाई और यहाँ तक कि उसकी ऊँचाई भी बराबर हैं। अर्थात् नगर का आकार एक घन का था। सब लंबाइयाँ पूरी तरह बराबर थीं।

मैं जानता था कि प्राचीन नगर – बेबीलोन, नीनवे, रोम भी – वर्गाकार बसाए गए थे। परन्तु ऊँचाई में नहीं।

यह मुझे किसकी याद दिलाता था? हाँ, मैं केवल एक ही घन को जानता था, और वह था मिलापवाले तम्बू और मन्दिर का परमपवित्र स्थान। वह स्थान एक सिद्ध घन जैसा था। उसमें वाचा का सन्दूक था। वह परमेश्वर का सिंहासन था। अर्थात् यह विशाल नगर उस परमपवित्र स्थान जैसा था, जहाँ स्वयं परमेश्वर वास

करता है। इसने मेरे लिए उस बात की पुष्टि की, जो मैं सुन चुका था। परमेश्वर मनुष्यों के बीच वास करेगा और इस प्रकार स्वर्ग को पृथ्वी पर ले आएगा और पृथ्वी को अपना परमपवित्र स्थान बना देगा।

नगर के सब माप अलौकिक, आत्मिक और प्रतीकात्मक थे। अपार गहराई और विस्तार वाले। अब शहरपनाह नापी गई। वह 12 x 12, अर्थात् 144 हाथ चौड़ी थी। स्वर्गदूत का हाथ भी मनुष्य का ही हाथ है। अर्थात् शहरपनाह लगभग 70 मीटर मोटी या ऊँची थी। एक अजेय दीवार, जो उस बड़े और पवित्र नगर की सुरक्षा को दर्शाती और उसकी गारंटी देती थी।

जैसे मैं नगर को चमकता हुआ देख चुका था, वैसे ही शहरपनाह यशब की थी। वैसा ही वह भी दिखता था, जिसे मैंने बिलकुल आरंभ में सिंहासन पर देखा था। सारा नगर स्वयं शुद्धतम सोने का था, पारदर्शी काँच के समान। साफ़, पारदर्शी काँच हमारे दिनों में अभी नहीं होता था, इसलिए जो मैंने देखा, वह कुछ बहुत ही विशेष था।

बारह नीवों में से हर एक, जिन पर बारहों के नाम खुदे थे, स्पष्टतः एक-एक बहुमूल्य रत्न की बनी थी। एक अकल्पनीय रूप से सुंदर आभूषण की तरह।

पहली नींव यशब की; दूसरी नीलमणि की; तीसरी लालड़ी की; चौथी मरकत की; पाँचवीं गोमेदक की; छठवीं माणिक्य की; सातवीं पीतमणि की; आठवीं पेरोज की; नौवीं पुखराज की; दसवीं लहसनिए की; ग्यारहवीं धूम्रकान्त की; बारहवीं याकूत की।

इनमें से अधिकतर रत्नों को मैं महायाजक के सीनाबन्द से जानता था। यह संयोग नहीं हो सकता था।

और नगर के बारह फाटक – मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ – बारह विशाल मोती थे। हर एक फाटक एक विशाल, निष्कलंक मोती का बना था।

नगर की मुख्य सड़क, उसकी जीवन-धारा, शुद्ध सोने की थी, पारदर्शी काँच के समान। हाँ, नगर की सब सड़कें ऐसी ही थीं।

यरूशलेम नगर में मैंने कोई मन्दिर नहीं देखा, जिस पर मुझे आश्चर्य हुआ। क्योंकि यदि किसी नगर में मन्दिर था, तो वह यरूशलेम था। परन्तु स्वयं प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, और मेम्ना उसका मन्दिर हैं। सारा नगर तो एक मन्दिर था और घन के रूप में बसाया गया था – मन्दिर के परमपवित्र स्थान की तरह।

यद्यपि सूर्य और चन्द्रमा होंगे, फिर भी नगर को न सूर्य के प्रकाश की ज़रूरत है, न रात में चन्द्रमा के प्रकाश की। परमेश्वर की उपस्थिति की महिमा नगर को प्रकाशित करती है। नगर का दीपक मेम्ना है। यीशु, जगत की ज्योति। जब एक दिन सूर्य बुझ जाएगा, तो इसका नई पृथ्वी के लिए कोई महत्व न होगा।

मुझे इस्राएल के इतिहास का एक छोटा-सा विवरण याद आया, जब नौवीं विपत्ति आई – ऐसा घना अन्धकार कि उसे छुआ जा सकता था। तीन दिन तक। परन्तु इस्राएलियों के घरों में प्रकाश था, वहाँ, जहाँ फसह के मेम्ने थे। क्रोध के छठवें कटोरे के समय पशु के राज्य पर पहले ही अन्धकार छा चुका था। अब,

परिपूर्णता में, मेम्ना नगर की ज्योति था। नगर के बाहर अन्धकार था। वहाँ वे सब हैं, जो इस नगर में आना नहीं चाहते थे।

यद्यपि एक भीतर और एक बाहर है – नगर में पवित्र लोग, बाहर अविश्वासी –, फिर भी नए यरूशलेम का यह अनेकार्थी चित्र नई पृथ्वी को दिखाता है: थड़कता हुआ जीवन, सृजनात्मक काम, खोजें, संस्कृति, संगीत, कला और वह सब कुछ, जो परमेश्वर ने मनुष्यों को संभावना के रूप में दिया है।

पृथ्वी की जातियाँ इस नगर के प्रकाश में जीएँगी। उनके राजा और लोग, जैसा यशायाह ने कहा, अपना वैभव उसमें लाएँगे। वे नई पृथ्वी की राजधानी में आएँगे और हर महिमामय वस्तु साथ लाएँगे – नगर के आदर और समृद्धि के लिए।

नगर के फाटकों को रात में बन्द करने की फिर ज़रूरत न होगी। रात होगी ही नहीं। रात का वह खतरा, जब शत्रु और चोर घात में रहते हैं, अब न रहेगा। रात का भय सदा के लिए अतीत की बात है। यह एक ही दिन के समान होगा।

जातियों की महिमा और आदर – भौतिक, बौद्धिक और आत्मिक संपदा में जो कुछ महिमामय उनके पास है – वे परमेश्वर के इस नगर में लाएँगे। उसे आनंदित करने, उसका आदर करने और उसे समृद्ध करने के लिए।

नगर में कोई अशुद्ध किसी भी हाल में प्रवेश न करेगा। जो “मेम्ने के लहू में धोए हुए” नहीं हैं, उनकी वहाँ पहुँच नहीं। न कोई, जिसने घृणित काम किए। न कोई झूठा, जैसा परमेश्वर स्वयं पहले ही ज़ोर देकर कह चुका था। यह एक पवित्र स्थान होगा। परमेश्वर की उपस्थिति में सब कुछ उसके अनुरूप होना चाहिए।

अध्याय 22

अब मुझे इस नगर में एक नई झलक मिली। मैंने ईश्वरीय जीवन का एक अक्षय स्थान देखा।

अब स्वर्गदूत ने मुझे एक नदी दिखाई। बहते जल की एक धारा। जीवन का जल। बिल्लौर-सा निर्मल। जल बिल्लौर की तरह चमकता और झिलमिलाता था। जल की यह धारा परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलती थी। कुछ ऐसा ही यहजेकल ने मन्दिर से जल को – एक नदी को, जो बढ़ती ही जाती थी – बहते देखा था। अब मैं जान गया कि यह नदी वास्तव में कहाँ से आती थी। अर्थात् सीधे परमेश्वर के सिंहासन से। वह सब कुछ जीवन और बढ़ोतरी से भर देती थी।

नगर के बीच में सोने की मुख्य सड़क थी और उसके पास जीवन के जल की नदी। सड़क और नदी के दोनों ओर जीवन के वृक्ष दिखाई देते थे। वह वर्ष में बारह बार फल देता है। हर महीने उसका फल पकता है। हमारी आज की प्रकृति से इसकी कोई तुलना नहीं। फलों की मात्रा और विविधता अवर्णनीय थी।

इन वृक्षों के पत्ते औषधि जैसे हैं, जातियों को चंगा करने के लिए। वास्तव में शरीर या मन की कोई बीमारी फिर न होगी। कोई भी, कोई जाति भी, फिर महामारियों से, बीमार करनेवाली या कमज़ोर

करनेवाली बातों से ग्रस्त न होगी। अनन्तकाल की चंगा करनेवाली शक्तियाँ उन्हें इनसे बचाए रखेंगी।

फिर कोई श्राप न होगा। मसीह और क्रूस पर उसके बलिदान के द्वारा वह हटा दिया गया है। यह अब आरंभ के अदन से भी नया और बेहतर स्वर्ग था। क्योंकि मसीह एक मेम्ने की तरह मरा और जी उठा। नई सृष्टि के आरंभ और स्रोत के रूप में।

हाँ, परमेश्वर और मेम्ने का एक ही सिंहासन इस नगर में था। मानो परमेश्वर और मेम्ना स्वर्ग से उठकर मनुष्यों के पास रहने आ गए हों। उसने अपना सिंहासन, जहाँ से वह ब्रह्मांड पर शासन करता है, पृथ्वी पर ले आया था।

और उसके दास आनंद से उसकी सेवा करेंगे। और वे उसका मुख देखेंगे। परमेश्वर का मुख। प्राणियों के लिए इससे ऊँची कोई बात नहीं हो सकती। विशेषकर इसलिए कि वे सब कभी भक्तिहीन पापी थे। अनुग्रह के इस आश्चर्यकर्म को कौन समझ सकता है?

परमेश्वर का नाम उनके माथों पर लिखा होगा, क्योंकि वे उसकी निज संपत्ति हैं।

मृत्यु, भय, अकेलेपन और खतरे की रात फिर न होगी।

सब कुछ प्रकाशित करनेवाले दीपक की फिर ज़रूरत न होगी। सूर्य की भी फिर आवश्यकता न होगी। जब वह एक दिन जलकर समाप्त हो जाएगा, तो उसकी कमी नहीं खलेगी। स्वयं परमेश्वर और मेम्ना उनकी ज्योति होंगे और उन पर चमकेंगे।

वे युगानुयुग राज्य करेंगे। मनुष्यों पर नहीं। अब वे आरंभ के उस सृष्टि-आदेश को पूरा करेंगे, कि पृथ्वी को अपने वश में करें। वैसे ही, जैसा परमेश्वर ने चाहा था। सब छुड़ाए हुए लोग आनंद और सार्थकता के साथ नई सृष्टि में अपने काम निभाएँगे।

इस प्रकार मुझे उस नए संसार में एक झलक देखने दी गई, जिसकी हम सब प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैंने नई सृष्टि को बहुआयामी रूप में, बदलते रूपकों में देखा – दुल्हन के रूप में, नगर के रूप में और वाटिका के रूप में। मैंने उसे परमपवित्र स्थान के समान देखा, जो अब सारी पृथ्वी पर फैल गया है। सब मनुष्य, नई पृथ्वी पर वे जहाँ कहीं भी हों, परमेश्वर का मुख देखेंगे। क्योंकि वह पृथ्वी पर सबके लिए दृश्य रूप में वास करेगा। वह उनके साथ सहभागिता रखेगा, उनसे मिलने आएगा और उनसे बातें करेगा। वैसे ही, जैसे एक समय अदन में आदम और हव्वा के साथ, दिन के ठंडे समय में। हम परमेश्वर और मेम्ने से बातचीत करेंगे। बहुत-से प्रश्न पूछेंगे – और ऐसे उत्तर पाएँगे, जिनकी हमने अपेक्षा नहीं की थी।

और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: “परमेश्वर के ये वचन निश्चित, सत्य और भरोसेमंद हैं। प्रभु ने, जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं का परमेश्वर है, अपना स्वर्गदूत भेजा है, ताकि अपने दासों को दिखाए कि शीघ्र क्या होना अवश्य है। देखो! मैं, यीशु, शीघ्र आता हूँ, हाँ – अचानक!

धन्य हैं वे सब, जो इस पुस्तक के वचनों को मानते और उन पर चलते हैं।”

सब वचनों और चित्रों का अर्थ समझना ज़रूरी नहीं है। परन्तु परमेश्वर और मेम्ने की विजय से प्रोत्साहित होकर हम इस पुस्तक के संदेश को थामे रहते हैं और मेम्ने के पीछे चलते हैं।

मैंने, यूहन्ना ने, यह सब देखा और सुना। मैं उस स्वर्गदूत के पाँवों पर गिर पड़ा, जिसने मुझे यह दिखाया था। मैं इतना अभिभूत था। तब स्वर्गदूत ने कहा – और मुझे याद आया कि ऐसा पहले भी एक बार हो चुका था: “किसी भी हालत में ऐसा मत कर। मैं भी तो परमेश्वर का केवल एक दास हूँ, तुम यीशु के अनुयायियों की तरह। हम स्वर्गदूत तेरे भाइयों और बहनों की, और भविष्यद्वक्ताओं की, और उन सबकी सेवा करते हैं, जो इस पुस्तक के वचनों को थामे रहते हैं। केवल परमेश्वर की आराधना कर।”

फिर उसने मुझसे कहा: “इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी के वचनों पर मुहर **मत** लगा, जैसा एक समय दानियेल को करना था। क्योंकि समय निकट है। ये वचन इसी समय के लिए हैं। आज ही से।”

जो अन्याय करता है, वह अन्याय करता रहे, और जिसे अशुद्धता भाती है, वह अशुद्ध होता रहे। परन्तु वह अंत को ध्यान में रखे और अपने जीवन पर फिर से विचार करे। परन्तु जो उचित रीति से चलता है, वह उचित करता रहे, और जो पवित्र जीवन जीता है, वह ऐसे ही जीता रहे, जैसा परमेश्वर को भाता है। ऐसे जीते हैं जय पानेवाले, जो अंत तक विश्वासयोग्यता से दृढ़ बने रहते हैं और निराशा, भय या असफलता के सामने हार नहीं मानते। यदि वे गिरते हैं, तो फिर उठ खड़े होते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के अनुग्रह के सामर्थ्य में जीते हैं।

देख, मैं शीघ्र आता हूँ, जल्दी और अचानक! इसलिए हर समय तैयार रहो कि आनंद और अपेक्षा के साथ मुझसे मिलो। मैं हर एक के लिए प्रतिफल साथ लाऊँगा। वह प्रतिफल, जिसका हर कोई हक़दार है – जैसा उसका काम, उसके कर्म और उसका परिश्रम थे।

मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ, आदि और अंत। इसी नाम से मैं, यीशु, प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक पर हस्ताक्षर करता हूँ।

धन्य हैं वे, जो अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धोते हैं! अपने जीवन के मैले वस्त्र के साथ वे मेम्ने के विवाह में कभी नहीं आ सकते। परन्तु यदि वे मुझ पर, यीशु पर, और मेरी मृत्यु के द्वारा मिलनेवाली क्षमा पर विश्वास करके अपने वस्त्र धोते हैं, तो वे जीवन के वृक्ष में से खा सकते हैं। तब वे महिमा के मोती-फाटकों से होकर नए यरूशलेम, उस पवित्र नगर, में प्रवेश करेंगे।

हर कोई आ सकता है। जो बाहर रह जाता है, उसने स्वयं ऐसा चाहा है। बाहर रहते हैं कुत्ते, जो अपवित्र से चिपके हुए हैं और उसी में बने रहना चाहते हैं और छुटकारे को ठुकरा देते हैं। दोन्हे, जिन्होंने अन्धकार की शक्तियों से संबंध जोड़ा। व्यभिचारी, जिन्होंने सेक्स को अपने देवता की तरह पूजा। हत्यारे, मूर्तिपूजक और वे सब, जो झूठ से प्रेम रखते हैं। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से अधिक पाप से प्रेम किया और मन फिराना नहीं चाहा, इसलिए वे परमेश्वर के नगर के अनन्त आनंद में प्रवेश नहीं कर सकते।

मैंने, यीशु ने, अपने स्वर्गदूत को भेजा है, ताकि तुम सबको ये बातें दिखाएँ और इनकी गवाही दे। यह मेरी ओर से है। यह मनुष्यों या स्वर्गदूतों की गढ़ी हुई बात नहीं। सब कलीसियाएँ, केवल एशिया माइनर की सात ही नहीं, यह जान लें।

मैं, यीशु, दाऊद का मूल हूँ, प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह। दाऊद का सच्चा वंशज। मैं भोर का चमकता हुआ तारा हूँ। मैं वह तारा हूँ, जिसके विषय में बिलाम ने बहुत पहले कहा था कि वह इस्राएल में से उदय होगा। संसार के उद्धारकर्ता और संसार को पूर्णता तक पहुँचानेवाले के रूप में, जो एक अनन्त भोर लाता है, जिसके बाद फिर कोई रात नहीं आती।

और पवित्र आत्मा और यीशु के सब अनुयायियों की दुल्हन-कलीसिया कहते हैं: आ, प्रभु यीशु! और जो कोई यह पुकार सुने, वह भी इसमें स्वर मिलाएँ और कहे: आ! आइए, हम अपनी लालसा को प्रकट करें और उसे शब्दों में कहें।

जो कोई भी प्यासा हो – परमेश्वर का, शान्ति का, जीवन, अर्थ और आशा का – वह जीवन का जल पिए! जब तक अभी समय है, जब तक अनुग्रह बना है, तब तक यह सेंटमेंट मिल सकता है। इसे भले कामों से कमाया नहीं जा सकता। इसे मुफ्त में लेना होता है। हमें यह केवल मुफ्त मिलता है!

परमेश्वर पवित्र लगन के साथ मनुष्यों के विषय में अपने लक्ष्य का पीछा करता है और हृदयों को जीतने का प्रयास करता है, ताकि वे उसके साथ अनन्तकाल बिताएँ।

इस पुस्तक के भविष्यद्वाणी के वचनों को सुननेवाले हर व्यक्ति से मैं कहता हूँ: “यदि कोई जानबूझकर इस पुस्तक में कुछ जोड़े, और इस प्रकार पुस्तक के संदेश को बिगाड़े, तो परमेश्वर उस पर वे विपत्तियाँ बढ़ाएगा, जो इस पुस्तक में लिखी हैं।

यदि कोई इस पुस्तक के संदेश में से कुछ निकाल दे और छिपा ले, तो परमेश्वर उससे जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर तक पहुँच छीन लेगा।”

जो इन सब बातों की गवाही देता है, क्योंकि वह चाहता है कि हम इन्हें जानें, वह कहता है: “हाँ, मैं शीघ्र आता हूँ!”

हम आशा से भरकर उत्तर देते हैं: आमीन! आ, प्रभु यीशु।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह सब पवित्र लोगों के साथ रहे, हर समय, हर स्थान पर। जब तक वह आए।

“स्वयं परमेश्वर हमारी लालसा का अंतिम लक्ष्य होगा, जिसे हम अंतहीन देखते रहेंगे, जिससे हम बिना ऊब और थकान के प्रेम करेंगे और जिसकी स्तुति करेंगे।”

हिप्पो के ऑगस्टीन (Augustinus von Hippo)

अंत में

मैं पूरी आशा करता हूँ कि पढ़ते समय आपने अनुभव किया होगा कि परमेश्वर कैसे आपसे बात करता है और कैसे वह आपके हृदय के लिए संघर्ष करता है। कैसे वह प्रोत्साहित करता है, सिखाता है, परन्तु उस हर बात से चेतावनी भी देता है, जो उसकी ओर से नहीं आती और इसलिए हमें हानि पहुँचाती है।

उसने आपके विषय में और सीधे आपसे जो भी भली बातें कही हैं, उन सबके लिए उसे **धन्यवाद** दीजिए।

यदि आपके कोई प्रश्न हों, तो हमें लिखिए: info@kirchefüralle.de

हमें तब भी लिखिए, जब आप नए नियम की दूसरी पत्रियों और सुसमाचारों को भी इसी रूप में जानने में रुचि रखते हों।

यहाँ कुछ और महत्वपूर्ण सुझाव हैं:

बाइबल पढ़िए। हो सके तो नियमित रूप से।

- दूसरे लोगों के साथ मिलकर बाइबल पढ़िए – और आपस में बातचीत कीजिए।
- यीशु के जीवन के वृत्तांतों, अर्थात् सुसमाचारों, से आरंभ कीजिए।
- प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर अपने वचन को आपके लिए जीवित कर दे – ऐसे, मानो वह सीधे आपसे बात कर रहा हो।
- पाठ को ऊँचे स्वर में और लगातार दो बार पढ़िए।

पाठ से ये प्रश्न पूछिए:

- आप इस पाठ को कौन-सा शीर्षक देंगे?
- यह पाठ परमेश्वर और यीशु के बारे में क्या कहता है?
- यह पाठ मनुष्यों के बारे में क्या कहता है?
- हम इस पाठ से क्या सीखते हैं?
- हमें क्या करना चाहिए?
- यह वचन हमें कैसे प्रोत्साहित करता है?

जब आप फिर से मिलें, तो अपने अनुभवों और घटनाओं के बारे में बात कीजिए।

ऐसे मसीहियों से संपर्क और सहभागिता खोजिए, जो यीशु से प्रेम करते और उसका आदर करते हैं; जो बाइबल को मूल्यवान समझते, उसे पढ़ते और उसे गंभीरता से लेते हैं।